रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 24] नई दिल्ली, शनिवार, जून 13—जून 19, 2015 (ज्येष्ठ 23, 1937)

No. 24] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 13—JUNE 19, 2015 (JYAISTHA 23, 1937)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.	353
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	543
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1535
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	595
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.	137
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.	479
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	353
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	543
PART I—SECTION 3—Notifications relating to resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1535
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	595
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—MisScellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	137
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	479
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I — खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त, 2014

सं. 153-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस, 2014 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान करते हैं:-

1. श्री ए. बी. वेंकटेश्वर राव, महानिदेशक, विशेष सुरक्षा बल, सिकन्दराबाद, आंध्र प्रदेश।
2. श्री उमेश सराफ, अपर पुलिस महानिदेशक (कार्मिक) हैदराबाद, आंध्र प्रदेश।
3. श्री घंटा दयानंद, असॉल्ट कमांडर/सहायक कमांडेंट, ग्रेहाउन्ड्स, पुप्पालागुडा पोस्ट, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश।
4. श्री अपूर्व जीवन बरुआ, उप पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन), असम पुलिस मुख्यालय, उलुवारी, गुवाहाटी, असम।
5. श्री सूब्र ज्योती हजारीका, उप पुलिस महानिरीक्षक (एपी), उलुवारी, गुवाहाटी, असम।
6. श्री किशोर कुमार अग्रवाल, सहायक पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
7. श्री प्रभाकर, उप पुलिस आयुक्त, सुरक्षा (पीएम), विनय मार्ग, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली।
8. श्री अशोक कुमार शर्मा, सहायक पुलिस आयुक्त, भूमि एवं भवन प्रकोष्ठ, पुलिस मुख्यालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली।
9. श्री विनोद कुमार मल्ल, पुलिस महानिरीक्षक (एससी/एसटी एवं कमजोर वर्ग) गांधीनगर, गुजरात।
10. श्री परमार चीमनलाल रेवनदास, संयुक्त पुलिस आयुक्त, रेंज-I, सूरत सिटी, गुजरात।
11. श्री वेचातभाई मोतीभाई पारगी, संयुक्त पुलिस आयुक्त (ट्रैफिक एवं क्राइम), सूरत सिटी, गुजरात।
12. श्री कामेश्वर कुमार मिश्रा, अपर पुलिस महानिदेशक, महिलाओं के प्रति अपराध, पुलिस मुख्यालय, पंचकुला, हरियाणा।
13. श्री भगवान दास जिष्टु, उप पुलिस अधीक्षक, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
14. श्री मुनीर अहमद खान, पुलिस महानिरीक्षक (यातायात) श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर।
15. श्री विजय सिंह समयाल, उप पुलिस महानिरीक्षक, आईआरपी जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर।
16. श्री राजीव कुमार, पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय, रांची, झारखंड।
17. श्री कमल पंत, पुलिस महानिरीक्षक और अपर पुलिस आयुक्त, कानून और व्यवस्था, बैंगलोर सिटी, कर्नाटक।
18. श्री एस. पराशिवमूर्ति, पुलिस महानिरीक्षक, ईस्टर्न रेंज, दावणगिरि, कर्नाटक।
19. श्री बी.ए. पद्मनयन, उप पुलिस महानिरीक्षक, राज्य आसूचना, बैंगलोर, कर्नाटक।
20. श्री एस. आन्नदकृष्णन, अपर पुलिस महानिदेशक (अपराध), सीबीसीआईडी-मुख्यालय, पीएचक्यू काम्पलैक्स, वज़हुथाकॉड, तिरूवनंतपुरम, केरल।
21. श्री कंचन लाल मीणा, अपर पुलिस महानिदेशक, स्पेशल ऑपरेशन, पुलिस मुख्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।
22. श्री कैलाश मकवाना, अपर पुलिस महानिदेशक (प्रोविजन), पुलिस मुख्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।
23. श्री जवाहर लाल पटले, उप पुलिस अधीक्षक (सुरक्षा), विशेष शाखा, भोपाल, मध्य प्रदेश।
24. श्रीमती मेनका गुरूंग, सहायक कमांडेंट, 7वीं बटालियन, विशेष सशस्त्र बल, भोपाल, मध्य प्रदेश।
25. श्री प्रभात रंजन, अपर पुलिस महानिदेशक, भ्रष्टाचार-रोधी ब्यूरो, मुम्बई, महाराष्ट्र।
26. श्री जनार्दन दशरथ ठोकल, सहायक पुलिस आयुक्त, सशस्त्र पुलिस नई गांव, मुम्बई, महाराष्ट्र।
27. श्री दिलीप भास्कर घाग, सहायक पुलिस उप-निरीक्षक, विशेष शाखा-I, अपराध अन्वेषण विभाग, मुम्बई, महाराष्ट्र।
28. श्री मोइरांथेम मुबी सिंह, डिप्टी कमांडेंट, प्रथम बटालियन, मणिपुर राइफल्स, इम्फाल, मणिपुर।

29. श्री अमृत मोहन प्रसाद, पुलिस महानिरीक्षक, सतर्कता निदेशालय, कटक, ओडिशा।
30. श्री अरून कुमार षड़ंगी, पुलिस महानिरीक्षक, सतर्कता निदेशालय, कटक, ओडिशा।
31. श्री योगेश बाहादुर खुरानिआ, पुलिस महानिरीक्षक, सीआईडी,सीवी, कटक, ओडिशा।
32. श्री गणेश दत्त पांडे, पुलिस महानिदेशक-सह- कमांडेंट जनरल, होमगार्ड एवं निदेशक, नागरिक सुरक्षा, चंडीगढ़, पंजाब।
33. श्री गोविन्द नारायण पुरोहित, पुलिस महानिरीक्षक, उदयपुर रेंज, उदयपुर, राजस्थान।
34. श्री किशोर सिंह, हेड कांस्टेबल, अपराध शाखा पुलिस अधीक्षक कार्यालय, भरतपुर, राजस्थान।
35. श्री आभाष कुमार, अपर पुलिस आयुक्त (कानून और व्यवस्था) दक्षिणी क्षेत्र, चेन्नई, तमिलनाडु।
36. सुश्री सीमा अग्रवाल, पुलिस महानिरीक्षक (रेलवे), चेन्नई, तमिलनाडु।
37. श्रीमती एस. सरस्वती, अपर पुलिस अधीक्षक, सतर्कता एवं भ्रष्टाचार-रोधी, चेन्नई, तमिलनाडु।
38. श्री नेपाल चन्द्र दास, पुलिस महानिरीक्षक (होमगार्ड, पुलिस नियंत्रण एवं पुलिस कल्याण), पुलिस मुख्यालय, अगरतला, त्रिपुरा।
39. श्री संदीप सालुंके, पुलिस महानिरीक्षक, तकनीकी सेवा, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
40. श्रीमती रेणुका मिश्र, पुलिस महानिरीक्षक, एसएसबी मुख्यालय, नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश ।
41. श्री सुभाष चन्द्र, पुलिस महानिरीक्षक, लखनऊ जोन, उत्तर प्रदेश।
42. श्री मैया दीन कर्णधार, उप महानिरीक्षक (सुरक्षा), लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
43. श्री अखिलेश्वर प्रकाश सिंह चौहान, उप पुलिस अधीक्षक, सुरक्षा मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
44. श्री राकेश प्रकाश मिश्र, हेड कांस्टेबल, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
45. श्री पुष्कर सिंह सैलाल, उप महानिरीक्षक, आसूचना, देहरादून, उत्तराखंड।
46. श्री अरूण कुमार शर्मा, पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय), पुलिस निदेशालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
47. श्री प्रदीप कुमार चट्टोपाध्याय, अपर पुलिस आयुक्त (IV), कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
48. श्री कुन्दन लाल टमटा, अपर महानिदेशक एवं महानिरीक्षक ट्रैफिक, ट्रैफिक मुख्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
49. श्री पी. नीरजनयन, प्रधान सचिव (समन्वय) गृह विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, हावड़ा, पश्चिम बंगाल।
50. श्री बहादुर सिंह नेगी, उप पुलिस अधीक्षक (पीसीआर), चंडीगढ़।
51. श्री वी. शन्मुगम, पुलिस अधीक्षक, वीएसी पुलिस यूनिट, पुडुचेरी।
52. श्री आदित्य मिश्रा, महानिरीक्षक (कार्मिक), मुख्यालय, महानिदेशालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
53. श्री अजय कुमार तोमर, महानिरीक्षक, पंजाब, सीमा सुरक्षा बल।
54. श्री अशोक कुमार शर्मा, महानिरीक्षक, ओडिशा, सीमा सुरक्षा बल।
55. श्री जयन्ती प्रसाद उनियाल, उप महानिरीक्षक, पंजाब, सीमा सुरक्षा बल।
56. श्री महेन्द्र सिंह, उप महानिरीक्षक, मेघालय, सीमा सुरक्षा बल।
57. श्री वेणु गोपालन नायर, उप निरीक्षक, मुख्यालय महानिदेशालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
58. श्री राजीव कुमार शर्मा, संयुक्त निदेशक (एच.ओ.जेड.) बी.एस. एंड एफ., नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
59. श्री अजित कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक, बी.एस. एंड एफ.सी., नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
60. श्री राम चन्द्र गरवान, उप पुलिस अधीक्षक, सीबीआई अकादमी, गाजियाबाद, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
61. श्री अब्दूल अजीज, पुलिस निरीक्षक, एसीबी, चेन्नई, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
62. श्री अनिल किशोर, उप कमांडेंट, मुख्यालय, नई दिल्ली, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
63. श्री रविन्द्र नाथ बाडी, सहायक उप निरीक्षक, ए.एस.जी., हैदराबाद, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
64. श्री अजित कुलश्रेष्ठ, महानिरीक्षक, आर.ए.एफ मुख्यालय, आर.के.पुरम, नई दिल्ली, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
65. श्री सतेन्द्र पाल सिंह, महानिरीक्षक, महानिदेशालय, नई दिल्ली, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
66. श्री सूरज भान काजल, महानिरीक्षक, ग्रुप सेंटर, सोनीपत, हरियाणा, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
67. श्री राजेन्द्रन जे., कमांडेंट, रायपुर, छत्तीसगढ़, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
68. श्री जंगशेर सिंह, निरीक्षक/जीडी, 10वीं बटालियन, बरपेटा, असम, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
69. श्री शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव, सहायक निदेशक, एसआईबी, पटना, गृह मंत्रालय।
70. श्री किरपा निधान सिंह, सहायक निदेशक, आई बी मुख्यालय, नई दिल्ली, गृह मंत्रालय।
71. श्री अक्कापेद्दी शिवा शंकर प्रसाद, सहायक निदेशक, आई बी मुख्यालय, नई दिल्ली, गृह मंत्रालय।
72. श्री राजीब कुमार पति, उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी, आई बी मुख्यालय, नई दिल्ली, गृह मंत्रालय।
73. श्री जसविन्दर सिंह राणा, उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी, एसआईबी चंडीगढ, गृह मंत्रालय।

74. श्री बी.पी. भाकर, उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी, आईबी मुख्यालय, नई दिल्ली, गृह मंत्रालय।
75. श्री अशोक शेषराव भिंगारे, सहायक केन्द्रीय आसूचना अधिकारी/।।, एसआईबी, मुम्बई, गृह मंत्रालय।
76. श्री नितिन अग्रवाल, पुलिस महानिरीक्षक, महानिदेशालय, नई दिल्ली, भारत तिब्बत सीमा पुलिस।
77. श्री श्याम मेहरोत्रा, उप पुलिस महानिरीक्षक (जीडी), एस एच क्यू (एसएनआर), पंथाचौक, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर, भारत तिब्बत सीमा पुलिस।
78. श्री अविनाश चन्द्र, महानिरीक्षक, सीमांत मुख्यालय, लखनऊ, सशस्त्र सीमा बल।
79. सुश्री सोनम डोलमा, अनुभाग अधिकारी, टीसी शम्शी कुल्लू, हिमाचल प्रदेश, सशस्त्र सीमा बल।
80. श्री गजेन्द्र सिंह चौधरी, उप महानिरीक्षक/उप-निदेशक (प्रशिक्षण), नई दिल्ली, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो।
81. श्री जयकृत सिंह रावत, उप महानिरीक्षक, मुख्यालय महानिदेशालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल।
82. श्री भूपति मोहन, महानिरीक्षक-सह-मुख्य सुरक्षा आयुक्त (आरपीएफ), पूर्वी रेलवे मुख्यालय, कोलकाता, रेल मंत्रालय।

2. ये पुरस्कार विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान करने वाली नियमावली के नियम 4(ii)के तहत दिए जाते हैं।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 154-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, स्वतंत्रता दिवस 2014 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:-

1. श्री विश्वनाथ चेन्नप्पा सज्जानार, पुलिस महानिरीक्षक, विशेष आसूचना शाखा, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
2. श्री करीं वेंकटेश्वर राव, संयुक्त निदेशक, आन्ध्र प्रदेश पुलिस अकादमी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
3. श्री तंबालापल्ली रविकुमार मूर्ति, पुलिस अधीक्षक, राजमुंदरी, आन्ध्र प्रदेश।
4. श्री एच.सत्यनारायण राव, कमांडेंट, 10वीं बटालियन, एपीएसपी बीछपल्ली, महबूबनगर, आन्ध्र प्रदेश।
5. श्री गूडूरी वेंकट सत्यनारायण मूर्ति, अपर पुंलिस अधीक्षक, सीआई सेल, आसूचना, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
6. श्री वासुपल्ली भीमा राव, प्रमुख विधि अनुदेशक (डीएसपी), पीटीसी विजयनगरम, आन्ध्र प्रदेश।
7. श्री प्यारसानी मुरली, उप पुलिस अधीक्षक, आसूचना, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
8. श्री पोलामूरी राजीव कुमार, उप पुलिस अधीक्षक, आसूचना सुरक्षा विंग, खैरताबाद, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
9. श्री धूलिपल्ला श्रीनिवास राव, उप पुलिस अधीक्षक (एआर), विशेष आसूचना शाखा, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
10. श्री मोडुगा नागेश्वर राव, उप पुलिस अधीक्षक, सीआई सेल, आसूचना, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
11. श्री मूताकोडूरु चन्द्रशेखर, उप पुलिस अधीक्षक, सीआई सेल, आसूचना, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
12. श्री दिंताकुर्ती नाग महेश, सहायक पुलिस आयुक्त, पूर्वी सब-डिवीजन, विशाखापट्टनम सिटी, आन्ध्र प्रदेश।
13. श्री कोलुकुलूरी रंगा राजु, सहायक पुलिस आयुक्त, मधुरवाडा सब-डिवीजन, विशाखापट्टनम, आन्ध्र प्रदेश।
14. श्री चेन्ना राजा, उप पुलिस अधीक्षक, ओक्टोपस शांति नीलयम, ग्रीनलैन्ड्स, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
15. श्री वंगा सुब्बा रेड्डी, उप पुलिस अधीक्षक, सतर्कता एवं प्रवर्तन, ओंगले, प्रकाशम जिला, आन्ध्र प्रदेश।
16. श्री थिरुवायीपति आंजनेयुलु, पुलिस निरीक्षक, जिला विशेष शाखा, अनंतपुरम, आन्ध्र प्रदेश।
17. श्री मो॰ अब्दुल अज़ीज़, उप-निरीक्षक (सी), एमसीसी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
18. श्री पाटन सिराजुद्दीन, सहायक उप निरीक्षक, जिला अपराध रिकार्ड ब्यूरो, जिला वाईएसआर, कड्डपा, आन्ध्र प्रदेश।
19. श्री मुद्दुलूरु प्रभाकर राजु, सहायक उप निरीक्षक, आसूचना, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
20. श्री पटनाला मुरली कृष्ण, सहायक उप निरीक्षक, IV टाउन ट्रैफिक पुलिस स्टेशन, विशाखापट्टनम सिटी, आन्ध्र प्रदेश।
21. श्री केता ईश्वर राव, एआरएसआई, 6वीं बटालियन, एपीएसपी, मंगलागिरि, गुंटुर, आन्ध्र प्रदेश।
22. श्री जक्कुला राम चन्द्रम, एआरएसआई, पीटीसी करीमनगर, आन्ध्र प्रदेश।
23. श्री एम.ए. रफ़ीक़, हेड कांस्टेबल (एआर), वारंगल, आन्ध्र प्रदेश।
24. श्री जक्कम हेनरी सेमुएल थ्यागराज, हेड कांस्टेबल, आसूचना विभाग, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
25. श्री मो॰ अब्दुल जब्बार, हेड कांस्टेबल, सीआई सेल, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
26. श्री मुनगाला केशव राव, हेड कांस्टेबल, पीटीओ, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश।
27. श्री विनय कान्त मिश्र, कमांडेंट, द्वितीय एएपी बटालियन, आलो, अरुणाचल प्रदेश।

28. श्री रिन्चिन चोवाङ बोदै, निरीक्षक, एसबी पुलिस मुख्यालय, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश।
29. श्री आनंद रॉय, उप निरीक्षक, पीएस इटानगर, अरुणाचल प्रदेश।
30. श्री बिजय कृष्णा रामीशेट्टी, उप पुलिस महानिरीक्षक, तेजपुर, असम (मरणोपरांत)।
31. श्री श्यामल प्रसाद सेइकीया, पुलिस अधीक्षक, आसूचना एवं भ्रष्टाचार-रोधी, रुपनगर गुवाहाटी, असम।
32. श्री प्रदिप रंजन कर, पुलिस अधीक्षक, नलबारी, असम।
33. श्री विवेकानन्द दास, पुलिस अधीक्षक, विशेष शाखा (आंचलिक), काहिलीपाडा, गुवाहाटी, असम।
34. सुश्री बन्या गोगोई, पुलिस अधीक्षक, विशेष शाखा मुख्यालय, काहिलीपाड़ा, गुवाहाटी, असम।
35. श्रीमती नन्दीनी डेका, उप पुलिस अधीक्षक, आसूचना एवं भ्रष्टाचार-रोधी, गुवाहाटी, असम।
36. श्री फनीधर बसुमतारी, उप निरीक्षक, विशेष शाखा, काहिलीपाड़ा, गुवाहाटी, असम।
37. श्री राजीव हजारीका, उप निरीक्षक (एबी), पुलिस प्रशिक्षण कालेज, डेरगांव, गोलाघाट, असम।
38. श्री दीगन्त दत्त, सहायक उप निरीक्षक (आपरेटर) एपीआरओ, पीआर स्टेशन, कोहारा, गोलाघाट, असम।
39. श्री मोनू राम सइकीया, हेड कांस्टेबल (यूबी), दीमा हसाओ डीईएफ, असम।
40. श्री जगमोहन सिंह वट्टी, कमांडेंट, जिला जगदलपुर, छत्तीसगढ़।
41. श्री कन्हैया लाल ध्रुव, पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ मुख्यालय, बाघेरा, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़।
42. श्री टेलेस्फोर एक्का, पुलिस अधीक्षक, पीटीएस, राजनंदगांव, छत्तीसगढ़।
43. श्री सुशील कुमार थापा, निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
44. श्रीमती कीर्ति कश्यप, निरीक्षक, पुलिस नियंत्रण कक्ष मुख्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
45. श्री शेख अब्दुल, उप निरीक्षक, एसआईबी पुलिस मुख्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
46. श्री रमेश कुमार तिवारी, प्लाटून कमांडर, प्रथम बटालियन, भिलाई, छत्तीसगढ़।
47. श्री जाकिर अली, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस अकादमी, चांदखुरी, रायपुर, छत्तीसगढ़।
48. श्री जयकृष्ण तिवारी, कांस्टेबल, एस.पी. कार्यालय (रेलवे) रायपुर, छत्तीसगढ़।
49. श्री प्रवीण बक्षी, सुबेदार (एम), एसबी पुलिस मुख्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
50. श्री भैरों सिंह गुर्जर, उप पुलिस आयुक्त, सुरक्षा, विनय मार्ग, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
51. श्री शंक धर मिश्रा, अपर पुलिस आयुक्त, आर्थिक अपराध विंग, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
52. श्री जगजीत सिंह देसवाल, पुलिस आयुक्त के स्टाफ अधिकारी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
53. श्री शरत कुमार सिन्हा, उप पुलिस आयुक्त, ट्रैफिक (डब्ल्यू आर) एवं चुनाव सेल, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
54. श्री संदीप ब्याला, सहायक पुलिस आयुक्त, उत्तरी रेंज, विशेष सेल, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
55. श्री दीवान चन्द शर्मा, निरीक्षक (ईएक्सई) प्रथम बटालियन डीएपी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
56. श्री सत्यवीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त, दक्षिणी रेंज, विशेष सेल, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
57. श्री महेश कुमार थोलिया, सहायक पुलिस आयुक्त, आर्थिक अपराध विंग/अपराध शाखा, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
58. श्री नरेन्द्र कुमार बिष्ट, सहायक पुलिस आयुक्त, केन्द्रीय जिला ट्रैफिक, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
59. श्री प्रवीन कुमार, निरीक्षक, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
60. श्री मातादीन, उप निरीक्षक, द्वितीय बटालियन, डीएपी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
61. श्रीमती दुर्गा कपरी, उप निरीक्षक, पुलिस नियंत्रण कक्ष, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
62. श्री सज्जन कुमार, उप निरीक्षक (एमआईएन), तृतीय बटालियन डीएपी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
63. श्री सत्यवान, उप निरीक्षक (पर्यवेक्षक/आपरेशन), संचार यूनिट, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
64. श्री रामबीर सिंह, कांस्टेबल, आर्मरर, इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा यूनिट, नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
65. श्री ब्रह्म सिंह, पुलिस अधीक्षक, पुलिस मुख्यालय, सीआईडी/एसबी, पणजी, गोवा।
66. श्री कवेती लक्ष्मीनारायन राव, संयुक्त पुलिस आयुक्त, राजकोट सिटी, गुजरात।
67. श्री राजेन्द्र जोटंगीया, उप पुलिस महानिरीक्षक, अपराध अन्वेषण विभाग (अपराध), गांधीनगर, गुजरात।
68. श्री प्रफुल्ल कुमार रौशन, उप पुलिस महानिरीक्षक, आसूचना ब्यूरो, गांधीनगर, गुजरात।
69. श्री राजीव रंजन भगत, उप पुलिस महानिरीक्षक, गांधीनगर, गुजरात।
70. श्री बहादुर सिंह सिसोदिया, निरस्त्र पुलिस उप निरीक्षक, आतंकवाद-रोधी स्क्वॉड, अहमदाबाद, गुजरात।
71. श्री जुवानसिंह प्रतापसिंह परमार, निरस्त्र पुलिस उप निरीक्षक, वापी, जीआईडीसी पुलिस स्टेशन, वलसाड, गुजरात।
72. श्री साजिद बिलालभाई मुलतानी, आसूचना अधिकारी, सूरत क्षेत्र, गुजरात।

73. श्री विशालभाई चौहान, आसूचना अधिकारी, गांधीनगर क्षेत्र, गुजरात।
74. श्री लालजीभाई चावड़ा, निरस्त्र सहायक उप निरीक्षक, स्थानीय अपराध शाखा, आनंद, गुजरात।
75. श्री रमेशचन्द्र परसोतमदास पटेल, निरस्त्र पुलिस हेड कांस्टेबल, स्पेशल आपरेशन ग्रुप, भरुच, गुजरात।
76. श्री बाबुभाई चौहान, सहायक आसूचना अधिकारी, गांधीनगर, गुजरात।
77. श्री महेशभाई जगजीवनभाई जानी, सशस्त्र पुलिस कांस्टेबल, स्थानीय अपराध शाखा, राजकोट ग्रामीण जिला, गुजरात।
78. श्री जयदीपभाई केशवलाल रावल, सशस्त्र पुलिस कांस्टेबल, कम्प्यूटर सेल, स्थानीय अपराध शाखा, सुरेन्द्र नगर, गुजरात।
79. श्री जयंतीलाल धनजीभाई डामोर, सशस्त्र पुलिस कांस्टैबल, मोरबी तालुका पुलिस, मोरबी, गुजरात।
80. श्री महेबुब दादुभाई मोगल, ड्राइवर पुलिस कांस्टेबल, राजकोट ग्रामीण जिला, गुजरात।
81. श्री परमार रमेशभाई डाहयाभाई, सशस्त्र पुलिस कांस्टेबल, एसआरपीएफ जीआरआई बडोदरा, गुजरात।
82. श्री कुलदीप सिंह, पुलिस अधीक्षक, कैथल, हरियाणा।
83. श्री बलबीर सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, झज्जर, हरियाणा।
84. श्री दलबीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त, डीएलएफ गुडगांव, हरियाणा।
85. श्री लाल सिंह, निरीक्षक, प्रभारी कैदी एस्कार्ट गार्ड, रेवाड़ी, हरियाणा।
86. श्री देवेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक, गुड़गांव, हरियाणा।
87. श्री बल राज सिंह, उप निरीक्षक, चंडीगढ़, हरियाणा।
88. श्री राम करन, उप निरीक्षक, कमांडो प्रशिक्षण केन्द्र, पंचकुला, हरियाणा।
89. श्री सुरेन्द्र सिंह, उप निरीक्षक, फरीदाबाद, हरियाणा।
90. श्री जगबीर सिंह, ओरआरपी/उप निरीक्षक, चंडीगढ़, हरियाणा।
91. श्री भजन देव नेगी, उप पुलिस अधीक्षक, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
92. श्रीमती पुष्पा ठाकुर, सहायक उप निरीक्षक, आरएंडटी, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
93. श्री चुंग राम, हेड कांस्टेबल, सीआईडी, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
94. श्री टी. पचुंक, पुलिस महानिरीक्षक, एचजी/सीडी/एसडीआरएफ, जम्मू एवं कश्मीर।
95. श्रीमती सविता परिहार, पुलिस अधीक्षक, एडीजे/क्यूएम, आईआरपी 19वीं बटालियन कथुआ, जम्मू एवं कश्मीर।
96. श्री परशोतम लाल शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक, पीसीआर जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर।
97. श्री अब्दुल वाहिद गिरी, उप पुलिस अधीक्षक (अपराध), जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर।
98. श्री हामीद हुसैन चौधरी, उप पुलिस अधीक्षक, मुख्यालय, रजौरी, जम्मू एवं कश्मीर।
99. श्री मुशताक अहमद वानी, उप पुलिस अधीक्षक, डीएआर पुलवामा, जम्मू एवं कश्मीर।
100. श्री राजेन्द्र सिंह राही, उप पुलिस अधीक्षक, डीएआर, गंदेरबल, जम्मू एवं कश्मीर।
101. श्री मुहम्मद अयजाज वट्ट, उप पुलिस अधीक्षक, आईआरपी, 10वीं बटालियन, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर।
102. श्री लियाकत अहमद कादरी, उप पुलिस अधीक्षक, एपीएचक्यू, जम्मू एवं कश्मीर।
103. श्री फारुक अहमद वट्ट, निरीक्षक (एस), पुलिस मुख्यालय, जम्मू एवं कश्मीर।
104. श्री पवन कुमार गुप्ता, निरीक्षक (एम), पुलिस मुख्यालय, जम्मू एवं कश्मीर।
105. श्री गुलाम नवी राथर, उप निरीक्षक, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर।
106. श्री लाल वट्ट, उप निरीक्षक, आईआरपी 18वीं, बांदीपुरा, जम्मू एवं कश्मीर।
107. श्री फारुक अहमद वट्ट, सहायक उप निरीक्षक, अवंतीपुरा, जम्मू एवं कश्मीर।
108. श्री वुआ दित्ता, सहायक उप निरीक्षक, एसकेपीए, उधमपुर, जम्मू एवं कश्मीर।
109. श्री करनैल सिंह, सहायक उप निरीक्षक, डीपीएल, पुलवामा, जम्मू एवं कश्मीर।
110. श्री जफ़रउल्ला मीर, सहायक उप निरीक्षक, एसओजी, रफियाबाद, बारामुल्ला, जम्मू एवं कश्मीर।
111. श्री अब्दुल सलाम वट्ट, हेड कांस्टेबल, सतर्कता संगठन, जम्मू एवं कश्मीर।
112. श्री मुहम्मद रफीक़ वगये, हेड कांस्टेबल, आईआरपी 14वीं, जम्मू एवं कश्मीर।
113. श्री निरंजन प्रसाद, पुलिस अधीक्षक (संस्थापना), विशेष शाखा, रांची, झारखंड।
114. श्री शंकर प्रसाद झा, निरीक्षक, सीआईडी, रांची, झारखंड।
115. श्री सतीश कुमार गुरूंग, उप पुलिस निरीक्षक (स्टेनो), सीआईडी, रांची, झारखंड।
116. श्री फूल मोहम्मद खाँ, हवलदार, सीआईडी, रांची, झारखंड।
117. श्री प्रमोद कुमार, कांस्टेबल, सीआईडी, रांची, झारखंड।

118. श्री जगदीश चन्द्र पाठ पिंगुआ, निरीक्षक (आर्मरर) एसटीएफ, धुर्वा, रांची, झारखंड।
119. श्री रविन्द्र पाण्डेय, उप निरीक्षक (आर्मरर), एसटीएफ, धुर्वा, रांची, झारखंड।
120. श्री मदन जी, एएसआई, एसटीएफ, धुर्वा, रांची, झारखंड।
121. श्री अजीत कुमार भारती, हवलदार (आर्मरर) एसटीएफ, धुर्वा, रांची, झारखंड।
122. श्री टुनटुन कुमार, कांस्टेबल, एसटीएफ, धुर्वा, रांची, झारखंड।
123. श्री अरुण कुमार चौधरी, उप निरीक्षक (आर्मरर) जेएपी 04, बोकारो, झारखंड।
124. श्री बैधनाथ मिश्रा, एएसआई, धनबाद, झारखंड।
125. श्री एस. रवि, संयुक्त पुलिस आयुक्त, कानून और व्यवस्था, पश्चिम बंगलौर सिटी, कर्नाटक।
126. श्री सदानंद एस नायक, पुलिस अधीक्षक, राज्य आसूचना, बंगलौर, कर्नाटक।
127. श्री वी. श्रीधर, उप पुलिस अधीक्षक, तुम्कुर सब-डिवजीन, तुम्कुर जिला, कर्नाटक।
128. श्री टी.एस. मुरगन्नावर, उप पुलिस अधीक्षक, बेल्लारी सिटी सब-डिवीजन, बेल्लारी, कर्नाटक।
129. श्री बी.एन. शमन्ना, उप पुलिस अधीक्षक, सीआईडी वन प्रकोष्ठ, बंगलौर, कर्नाटक।
130. श्री वाई. नागराजु, उप पुलिस अधीक्षक, सीआईडी मुख्यालय, बंगलौर, कर्नाटक।
131. श्री डी. शिवानंदप्पा, सहायक कमांडेंट, 9वीं बटालियन, केएसआरपी, बंगलौर, कर्नाटक।
132. श्री के. रामचन्द्र, पुलिस निरीक्षक, राज्य आसूचना, बंगलौर, कर्नाटक।
133. श्री ए.एम. मोहन राव, सहायक उप पुलिस निरीक्षक, बासवानाहल्ली पुलिस स्टेशन, चिकमंगलौर जिला, कर्नाटक।
134. श्री शिवशरणप्पा, सहायक उप पुलिस निरीक्षक, डीएसबी यूनिट, गुलबर्ग, कर्नाटक।
135. श्री एम.एस. सुब्बन्ना, एआरएसआई, सिटी आर्म्ड रिजर्व पुलिस, मैसूर, कर्नाटक।
136. श्री अजीम अहमद, हेड कांस्टेबल, आरटी नगर पुलिस स्टेशन, बंगलौर सिटी, कर्नाटक।
137. श्री आर. रामाकृष्णा, सशस्त्र पुलिस हेड कांस्टेबल, बंगलौर, कर्नाटक।
138. श्री दनम, सिविल हेड कांस्टेबल, ग्रामीण पुलिस स्टेशन, भद्रावती, कर्नाटक।
139. श्री देवाराजे गौड़ा के.पी., सशस्त्र हेड कांस्टेबल, जिला सशस्त्र रिजर्व, चिकमंगलौर जिला, कर्नाटक।
140. श्री डी.एम. चौड़े गौड़ा, हेड कांस्टेबल, तीसरी बटालियन केएसआरपी, बंगलौर, कर्नाटक।
141. श्री एस. सुंदर शेट्टी, हेड कांस्टेबल, 7वीं बटालियन केएसआरपी, मंगलौर, कर्नाटक।
142. श्री हत्तिबेल्गल वेंकटेश, पुलिस उप महानिरीक्षक एवं आयुक्त, तिरुवनंतपुरम सिटी, केरल।
143. श्री अम्मोस माम्मेन, सहायक पुलिस आयुक्त, डीसीआरबी, कोच्चि सिटी, केरल।
144. श्री पी.के. विजयप्पन, उप पुलिस अधीक्षक, जिला विशेष शाखा, अलापूझा, केरल।
145. श्री फ्रांसिस पेरेरा, उप पुलिस निरीक्षक, साइबर क्राइम इंक्वायरी सेल, कोच्चि सिटी, केरल।
146. श्री रतीष कृष्णन, उप पुलिस अधीक्षक, सतर्कता एवं भ्रष्टाचार-रोधी ब्यूरो, मटोम, तोडुपूजा, इदुक्की, केरल।
147. श्री ए. सतिकुमार, सहायक उप निरीक्षक, सतर्कता एवं भ्रष्टाचार-रोधी ब्यूरो, दक्षिणी रेंज, तिरुवनंतपुरम, केरल।
148. श्री रुप सिंह मीना, पुलिस महानिरीक्षक (विशेष सशस्त्र बल) ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
149. श्री इन्दुप्रकाश अरजरिया, पुलिस अधीक्षक, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश।
150. श्री राजेश हिंगणकर, पुलिस अधीक्षक, कटनी, मध्य प्रदेश।
151. श्री अंशुमान सिंह, पुलिस अधीक्षक (दक्षिण) भोपाल, मध्य प्रदेश।
152. श्री मिथलेश कुमार शुक्ला, ए.आई.जी. जबलपुर, मध्य प्रदेश।
153. श्री भरत सिंह यादव, सहायक कमांडेंट, 7वीं बटालियन, विशेष सशस्त्र बल, भोपाल, मध्य प्रदेश।
154. श्री राबर्ट अन्थोनी, सहायक उप निरीक्षक, सी.पी.एम.टी. वर्कशाप, भोपाल, मध्य प्रदेश।
155. श्री टेक सिंह बिष्ट, हैड कांस्टेबल, द्वितीय बटालियन, विशेष सशस्त्र बल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
156. श्री इकबाल खान, हैड कांस्टेबल (विशेष सशस्त्र स्थापना), लोकायुक्त कार्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।
157. श्री हिम बहादुर, हेड कांस्टेबल, आर्थिक अपराध शाखा, भोपाल, मध्य प्रदेश।
158. श्रीमती मधु सक्सेना, कांस्टेबल, भिण्ड, मध्य प्रदेश।
159. श्री बृज किशोर दुबे, कांस्टेबल, रुस्तमजी सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण कालेज, इंदौर, मध्य प्रदेश।
160. श्री महेश कुमार खरे, निरीक्षक (एम) सागर, मध्य प्रदेश।
161. श्री शमशुद्दीन, निरीक्षक (एम)/स्टेनो, राजगढ़, मध्य प्रदेश।
162. श्री विनोद अष्टपुत्रे, निरीक्षक (एम), चम्बल जोन, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।

163. श्रीमती मीरा ठाकुर, सूबेदार-एम, आर्थिक अपराध शाखा, इंदौर, मध्य प्रदेश।
164. डा. प्रज्ञा एन सरवदे, विशेष पुलिस महानिरीक्षक, सतर्कता अधिकारी, सिडको, नवी मुम्बई, महाराष्ट्र।
165. श्री कृष्ण प्रकाश, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, दक्षिण क्षेत्र, मुम्बई, महाराष्ट्र।
166. श्री प्रकाश प्रभाकरराव मुत्याळ, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, उत्तरी क्षेत्र, पुणे सिटी, महाराष्ट्र।
167. श्री काळूराम सिताराम धांडेकर, निरीक्षक, जोदभावी पुलिस स्टेशन, शोलापुर, महाराष्ट्र।
168. श्री विलास हणमंत जगदाळे, निरीक्षक, सिद थाने, महाराष्ट्र।
169. श्री पंडीत रघुनाथ राठोड, रिजर्वड पुलिस निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, परभानी, महाराष्ट्र।
170. श्री रघुनाथ विठ्ठल फुगे, वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक, क्राइम ब्रांच, पुणे, महाराष्ट्र।
171. श्री रमेश ज्ञानदेव वराडे, उप निरीक्षक, नाबापुर पुलिस स्टेशन, नन्दूरबार, महाराष्ट्र।
172. श्री शामराव गणू तुरंबेकर, उप निरीक्षक, दिघी कॉस्टल पुलिस स्टेशन, रायगढ़, महाराष्ट्र।
173. श्री विनोद शामराव अंबरकर, वायरलेस पुलिस उप निरीक्षक, वायरलेस नासिक सिटी, महाराष्ट्र।
174. श्री पंढरी शेषराव मरकंटे, सहायक उप निरीक्षक, लोकल क्राइम ब्रांच, परभानी, महाराष्ट्र।
175. श्री अर्जुन नाना सुतार, सहायक उप निरीक्षक, एम.आर.ए. मार्ग पुलिस स्टेशन, मुम्बई, महाराष्ट्र।
176. श्री भानुदास हरी कदम, सहायक उप निरीक्षक, स्पेशल ब्रांच (आई) अपराध अन्वेषण विभाग, मुम्बई, महाराष्ट्र।
177. श्री जयचंद भिका गौतम, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ. जी.आर-IV, नागपुर, महाराष्ट्र।
178. श्री मंचक सागरराव बचाटे, सहायक उप निरीक्षक, यातयात ब्रांच, परभनी, महाराष्ट्र।
179. श्री ज्ञानेश्वर रामभाऊ भूमकर, सहायक उप निरीक्षक, मालाबार हिल पुलिस स्टेशन, मुम्बई, महाराष्ट्र।
180. श्री निना विष्णू नारखेडे, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ. जी.आर-XIII, नागपुर, महाराष्ट्र।
181. श्री प्रकाश दत्ता सावंत, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ. जी.आर-II, पुणे, महाराष्ट्र।
182. श्री अरुण केशव मोरे, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-IV, नागपुर, महाराष्ट्र।
183. श्री आनंद पांडुरंग चोरगे, सहायक उप निरीक्षक, जुहू पुलिस स्टेशन, मुम्बई, महाराष्ट्र।
184. श्री शंकर लक्ष्मणराव देवकर, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस नियंत्रण कक्ष, हिंगोली, महाराष्ट्र।
185. श्री काशिनाथ गोविंदा जाधव, सहायक उप निरीक्षक, अंगुली छाप ब्यूरो, नन्दूरबार, महाराष्ट्र।
186. श्री बाळू कोंडीबा म्हस्के, सहायक उप निरीक्षक, शिल दाएघर पुलिस स्टेशन, थाने, महाराष्ट्र।
187. श्री राहुल गोविंद सोनवणे, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-I, पुणे, महाराष्ट्र।
188. श्री परशुराम रामा राणे, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, थाने सिटी, महाराष्ट्र।
189. श्री चन्द्रकांत कृष्णा शिंदे, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, सतारा, महाराष्ट्र।
190. श्री डेवीड फिलीप लोबो, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-II, पुणे, महाराष्ट्र।
191. श्री दत्तात्रय विठठल जाधव, सहायक उप निरीक्षक, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, मुम्बई, महाराष्ट्र।
192. श्री संभाजी पांडुरंग कुंभार, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, सांगली, महाराष्ट्र।
193. श्री मुश्ताक अली महंमद अली, सहायक उप निरीक्षक, विशेष शाखा, अकोला, महाराष्ट्र।
194. श्री सुरेश उध्दव पाटील, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, शोलापुर, महाराष्ट्र।
195. श्री बब्रुवान केशवराव माने, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-I, पुणे, महाराष्ट्र।
196. श्री अशोक मोरु भोगण, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-II, पुणे, महाराष्ट्र।
197. श्री जयसिंग शंकर घाडगे, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-II, पुणे, महाराष्ट्र।
198. श्री सोपान किसन गोल्हार, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-V, दौन्द, महाराष्ट्र।
199. श्री बालकृष्ण नारायण देसाई, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-VII, दौन्द, महाराष्ट्र।
200. श्री राजेंद्र मनोहर अवताडे, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.आर.पी.एफ., जी.आर-IX, अमरावती, महाराष्ट्र।
201. श्री हेमंतकुमार भागवतसहाय पांडे, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र।
202. श्री किशोर चिमनराव बोरसे, आसूचना अधिकारी, एसआईडी, मालेगांव, महाराष्ट्र।
203. श्री उदय जोगी गांवकर, सशस्त्र हैड कांस्टेबल, एसआरपीएफ, जीआर-I, पुणे, महराष्ट्र।
204. श्री राजाराम गोविंदराव सुर्वे, हैड कांस्टेबल, एटीएस, पुणे, महाराष्ट्र।
205. श्री करुं नन्दो कोम, हवलदार, दूसरी बटालियन, मणिपुर राइफ्लज, इम्फाल, मणिपुर।
206. श्री हिदांमयुम रामेश्वर शर्मा, निरीक्षक, जिला इम्फाल पश्चिमी, मणिपुर।
207. श्री सगोलशेम ब्रोजेन्द्रो सिंह, कांस्टेबल, अपराध शाखा, अपराध अन्वेषण विभाग, इम्फाल, मणिपुर।

208. मोहम्मद फेरोज खान, कमांडेंट, छठी इंडिया रिजर्व बटालियन, पैगंई, इम्फाल पूर्व, मणिपुर।
209. श्री कीयांसु अंथोनी, उप निरीक्षक, जिला तामेनलांग, मणिपुर।
210. श्री अच्छे कुमार प्रधान, हवलदार, दूसरी बटालियन, मणिपुर राइफल, इम्फाल, मणिपुर।
211. श्री कुलेन्द्रा आर. संगमा, उप निरीक्षक, बागमारा पुलिस रिजर्व, साऊथ गारो हिल्स, मेघालय।
212. श्री बोखराव सोंगथीयाँग, निरस्त्र कांस्टेबल, विशेष सेल, पूर्वी खासी हिल्स, शिलांग, मेघालय।
213. श्री बी. ललहाँकलियना, निरीक्षक, भ्रष्टाचार रोधी ब्यूरो, आईजॉल, मिजोरम।
214. श्री ललरिनओमा, सहायक उप निरीक्षक (प्रचालक) तकनीकी स्टोर, खातला, आईजॉल, मिजोरम।
215. श्री टी. चुमरेन्थंग, पुलिस अधीक्षक, ज़ुनहेबोटो, नागालैण्ड।
216. श्री सेनपेमो कीकोन, उप पुलिस अधीक्षक, दीमापुर, नागालैंड।
217. श्री सशिकोकबा, यूबीएसआई, डीईएफ, मकोकचंग, नागालैंड।
218. श्री शेकुतो सेमा, हवलदार, डीईएफ, कोहिमा, नागालैंड।
219. श्री देवदत्त सुरेश सिंह, उप पुलिस महानिरीक्षक, प्रचालन, भुवनेश्वर, ओडिशा।
220. श्री नारायण दोरा, डिप्टी कमांडेंट, ओ.एस.ए.पी., पहली बटालियन, धनकेनाल, ओडिशा।
221. श्री त्रीनाथ पटेल, उप पुलिस अधीक्षक, भुवनेश्वर सतर्कता प्रभाग, भुवनेश्वर, ओडिशा।
222. श्री उमा शंकर पण्डा, पुलिस निरीक्षक, विशेष आसूचना विंग, भुवनेश्वर, ओडिशा।
223. श्री सुबोध चन्द्र रणा, फिटर पुलिस निरीक्षक, पुलिस मोटर यातायात, कटक, ओडिशा।
224. श्री निरोद कुमार दास, उप पुलिस निरीक्षक, बारागढ़, ओडिशा।
225. श्री किशोर कुमार नायक, एएसआई, सीआईडी, सीबी, कटक, ओडिशा।
226. श्री बिजय कुमार पाणिग्राही, हवलदार, ओ.एस.ए.पी., 7वीं बटालियन, भुवनेश्वर, ओडिशा।
227. श्री अक्षय कुमार महन्त, सिपाही, ओ.एस.ए.पी., चौथी बटालियन, राऊरकेला, ओडिशा।
228. श्री नब किशोर देहुरी, कांस्टेबल, पुलिस ट्रेनिंग कालेज, अनगुल, ओडिशा।
229. श्री भावग्राही त्रीपाठी, कांस्टेबल, सतर्कता निदेशालय, कटक, ओडिशा।
230. श्री खूबी राम, पुलिस महानिरीक्षक, सुरक्षा, चण्डीगढ़, पंजाब।
231. श्री कुंवर विजय प्रताप सिंह, उप पुलिस महानिरीक्षक एवं पुलिस आयुक्त, जालंधर, पंजाब।
232. श्री सुरिन्दरपाल सिंह परमार, उप महानिरीक्षक एवं संयुक्त निदेशक, एमआरएस, पीपीए, फिलौर, पंजाब।
233. श्री हरचरण सिंह भुल्लर, पुलिस अधीक्षक एवं कमांडेंट, चौथी कमाण्डो बटालियन, एसएएस नगर, मोहाली, पंजाब।
234. श्री गुरमीत सिंह चौहान, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, फतेहगढ़ साहिब, पंजाब।
235. श्री स्वर्णदीप सिंह, पुलिस अधीक्षक, सिटी-I, एसएएस नगर मोहाली, पंजाब।
236. श्री बलविंदर सिंह, कमांडेंट, 82वीं पीएपी, चंडीगढ़, पंजाब।
237. श्री सिमरत पाल सिंह ढीडंसा, एआईजी, सीआई, प्रचालन, चंडीगढ़, पंजाब।
238. श्री जोबन सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, सीआईडी यूनिट एसएएस नगर, मोहली, पंजाब।
239. श्री गुरविंदर सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, (सीएण्डआर), एसीपी साउथ, अमृतसर, पंजाब।
240. श्री लखबीर सिंह, निरीक्षक (एलआर), एसएचओ सिटी, तरन-तारन, पंजाब।
241. श्री दर्शन सिंह, निरीक्षक, पीआरटीसी, जहानखेलन, पंजाब।
242. श्री सुच्चा सिंह, उप निरीक्षक, पीआरटीसी, जहानखेलन, पंजाब।
243. श्री कुलवंत सिंह, सहायक उप निरीक्षक, सिटी ट्रैफिक, लुधियाना, पंजाब।
244. श्री बिपिन कुमार पाण्डेय, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध), पुलिस आयुक्तालय, जयपुर, राजस्थान।
245. श्री राजेन्द्र सिंह, कमाण्डेंट, दूसरी बटालियन, आरएसी, कोटा, राजस्थान।
246. श्री जय नारायण, पुलिस अधीक्षक, पाली, राजस्थान।
247. श्री महावीर सिंह, अतिरिक्त उप पुलिस आयुक्त, पुलिस लाइन आयुक्तालय, जयपुर, राजस्थान।
248. श्री प्रकाश सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर, राजस्थान।
249. श्री हरि नारायण, पुलिस निरीक्षक, भ्रष्टाचार-रोधी ब्यूरो, जयपुर, राजस्थान।
250. श्री रामकिशन, प्लाटून कमाण्डर, 5वीं बटालियन, आरएसी, घाटगेट, जयपुर, राजस्थान।
251. श्री निहाल सिंह, पुलिस उप निरीक्षक, पुलिस स्टेशन मनोहरपुर, जयपुर ग्रामीण, राजस्थान।
252. श्री नानू सिंह, सहायक उप निरीक्षक, पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, झुनझुनू, राजस्थान।

253. श्री अशोक कुमार वैष्णव, हैड कांस्टेबल, पुलिस स्टेशन निम्बाहेरा, चितौड़गढ़, राजस्थान।
254. श्री सोहन लाल, हैड कांस्टेबल, पुलिस स्टेशन चोपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर, राजस्थान।
255. श्री सुखदेव प्रसाद, हैड कांस्टेबल, 8वीं बटालियन, आरएसी (आईआर), राजस्थान।
256. श्री जय सिंह, हैड कांस्टेबल, 5वीं बटालियन, आरएसी, घाटगेट, जयपुर, राजस्थान।
257. श्री कृष्ण कुमार शर्मा, कांस्टेबल, सीआईडी (सीवी), जयपुर, राजस्थान।
258. श्री फत्तू सिंह, कांस्टेबल, चौथी बटालियन, आरएसी, चैनपुरा, जयपुर, राजस्थान।
259. श्री चन्द्र प्रकाश ढ़ोली, कांस्टेबल, पीएसजीआरपी अजमेर, राजस्थान।
260. श्रीमती उषा देवी छेत्री, हेड कांस्टेबल, अपराध अन्वेषण विभाग, पुलिस मुख्यालय, गंगटोक, सिक्किम।
261. श्री सी. ईश्वरमूर्ति, उप पुलिस महानिरीक्षक, सीबीआई, एसीबी, चेन्नई, तमिलनाडु।
262. श्री एन. राजशेखरन, उप पुलिस महानिरीक्षक, सशस्त्र पुलिस, चेन्नई, तमिलनाडु।
263. श्री पी. नागराजन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पुलिस भर्ती स्कूल, विल्लुपुरम, तमिलनाडु।
264. सुश्री पी.जी. सुनन्दा भागवती, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, क्यू ब्रांच, सीआईडी, तिरुनलवेली, तमिलनाडु।
265. श्री एस.एम. इलांगो, उप पुलिस अधीक्षक, करुर टाउन सब डिविजन, तमिलनाडु।
266. श्री एम. मणिवन्नन, सहायक पुलिस आयुक्त, आसूचना सेक्शन, सेलम सिटी, तमिलनाडु।
267. श्री पी. देवासिकमाणि, सहायक पुलिस आयुक्त, वाशरमेनपेट रेंज, चेन्नई, तमिलनाडु।
268. श्री के. गोपाल, उप पुलिस अधीक्षक, विशेष ब्रांच, सीआईडी मुख्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु।
269. श्री वी. चन्द्रन, उप पुलिस अधीक्षक, (केट-I) ओसीआईयू हैडक्वाटर, चेन्नई, तमिलनाडु।
270. सुश्री पी. अरुमुगम, उप पुलिस अधीक्षक, जिला अपराध शाखा, तंजावूर, तमिलनाडु।
271. श्री एन.बी. विजयकुमार, उप पुलिस अधीक्षक (केट-I) सुरक्षा शाखा सीआईडी, चेन्नई, तमिलनाडु।
272. श्री जे.वी. करुपुसामी, पुलिस निरीक्षक (स्थानीय) कोर सेल सीआईडी, चैन्नई, तमिलनाडु।
273. श्री पी. मणिकन्दकुमार, पुलिस निरीक्षक (टीएसपी) टीएसपी-IV बटालियन, क्वायपुदुर, तमिलनाडु।
274. श्री जे. ऑगस्टीन फ्रांसिस, पुलिस निरीक्षक (टीएसपी) टीएसपी-।।। बटालियन, वीरापुरम, तमिलनाडु।
275. श्री एस. देवादॉस, पुलिस निरीक्षक (टीएसपी), टीएसपी-VIII बटालियन, तमिलनाडु।
276. श्री एस. डेविड, उप पुलिस निरीक्षक, आर्मड रिजर्व, शिवगगंई, तमिलनाडु।
277. श्री एस. वेणुगोपाल, उप पुलिस निरीक्षक, (टीएसपी) टीएसपी-X बटालियन, उलुनदुरपेट, तमिलनाडु।
278. श्री पी. भास्करन, विशेष उप पुलिस निरीक्षक (स्थानीय) आर.के. नगर, पुलिस स्टेशन, चेन्नई, तमिलनाडु।
279. श्री जी. रामामूर्ति, विशेष उप पुलिस निरीक्षक, सतर्कता और भ्रष्टाचार रोधी, विशेष जांच सेल, चेन्नई, तमिलनाडु।
280. श्री बिधान देबबर्मा, कमाडेंट, 13वीं बटालियन, त्रिपुरा स्टेट राइफल्स, सुभाषनगर कंचनपुर, नार्थ त्रिपुरा, त्रिपुरा।
281. श्री सपन कुमार देबनाथ, उप निरीक्षक (निरस्त्र शाखा) अपराध सेक्शन, बेलोनिया, त्रिपुरा।
282. श्री अमुल्या पाल, सहायक उप निरीक्षक (निरस्त्र शाखा) साऊथ रेंज, अगरतला, त्रिपुरा।
283. श्री सान्तनु त्रिपुरा, कांस्टेबल, विशेष शाखा यूनिट, कुंजाबन अगरतला, त्रिपुरा।
284. श्री राजेन्द्र दत्ता, उप पुलिस अधीक्षक, वेस्ट त्रिपुरा, अगरतला, त्रिपुरा।
285. श्री जोगेश चन्द्र देबबर्मा, सूबेदार (जीडी) सुभाषनगर कंचनपुर, नार्थ त्रिपुरा, त्रिपुरा।
286. श्री के. सत्यनारायणा, उप महानिरीक्षक, मेरठ रेंज, उत्तर प्रदेश।
287. श्रीमती पदमजा चौहान, उप महानिरीक्षक, पीएसी सेक्टर, आगरा, उत्तर प्रदेश।
288. डा. तहसीलदार सिंह, पुलिस अधीक्षक, सीतापुर, उत्तर प्रदेश।
289. श्री अवधेश कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सिटी, झांसी, उत्तर प्रदेश।
290. श्री दयानन्द मिश्र, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, क्षेत्रीय आसूचना, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश।
291. श्री अखलाक अहमद खान, उप पुलिस अधीक्षक, कानपुर सिटी, उत्तर प्रदेश।
292. श्री भाई लाल, उप पुलिस अधीक्षक, जोनल आसूचना अधिकारी कानपुर सिटी, उत्तर प्रदेश।
293. श्री कोमल कुमार भल्ला, उप पुलिस अधीक्षक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश।
294. श्री देवेन्द्र सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, जिला अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
295. श्री रमाशंकर पाण्डेय, उप पुलिस अधीक्षक, पुलिस महानिरीक्षक का मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
296. श्री कैलाश नाथ सिंह, उप पुलिस अधीक्षक, देवरिया, उत्तर प्रदेश।
297. श्री चन्द्रपाल सिंह यादव, उप पुलिस अधीक्षक, बिजनौर, उत्तर प्रदेश।

298. श्री राम प्रकाश बाजपेई, उप पुलिस अधीक्षक, कानपुर सिटी, उत्तर प्रदेश।
299. श्री अनिल कुमार, उप पुलिस अधीक्षक, गौतम बुद्धनगर, उत्तर प्रदेश।
300. श्री रमेश चन्द्र, उप पुलिस अधीक्षक, आसूचना मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
301. श्री गुलाम अब्बास, निरीक्षक, सीबीसीआईडी लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
302. श्री राजाराम, निरीक्षक, बाराबंकी, उत्तर प्रदेश।
303. श्रीमती कमला मिश्रा, निरीक्षक, आईएनटी मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
304. श्री राम शब्द यादव, रेडियो निरीक्षक, रेडियो मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
305. श्री प्रमोद कुमार बाजपेयी, उप निरीक्षक (एम) पुलिस मुख्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
306. श्री राम नारायण सिंह, उप निरीक्षक (एम), पुलिस मुख्यालय का महानिदेशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
307. श्री हरिबंश सिंह, उप निरीक्षक (एम) सीबीसीआईडी लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
308. श्री जयपाल सिंह नेगी, उप निरीक्षक (एम)/स्टेनो, स्पेशल एन्क्वारी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
309. श्री राम रुप मिश्र, सहायक उप निरीक्षक (एम), चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।
310. श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उप निरीक्षक (एम), पुलिस मुख्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
311. श्री श्रीकान्त शुक्ला, उप निरीक्षक (एम)/स्टेनो, आईएनटी मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
312. श्री ज्ञान प्रकाश सक्सेना, उप निरीक्षक (एम)/स्टेनो, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।
313. श्री राम भजन, उप निरीक्षक (वी/एस), आईएनटी मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
314. श्री ठाकुर प्रसाद यादव, उप निरीक्षक (वी/एस) श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश।
315. श्री सैयद मोहम्मद जावेद, रेडियो उप निरीक्षक, रेडियो मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
316. श्री कौशल किशोर सिंह, उप निरीक्षक (वी/एस), तकनीकी सेवाएं लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
317. श्री ओमवीर सिंह, उप निरीक्षक (वी/एस), हाथरस, उत्तर प्रदेश।
318. श्री मोहम्मद सागर सिद्दीकी, प्लाटून कमाण्डर, दूसरी बटालियन पीएसी, सीतापुर, उत्तर प्रदेश।
319. श्री गंगा प्रसाद, उप निरीक्षक, (वी/एस), श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश।
320. श्री विष्णु प्रकाश श्रीवास्तव, उप निरीक्षक, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।
321. श्री रणजीत सिंह, हेड कांस्टेबल (वी/एस), 30वीं बटालियन, पीएसी गोण्डा, उत्तर प्रदेश।
322. श्री शेषपाल यादव, उप निरीक्षक (एमटी), रायबरेली, उत्तर प्रदेश।
323. श्री राधेश्याम, हेड कांस्टेबल, सेंन्ट्रल स्टोर कानुपर, उत्तर प्रदेश।
324. श्री जगदीश नारायण, हेड कांस्टेबल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
325. श्री हरि नारायण पाण्डेय, हेड कांस्टेबल, 37वीं बटालियन, पीएसी कानपुर, उत्तर प्रदेश।
326. श्री नत्थन लाल, हेड कांस्टेबल, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
327. श्री राधेश्याम, हेड कांस्टेबल, सुरक्षा शाखा, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
328. श्री सालिक राम, हेड कांस्टेबल (पी), 43वीं बटालियन, पीएसी एटा, उत्तर प्रदेश।
329. श्री राम अवतार, हेड कांस्टेबल, खीरी, उत्तर प्रदेश।
330. श्री कुन्ज बिहारी पाण्डेय, हेड कांस्टेबल, आईटीआई प्रशिक्षण मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
331. श्री भगवान दास, हेड कांस्टेबल, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश।
332. श्री शेषनाथ सिंह, हेड कांस्टेबल, मऊ, उत्तर प्रदेश।
333. श्री सत्य नारायण यादव, हेड कांस्टेबल, गोण्डा, उत्तर प्रदेश।
334. श्री बृजवासी राम साहनी, हेड कांस्टेबल, सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश।
335. श्री दशरथ प्रसाद, हेड कांस्टेबल (एमटी), उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती और पदोन्नति बोर्ड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
336. श्री नेत्रपाल सिंह, हेड कांस्टेबल, हाथरस, उत्तर प्रदेश।
337. श्री इस्तियाक मोहम्मद, हेड कांस्टेबल, इटावा, उत्तर प्रदेश।
338. श्री अरुण कुमार सिंह, हेड कांस्टेबल, एसीओ लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
339. श्री शिव शंकर पाण्डेय, हेड कांस्टेबल, 39वीं बटालियन, पीएसी मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश।
340. श्री सुरेन्द्र सिंह, हेड कांस्टेबल, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश।
341. श्री राजेन्द्र सिंह, हेड कांस्टेबल, एटीएस मुख्यालय, उत्तर प्रदेश।
342. श्री जगत नारायण मिश्र, हेड कांस्टेबल, 11वीं बटालियन, पीएसी सीतापुर, उत्तर प्रदेश।

343. श्री हसीन अहमद, हेड कांस्टेबल, बांदा, उत्तर प्रदेश।
344. श्री रुपराम, हेड कांस्टेबल, 49वीं बटालियन पीएसी गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।
345. श्री प्रमोद कुमार सचान, हेड कांस्टेबल, एसटीएफ मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
346. श्री अवनीश कुमार, हेड कांस्टेबल, 35वीं बटालियन पीएसी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
347. श्री रामदेव, हेड कांस्टेबल, 25वीं बटालियन पीएसी, रायबरेली, उत्तर प्रदेश।
348. श्री प्रेम स्वरुप, हेड ओपरेटर, रेडियो मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
349. श्री सुशील प्रताप मिश्र, हेड ओपरेटर, रेडियो मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
350. श्री परवेज जैदी, हेड ओपरेटर, रेडियो मुख्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
351. श्री राजेन्द्र सिंह गिल, हेड कांस्टेबल, 38वीं बटालियन पीएसी अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
352. श्री संतोष सिंह, कांस्टेबल ड्राईवर, मेरठ, उत्तर प्रदेश।
353. श्री अशोक कुमार तिवारी, कांस्टेबल ड्राईवर, एसआईटी लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
354. श्री राम बक्श, कांस्टेबल, उन्नाव, उत्तर प्रदेश।
355. श्री सुलेह सिंह, कांस्टेबल ड्राईवर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश।
356. श्री राम अधारे, कांस्टेबल, देवरिया, उत्तर प्रदेश।
357. श्री मुन्ना सिंह, कांस्टेबल सीपी, अमरोहा, उत्तर प्रदेश।
358. श्री उम्मेद सिंह बिष्ट, उप पुलिस अधीक्षक, जोनल अधिकारी, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।
359. श्री जगदीश चन्द्र यादव, उप पुलिस अधीक्षक, चमौली, उत्तराखंड।
360. श्री शेखर चन्द्र जोशी, उप पुलिस अधीक्षक (एम) पुलिस मुख्यालय, देहरादून, उत्तराखंड।
361. श्रीमती उर्मिला काजी, निरीक्षक (एम) आसूचना मुख्यालय, देहरादून, उत्तराखंड।
362. श्री कुलवान सिंह रावत, निरीक्षक (आसूचना), आसूचना मुख्यालय, देहरादून, उत्तराखंड।
363. श्री राजेन्द्र प्रसाद, हैड कांस्टेबल, 46वीं बटालियन पीएसी, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड।
364. श्री रविन्दर जीत सिंह नलवा, पुलिस महानिदेशक और महाकमाण्डेंट, होम गार्डस, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
365. श्री नीरज कुमार सिंह, पुलिस महानिरीक्षक, अपराधी जाँच विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
366. डा. रंगास्वामी शिवाकुमार, पुलिस महानिरीक्षक, आईपीएस सेल, हावड़ा, पश्चिम बंगाल।
367. श्री प्रदीप कुमार दाम, सहायक पुलिस आयुक्त, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
368. श्री उल्लास चक्रवर्ती, सहायक पुलिस आयुक्त, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
369. श्री अरुण कुमार दे, पुलिस निरीक्षक, साऊथ डिविजन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
370. श्री देबाशीष दास, पुलिस निरीक्षक, पोर्ट डिविजन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
371. श्री समीर कुमार सिंह, पुलिस निरीक्षक, यातायात विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
372. श्री त्रिदीप दत्त, पुलिस निरीक्षक, यातायात विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
373. श्री सत्य किंकर तेवारी, सूबेदार, 5वीं बटालियन, केएपी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
374. श्री असीम कुमार साहा, सहायक उप निरीक्षक, यातयात विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
375. श्री उत्तम कुमार दास, सहायक उप निरीक्षक(एबी), स्वामी विवेकानन्द राज्य पुलिस अकादमी, बैरकपुर, पश्चिम बंगाल।
376. श्री तपन सरकार, सहायक उप निरीक्षक (एबी), एसएपी 12वीं बटालियन, जलपाइगुड़ी, पश्चिम बंगाल।
377. श्री प्रदीप मल्ला, कांस्टेबल, डीएपी वीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल।
378. श्री आशिष सिन्हा राय, कांस्टेबल, आसूचना शाखा कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
379. श्री प्रकाश चन्द्र डे, कांस्टेबल, कोलकाता पुलिस, पश्चिम बंगाल।
380. श्री अनिल कुमार, पुलिस महानिरीक्षक, विद्रोह रोधी बल, कोलकाता पश्चिम बंगाल।
381. श्रीमती दमयन्ती सेन, विशेष पुलिस महानिरीक्षक, अपराधी जांच विभाग, पश्चिम बंगाल।
382. श्री अजय कुमार नंद, विशेष पुलिस महानिरीक्षक और उप पुलिस महानिरीक्षक, मिदनापुर रेंज, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल।
383. श्री पल्लब कान्ति घोष, संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
384. श्री तपन कुमार दास, उप पुलिस निरीक्षक, निरस्त्र शाखा, रिजर्व कार्यालय, नादिया, पश्चिम बंगाल।
385. श्री मिहिर कुमार सरकार, पर्यवेक्षक तकनीकी-।।, बोनगांव टीसी स्टेशन, नार्थ 24 परगना जिला, पश्चिम बंगाल।
386. श्री पोलामारासेट्टि बाला, सहायक उप पुलिस निरीक्षक, राज्य सतर्कता आयोग, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
387. श्री तीमीर कान्ती अचार्जी, सहायक उप पुलिस निरीक्षक, अपराध जांच विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।

388. श्री सुवीर कुमार भट्टाचार्यी, सहायक उप पुलिस निरीक्षक, यातायात मुख्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
389. श्री कृष्णा नंद पाण्डेय, कार्यकारी सहायक उप पुलिस निरीक्षक (यूबी) लाइन ओ आर एस ओ जी सेल, अलीपुर, पश्चिम बंगाल।
390. श्री मनी राम थापा, अवैतनिक लांस नायक, ईएफआर तीसरी बटालियन, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल।
391. श्री सोनाम छिरीङ भुटिया, कांस्टेबल, डीएपी दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल।
392. श्री रवि दत्ता, कांस्टेबल लाइन ओआरएसओजी सेल, अलीपुर, पश्चिम बंगाल।
393. श्री संजय कुमार रॉय, कांस्टेबल बिधाननगर पुलिस आयुक्तालय, बिधान नगर, पश्चिम बंगाल।
394. श्री सुशांत राहा, पुलिस ड्राइवर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) मुर्शीदाबाद से सम्बद्ध, पश्चिम बंगाल।
395. श्री सुखेन्दु सासमाल, पुलिस ड्राइवर, सुरक्षा निदेशालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
396. श्री पगन सोरेन, उप पुलिस आयुक्त, होमगार्ड आर्गेनायजेशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
397. श्री भार्गिस कुंज्ञाछन, सहायक पुलिस आयुक्त, यातायात विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
398. श्रीमती देबश्री च्यटार्जी, सहायक पुलिस आयुक्त (महिला पुलिस) गुप्तचर विभाग, कोलकाता पुलिस, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
399. श्री नम्रोज आहमेद खान, पुलिस निरीक्षक, साऊथ डिविजन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
400. श्री गौतम सरकार, पुलिस निरीक्षक, मुख्यालय बल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
401. श्री मृगांक मोहन दास, पुलिस निरीक्षक, गुप्तचर विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
402. श्री सौम्य ब्यनार्जी, पुलिस निरीक्षक, गुप्तचर विभाग, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
403. श्री कृष्णेंदु बोस, पुलिस निरीक्षक, यातयात विभाग कोलकाता पुलिस, कोलकाता, पश्चिम बंगाल।
404. श्री रोशन लाल, उप पुलिस अधीक्षक (संचार), चण्डीगढ़।
405. श्री बलविन्द्र सिंह, हैड कांस्टेबल, चण्डीगढ़।
406. श्री सुकलाभाई कुथाभाई रोहित, सहायक उप निरीक्षक, स्टोरकीपर, पुलिस मुख्यालय, सिलवासा, दादर और नगर हवेली।
407. श्री मनीष कुमार अग्रवाल, उप पुलिस महानिरीक्षक, दमन-दीव और दादर और नगर हवेली, दमन और दीव।
408. श्री टी. कालियारासु, निरीक्षक, पुलिस यूनिट की पुलिसिंग, पुदुचेरी।
409. श्री डुंगर सिंह, सूबेदार/जीडी, 14 असम राइफल्स, असम राइफल्स।
410. श्री भुवनेश्वर प्रसाद, सूबेदार मेजर/जीडी, 29 असम राइफल्स, नागालैण्ड, असम राइफल्स।
411. श्री धन सिंह, सूबेदार मेजर/जीडी, 37 असम राइफल्स, नागालैण्ड, असम राइफल्स।
412. श्री सुरा चन्द्र सिन्हा, नायब सूबेदार/जीडी, 38 असम राइफल्स, असम राइफल्स।
413. श्री छवी लाल पून मगर, सूबेदार मेजर, नं. 3 मेंटिनेंस ग्रुप, असम राइफल्स, जोरहट, असम राइफल्स।
414. श्री कोरला जग्गा राव, हवलदार, संपर्क अधिकारी, असम राइफल्स, नॉर्थ ब्लॉक, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, असम राइफल्स ।
415. श्री दिनेश चन्द्र, सूबेदार/जीडी, चीस्वेमा, नागालैंड, असम राइफल्स।
416. श्री वसुदेव प्रसाद डिमरी, कमांडेंट, काशी राम बस्ती, नागालैंड, असम राइफल्स ।
417. श्री अमबिका नाथ पाठक, सूबेदार मेजर/लिपिक, काशी राम बस्ती, नागालैंड, असम राइफल्स।
418. श्री सरजन प्रसाद गुप्ता, सूबेदार मेजर/जी डी, काशी राम बस्ती, नागालैंड, असम राइफल्स।
419. श्री रमेश चन्द्र, नायब सूबेदार, कोहिमा नागालैंड, असम राइफल्स।
420. श्री सुब्रमनियन राजेन्द्रन, सेकेन्ड-इन-कमाण्ड, भर्ती शाखा, लैतकोर, शिलांग, असम राइफल्स।
421. श्री राजदेव सिंह यादव, उप कमांडेंट, शिलांग, असम राइफल्स ।
422. श्री हर्ष मोहन सिलस्वाल, सूबेदार/लिपिक, एमएस ब्रांच, शिलांग, असम राइफल्स।
423. श्री रामावतार गोथवाल, टीम कमांडर, लैतुमखराह, शिलांग, असम, राइफल्स।
424. श्री बिन्दु सेठी, महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल, एयर विंग, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल ।
425. श्री पीयूष पटेल, उप महानिरीक्षक, गुजरात, सीमा सुरक्षा बल।
426. श्री किलाम्बी वेन्कटा राघवाचारयूलू, उप महानिरीक्षक, चेन्नई, सीमा सुरक्षा बल।
427. श्री कैलाश चन्द्र जाट, कमांडेंट, 150 बटालियन, भौंडसी, गुडगांव, सीमा सुरक्षा बल।
428. श्री नवल किशोर सिंह, कमांडेंट, अबोहर, सीमा सुरक्षा बल।
429. श्री जया चन्द्रा नायक, कमांडेंट, बड़ातोता, ओडिशा, सीमा सुरक्षा बल।
430. श्री राज कुमार, कमांडेंट, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
431. श्री महेन्द्र कुमार सहारण, कमांडेंट, 100वीं बटालियन, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर, सीमा सुरक्षा बल।
432. श्री मधुकर, कमांडेंट (जी) नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।

433. श्री इन्द्र देव सिंह, कमांडेंट (भर्ती), कार्मिक निदेशालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
434. श्री प्रमोद कुमार आनंद, कमांडेंट, 34 बटालियन, सीमा सुरक्षा बल।
435. श्री अमृत लाल तिर्की, कमांडेंट, 35 बटालियन, पश्चिम बंगाल, सीमा सुरक्षा बल।
436. डॉ. विनोद कुमार, कमांडेंट(चिकित्सा) सीमान्त मुख्यालय, जम्मू, सीमा सुरक्षा बल ।
437. डॉ. अशोक कुमार त्रिवेदी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी (एसजी) मुख्यालय अस्पताल-।।, टिगड़ी कैम्प, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल ।
438. श्री दिनेश चंद सिंह, उप कमांडेंट, 151 बटालियन, श्रीनगर, सीमा सुरक्षा बल।
439. श्री धर्मबीर सिंह, उप कमांडेंट, 150 बटालियन, भौंडसी गुडगांव, सीमा सुरक्षा बल।
440. श्री सुरेश कुमार सिंह, उप कमांडेंट, सहायक प्रशिक्षण केन्द्र, येल्हंका, बैंगलुरू ,सीमा सुरक्षा बल।
441. श्री आर के हीरामनी सिंह, उप कमांडेंट, 63वीं बटालियन, मिजोरम, सीमा सुरक्षा बल ।
442. श्री लखी राम यादव, उप कमांडेंट, 97वीं बटालियन, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल।
443. श्री हरबंत सिंह सोढ़ी, उप कमांडेंट, 92वीं बटालियन श्रीनगर, सीमा सुरक्षा बल।
444. श्री हरनारायण सिंह, सहायक कमांडेंट, 109 बटालियन, बिहार, सीमा सुरक्षा बल ।
445. श्री कपूर सिंह, सहायक कमांडेंट, 14 बटालियन, बिहार, सीमा सुरक्षा बल।
446. श्री राघवन राजन पिल्लै, सहायक कमांडेंट (पीएस) कदमतला, सीमा सुरक्षा बल ।
447. श्री जोस कुट्टी वी. टी., सहायक कमांडेंट (अनुसचिवीय) कार्मिक निदेशालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
448. श्री कोप्पारा राघवन अशोक कुमार, सहायक कमांडेंट (अनुसचिवीय), सीमान्त मुख्यालय, येल्हंका, बंगलौर, सीमा सुरक्षा बल ।
449. श्री मुस्ताक खाँ, इंस्पेक्टर (जीडी), 8वीं बटालियन, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल।
450. श्री हंस राज, इंस्पेक्टर (जीडी), सहायक प्रशिक्षण केन्द्र, येल्हंका, बंगलौर, सीमा सुरक्षा बल।
451. श्री प्रेम सिंह, इंस्पेक्टर (जीडी), 1022 आर्टिलरी रेजीमेंट, फरीदकोट, पंजाब, सीमा सुरक्षा बल।
452. श्री मेजर राम सैनी, इंस्पेक्टर (जीडी), 37 बटालियन, बारमेड़, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल।
453. श्री कलन्दर खान, इंस्पेक्टर (जीडी), क्षेत्रीय मुख्यालय, बारामूला, जम्मू एवं कश्मीर, सीमा सुरक्षा बल।
454. श्री बुद्धि सिंह, इंस्पेक्टर (जीडी), 107 बटालियन बाड़मेर, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल ।
455. श्री राजेन्द्र सिंह, इंस्पेक्टर (जीडी), 142 बटालियन धौलचेरा, असम, सीमा सुरक्षा बल ।
456. श्री मूल चन्द यादव, इंस्पेक्टर (जीडी), 22 बटालियन रानीनगर, पश्चिम बंगाल, सीमा सुरक्षा बल।
457. श्री जगदीश, इंस्पेक्टर (जीडी), 8 बटालियन, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल।
458. श्री केशर सिंह, इंस्पेक्टर (जीडी), 22 बटालियन रानीनगर, पश्चिम बंगाल, सीमा सुरक्षा बल ।
459. श्री सोहन सिंह नेगी, इंस्पेक्टर (अनुसचिवीय), सीमान्त मुख्यालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
460. श्री मानस चेटर्जी, इंस्पेक्टर (अनुसचिवीय), मुख्यालय महानिदेशालय, कोलकाता, सीमा सुरक्षा बल।
461. श्री राजेन्द्र प्रकाश छिकारा, निरीक्षक (साइफर), सीमान्त मुख्यालय, गांधीनगर, गुजरात, सीमा सुरक्षा बल।
462. श्रीमती इंदिरा पवित्रन, सूबेदार मेजर/सिस्टर इंचार्ज, कम्पोजिट अस्पताल, कदमतला, सीमा सुरक्षा बल।
463. श्री काशी नाथ सिंह, उप निरीक्षक (जीडी) 158वीं बटालियन, फटीकचेरा, त्रिपुरा, सीमा सुरक्षा बल।
464. श्री जय भगवान, उप निरीक्षक (जीडी), 116 वीं बटालियन, जैसलमेर, राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल।
465. श्री विजय पाल सिंह, उप निरीक्षक (अनुसचिवीय), मुख्यालय, आर्टिलरी, फरीदकोट, पंजाब, सीमा सुरक्षा बल ।
466. श्री दर्शन कुमार मुंजाल, आशुलिपिक ग्रेड-।।, जी प्रशिक्षण विद्यालय, नई दिल्ली, सीमा सुरक्षा बल।
467. श्री अंगदा चन्द्र बिस्वाल, सहायक उप निरीक्षक (जीडी), कोरापुट, ओडिशा, सीमा सुरक्षा बल ।
468. श्री अबीद हुसैन, कांस्टेबल (वाशरमैन), 70वीं बटालियन, नलकाटा, त्रिपुरा, सीमा सुरक्षा बल।
469. श्री राजेन्द्र प्रसाद, कांस्टेबल (स्वीपर), 58 बटालियन, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल, सीमा सुरक्षा बल।
470. श्री रत्न संजय, पुलिस उप पुलिस उप महानिरीक्षक, एसीबी गाजियाबाद, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
471. श्री रवि कांत, पुलिस उप पुलिस उप महानिरीक्षक, ईओ-।, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
472. श्री रमणीश गीर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एससीबी मुम्बई, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
473. श्री अनुज आर्य, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, एसीबी, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
474. श्रीमती सीमा पाहुजा, उप पुलिस अधीक्षक, एससी-।, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
475. श्री नेत राम मीणा, उप पुलिस अधीक्षक, एससी-।।, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
476. श्री सुरेन्द्र कुमार मलिक, उप पुलिस अधीक्षक, एसीयू-V, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
477. श्री रमेश चन्द शर्मा, पुलिस निरीक्षक, एसीबी, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।

478. श्री चन्द्र किरन शर्मा, पुलिस निरीक्षक, सीबीआई मुख्यालय, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
479. श्री मनोज कुमार दास, पुलिस निरीक्षक, एसीबी भुवनेश्वर, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
480. श्री जले सिंह, पुलिस निरीक्षक, एसीयू-।।।, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
481. श्री गौतम कुमार सागर, पुलिस निरीक्षक, नीति प्रभाग, नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
482. श्री अनिल वसन्त म्हात्रे, पुलिस उप निरीक्षक, एसीबी मुम्बई, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
483. श्री विजय कुमार थापा, पुलिस सहायक उप निरीक्षक, ईओ-। नई दिल्ली, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
484. श्री राज किशोर राय, हेड कांस्टेबल, एसीबी पटना, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
485. श्री महबूब हसन ,हेड कांस्टेबल, एडीसीबीआई नई दिल्ली ,केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
486. श्री बसंत सिंह बिष्ट ,हेड कांस्टेबल ,डीसीबीआई सचिवालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
487. श्री बिजेन्दर सिंह ,कांस्टेबल ,एसीबी नई दिल्ली ,केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
488. श्री श्यामबीर सिंह ,कांस्टेबल ,नीति प्रभाग ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो ।
489. श्री शंकर दास गिरधर ,अपराध सहायक ,सीबीआई मुख्यालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो।
490. श्री शिखर सहाय ,उप महानिरीक्षक ,सीआईएसएफ यूनिट सीसीएल करगली ,बोकारो ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
491. श्री रविन्द्र कुमार ,उप महानिरीक्षक ,एएसजी मुम्बई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ।
492. श्रीमती नीता सिंह ,वरिष्ठ कमांडेंट ,सीआईएसएफ नॉर्थ जोन मुख्यालय ,साकेत ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ।
493. सुश्री दिनावही श्यामला ,वरिष्ठ कमांडेंट ,सीआईएसएफ मुख्यालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
494. श्री बाम देव शर्मा ,कमांडेंट ,सीआईएसएफ ,आर टी सी बरवाहा ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
495. श्री सुदर्शन मलहोत्रा ,उप कमांडेंट ,सीआईएसएफ यूनिट गोवा ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
496. श्री एन.एस .मुरलीधरन ,सहायक कमांडेंट ,सीआईएसएफ यूनिट नई दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
497. श्री एम .पुरुषोत्तमन ,सहायक कमांडेंट/जेएओ ,सीआईएसएफ मुख्यालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
498. श्री सजन सिंह मरावी ,उप निरीक्षक ,सीआईएसएफ यूनिट तृतीय रिजर्व बटालियन भिलाई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
499. श्री उपेन डेका ,उप निरीक्षक ,सीआईएसएफ यूनिट बडौदा ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ।
500. श्री पी .राजसेकरन ,उप निरीक्षक (मिनिस्ट्रियल),सीआईएसएफ पश्चिम जोन ,एयरपोर्ट मुख्यालय ,मुम्बई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
501. श्री बलविन्दर सिंह ,सहायक उप निरीक्षक ,सीआईएसएफ यूनिट झांसी ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
502. श्री वी .रेघु कुमार ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ,दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
503. श्री केशव प्रसाद यादव ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,अराक्कोनम ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
504. श्री वी .राजन ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट कालीकट ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
505. श्री पी शेनमुगा वेलु ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट नेवेली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
506. श्री लीला धर शर्मा , हेड कांस्टेबल ,सीआईएसएफ यूनिट मुम्बई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
507. श्री युनस अहमद ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट मुम्बई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
508. श्री के.सी .गोपाकुमारन नायर ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट हैदराबाद ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
509. श्री प्रणबंधु महाकुड ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट दुर्गापुर ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
510. श्री कुलदीप सिंह ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट मुम्बई ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
511. श्री महानन्द तिवारी ,हेड कांस्टेबल(जीडी) ,सीआईएसएफ यूनिट धनबाद ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल।
512. श्री राम सिंह ,कांस्टेबल/स्वीपर ,सीआईएसएफ मुख्यालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ।
513. श्री अमर सिंह नेगी ,उप महानिरीक्षक ,चंडीगढ़ रेंज ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
514. श्री रती रंजन दत्ता ,उप महानिरीक्षक ,महानिदेशालय ,सीआरपीएफ ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
515. श्री अशोक प्रसाद ,उप महानिरीक्षक ,ग्रुप सेंटर दुर्गापुर ,पश्चिम बंगाल ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
516. श्री दिनेश उनियाल ,उप महानिरीक्षक ,सीटीसी ग्वालियर ,मध्य प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
517. श्रीमती नीतू देबब्रत भट्टाचार्य ,उप महानिरीक्षक, महानिदेशालय (कल्याण) नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
518. श्री राजीव राय ,उप महानिरीक्षक ,सीआरपीएफ रेंज मुख्यालय ,रांची ,झारखंड ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
519. श्री प्रशांत रामचन्द्र जम्भोलकर ,उप महानिरीक्षक, आईएसए सीआरपीएफ ,माउंट आबू राजस्थान ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
520. श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय ,उप महानिरीक्षक ,दांतेवाडा ,छत्तीसगढ़ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
521. श्री कृष्ण कान्त सिन्हा ,उप महानिरीक्षक ,जगदलपुर ,बस्तर ,छत्तीसगढ़ ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
522. श्री शैलेन्द्र ,उप महानिरीक्षक ,महानिदेशालय नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

523. श्री अनिल ढौंडियाल ,उप महानिरीक्षक ,धुर्वा ,रांची ,झारखंड ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
524. श्री त्रिलोकी नाथ मिश्रा , उप महानिरीक्षक (चिकित्सा), कम्पोजिट हॉस्पिटल ,सीआरपीएफ अजमेर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
525. डॉ श्रीकांत कुमार श्रीवास्तव ,उप महानिरीक्षक(चिकित्सा), कम्पोजिट हॉस्पिटल ,जीसी सीआरपीएफ ,इलाहाबाद ,उत्तर प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
526. श्री कुँवर गोविन्द सिंह राठौर ,कमांडेंट, 93 बटालियन ,लखनऊ ,उत्तर प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
527. श्री राजगोपाल सिंह ,सेकेन्ड-इन-कमांड ,रेंज भोपाल ,मध्य प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
528. श्री ए जयचन्द्रन ,सेकेन्ड-इन-कमांड ,229 बटालियन जी सी सीआरपीएफ ,अवाड़ी ,चेन्नई ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
529. श्री अच्युता नन्द बस्तिया ,सेकेन्ड-इन-कमांड 178 बटालियन ,बड़गांव ,जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
530. श्री बी.एल.के .पिल्लई ,सेकेन्ड-इन-कमांड ,77 बटालियन ,पूनामल्ली ,चेन्नई ,तमिलनाडु ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
531. श्री के .सेलवम ,उप कमांडेंट 77 बटालियन ,पूनामल्ली ,चेन्नई ,तमिलनाडु ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
532. श्री राम दास यादव ,उप कमांडेंट 33 बटालियन ,प्रीत नगर, जम्मू ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
533. श्री राम सिंह खम्पा ,उप कमांडेंट 108 बटालियन, आरएएफ ,मेरठ ,उत्तर प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
534. श्री दिवाकर सिंह ,सहायक कमांडेंट ,प्रथम सिग्नल बटालियन ,झरौंदा कलां ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
535. श्री राम सिंगार राम ,सहायक कमांडेंट ग्रुप सेंटर ,इम्फाल ,मणिपुर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
536. श्री परशु राम कुन्डा ,सहायक कमांडेंट ,जीसी-।। अजमेर ,राजस्थान ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
537. श्री धर्मपाल सिंह, निरीक्षक/जीडी ,ग्रुप सेंटर ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
538. श्री शिलम जानकी रामुलु ,निरीक्षक/जीडी 39 बटालियन ,नारायणपुर ,छत्तीसगढ़ ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
539. श्री महेन्द्र सिंह ,निरीक्षक/जीडी ,ग्रुप सेंटर ग्रेटर नोएडा ,उत्तर प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
540. श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत ,सुबेदार मेजर/जीडी ,ग्रुप सेंटर ,श्रीनगर ,जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
541. श्री परमहंस राय ,निरीक्षक/जीडी 93 बटालियन ,लखनऊ ,उत्तर प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
542. श्री नेत्रपाल सिंह ,उप निरीक्षक/जीडी ,सीआरपीएफ रेंज अजमेर ,राजस्थान ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
543. श्री जयलाल सिंह ,उप निरीक्षक/जीडी ,आईएसए माउंट आबू ,राजस्थान ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
544. श्री बसवन्तप्पा कडप्पा पाटिल ,उप निरीक्षक 130 बटालियन अवंतीपुरा ,अनंतनाग ,जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
545. मो .गालिब खान ,उप निरीक्षक/जीडी 69 बटालियन इम्फाल ,मणिपुर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।
546. श्री गजेन्द्र सिंह रावत ,निरीक्षक/जीडी 126 बटालियन बिड्डा ,रेयासी जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
547. श्री अर्जुन सुंदराय ,उप निरीक्षक/जीडी ,ग्रुप सेंटर ,भुवनेश्वर ,ओडिशा ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
548. सुश्री भवानी चक्रवर्ती ,उप निरीक्षक/जीडी135 एम बटालियन गांधीनगर ,गुजरात ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।
549. श्री पी .वेणुगोपालन ,उप निरीक्षक/जीडी ,सेंट्रल जोन कोलकाता ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
550. श्री गोपाल रंजन मिश्रा ,सहायक उप निरीक्षक/जीडी ,ग्रुप सेंटर ,गोवाहाटी ,असम ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
551. श्री सेल्वाराज के .सहायक उप निरीक्षक 34 बटालियन नगांव असम ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
552. श्री पाचन गोपाल कृष्णा पिल्ले ,सहायक उप निरीक्षक 181 बटालियन ,बडगांव जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
553. श्री पूरन सिंह ,हेड कांस्टेबल/जीडी ,ग्रुप सेंटर काठगोदाम उत्तराखंड ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।
554. श्री परेश चन्द्र डे ,हेड कांस्टेबल/जीडी 184 बटालियन झाड़ग्राम ,पश्चिम बंगाल ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
555. श्री लकेश्वर बर्मन ,हेड कांस्टेबल/जीडी 171 बटालियन डिब्रूगढ ,असम ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।
556. मोहम्मद कमाल मल्ला ,कांस्टेबल/जीडी ,ग्रुप सेंटर ,श्रीनगर ,जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
557. श्रीमती शिबानी लाल ,कांस्टेबल/जीडी 88एम बटालियन द्वारका सेक्टर 8 नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ।
558. श्री सविन्दर सिंह ,निरीक्षक/आरर्मर ,एडब्ल्यूएस-V ,ग्रुप सेंटर ,खटखटी असम ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
559. श्री योगेन्द्र सिंह ,निरीक्षक/तकनीकी ,सीटीसी (टीएंडआईटी)धुर्वा राँची ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
560. श्री प्रेम सिंह ,निरीक्षक/डीएम ,महानिदेशालय ,सीजीओ काम्पलैक्स ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
561. श्री राम कुमार शर्मा ,हेड कांस्टेबल/ कारपेंटर, ग्रुप सेंटर ,मुजफ्फपुर ,बिहार ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
562. श्री टी .राजेश्वर रेड्डी ,हेड कांस्टेबल आरर्मर सीडब्ल्यूएस-।। पुणे महाराष्ट्र ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
563. श्री बिपत हसन ,कांस्टेबल/ वाशरमैन 99 बटालियन आरएएफ हकीमपेट ,सिकन्द्राबाद ,आंध्र प्रदेश ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
564. श्री रामेश्वर लाल ,कांस्टेबल/एसके 33 बटालियन प्रीत नगर ,जम्मू एवं कश्मीर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
565. श्री गजेन्द्र पात्रा ,कांस्टेबल/ कुक 81 बटालियन जसपुर ,छत्तीसगढ़ ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
566. सुश्री टी.एच .लैला देवी ,सिस्टर-आई/सी ,कंपोजिट अस्पताल ,इम्फाल ,मणिपुर ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

567. श्री ओमप्रकाश ,संयुक्त सहायक निदेशक ,महानिदेशालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
568. श्री राकेश कुमार शर्मा ,सहायक कमांडेंट/मिनिस्ट्रियल , महानिदेशालय ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
569. श्री महेन्द्र सिंह ,सहायक कमांडेंट/ पीएस ,महानिदेशालय ,चिकित्सा शाखा ,नई दिल्ली ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
570. श्री रोहतास कुमार ,सहायक उप निरीक्षक 223 बटालियन ,दंतेवाड़ा ,छत्तीसगढ ,केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।
571. श्रीमती रंजना उमेश कौल ,संयुक्त उप निदेशक /तकनीकी ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
572. श्री कामेश्वर ,सहायक निदेशक ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
573. श्री डालचन्द सिंह ओलक ,सहायक निदेशक ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
574. श्री हितेन्द्र वासुदेव निखारे ,सहायक निदेशक ,एस आई बी अगरतला ,गृह मंत्रालय।
575. श्री मुहम्मद ताहिर खान ,सहायक निदेशक ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली, गृह मंत्रालय।
576. श्री गोपाल दत्त गौड़ ,सहायक निदेशक ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
577. श्री ज्योति रंजन आचार्य ,सहायक निदेशक ,एस आई बी भुबनेश्वर ,गृह मंत्रालय।
578. सुश्री फरीदा जमाल ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
579. श्री सुजीत सिंह ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एस आई बी पटना ,गृह मंत्रालय।
580. श्री राकेश कुमार सिन्हा ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
581. सुश्री बी.जी .मेकला देवी ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी बंगलौर ,गृह मंत्रालय।
582. श्री विनय कुमार नाग ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी जम्मू ,गृह मंत्रालय।
583. श्री ओनील नारायण कांबले ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी शिलांग ,गृह मंत्रालय।
584. श्री प्रभास प्रियदर्शी ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी चंडीगढ़ ,गृह मंत्रालय।
585. श्री उज्जवल कुमार शुक्ला ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,आई बी मुख्यालय ,नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
586. श्री राजन चेन्गुणी ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी त्रिवेन्द्रम ,गृह मंत्रालय।
587. श्री मणि गणेशन ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एसआईबी चेन्नई ,गृह मंत्रालय।
588. श्री लाल मोहन सामंतरे ,उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी ,एस आई बी दिल्ली ,गृह मंत्रालय ।
589. श्री मधु सूधन रामिनेनी राव ,अनुभाग अधिकारी ,एसआईबी हैदराबाद ,गृह मंत्रालय ।
590. श्री वायलमकुजी दामोदरन ,निजी सचिव ,एसआईबी मुम्बई ,गृह मंत्रालय।
591. श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ,सहायक केन्द्रीय आसूचना अधिकारी-।।/जी ,एसआईबी श्रीनगर ,गृह मंत्रालय।
592. श्री सोरेनसंबम इबोमचा सिंह ,सहायक केन्द्रीय आसूचना अधिकारी-।।/जी ,एसआईबी इम्फाल ,गृह मंत्रालय।
593. श्री बिनय कुमार बोरा ,सहायक केन्द्रीय आसूचना अधिकारी-।।/जी ,एसआईबी तेजपुर ,गृह मंत्रालय।
594. श्री भागीरथ विश्वकर्मा ,सहायक केन्द्रीय आसूचना अधिकारी-।।/जी ,एसआईबी रायपुर ,गृह मंत्रालय।
595. सुश्री फूल माया तामांग ,कनिष्ठ आसूचना अधिकारी-।/जी एसजीएमआई ,एसआईबी गंगटोक ,गृह मंत्रालय।
596. श्री सुशील कुमार गुप्ता ,पुलिस उप महानिरीक्षक/ अभियंता ,पूर्वी फ्रंटियर ,लखनऊ ,उत्तर प्रदेश ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
597. श्री संजय कुमार चौधरी ,पुलिस उप महानिरीक्षक ,सेक्टर हेडक्वार्टर शिमला ,हिमाचल प्रदेश ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
598. श्री सुनील चन्द्र ममगाई ,पुलिस उप महानिरीक्षक ,सेक्टर हेडक्वार्टर दिल्ली, तिगड़ी कैंप ,नई दिल्ली ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
599. डॉ .विजय कुमार सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक /चिकित्सा ,रेफरल अस्पताल सीएपीएफ ,तिगड़ी कैंप ,नई दिल्ली ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
600. श्री करण सिंह रावत ,उप कमांडेंट/कार्यालय ,नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर ,चंडीगढ़ ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
601. श्रीमती राज्यश्री रावत ,सहायक कमांडेंट/ ईएसी ,आई टी बी पी अकादमी मसूरी ,उत्तराखंड ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
602. श्री बलदेव दास निरीक्षक/जी डी ,बीटीसी भानू ,पंचकुला ,हरियाणा ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
603. श्री करतार सिंह ,निरीक्षक/जी डी ,13 बटालियन ,लिंगडम ,सिक्कम ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
604. श्री हरगोविंद सिंह ,निरीक्षक/ एम टी ,महानिदेशालय ,नई दिल्ली ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
605. श्री के .पी .राजशेखरन नायर ,निरीक्षक/ दूरभाष 27 ,बटालियन ,जिला अलापुझा ,केरल ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
606. श्री विजय सिंह ,कांस्टेबल/कुक ,प्रथम बटालियन जोशीमठ ,चमोली ,उत्तराखंड ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस।
607. श्री पारस राम ,कांस्टेबल (एस के)28 बटालियन ,रेवाड़ी ,हरियाणा ,भारत-तिब्बत सीमा पुलिस ।
608. श्री सुधीर हुड्डा ,ग्रुप कमांडर ,मानेसर ,राष्ट्रीय सुरक्षा गारद।
609. श्री कुलदीप सिंह ग्रुप कमांडर (सीआरओ)नई दिल्ली ,राष्ट्रीय सुरक्षा गारद।
610. श्री एस .रविचन्द्रन ,टीम कमांडर (एसओ) ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय सुरक्षा गारद।

611. श्री सुरेन्द्र विक्रम ,उप कमांडेंट, 62बटालियन ,देवेन्द्र नगर, जिला सोनितपुर, असम, सशस्त्र सीमा बल।
612. श्री हेमन्त कुमार झा ,कमांडेंट/ जीडी, बल मुख्यालय ,नई दिल्ली ,सशस्त्र सीमा बल ।
613. श्री जय बहादुर सिंह गुनिजयाल ,सहायक कमांडेंट/ जीडी ,11 बटालियन दीदीहाट, जिला पिथौरागढ़ ,उत्तराखंड ,सशस्त्र सीमा बल।
614. श्री पुष्कर सिंह ,सहायक कमांडेंट ,सीटीसी सलोनीबारी ,असम ,सशस्त्र सीमा बल।
615. श्री होमेशबर रॉय ,सहायक कमांडेंट 31वीं बटालियन ,गोसाईगांव जिला कोकराझार ,असम ,शस्त्र सीमा बल।
616. श्रीमती लीना गुप्ता ,एरिया आर्गेनाइजर ,किशनगंज ,बिहार ,सशस्त्र सीमा बल।
617. श्री जगदीश प्रसाद आर्य ,सब एरिया आर्गेनाइजर ,बनबासा क्षेत्र ,चम्पावत ,उत्तराखंड ,सशस्त्र सीमा बल।
618. श्री भुबन चिरिंग ,निरीक्षक आर्मरर , 16 बटालियन ,कोकराझार ,असम ,सशस्त्र सीमा बल ।
619. श्री अशीम कान्ती दास ,फील्ड ऑफिसर टेलीकॉम ,सेक्टर हेडक्वार्टर ,बोगाईगांव ,असम ,सशस्त्र सीमा बल।
620. श्री महेन्द्र सिंह गंगोला ,एएफओ (वीईटीवाई) बल मुख्यालय ,नई दिल्ली ,सशस्त्र सीमा बल।
621. श्री अभय सिंह भाटी ,एसएसओ ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप।
622. श्री किरन राय ,एसएसओ ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप।
623. श्री गोपाल सिंह ,एसओ-। ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप।
624. श्री सी.सी .कृष्ण कुमार ,एसओ-।(एम टी) ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप।
625. श्री संजय शर्मा ,प्रिंसिपल साइंटिफिक अधिकारी (शस्त्र),नई दिल्ली ,पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो।
626. श्री सुधाकर देशमुख ,सहायक ,नई दिल्ली ,पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो।
627. श्री नरसिम्हन सुशील कन्नन ,संयुक्त सहायक निदेशक ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो।
628. श्री सुहास मित्रा ,उप पुलिस अधीक्षक (फिंगर प्रिंट) नई दिल्ली ,राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो।
629. श्री पवन कुमार मिश्रा , निरीक्षक(फिंगर प्रिंट) नई दिल्ली ,राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो ।
630. श्री बाबू लाल सरकार ,सहायक उप निरीक्षक(फिंगर प्रिंट) नई दिल्ली, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो।
631. श्री पुरुषोत्तम शर्मा ,वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक (रसायन) ,लोक नायक जय प्रकाश नारायण राष्ट्रीय अपराध एवं फारेंसिक विज्ञान संस्थान।
632. श्री समे सिंह ,स्टाफ कार चालक ,लोक नायक जय प्रकाश नारायण राष्ट्रीय अपराध एवं फारेंसिक विज्ञान संस्थान।
633. श्री सिमान्चल दाश ,कांस्टेबल ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग।
634. श्री सुदेश कुमार राणा ,उप पुलिस अधीक्षक ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय जांच एजेंसी ।
635. श्री अनिल कुमार ,पुलिस अधीक्षक ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय जांच एजेंसी ।
636. श्री राजेश भभोर ,कांस्टेबल ,मुख्यालय ,नई दिल्ली ,राष्ट्रीय जांच एजेंसी ।
637. श्री बिरा कुमार दास ,सहायक कमांडेंट (एक्जीक्यूटिव) 3री बटालियन ,मुडली, ओडिशा ,राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल।
638. श्री बिजय कुमार ओझा ,निरीक्षक(मिनिस्ट्रियल) 3री बटालियन ,मुडली, ओडिशा ,राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल।
639. श्री रामसेवक सिंह ,सहायक उप निरीक्षक (जीडी), 9वीं बटालियन, पटना ,बिहार ,राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल।
640. श्री गोपेश अग्रवाल, उप निदेशक ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
641. श्री पी.पी .प्रमोद ,सहयक कमांडेंट ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
642. श्री के शंकर ,निरीक्षक(मिनिस्ट्रियल) ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
643. श्री अशोक कुमार सिंह ,हेड कांस्टेबल ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
644. श्री चंद्रकांता ,हेड कांस्टेबल ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
645. श्री एम .रामि रेड्डी ,हेड कांस्टेबल ,हैदराबाद ,सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी।
646. श्री पी.एम .मुरलीधरन ,पीपीएस ,नॉर्थ ब्लॉक नई दिल्ली ,गृह मंत्रालय।
647. श्री मुनव्वर खुर्शीद ,उप महानिरीक्षक, आरपीए ,एसईसीआर जोनल मुख्यालय ,बिलासपुर ,रेल मंत्रालय।
648. श्रीमती कंचन चरण, उप महानिरीक्षक, आरपीएफ ,ईसीओआर मुख्यालय ,चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर ,रेल मंत्रालय।
649. श्री जी.एम .ईश्वर राव ,उप महानिरीक्षक-सह-प्रधानाचार्य ,आर पी एफ ट्रेनिंग सेंटर एससी रेलवे ,मौलाअली ,रेल मंत्रालय।
650. श्री संजीब कुमार रे ,सहायक सुरक्षा आयुक्त ,मुख्यालय ,पूर्वी रेलवे लिलुआ ,पश्चिम बंगाल ,रेल मंत्रालय।
651. श्री रामकीरत यादव ,सहायक उप निरीक्षक ,उत्तर पूर्वी रेलवे ,अपराध प्रकोष्ठ ,वाराणसी ,रेल मंत्रालय ।
652. श्री सी.गिरि उप निरीक्षक,विशेष आसूचना शाखा ,आरपीएफ ,पलक्कड ,केरल ,रेल मंत्रालय।
653. श्री एन .सलेम राजू ,एएसआई ,एससीआर ,डिविजनल आर्मरी ,विजयवाड़ा ,रेल मंत्रालय।
654. श्री युगल किशोर जाट ,कांस्टेबल ,आरपीएफ कार्यालय आगरा ,रेल मंत्रालय।
655. श्री राजेश लाल ,निरीक्षक ,पटना ,रेल मंत्रालय।

656. **श्री गंगाधर झा ,कांस्टेबल ,हाजीपुर ,रेल मंत्रालय।**

657. **श्री जयचंद्रन पी एस ,उप निरीक्षक, 5वीं बटालियन ,आरपीएसएफ ,त्रिची ,रेल मंत्रालय।**

658. **श्री वल्लभनेनी जे.डी .कृष्णा ,सहायक उप निरीक्षक, 5वीं बटालियन आरपीएसएफ ,त्रिची ,रेल मंत्रालय।**

659. **श्री नरूल शेख ,डब्ल्यू.सी. ,चौथी बटालियन, आरपीएसएफ ,न्यू जलपाईगुडी ,रेल मंत्रालय।**

2. **ये पुरस्कार सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान करने वाली नियमावली के नियम** 4(ii)**के तहत दिए जाते हैं।**

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 155–प्रेज/2014––राष्ट्रपति संस्कृत, अरबी, फारसी तथा पाली/प्राकृत भाषाओं के निम्नलिखित विद्वानों को सहर्ष सम्मान–प्रमाणपत्र प्रदान करते हैं :––

संस्कृत

1. श्री मङनोहर विद्यालङकार
2. श्री एस. सम्बन्दशिवाचार्य
3. जगद्गुरू निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
4. डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी
5. श्री वी. कृष्णमूर्ति घनपाठिगल्
6. श्री अरैयर श्रीराम शर्मा
7. डॉ. रा. कृष्णमूर्ति शास्त्री
8. श्री फ्रान्स्वा ग्रिमाल्
9. श्री विद्वान महामहोपाध्याय श्री राजा गिरि आचार्य (श्री सुज्ञानेन्द्राचार्य)
10. प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी
11. श्री चेल्लं श्रीनिवास सोमयाजी
12. प्रोफेसर वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री
13. प्रोफेसर ओम् प्रकाश उपाध्याय
14. प्रोफेसर (श्रीमती) शशिप्रभा कुमार

संस्कृत (अंतर्राष्ट्रीय)

1. श्री प्येर्सिल्वें फिल्योज

अरबी

1. डॉ. अहमद इब्राहिम रहमतुल्लाह
2. डॉ. निसार अहमद अन्सारी आज़मी

फारसी

1. प्रोफेसर (श्रीमती) शमीम अख़्तर

पाली/प्राकृत

1. श्री महापाध्याय विनयसागर

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रपति संस्कृत, अरबी, फारसी तथा पाली/प्राकृत भाषाओं के निम्नलिखित विद्वानों को महर्षि बादरायन व्यास सम्मान भी प्रदान करते हैं :––

संस्कृत

1. डॉ. के. एस. महेश्वरन्

2. डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा

3. डॉ माधव जनार्दन रटाटे

4. डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

अरबी

1. डॉ. औरंगज़ेब जाज़मी

फासी

1. डॉ. अतीकुर्रहमान

पाली/प्राकृत

1. डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

दिनांक 26 नवम्बर 2014

सं. 88-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री वाई. अप्पाला नायडू
जूनियर कमांडो

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.11.2002 को इस आशय की विश्वसनीय सूचना मिलने पर कि, के के डब्ल्यू डिवीजन (करीमनगर, खम्माम और वारंगल डिवीजन) के 20-25 सदस्य माओवादी अनैतिक अपराधों को अन्जाम देने के लिए घातक हथियार लेकर घूम रहे हैं, छापा मारने की एक योजना बनाई गई। यह गांव आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा पर है और जनजातियों के भारी समर्थन से आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के माओवादी दलों के लिए अजेय अड्डा बना हुआ है। पुलिस पार्टी ने बहादुरी से असुविधाजनक मार्ग पर चलकर रात में डुडेडा गांव पहुंचने के लिए 20 कि.मी. का मार्ग तय किया। जब पुलिस पार्टी उस क्षेत्र की छानबीन कर रही थी, तब उन्हें कुछ लोगों के बातचीत करने की आवाज सुनाई दी। तभी, एक माओवादी संतरी की पुलिस पार्टी पर नज़र पड़ी और उसने भारी गोलीबारी शुरू कर दी। भारी गोलीबारी के कारण पुलिस पार्टी का कोई भी सदस्य आगे नहीं बढ़ा। तथापि, वाई. अप्पाला नायडू, जे सी भारी गोलीबारी की दिशा में आगे बढ़े और बहादुरी से जबाबी गोलियां चलाने लगे। वाई. अप्पाला नायडू, जे सी दायीं बाजू पर गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। यद्यपि चोट गंभीर थी और काफी दर्द था, तथापि, जे सी ने हथियार बाएं हाथ में लेकर गोली चलाना जारी रखा। बाद में, बाकी माओवादी उक्त स्थल से भाग गए। वाई. अप्पाला नायडू पुलिस पार्टी सहित आगे बढ़े और वहां माओवादी संतरी का शव पाया और 1-एस एल आर, 1-303 राइफल, 27-एसएलआर कारतूस, 11 किट बैग बरामद किए।

इस प्रकार, वाई. अप्पाला नायडू जे सी ने भारी गोलीबारी में बहादुरी से अपनी जान जोखिम मे डालकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक खतरनाक माओवादी को मार गिराया।

इस मुठभेड़ में श्री वाई. अप्पाला नायडू, जूनियर कमांडो ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.11.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 89-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, आंध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री डी. रमेश,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री डी. रमेश 2009 बैच के अधिकारी हैं और उत्साहपूर्वक आतंक-रोधी क्षेत्र में कार्य करते रहे हैं और उन्होंने (5) ईओएफ में भाग लिया जिनमें 13 उग्रवादी मारे गए थे और बहुत से हथियार और गोलाबारूद बरामद किए गए थे।

खम्माम जिले के चेरला पुलिस स्टेशन के उप निरीक्षक ने एक आसूचना नेटवर्क बनाया और विकसित किया। उन्हें चेन्नापुरम गांव और आस-पास के वन क्षेत्र में सीपीआई माओवादियों की आवाजाही और अपने चुने हुए लक्ष्यों (टारगेट) को मारने जैसे सनसनीखेज अपराधों को अन्जाम देने के बारे में सूचना मिली। दिनांक 24.09.2011 को चेरला पुलिस स्टेशन की सीमा में वेंकटपुरम एरिया कमेटी के लगभग 20 माओवादी सदस्यों की गतिविधियों के बारे में विश्वसनीय सूचना मिलने पर, श्री डी. रमेश, उप निरीक्षक के नेतृत्व में ग्रेहाउण्डस के श्री ए. प्रभु, जे सी और एन. अनिल कुमार, जे सी सहित स्थानीय पुलिस का एक दल तत्काल कार्रवाई के लिए रवाना हुआ।

पुलिस दल को देखकर, संतरी ने श्री डी. रमेश पर तेजी से गोलियां चलानी शुरू कर दी और और अन्य लोगों को सतर्क कर दिया। सुविधाजनक स्थान पर खड़े उग्रवादियों ने सभी दिशाओं से अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। श्री डी. रमेश, उप निरीक्षक ने अपनी जान को गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए उग्रवादियों की गोलीबारी के बीच, उग्रवादियों की ओर आगे बढ़े और जवाबी गोलीबारी करते हुए बहादुरी से उनका पीछा किया। अपनी वीरतापूर्वक कार्रवाई और उच्च नेतृत्व से उन्होंने अपनी असुरक्षित स्थिति को सुरक्षित स्थिति में बदल दिया और आतंकवादियों से जीतने की स्थिति में आ गए। दोनों ओर से 10 मिनट तक गोलीबारी जारी रही। बाद में, पुलिस दल ने उक्त स्थल की छानबीन की और दो पुरुष कैडरों के शव बरामद किए, जिनकी पहचान (1) मुसाकी चुक्कल, निवासी रेंगम (वी) उसूर ब्लॉक, बीजापुर जिला, एरिया मिलिटा कमांडर-इन-चीफ और (2) मदकम सोमल, निवासी चेन्नापुरम, चेरला (एम), मिलिटिला प्लाटून सेक्शन कमांडर के रूप में हुई और चेरला पुलिस स्टेशन के अपराध संख्या 71/2011 के तहत घटनास्थल से एक एसएलआर राइफल, जिसमें 16 जिन्दा कारतूसों से लोड की हुई मैगजीन लगी थी, एक 8एमएम राइफल, 8 एमएम राइफल के 16 जिन्दा कारतूसों वाला पाउच, आईएनएसएएस (इन्सास) हथियार के तीन खाली खोखे और ए के 47 का एक खाली खोखा बरामद किया गया। मृतक माओवादी हत्याओं आदि सहित अनेक घृणित अपराधों को अन्जाम देने के जिम्मेदार थे। इस मुठभेड़ के बाद, माओवादी ग्रुप का हौसला निम्नतम स्तर तक गिर गया।

इस मुठभेड़ में श्री डी. रमेश, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.09.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 90-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अखिलेश कुमार सिंह, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
   पुलिस अधीक्षक
2. लामहाओ डौंगेल, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
   अपर पुलिस अधीक्षक
3. प्रकाश सोनोवाल, (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
   सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी

4. ललित हजारिका, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)
5. मनुज हांडिक, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)
6. मो. अब्दुल हेकीम, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29 मई, 2012 को श्री अखिलेश कुमार सिंह, आई पी एस, पुलिस अधीक्षक, शिवसागर को सूचना मिली कि एस एस सेकंड लेफ्टीनेंट रूपांतर काकोटी के नेतृत्व में उल्फा उग्रवादियों के एक बड़े दल ने परिष्कृत हथियारों के साथ असम नागालैंड सीमा के लेंगिबोर क्षेत्र में शरण ले रखी है। उन्होंने तुरंत योजना बनाई और अपर पुलिस अधीक्षक श्री लामहाओ डौंगेल और एसडीपीओ श्री प्रकाश सोनोवाल तथा असम कमाण्डो और आसाम पुलिस रेंजर के कर्मियों और सहायक कमांडेंट गुरुचरण कालिंदिया के नेतृत्व में 210 कोबरा बटालियन की प्लाटून की सहायता से रात में ही अभियान शुरू कर दिया। लेंगिबोर गांव में रात में पुलिस दल पर गोलियां चलाई गईं, किन्तु उन्होंने अपनी कार्रवाई जारी रखी और अनजान और कठिन मार्ग पर देर तक चलने के बाद पुलिस दल 30 मई, 2012 को लगभग 0430 बजे नागालैंड सीमा की ओर लालमती बस्ती में पहुंचा जहां छुपने का स्थान अवस्थित था। यह बस्ती पटकाई रेंज की ऊंची पहाड़ियों में बड़े दुर्गम भू-भाग में स्थित है, जहां एनएससीएन के सशस्त्र कैडरों, जिनके आपसी हित इस क्षेत्र में उल्फा आतंकवादियों से जुड़े हैं, का निरंतर आना-जाना रहता है। श्री ए. के. सिंह की कमान में अभियान दल ने निडरता से पहाड़ी भू-भाग में दूर-दूर स्थित विभिन्न घरों की तलाशी लेने के लिए अपने को युक्तिपूर्वक छोटे-छोटे दलों में बांटा। जब श्री सिंह की कमान में छोटा दल पहाड़ी से गुजर रहा था, तभी ऊंची पहाड़ी पर कुशलता से पोजीशन लिए हुए उल्फा दल ने अचानक पुलिस दल पर यू एम जी और ए के 56 जैसे स्वचालित हथियारों से गोलियां चलानी शुरू कर दीं। बदले में, श्री अखिलेश सिंह और ए बी सी अब्दुल हकीम ने दक्षिणी दिशा से पहाड़ी पर धावा बोल दिया और उल्फा दल की भारी गोलीबारी के बीच युक्तिपूर्वक पहाड़ी पर चढ़ गए। वे उग्रवादी दल के निकट पहुंचे और अपनी जान को गम्भीर खतरे में डालते हुए उन पर धावा बोल दिया जबकि उग्रवादियों ने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी थी। उसी समय श्री लामहाओ डौंगेल और ए बी सी मनुज हांडिक दोनों ने एक साथ श्री सिंह के समानान्तर पहाड़ी से गोलियां चालानी शुरू कर दीं और उल्फा दल को निकट से घेर लिया। परिणामत: दो उल्फा कैडरों को गोलियों से कई चोटें आईं और वे ढलान से कूदकर घनी झाड़ियों में गायब हो गए। एक घायल उग्रवादी ने एक ग्रेनेड फेंका, जो फटा नहीं। श्री सिंह के छोटे रक्षक दल ने गोलियां चलाकर आक्रमणरत अधिकारियों और पहाड़ी के नीचे से कार्रवाई कर रहे दो जवानों को सुरक्षा कवर प्रदान किया। स्थिति देखकर श्री प्रकाश सोनोवाल और सहायक कमांडेंट जी. कालिंदिया ने अपनी कोबरा टीम सहित पहाड़ी के पूर्वी दिशा से धावा बोला और उग्रवादियों को घेर लिया। इस धावे में श्री प्रकाश सोनोवाल, ए बी सी ललित हजारिका और दो कोबरा कर्मियों ने साहस का परिचय दिया और उनके छोटे दल ने गोलियां चलाकर सहायता की। पुलिस के इस वीरतापूर्ण आक्रमण से उल्फा उग्रवादी मैदान छोड़कर भागे और पहाड़ी की ढलान से नीचे कूद गए। दो उग्रवादियों को गोलियों से लगी चोटें दिखाई दे रही थीं, किन्तु वे भागकर घनी झाड़ियों और आस-पास के जंगलों में छिपने में सफल हो गए। भागते हुए उन्होंने आगे बढ़ रही पुलिस टीम को रोकने के लिए उन पर एक और ग्रेनेड फेंका, जो फटा नहीं। अभियान दल दोनों दिशाओं में खून के निशानों के पीछे-पीछे चला, किन्तु शीघ्र ही भारी वर्षा के कारण ये निशान मिट गए। पुलिस दल ने 40 राउंड जिन्दा गोलाबारूद सहित एक ए के 47 राइफल, फैक्टरी में बनी रिमोट से चलने वाली चीन निर्मित दिशा सूचक माइन, दो जिन्दा हैंड ग्रेनेड और एक स्मिथ एण्ड वेशन पिस्तौल की मैगजीन, अन्य कैम्प सामग्री सहित 9 एमएम गोलाबारूद के दो राउन्डस और घायल उग्रवादी के खून से सना एक रक-सैक बरामद किया।

जारी छानबीन के दौरान, बाद में निकटवर्ती क्षेत्र से उल्फा का एक कट्टर सूचीबद्ध कैडर हिरेन गोगोई उर्फ रोबिन मोरन पकड़ा गया, जिसे गोलियां लगने से गई चोटें आई थीं। उसने दिनांक 29 मार्च, 2012 को नाथुरापुरा पुलिस स्टेशन के कैम्पस में ग्रेनेड फैंका था। बाद में इस बात की भी पुष्टि हुई कि इस मुठभेड़ में एसएस सीपीएल एद्यमान बरूआ को भी बाईं जांघ में गोली लगी थी, जो घने जंगल का लाभ उठाकर बचकर भागने में सफल रहा। इस ग्रुप का कमांडर एस एस सेकंड लैफ्टिनेट रुपान्तर काकोटी और अन्य कैडर चोट लगे बिना बचकर भाग गए। शिवसागर पुलिस के कार्मिक श्री ए. के. सिंह के नेतृत्व में किए गए हमले में सबसे आगे थे। दुर्गम मार्ग और शत्रु की सीधी गोलीबारी में अपनी जान की परवाह किए बिना शुद्ध साहस और नि:स्वार्थ कर्तव्यपरायणता का उनका प्रदर्शन उच्च कोटि की दुर्लभ वीरतापूर्ण कार्रवाई का उदाहरण है।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अखिलेश कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक, लामहाओ डौंगेल, अपर पुलिस अधीक्षक, प्रकाश सोनोवाल, सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी, ललित हजारिका, कांस्टेबल, मनुज हांडिक,कांस्टेबल, और मो. अब्दुल हकीम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.05.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 91-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जुग कांत बोराह,
   निरीक्षक

2. सीमांता बोराह,
   उप निरीक्षक

3. दीपक बोराह,
   कांस्टेबल

4. बुधेश्वर चक्रधर,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.01.2013 को तिनसुकिया, मकूम और बोरदूबी पुलिस स्टेशनों के सामान्य क्षेत्रों में उल्फा उग्रवादियों की गतिविधियों के संबंध में विशिष्ट सूचना के आधार पर, दूसरी असम रेजीमेंट (आर्मी), 68 बटालियन सीआरपीएफ और कोबरा के साथ मिलकर तिनसुकिया पुलिस द्वारा छोटे-छोटे दल में बंटकर अलग-अलग स्थानों पर संयुक्त अभियान चलाया गया और इन सभी छोटे-छोटे दलों द्वारा तिनसुकिया, मकूम और बोरदूबी के सामान्य क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों पर अभियान चलाए गए।

निरीक्षक जुग कान्त बोराह, प्रभारी अधिकारी, तिनसुकिया पुलिस स्टेशन के नेतृत्व में एक अभियान दल ने उप-निरीक्षक सीमान्ता बोराह, प्रभारी अधिकारी, मकूम पुलिस स्टेशन और अन्य स्टॉफ के साथ बोरदूवी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत हबेदा गांव में घात लगायी। लगभग 2140 बजे अचानक पुलिस दल ने 4/5 अनजान लोगों को पैदल अपनी ओर आते देखा। जब पुलिस अभियान दल ने उन्हें रुकने की चेतावनी दी तो उन्होंने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। पुलिस अभियान दल भारी गोलीबारी में घिर गया। अंधेरे का लाभ उठाकर भारी शस्त्रों से लैस उग्रवादियों ने पुलिस अभियान दल के सदस्यों को मारने के इरादे से गोलियां चलायीं। इस प्रक्रिया में निरीक्षक जुग कान्त बोराह और उप-निरीक्षक सीमान्ता बोराह सामने से आगे बढ़े और सीधे गोलियों से घिर गए जिससे अन्य सदस्य भी प्रेरित हो गए। तदनुसार, अभियान दल ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालते हुए अपनी रक्षा में जबाबी गोलियां चलानी शुरू कर दीं। थोड़े समय चली परस्पर गोलीबारी के दौरान एक उग्रवादी गोलियों से जख्मी हो गया और एक उग्रवादी पुलिस दल द्वारा पकड़ा गया। अन्य उग्रवादी अंधेरे और धुंध का लाभ उठाते हुए भागने में सफल हो गए। गोलीबारी रूकने के तुरंत बाद पुलिस दल ने घायल उल्फा उग्रवादी को वहां से हटाकर चिकित्सा उपचार के लिए सिविल हॉस्पिटल तिनसुकिया भेज दिया। घायल उल्फा उग्रवादी की तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 1 मैगजीन और गोलाबारूद के 3 जिन्दा कारतूसों सहित एक एम-20 पिस्तौल, 4 चीनी ग्रेनेड, 2 आरसीआईईडी, 2 डेटोनेटर और कुछ अभिशंसी दस्तावेज बरामदगी सूची के अनुसार बरामद किए गए। जिस घायल उल्फा उग्रवादी को चिकित्सा उपचार के लिए तिनसुकिया सिविल हॉस्पिटल भेजा गया था, उसे देखरेख करने वाले डाक्टरों द्वारा मृत लाया गया घोषित कर दिया गया।

बाद में, मृतक उल्फा उग्रवादी की पहचान उसके भाई द्वारा कट्टर उल्फा उग्रवादी देवजीत दुवराह उर्फ बांगली असोम उर्फ दोऊ पुत्र प्रेप दुवराह, निवासी ना-मोटापंग, बारेकुरी पुलिस स्टेशन जिला तिनसुकिया के रूप में की गई। पकड़े गए उग्रवादी की पहचान निरन्ता मोरन पुत्र प्रदीप मोरन, निवासी 2 हबेदा गांव, पुलिस स्टेशन बोरदूबी, जिला तिनसुकिया के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जुग कांत बोराह, निरीक्षक, सीमंता बोराह, उप निरीक्षक, दीपक बोराह, कांस्टेबल और बुधेश्वर चक्रधर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.01.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 92-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री कमल चन्द्र सिल,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.12.2012 को लखीपुर पुलिस स्टेशन के अंतर्गत सौरकोना गांव के सामान्य क्षेत्र में गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी के उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में मिली खुफिया जानकारी के आधार पर, उप-निरीक्षक श्री कमल चन्द्र सिल, कमान अधिकारी लखीपुर पुलिस स्टेशन के नेतृत्व में 13वीं सिख रेजीमेंट और लखीपुर पुलिस स्टेशन के पुलिस स्टाफ द्वारा लगभग 1800 बजे एक संयुक्त अभियान चलाया गया। तलाशी अभियान के दौरान लगभग 1950 बजे सौरकोना गांव के बाहर आस-पास की घनी झाड़ियों में 2-3 लोगों की संदिग्ध गतिविधि दिखाई दी। आर्मी टीम के कैप्टन पी. के. जायसवाल और उप-निरीक्षक कमल चन्द्र सिल, कमान अधिकारी, लखीपुर पुलिस स्टेशन ने अनुकरणीय नेतृत्व और युक्तिपूर्ण कुशाग्रता का परिचय देते हुए बच निकलने के सभी रास्ते बंद कर दिए। जब उन्हें सामने आने की चुनौती दी गई, तो उग्रवादियों ने अभियान दल पर झाड़ियों से ही अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। उप-निरीक्षक कमल चन्द्र सिल ने प्रभावी रूप से कमान संभालते हुए और साहस दिखाते हुए अपने व्यक्तिगत हथियार से गोलियां चलाईं और उग्रवादियों को घेर लिया। एम-16 स्वचालित असॉल्ट राइफल से अंधाधुंध बरस रही गोलियों से घिरे होने के वाबजूद अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उप-निरीक्षक कमल चन्द्र सिल ने तत्काल बदले में उग्रवादियों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं और अपनी सामान्य ड्यूटी से हटकर अदम्य साहस दर्शाते हुए एक उग्रवादी को मार गिराने में सफल हुए। उनके इस वीरतापूर्ण कृतय से अभियान दल के साथ-साथ नागरिकों को होने वाली क्षति को रोकने में सहायता मिली। मारे गए उग्रवादी की पहचान जी एन एल ए के एस एस कमांडर-इन-चीफ के निकटतम प्रशिक्षित कट्टर जी एन एल ए उग्रवादी एस लांस कारपोरल बिलपाक बी. माराक के रूप में हुई, जो कई उग्रवाद संबंधी मामलों में वांछित था। मृतक उग्रवादी के कब्जे से गोलाबारूद के 12 (बारह) जिन्दा कारतूसों सहित एक 5.56 एम एम ऑटोमेटिक एम-16 असॉल्ट राइफल और जी एन एल ए से संबंधित कुछ अभिशंसी दस्तावेज बरामद और जब्त किए गए।

इस संबंध में लखीपुर पुलिस स्टेशन में आयुध अधिनियम की धारा 25 (1-ख) (क)/27 और विधिविरुद्ध क्रियाकलाप अधिनियम की धारा 10/13 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की धारा 121/121 (क)/122/353/307 के तहत मामला सं. 679/12 दर्ज किया गया था।

इस मुठभेड़ में श्री कमल चन्द्र सिल, उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.12.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 93-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री विष्णु राम लेडिया, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री विष्णु कुमार लेडिया कांकेर जिले के दुर्गकोंडल पुलिस स्टेशन में कांस्टेबल के रूप में कार्यरत थे। बी एस एफ की बटालियन संख्या 200 को दिनांक 20 अक्तूबर, 2009 से छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में नक्सल रोधी अभियान के लिए तैनात किया गया था। यूनिट ने उस क्षेत्र को सड़क सुरक्षा अभियानों, मोबाइल चेक पोस्ट और एरिया डोमिनेशन पैट्रोल के माध्यम से उस क्षेत्र पर प्रभुत्व जमाने और सफाई करने की योजना बनाई। दिनांक 29 अगस्त, 2010 को लगभग 0400 बजे रणनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार विधिवत तैयारी करने के बाद 02 निरीक्षकों, अन्य रैंकों के 57 सदस्यों, रणनीतिक मुख्यालय के सदस्यों, विष्णु राम लेड़िया सहित 04 पुलिस कर्मियों और छत्तीसगढ़ पुलिस के 05 एसपीओ, का एक दल भानुप्रतापपुर-पाखनजूर की धुरी पर स्थित दुर्गकोंडल और भुस्की गांव के बीच के क्षेत्र की सफाई करने के लिए रणनीतिक मुख्यालय, दुर्गकोंडल से गया। यह पूरा क्षेत्र नालों और घने जंगलों से घिरा है। घने-पेड-पौधों और घुमावदार सड़कों के कारण 25-30 मीटर की दूरी तक ही दिखाई पड़ता था। ऊबड़-खाबड़ रास्ते और प्रतिकूल मौसम के कारण आवाजाही भी बाधित होती थी।

निरीक्षक अर्जुन सिंह के नेतृत्व वाले दल को एरिया डोमिनेशन पैट्रोल और सड़क सुरक्षा अभियान के लिए तैनात किया गया था, का जबकि निरीक्षक मनीष कुमार के दल को मोबाइल चेक पोस्ट का कार्य सौंपा गया था। दल सभी एहतियाती उपाय करके रणनीतिपूर्वक आगे बढ़ा। विष्णु राम लेडिया को उक्त क्षेत्र की स्थलाकृति की अच्छी जानकारी थी और वे पुलिस दल के लिए मार्गदर्शक थे। वे डीएसएमडी की सहायता से आईईडी को हटाने वाले बी एस एफ के कार्मिकों को सड़क के दायीं ओर से सुरक्षा प्रदान कर रहे थे।

लगभग 0650 बजे, जब आगे बढ़ रहे स्काउट्स दुर्गकोंडल से लगभग 8.5 कि.मी. की दूरी पर स्थित माइल स्टोन सं. 33 और 34 के बीच सड़क के मोड़ पर पहुंचे, तब वे उत्तर-पश्चिम दिशा से होने वाली भारी गोलीबारी से घिर गए। एक भी पल खोए बिना आगे बढ़ रहे सिपाही सड़क के बाईं ओर कूद गए और वहां पर आश्रय ले लिया, किन्तु तब तक नक्सलियों ने दक्षिण-पश्चिम दिशा से भी गोलियां चलानी शुरू कर दी। पैट्रोलिंग दल के सिपाही, शुरू में, अच्छी पोजीशन लिए हुए और पूरी तरह सुरक्षित और भलीभांति घात लगाए नक्सलियों, की भारी गोलीबारी से घिर गए।

पैट्रोलिंग दल पर सभी दिशाओं से लक्ष्य साधकर की गई गोलीबारी के प्रभाव को देखते हुए विष्णु राम लेडिया ने, स्वयं कठिन स्थिति में होने के बावजूद कार्रवाई में लगे पुलिस दल का मार्गदर्शन किया। उनकी स्थलाकृति की जानकारी और निडर मनोवृति के परिणामस्वरूप सिपाही प्रभावी ढंग से जवाबी कार्रवाई करने में सक्षम हुए और पूरी तरह सुरक्षित नक्सली अपनी पोजीशन बदलने के लिए बाध्य हो गए। इससे पैट्रोलिंग दल के सदस्यों को पुन: संगठित होने और घात तोड़ने का अवसर भी मिला।

श्री विष्णु राम लेडिया ने पुलिस पार्टी को अन्य सदस्यों को घात से बचाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करके उच्चतम स्तर की व्यावसायिकता और साहस का परिचय दिया और उन्होंने अपने जीवन की कुर्बानी दे दी।

की गई बरामदगियां:- एक लोहे का पाइप बम, तार सहित एक डेटोनेटर, 3 पेट्रोल बम, 2 डेटोनेटर बम, 01 एसएलआर मैगजीन, एसएलआर के 13 जिन्दा कारतूस, एसएलआर के 18 चले हुए कारतूस, .303 के 10 चले हुए कारतूस, इन्सास के 15 चले हुए कारतूस, ए के 47 के 4 चले हुए कारतूस और .12 बोर के पांच चले हुए कारतूस।

इस मुठभेड़ में (स्वर्गीय) श्री विष्णु राम लेडिया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.08.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 94-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. संतोष कुमार पाण्डेय,
   सहायक प्लाटून कमांडर

2. रमेश शोरी,
   हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नलनार क्षेत्र में नक्सलियों की उपस्थिति के बारे में विशेष खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। दिनांक 11.06.2013 को, विशेष कार्य बल (एसटीएफ) सहित 235 कार्मिकों का एक खोजी दल नलनार उलिसपारा की ओर गया। एस टी एफ दल ने नलनार गांव में अलिसपारा नदी के दूसरी ओर घात लगा दी दिनांक 12.06.2013 को जिला पुलिस बल ने उलिसपारा नदी की ओर घूमते हुए एक सशस्त्र नक्सली को देखा। पुलिस दल पांच टीमों में बंट गया और पूरे क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। सभी ओर से पुलिस दल को अपनी ओर आते देखकर नक्सलियों ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं। सन्तोष कुमार पाण्डेय (एसटीएफ के एपीसी) और हेड कांस्टेबल रमेश कुमार शोरी ने अपने पुलिस संघटन सहित नक्सलियों का पीछा किया और उनकी ओर से आने वाली गोलियों का बहादुरी से सामना किया। नक्सलियों ने अपने घायल साथियों को साथ में लेकर पहाड़ी की ओर बचकर भागना शुरू कर दिया। दुर्गम मार्ग होने के बावजूद पुलिस दल पहाड़ी पर चढ़ गया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। पुलिस दल नलनार दलम की महिला नक्सली सरिता को मारने के साथ-साथ नक्सलियों को भी हताहत करने में सफल रहा। इस प्रकार पुलिस दल ने नक्सलियों पर विजय पाई और नक्सली बचकर जंगल में भाग गए और एक 0.303 राइफल, एक लोकल पिस्तौल, दो भरमार बन्दूकें, 0.303 राइफल के 16 राउन्ड, तीन टिफिन बम, राउन्ड एयर गन, आठ क्रैकर बम, चार बण्डल इलेक्ट्रिक वायर, 38 डेटोनेटर, पांच फ्लैश बैटरी, एक जीपीएस, तीन वोल्टामीटर और अन्य विनाशक सामग्री, काली वर्दी, नक्सली साहित्य, मेडिकल किट आदि छोड़कर भाग निकले। पुलिस पार्टी ने खून के धब्बे और मुठभेड़ स्थल के विभिन्न स्थानों पर खींचने के निशान भी पाए, जिससे यह पता चलता है कि नक्सली घने जंगल और कठिन रास्ते का फायदा उठाकर कुछ और घायल नक्सलियों और शवों को उठाकर भागने में सफल रहे।

जिला पुलिस के सर्वश्री संतोष कुमार पाण्डेय और रमेश कुमार शोरी ने अपनी पार्टियों का सामने से नेतृत्व किया और सुविधाजनक पोजीशन वाले नक्सलियों की गोलियों का वीरतापूर्वक सामना किया और न केवल नकसलियों का पीछा करके उन्हें भगाने में, बलिक उन्हें हताहत करने में भी सफल रहे।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री संतोष कुमार पाण्डेय, सहायक प्लाटून कमांडर और रमेश शोरी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.06.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 95-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री देवराम भास्कर,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीजापुर जिले के कुरचोली क्षेत्र में माओवादी मिलिट्री कम्पनी संख्या 2 की गतिविधियों के बारे में सूचना मिलने पर एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई। विधिवत योजना बनाने और जानकारी देने के पश्चात, जिला पुलिस और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियों को दो दलों में बांटा गया। दिनांक 23.02.2013 को पहला दल पामालवाया मार्ग से और दूसरा दल चेरपाल से कुरचोली के लिए रवाना हुआ।

कुरचोली पहुंचने से पूर्व, दल संख्या 1 दो समूहों में बंट गया और प्रत्येक समूह में सीआरपीएफ और डीईएफ दोनों के कार्मिक शामिल थे। जिला पुलिस के संघटक के एक समूह का नेतृत्व एस आई समीर और ए एस आई भास्कर और सी आर पी एफ के संघटक का नेतृत्व सी आर पी एफ के डी आई जी एस. इलांगो कर रहे थे, जबकि जिला पुलिस संघटक के दूसरे समूह का नेतृत्व एस आई राजू और सी आर पी एफ के संघटक का नेतृत्व ए. सी. मधु कर रहे थे। कुरचोली के आस-पास के सम्पूर्ण क्षेत्र की छानबीन करने के बाद जब तभी दिनांक 24.02.2013 को लगभग 1500 बजे पहले समूह की टुकड़ी भोजन कर रही थी, तभी माओवादियों ने सुरक्षा बलों को डराने के लिए शुरू में पटाखे फोड़े और फिर अपनी एलएमजी से गोलियों की बौछार की। हमले की तीव्रता बढ़ गई और भीषण गोलीबारी शुरू हो गई क्योंकि परिष्कृत हथियारों से लैस माओवादी सुरक्षा बलों की ओर आगे बढ़ते रहे थे। तब एएसआई भास्कर को 10 कार्मिकों के साथ बाईं ओर से आगे बढ़ने को कहा गया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना ए एस आई भास्कर अपने कार्मिकों का नेतृत्व करते हुए आगे बढ़े और नक्सलियों की गोलीबारी का भरपूर जवाब दिया। दूसरी ओर से नक्सलियों की भारी गोलीबारी से विलित हुए बिना वे विश्वासपूर्वक आगे बढ़े और जवाबी गोलियां चलाईं। गोलीबारी में कुछ नक्सली घायल हो गए थे, जिन्हें उनके साथियों द्वारा ले जाते हुए देखा गया। अंधेरा होने वाला था। सुरक्षा बलों की भयानक जवाबी कार्रवाई के कारण नक्सली पीछे हट गए। सुरक्षा बल नक्सलियों को हताहत करने में भी सफल रहे। बाद में दो वर्दीधारी नक्सलियों के शव बरामद किए गए, जिनकी पहचान पूनम मितकू उर्फ पुस्नार की किस्मत और रत्ना साम्बी रेड्डी उर्फ सलीम के रूप में की गई और ये दोनों दूसरी मिलिट्री कम्पनी के सदस्य थे।

अन्य बरामदगियां:-

1.	12 बोर गन	01
2.	हैंड ग्रेनेड	02
3.	एसएलआर मैगजीन	01
4.	बुलेट (12 बोर गन)	22
5.	प्रेशर बम के मेकैनिज्म	19
6.	डेटोनेटर	03
7.	बुलेट (.303 गन)	06
8.	खाली खोखे (303 गन)	02
9.	खाली खोखे (एसएलआरगन)	08
10	आर डी एक्स	03 कि.ग्रा.
11.	कोरडेक्स वायर	02 फुट
12.	नकसली साहित्य	01

इस मुठभेड़ में श्री देवराम भास्कर, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.02.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 96-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री यशपाल राठी, (मरणोपरांत)
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री यशपाल राठी, हेड कांस्टेबल (कार्यकारी) पक्की सत्यनिष्ठा, कुशाग्र बुद्धिमता एवं निर्विवाद ईमानदारी वाले और परिश्रमी अधिकारी थे जिनके मन में उन्हें सौंपे गए श्रमसाध्य और थकाने वाले कार्यों के प्रति कोई दुर्भाव नहीं था और वे अपने कार्य को अत्यंत उत्साह और जिम्मेदारी की भावना से करते थे। उन्हें पुलिस के व्यावहारिक कार्यों की अच्छी जानकारी थी और उनके निष्ठापूर्ण कठिन परिश्रम के कारण उन्हें दिल्ली पुलिस की विभिन्न यूनिटों/जिलों में तैनात किया गया था और अंतिम बार उन्हें दक्षिणी जिले में तैनात किया गया था। उन्होंने असामान्य प्रयत्नों के आधार पर अनुकरणीय वीरता का कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः भयंकर मेवाती गैंग को तहस नहस करने में सफलता प्राप्त हुई।

एक कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल के रूप में उन्होंने असाधारण कार्य किया जो अपराधियों विशेष रूप से मेवाती गैंग के संबंध में उनकी विशिष्ट जानकारी से सुस्पष्ट है। मेवाती गैंग अधिकांशतः पशु लेकर भाग जाते थे और प्रायः सेंधमारी के लिए छोटे बाजारों की दुकानों के शटर तोड़ते थे। इस समय मेवात क्षेत्र में लगभग 20 चिन्हित बड़े-छोटे अपराधी समूह हैं। ये छोटी-छोटी चोरियों के लिए नृशंस हत्याओं, सशस्त्र लूटपाट और सामूहिक बलात्कारों आदि जैसे अन्य जघन्य अपराधों में शामिल होते हैं। मेवाती अपराधी वास्तव में पुलिस के लिए चिन्ता का विषय हो गए हैं और वे 2/4/6 पहिये वाले वाहनों की चोरी करते हैं और पशुओं की चोरी/सेंधमारी, लूटपाट आदि करने के लिए टाटा-407 और अन्य वाहनों का उपयोग करते हैं। इस समय वे महिन्द्रा पिक-अप का प्रयोग कर रहे हैं।

समय के साथ-साथ हेड कांस्टेबल यशपाल राठी ने प्रछन्न खतरों और अपनी जान को गम्भीर जोखिम से अवगत होने के वाबजूद दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में मेवाती अपराधियों की गतिविधियों के बारे में असाधारण जानकारी प्राप्त कर ली थी। हेड कांस्टेबल यशपाल राठी ने दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न क्षेत्रों विशेषरूप से दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम जिलों सहित बाहरी क्षेत्रों में अपराधियों को पकड़ने के लिए अपने स्रोत विकसित कर लिए थे।

हेड कांस्टेबल यशपाल राठी को मेहरौली पुलिस स्टेशन में तैनाती के समय दिनांक 23.08.2012 को रात्रि लगभग 10.15 बजे भारतीय दण्ड संहिता की धारा 498क/406/34 के अंतर्गत मेहरौली पुलिस स्टेशन की एफआईआर संख्या 594/04 के मामले में जमानत बाण्ड के सत्यापन के लिए कहा गया था। वे प्रस्थान डीडी संख्या 82-बी के तहत सरकारी वाहन बजाज पल्सर मोटर साइकिल सं. डीएल 1 एसएन 9586 पर गए क्योंकि यह रिपोर्ट 24.08.2012 को नियत प्रयोजन के लिए न्यायालय में पेश की जानी थी। जमानत बाण्ड में दिया गया पता दक्षिण-पश्चिम जिला-नई दिल्ली के नजफगढ़ के अधिकार क्षेत्र में पड़ता था। इसी बीच मध्यरात्रि में उन्हें नजफगढ़ क्षेत्र में भयंकर मेवाती गैंग की गतिविधियों के बारे में सूचना प्राप्त हुई और हेड कांस्टेबल यशपाल बिना समय गवाए और खतरे की गंभीरता की परवाह किए बिना तत्काल मेवाती अपराधियों की गतिविधियों के स्थान की ओर गए। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे बहादुरी से आगे बढ़े और बचकर भागने का प्रयत्न कर रहे अपराधियों को रोकने के लिए त्वरित कार्रवाई की। हैड कांस्टेबल यशपाल राठी ने अपनी सरकारी मोटर साइकिल से उनके वाहन को रोका और भलीभांति यह जानते हुए कि मेवाती अपराधी घातक हथियारों से लैस हो सकते हैं, निडरता से उन्हें रूकने की चुनौती दी। हेड कांस्टेबल यशपाल राठी का साहसिक कृत्य देखकर मेवाती अपराधियों ने जो संख्या में 10 थे और जैसे कि वे भयंकर हैं ही, तत्काल हेड कांस्टेबल पर सीधा निशाना बनाकर गोलियां चलानी शुरू कर दीं और उनके सिर पर वार करके गंभीर चोट पहुंचाई। गंभीर रूप से घायल होने के वाबजूद श्री राठी ने अनुकरणीय साहस प्रदर्शित करते हुए उन्हें रोकने और पकड़ने का भरसक प्रयास किया। जब तक वे गिर नहीं गए, तब तक अपराधियों से भिड़ते रहे और स्थिति का लाभ उठाकर अपराधी घटना स्थल से भाग निकले। उसके बाद हेड कांस्टेबल यशपाल राठी को राव तुलाराम अस्पताल, जाफरपुर कलां ले जाया गया जहां उन्हें मृतक लाया गया घोषित कर दिया गया। इस संबंध में, आईपीसी की धारा 302 के अंतर्गत दिनांक 24.08.2012 को बाबा हरिदास नगर पुलिस स्टेशन में एफ आई आर संख्या 192/12 के तहत एक मामला दर्ज किया गया था। जांच के दौरान चार अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया।

हेड कांस्टेबल यशपाल राठी का यह साहसपूर्ण बहादुरी का कृत्य असाधारण और उनके सामान्य ड्यूटी की अपेक्षाओं से बढ़कर था। उन्होंने भयंकर अपराधियों को पकड़ने में उच्चतम साहस, कर्तव्यपरायणता, सामंजस्य, व्यावसायिकता, सूझबूझ और बहादुरी का परिचय

दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर अपराधियों के विरुद्ध लड़ते हुए अपना जीवन न्योछावर कर दिया और अपनी सरकारी ड्यूटियों की सामान्य परिधि से आगे बढ़कर अनेक बड़े अपराधों को रोका। उनके शानदार कार्य निष्पादन से विभाग का गौरव बढ़ा, जिसकी सामान्य जनता और मीडिया द्वारा बहुत प्रशंसा की गई।

इस एक्शन में स्वर्गीय श्री यशपाल राठी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.08.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 97-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री राम किशन, (मरणोपरान्त)
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 25.11.2012 को हेड कांस्टेबल राम किशन और कांस्टेबल जी. के. सिद्धैया को रात 8 बजे तक दिल्ली के बाहरी जिले के कंझावला पुलिस स्टेशन के अंतर्गत दिल्ली-हरियाणा सीमा पर स्थित जौंटी टॉल टैक्स पिकेट पर रात की पिकेट ड्यूटी पर तैनात किया गया था।

दिनांक 26.11.2012 को लगभग प्रात: 2.10 बजे जौंटी गांव की ओर से एक सफेद कार आई। चूंकि वह वाहन संदेहास्पद स्थिति में जा रहा था, अत: उसे जांच के लिए हेड कांस्टेबल राम किशन द्वारा रोका गया। कार में चार लोग सवार थे। पिछली सीट पर बैठे दो लोगों को कार से उतार कर हेड कांस्टेबल राम किशन ने उनकी भौतिक जांच की। उसके बाद हेड कांस्टेबल ने कार की अगली सीट पर बैठे व्यक्ति को बाहर आने के लिए कहा। किन्तु जब कार का दरवाजा खोलने के बाबजूद अगली सीट पर बैठा व्यक्ति बाहर नहीं निकला, तो हेड कांस्टेबल ने उसे बाहर निकालने के लिए थोड़ा बल प्रयोग किया। इसी समय ड्राइवर ने विपरीत दिशा में कार चलानी शुरू कर दी। इसी बीच, अगली सीट पर बैठे व्यक्ति ने पिस्तौल निकाल कर हेड कांस्टेबल पर निशाना साधा। हेड कांस्टेबल ने बहुत साहस और सूझबूझ दर्शाते हुए और अपनी जान की परवाह किए बिना तेजी से हमलावर से पिस्तौल छीन ली।

हमलावरों को भागने से रोकने के लिए हेड कांस्टेबल राम किशन ने अपनी जान जोखिम में डालते हुए उन्हें पकड़े रखा। तेजी से चलती हुई कार रूकी नहीं और हेड कांस्टेबल राम किशन, जिन्होंने वाहन के अगले बाएं दरबाजे से हमलावर को पकड़ रखा था, कुछ दूरी तक घसीटते हुए चले गए। कार में बैठे हमलावर डर गए और उन्होंने हेड कांस्टेबल पर दो गोलियां चलाईं जो उनके मर्मस्थल पर लगी। हमलावरों द्वारा चलाई गई गोलियों की चोट के कारण हेड कांस्टेबल राम किशन हमलावरों की तेजी से भाग रही कार से गिर गए और अपराधी घटना स्थल से भाग गए।

उप निरीक्षक खजान सिंह ने पुलिस नियंत्रण कक्ष को इस घटना की सूचना दी और घायल हेड कांस्टेबल को निकटवर्ती अस्पताल (ब्रह्मशक्ति अस्पताल) पहुंचाया गया, जहां उन्हें मृतक लाया गया घोषित किया गया। अपराधी से छीनी गई पिस्तौल की जांच की गई जिसमें 9 एमएम कैलिवर के पांच जिन्दा कारतूस लगे पाए गए। आई पी सी की धारा 186/353/302/34 के अधीन एफआईआर संख्या 258/12 और आयुध अधिनियम 25/27 के तहत, दिनांक 26.11.2012 को पुलिस स्टेशन कंझावला में एक मामला दर्ज किया गया है जो जांचाधीन है।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा द्वारा यह मामला सुलझा दिया गया है। इस हत्या में दिल्ली और हरियाणा का वांछित भयानक अपराधी नीतू दवोदा का हाथ था। वह मार्च, 2012 में कोर्ट ले जाते हुए पुलिस हिरासत से बच कर भाग गया था। उस पर एक लाख रुपए का इनाम रखा गया था।

हेड कांस्टेबल राम किशन ने भयंकर सशस्त्र अपराधियों को पकड़ने में अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की बहादुरी का प्रदर्शन किया और इस प्रकार विश्वासघातियों को पकड़ने के प्रयास में अपना जीवन न्योछावर कर दिया। हेड कांस्टेबल राम किशन द्वारा दर्शायी गई बहादुरी की न केवल पुलिस के उच्चतम अधिकारियों और मीडिया द्वारा, बल्कि जन-साधारण द्वारा भी बहुत प्रशंसा की गई। उन्होंने बहादुरी और कर्तव्यपरायणता का असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस एक्शन में (स्व.) राम किशन, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.11.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 98-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री उमेश कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिल्ली पुलिस के दक्षिण जिले के अधिकारियों ने असाधारण प्रयत्न करके अनुकरणीय बहादुरी का कार्य किया जिसमें 19.01.2009 को ग्रीन पार्क क्षेत्र में गोलीबारी की घटना के पश्चात एक सफल अभियान में सत्ते-बिट्टू नामक एक भयानक गैंग के सात सदस्य गिरफ्तार किए गए थे। उनके कब्जे से बड़ी मात्रा में कारतूसों सहित 4 स्वचालित पिस्तौलें, 9 सेलुलर फोन, 2 चाकू, लूटी हुई एक एस एक्स-4 कार, 1 मारूति जेन, 1 होण्डा एकोर्ड, 1 सैंट्रो कार और 1 मोटर साइकिल अपराध के लिए उपयोग में लाई गई बरामद की गई। गैंग लीडर सत्य प्रकाश ऊर्फ सत्ते, भयानक गैंगस्टर नदीम उर्फ नसीम और शकील तथा उनके सहयोगी कुलदीप ऊर्फ सोनू सहित चार अपराधी दिन के उजाले में चलाई गई गोलियों से बुरी तरह जख्मी हो गए।

अभियान

वर्ष 2008 के दौरान लगभग पूरे वर्ष और 2009 के शुरू में सत्ते-बिट्टु नामक एक भयानक गैंग दिल्ली, एन सी आर, उत्तर प्रदेश और राजस्थान क्षेत्र में बैंक लूटपाट और बड़ी मात्रा में धनराशि लिए हुए व्यापारियों को लक्ष्य बनाने की सनसनीखेज घटनाओं को अन्जाम दे रहा था। इन सभी सनसनीखेज घटनाओं में, अपराधियों द्वारा बड़ी मात्रा में आग्नेयास्त्र प्रयोग किए जाते थे और अधिकांश मामलों में पीड़ित कई-कई गोलियों से घायल हो जाते थे। अन्ततः, दिल्ली पुलिस के विभिन्न दलों द्वारा इस दुर्दांत गैंग के सदस्यों को गिरफ्तार करने के लिए उपलब्ध सुरागों के अनुसार कार्रवाई की गई। पुलिस मुख्यालय द्वारा 25000/- रु. का इनाम भी घोषित किया गया और नन्द नगरी, नई दिल्ली पुलिस स्टेशन में सत्य प्रकाश सत्ते के विरूद्ध मकोका के अंतर्गत एक मामला भी शुरू किया गया था। दिल्ली पुलिस के विभिन्न दलों द्वारा अत्याधिक प्रयास करने के बावजूद यह गैंग पकड़ में नहीं आया और दिल्ली, एन सी आर, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में लगातार सनसनीखेज अपराधों को अन्जाम देता रहा।

इस गैंग को निष्क्रिय करने के उद्देश्य से पुलिस स्टेशन लोदी कॉलोनी और ए ए टी एस (एन्टी ऑटो थ्रेफ्ट स्क्वाड), दक्षिण जिला का एक संयुक्त दल बनाया गया जिसमें श्री विक्रमजीत सिंह, एसीपी/डिफेंस कालोनी की निगरानी में और श्री एच जी एस धालीवाल, डीसीपी/दक्षिण जिला के नेतृत्व में इंस्पेक्टर राजेन्द्र सिंह, एसएचओ/लोदी कालोनी, इन्सपेक्टर जरनैल सिंह, आई/सी एएटीएस, एस आई पवन तोमर, प्रमोद जोशी, बलिहार सिंह और अन्य शामिल थे। दल के प्रयास शीघ्र ही सफल हुए और दक्षिण दिल्ली के ग्रीन पार्क क्षेत्र में सत्ते गैंग के सदस्यों द्वारा बैंक में लूटपाट करने की योजना बनाने से संबंधित गतिविधियों के बारे में लोदी कालोनी पुलिस स्टेशन में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। यह सूचना मिलते ही एसएचओ, लोदी कालोनी ने तत्काल श्री एचजीएस धालीवाल, डीसीपी/दक्षिण को इसकी सूचना दी, जिन्होंने इंस्पेक्टर राजेन्द्र सिंह की देखरेख में पुलिस स्टेशन लोदी कॉलोनी के स्टाफ और इंस्पेक्टर जरनैल सिंह की देख-रेख में ए ए टी एस, दक्षिण जिला का एक संयुक्त दल बनाया।

श्री एच जी एस धालीवाल के निर्देश और समन्वय के अंतर्गत दोनों दलों ने इस नाजुक स्थिति में मिलकर कार्य किया और दुर्दांत अपराधियों द्वारा प्रयोग किए जा रहे वाहनों की सफलतापूर्वक पहचान कर ली और तेजी से काम शुरू कर दिया। जब पुलिस दल एनडीएसई-I पहुंचा तब तक अपराधी अपनी मोटर साइकिल एन डी एस ई-I में छोड़कर उपर्युक्त वाहनों से ग्रीन पार्क एक्सटेंशन के लिए निकल चुके थे। पुलिस दल ने अपराधियों के पहचाने हुए वाहन का पीछा करना शुरू कर दिया और त्वरित गति से पीछा करते हुए काली होण्डा एकोर्ड कार को ग्रीन पार्क एक्सटेंशन के गेट नं 2 पर रोका। जब पुलिस दल ने अपराधियों के वाहन के नजदीक जाने की कोशिश की, तब काली होण्डा एकोर्ड कार में बैठे अपराधियों ने पुलिस दल पर अंधाधुध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। अपराधी लगभग 12-15 मिनट तक गोलियां चलाते रहे और दोनों ओर से लगभग 54 राउंड्स गोलिया चलीं। होण्डा एकोर्ड में बैठे सभी हमलावरों को गोलियों से कई चोटें आईं और तीन पुलिस कर्मियों अर्थात् कांस्टेबल उमेश, सुरेश और कौशलेन्द्र को भी गोलियों से चोटें आईं। अन्य वाहन अर्थात् सफेद सैंट्रो कार में बैठे इन दुर्दांत अपराधियों के अन्य साथी घटनास्थल से भागने में सफल हो गए।

सभी घायलों को एम्स ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया गया। आईपीसी की धारा 307/186/332/353/341 और 25/27 आयुध अधिनियम के अंतर्गत दिनांक 19.01.2009 की एफ आई आर संख्या 24 के तहत पुलिस स्टेशन हौज खास में एक मामला दर्ज किया गया और जांच शुरू कर दी गई। चारों घायल अपराधियों को एम्स ट्रॉमा सेंटर में नाजुक हालत में भर्ती कराया गया था। दो और अभियुक्तों यथा नदीर और हरपाल उर्फ हनी को बाद में गिरफ्तार किया गया था। एम्स के अर्जुन नामक एक कर्मचारी को शराफत शेख के साथ पुलिस स्टेशन डिफेंस कॉलोनी में एफआईआर संख्या 25/09 के तहत दर्ज धोखाधड़ी और जालसाजी के एक मामले में 29.01.2009 को गिरफ्तार किया गया था जिसने सत्ते-बिट्टु गैंग के सदस्यों और मकोका में पहले से तिहाड़ जेल में बंद शराफत शेख की मां, जो मादक पदार्थों की कुख्यात व्यापारी हैं, को जाली चिकित्सा दस्तावेज उपलब्ध कराने में सहायता की थी। भगाई गई सैन्ट्रो कार भी लाजपत नगर क्षेत्र से बरामद कर ली गई थी। अपराधियों द्वारा एनडीएसई-I में छोड़ी गई मोटर साइकिल भी दोनों गिरफ्तार अभियुक्तों हनी और नदीर की निशानदेही पर बरामद कर ली गई थी। गीतांजली से लूटी गई एस एक्स-4 कार हरपाल उर्फ हनी की निशानदेही पर सरोजनी नगर क्षेत्र से जबकि सत्ते और उसके गैंग के सदस्यों द्वारा विभिन्न अपराधों में प्रयोग की गई एक मारूति जेन कार भी कमेसुम रेस्टोरेंट के पार्किंग स्थल, एच एन डिवीजन से बरामद की गई थी। अनुवर्ती कार्रवाई के दौरान अन्य भगोड़े अपराधी भी गिरफ्तार कर लिए गए थे।

पूछताछ के दौरान अभियुक्त सत्ते और उसके अन्य सहयोगियों ने उन सनसनीखेज अपराधों का खुलासा किया, जिन्हें उन्होंने अपने मौजूदा आपराधिक जीवन के सुनहरे काल के दौरान दिल्ली, राजस्थान और एनसीआर क्षेत्र में अन्जाम दिया था।

उमेश कुमार, कांस्टेबल की व्यक्तिगत भूमिका

बहादुर कांस्टेबल उमेश कुमार, जो एक प्रशिक्षित कमाण्डो हैं, की घटना स्थल पर भूमिका अत्यंत असाधारण थी। उन्होंने अपनी ए. के. 47 से आठ राउंडस गोलियां दागी और उन्होंने अपने अन्य सहकर्मी के ए.के. 47 हथियारों का भी उपयोग किया। उन्होंने लांग रेंज हथियारों से ऊपरी पोजीशन से नीचे की ओर ऐसे सुस्पष्ट एंगल से निशाना साधा कि गली में उपस्थित किसी भी नागरिक को गोली नहीं लगी। उनके द्वारा प्रयुक्त गोली चलाने के प्रशिक्षण की कुशलता से न केवल क्षेत्र के आस-पास एकत्र बहुत से लागों की जानें बचाई जा सकीं, बल्कि अपराधियों को स्वतंत्रता से अपने हथियारों का उपयोग करने से भी रोका जा सका।

अपराधियों के साथ इस भीषण मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल उमेश को भी पेट के ऊपर गोली लगी, किन्तु वे बच गए क्योंकि वे बुलेट प्रूफ जैकेट पहने हुए थे।

बरामदगियां

i) 4 स्वचालित पिस्तौलें (3 यूएसए में और 1 इटली में निर्मित)।

ii) 8 जिन्दा कारतूसों सहित 3 अतिरिक्त मैगजीन।

iii) 19 चलाए गए कारतूस।

iv) लूटी गई 1 एस एक्स-4 कार।

v) चोरी की 1 मारूति जेन कार।

vi) अपराध के लिए उपयोग की गई 1 होण्डा एकोर्ड कार।

vii) भागने के लिए अपराधियों द्वारा उपयोग की गई एक सैन्ट्रो कार।

viii) अपराध को अंजाम देने में प्रयुक्त एक मोटरसाइकिल।

ix) 10 सेलुलर फोन और विभिन्न सेवा प्रदाताओं के 17 सिम कार्ड।

x) 2 चाकू।

xi) कुछ जाली दस्तावेज।

xii) लूटी हुई धनराशि रखने के लिए 2 ट्रैकेलिंग बैग।

इस मुठभेड़ में श्री उमेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.01.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 99-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. चौधरी इफ्तखार अहमद,
   उप पुलिस अधीक्षक

2 तबरेज अहमद खान,
   उप निरीक्षक

3. फयाज अहमद,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिन के लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 13.12.2012 को सोपोर पुलिस को जिला सोपोर पुलिस स्टेशन के अधीन मुंडजी गांव के पास सेबों के उद्यान में कुछ आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त हुई और तदनुसार सूचना के आधार पर एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई और उसी दिन लगभग 1430 बजे सोपोर पुलिस, 179 बटालियन सीआरपीएफ और आर्मी 22 आरआर द्वारा अभियान शुरू किया गया। उप पुलिस अधीक्षक चौधरी इफ्तखार अहमद के नेतृत्व में पुलिस दलों ने घने झाड़-झंखाड़ सहित लगभग 500 वर्ग मीटर के सेब के उद्यान वाले क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। बलों द्वारा भागकर बचने के सभी रास्ते बन्द कर दिए गए। सबसे पहले पुलिस दलों ने घेराबन्दी वाले क्षेत्र के अन्दर स्थित उद्यान में काम कर रहे नागरिकों का बचाव शुरू किया क्योंकि सेब के उद्यानों में काम करने वाले बहुत से नागरिकों को आते-जाते देखा गया था। तदनुसार, उप पुलिस अधीक्षक चौधरी इफ्तखार अहमद के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने नागरिकों को पुकारना शुरू कर दिया, जिसके दौरान फेरन (ओवर कोट गाउन जैसा कपड़ा) पहने हुए आतंकवादियों ने पुलिस पार्टी पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं जिसमें श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक बाल-बाल बचे। जब आतंकवादी श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक द्वारा की जा रही जवाबी गोलीबारी में उलझे हुए थे तब, उप निरीक्षक तबरेज अहमद खान और कांस्टेबल फयाज अहमद नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर ले गए। बाहरी घेरे की चौकसी कर रही आर्मी और सीआरपीएफ की पार्टियों ने एक आतंकवादी को उद्यान के निकट स्थित नाले की ओर छिपकर जाते हुए देखा। घेरा संभाले आर्मी पार्टी ने आतंकवादी पर गोली चलाई और उसे वापस लौटने पर मजबूर कर दिया। अचानक आतंवादियों की ओर से गोलीबारी बंद हो गई, जो घेराबंदी वाले क्षेत्र में कहीं पर छिपे हुए थे, जो नालों और गहरी सकरी झाड़ियों वाला अत्यंत ऊबड़-खाबड़ और लहरदार क्षेत्र था। उद्यान में गिरे हुए पत्तों के ढेर और कांटे थे। जहां बाहरी मजबूत घेराबंदी आर्मी और सीआरपीएफ ने संभाली हुई थी, वहीं श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, उप निरीक्षक तबरेज अहमद और कांस्टेबल फयाज अहमद ने घेराबन्दी करके क्षेत्र की छानबीन शुरू कर दी। उद्यान के उत्तरी दिशा की छानबीन करते हुए उन्होंने सेब के पेड़ों की गिरी हुई सूखी डालों के ढ़ेर के नीचे कुछ हलचल देखी। आतंकवादियों की नजरों से बचते और संदिग्ध स्थान के निकट रेंगते हुए पहुंच कर तीन पुलिस वाले दृढ़तापूर्वक जमीन पर लेट गए।

नागरिकों को हटाते समय आतंकवादियों की गोलियों की बौछार का सामना करने के बावजूद श्री चौधरी इफ्तखार अहमद के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी के 3 सदस्यों ने आतंकवादयों को निष्क्रिय करने के लिए एक और जोखिम उठाने का निश्चय किया। पुलिस दल ने आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने बदले में पुलिस दल पर गोलियां चलाईं तथापि, पुलिस दल के पास अपनी सुरक्षा की पर्याप्त पर्याप्त व्यवस्था की थी। आर्मी की प्रभावशाली सहायता से पुलिस दल ने तत्काल जबाबी कार्रवाई की, किन्तु उसका कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि आतंकवादी ऊंचे स्थान पर आश्रय लेकर अच्छी स्थिति में थे। कुछ समय तक दोनों ओर से गोलीबारी

जारी रही। आतंकवादियों को निष्क्रिय करने के उद्देश्य से पुलिस दल ने उन्हें पिछली ओर से घेरने का निर्णय किया। जब उप निरीक्षक तबरेज अहमद खान और कांस्टेबल फयाज अहमद ने कवरिंग फायरिंग की, तब श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक रेंगते हुए आतंकवादियों के पीछे की ओर पहुंचे जो उस समय पुलिस दल के अन्य सदस्यों के साथ परस्पर गोलीबारी में लगे हुए थे। 03 सदस्यों वाली आर्मी की टीम भी अगली ओर से नजदीक पहुंच गई और आतंकवादियों को उलझा दिया तथा पुलिस दल के दो अन्य सदस्यों ने भी पिछली ओर से श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक का साथ दिया। जब पुलिस दल ने पीछे से आतंकवादियों को ललकारा, तो उन्होंने यूबीजीएल से भारी गोलीबारी की और पुलिस दल पर ग्रेनेड फेंके जो आश्चर्यजनक ढंग से बच गए। तथापि, इससे पुलिस दल अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुआ तथा आतंकवादियों पर लगातार गोलीबारी करता रहा और परस्पर गोलीबारी में एक आतंकवादी मारा गया जो बाद में पाकिस्तानी नागरिक निकला। एक अन्य आतंकवादी ने बच निकलने का प्रयास किया, किन्तु पुलिस दल ने उसका पीछा किया और बाहरी घेराबन्दी कर रहे आर्मी दल से उनकी मुठभेड़ हुई और आर्मी और पुलिस दल के साथ परस्पर गोलीबारी में उद्यान क्षेत्र की बाहरी घेराबंदी में मारा गया। इन आतंकवादियों की पहचान बाद में उमर अहसान भट्ट ऊर्फ खिताब पुत्र मोहम्मद अहसान निवासी यामराच कुलगाम और अबु मूसा निवासी पाकिस्तान के रूप में हुई।

इस अभियान के दौरान ऐसे कई अवसर आए जब पुलिस दल की जान जोखिम की स्थिति में आ गई और उन्होंने अपना धैर्य और संतुलन खोए बिना अनुकरणीय साहस और धैर्य से आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना किया। लश्कर-ए-तैयबा आतंकवादी संगठन के 02 कट्टर आतंकवादियों का मारा जाना पुलिस और सुरक्षा बल के लिए वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि थी और यह उपलब्धि श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक की अनुकरणीय बहादुरी के साथ-साथ अकेले उत्कृष्ट अभियान कमान और नेतृत्व गुण और उप निरीक्षक तबरेज अहमद खान और कांस्टेबल फयाज अहमद के दुर्लभ साहस और सैनिक कौशल के कारण ही प्राप्त हो सकी।

बरामदगी:

1.	ए.के. राइफल	02
2.	ए.के. मैगजीन	04
3.	बारूद ए. के..	18 राउन्ड्स
4.	चीनी पिस्तौल	01
5.	पिस्तौल मैगजीन	01
6.	पिस्तौल राउंड्स	04
7.	जी पी एस डिवाइस	01
8.	पाउच	02
9.	कम्पास	01
10.	मैट्रिक्स शीट	01
11.	ग्रेनेड	03
12.	डेटोनेटर	07
13.	यूबीजीएल	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री चौधरी इफ्तखार अहमद, उप पुलिस अधीक्षक, तबरेज अहमद खान, उप निरीक्षक एवं फयाज अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.12.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 100-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम वार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. रयाज इकबाल तान्त्रे, (वीरता के लिए पुलिस पदक)
उप पुलिस अधीक्षक

2.	मोहम्मद मंजूर गोजरी, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम वार)
3.	काफिल अहमद मीर, सहायक उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम वार, मरणोपरान्त)
4.	मोहम्मद सादिक कुरेशी, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20.10.2012 को सोपोर पुलिस को मुजामिल अमीन ऊर्फ हाशम नामक आतंकवादी और उसके सहयोगी पाकिस्तानी आतंकवादी अब्दुल्ला शाहीन की सोपोर शहर की शालपुरा बस्ती में मौजूदगी की सूचना मिली, जो सोपोर पुलिस स्टेशन पर आत्मघाती हमला करने की योजना बना रहे थे। इस सूचना के आधार पर पुलिस, आर्मी 22 आर आर और 179 सीआरपीएफ द्वारा एक संयुक्त अभियान चलाने की योजना बनाई गई। उप-पुलिस अधीक्षक रियाज इकबाल की कमान में पुलिस दलों ने लक्षित स्थान की ओर कूच किया और लगभग 20 घरों वाले उक्त गांव को शीघ्रता से घेर लिया। बचकर भागने के सभी रास्तों को बंद करने के लिए क्षेत्र को सील कर दिया। सर्वप्रथम, पुलिस दलों ने घेरे गए घरों से नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर हटाना शुरू किया ताकि नागरिकों को कोई क्षति न पहुंचे, लेकिन इसी दौरान आतंकवादियों ने अभियान दल पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी और 179 सीआरपीएफ के कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी को घायल कर दिया। निरीक्षक मोहम्मद मंजूर अपनी जान की परवाह किए बिना घायल कांस्टेबल को, जिसका अत्यधिक खून बह रहा था, वहां से हटाने के लिए अत्यधिक सावधानीपूर्वक आगे बढ़े। उनके साथियों द्वारा उन्हें कवर फायरिंग देने पर वे रेंगकर सीआरपीएफ के अपने घायल साथी के निकट पहुंचे और उसे धीरे से खींचकर सुरक्षित स्थान पर ले गए। निरीक्षक मोहम्मद मंजूर ने अपने जीवन को सन्निकर खतरे का सामना करते हुए और परिणाम की चिंता किए बिना अपने सीआरपीएफ के सहकर्मी को बचाकर मित्रता की अद्भुत भावना का प्रदर्शन किया। उन्होंने घायल साथी को वाहन में रखा और वहां से हटाकर अस्पताल पहुंचाया और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराने के पश्चात पुन: अभियान दल में शामिल हो गए।

उप पुलिस अधीक्षक रयाज इकबाल के नेतृत्व में, निरीक्षक मो. मंजूर, सहायक उप निरीक्षक काफिल अहमद, कांस्टेबल मो. सादिक और अन्य लोगों के साथ पुलिस दल लक्षित घर के समीप पहुंचा और अन्दाज से गोलिया चलाकर आतंकवादियों को उलझाए रखा और इसी बीच अन्य लोगों ने नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। आतंकवादियों को इस प्रकार उलझाया गया कि वे प्रभावी गोलीबारी नहीं कर सके जिसके परिणामस्वरूप नागरिकों की जान जा सकती थी। अंधेरा हो जाने के कारण रातभर के लिए अभियान रोक दिया गया और अगले दिन सुबह की पहली किरण के साथ, डीएसपी रयाज इकबाल के नेतृत्व में निरीक्षक मो. मंजूर एनजीओ, एएसआई काफिल, कांस्टेबल मो. सादिक सहित एक रूम इंटरवेंशन पार्टी बनाई गई। आर्मी के दो दलों द्वारा लक्षित मकान के नजदीक से कारगर कवरिंग फायरिंग के साथ ही, दल ने भारी गोलीबारी का सामना करते हुए लक्षित मकान में वीरतापूर्वक घुसने का प्रयास किया। लक्षित भवन की अटारी पर रास्ता बनाने के बाद, पुलिस दल ने लक्षित मकान के समीप बाहर की ओर स्थित बाथरूम से चीखने की आवाजें सुनीं जिसमें कुछ नागरिक फंसे हुए थे। जिस समय निरीक्षक मो. मंजूर और कांस्टेबल सादिक ने आतंकवादियों को उलझाए रखा, उसी समय डीएसपी रयाज इकबाल और ए एस आई काफिल अहमद अटारी की खिड़की से बाथरूम की छत पर पहुंच गए। उन्हें बाथरूम की छत पर देखकर, एक आतंकवादी ने उन्हें निशाना बनाकर अचानक रयाज इकबाल डीएसपी और एस एस आई काफिल अहमद पर अपनी ए के राइफल से गोली चलाई, जिससे काफिल अहमद के हाथ में चोट लगी और उनकी अंगुलियां टूट गईं और श्री रयाज इकबाल डीएसपी के माथे पर बुलेट प्रूफ हेड गियर में गोली लगी और दोनों अधिकारी चमत्कारिक रूप से बच गए। मानव जीवन की सुरक्षा करने के अपने कर्तव्य के प्रति अत्यधिक जिम्मेदारी प्रदर्शित करते हुए वे दोनों एक मंजले बाथरूम की छत से नीचे कूद गए और बाथरूम की दीवार की आड़ में छिप गए। उन्होंने पीछे की ओर से बाथरूम की छोटी खिड़की को खोला और 11 वर्षीय बच्चे सहित 2 लोगों को बाथरूम से बाहर निकाला जबकि निरीक्षक मोहम्मद मंजूर और कांस्टेबल सादिक ने आतंकवादियों को उलझाए रखा और इन दोनों को कवरिंग फायरिंग उपलब्ध करायी। इसके बाद दोनों ने आतंकवादी को लक्षित मकान की खिड़की पर देखा, जिसे अन्य आतंकवादी सहित पुलिस के दो दलों ने जमीन और अटारी से लगातार उलझाकर रखा हुआ था और निकट से दोनों ओर से की गई गोलीबारी में दोनों आतंकवादी मारे गए जिनकी पहचान मुजामिल अमीन डार उर्फ हाशम उर्फ खिताब पुत्र मो. अमीनडार निवासी बादामबाग सोपोर और अब्दुल्ला निवासी पाकिस्तान के रूप में हुई।

की गई बरामदगी:

1. ए.के. सीरीज राइफल 01

2.	ए के मैगजीन	06
3.	चीनी पिस्तौल	02
4.	पिस्तौल मैगजीन	02
5.	ए के 47 के जिन्दा कारतूस	10
6.	पिस्तौल की गोलियां	02
7.	चीनी ग्रेनेड	02 (मुठभेड़ में नष्ट)

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रयाज इकबाल तान्त्रे, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद मंजूर गोजरी, निरीक्षक, काफिल अहमद मीर, सहायक उप निरीक्षक और मोहम्मद सादिक कुरेशी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.10.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 101-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सुजाद मीर,
   निरीक्षक

2. सुग्रीव कुमार,
   हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23.04.2011 को आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, डीआईजी डीकेआर रेंज बटोट की निगरानी में पुलिस और 23 आर आर आर्मी द्वारा बनिहाल पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में आने वाले धनाबी नाला, अखरान के सामान्य क्षेत्र में एक संयुक्त अभियान चलाया गया। यह अभियान पुलिस अधीक्षक रामबन की सहायता से डीआईजी डीकेआर रेंज की कमान में दिनांक 23.04.2011 की शाम को शुरू किया गया था। किन्तु इन आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए कि आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठाकर बचकर निकल सकते हैं और इसके साथ-साथ अभियान दल/जनसाधारण को कोई नुकसान अथवा क्षति न हो, अभियान को सुबह तक रोक दिया गया। आतंकवादियों के छिपने के संभावित स्थान की उचित रूप से घेराबंदी सुनिश्चित करने और अंधेरे और घनी झाड़ियों को ध्यान में रखते हुए अभियान दल को दो दलों में बांटा गया। एक दल श्री एम. के. सिन्हा, डीआईजी डीकेआर रेंज बटोट के नेतृत्व में और दूसरा दल पुलिस अधीक्षक रामबन के नेतृत्व में था। घेराबंदी इस प्रकार की गई थी कि आतंकवादियों के बचकर निकलने के सभी संभावित मार्ग/क्षेत्र कवर हो जाएं। दनाबी नाला की ऊंचाई पर ठण्ड होने के बावजूद सभी लोग संदिग्ध क्षेत्र में दिनांक 24.04.2011 की सुबह तक अत्यंत सतर्क रहे।

सुबह-सुबह दोनों अभियान दलों ने छिपने के स्थान पर ध्यान केन्द्रित किया। डीआईजी डीकेआर के नेतृत्व वाले अभियान दल ने देखा कि एक आतंकवादी छिपने के स्थान से झांक रहा था और सुरक्षा बलों की उपस्थिति और गतिविधियों का जायजा लेने का प्रयास कर रहा था। आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। तथापि, पुकार सुनने के बजाय छिपे हुए आतंकवादियों ने अभियान दल को मारने के इरादे से उन पर अंधाधुंध गोलिया चलानी शुरू कर दीं। अभियान दल भी हरकत में आया और बंदूक की लड़ाई शुरू हो गई। चूंकि आतंकवादी एक बड़े शिलाखंड के पीछे छिपने के स्थान पर थे, इसलिए वे अनुकूल स्थिति में थे और अभियान दल की अपेक्षा ऊंचाई पर थे। आंतकवादियों को ऊंचाई का लाभ होने के बावजूद, अभियान दल अपनी जान की परवाह किए बिना और कई प्रयासों के बाद

रेंगकर छिपने के स्थान तक पहुंचने में सफल हो गया। आतंकवादी हैरान रह गए और अपने आश्रय से बाहर निकलने पर मजबूर हो गए और कम दूरी से आतंकवादियों के साथ गोलीबारी जारी रही। गोलियों से लड़ते-लड़ते छिपे हुए आतंकवादियों ने एक ग्रेनेड फेंका और बचकर निकलने का प्रयास किया। तथापि, उनमें से एक को डीआईजी डीकेआर रेंज और निरीक्षक सुजाद मीर की गोली लगी, जबकि दूसरा आतंकवादी बचकर अभियान दल की विपरीत दिशा में पास के घने जंगल में भाग गया।

चूंकि श्री अनिल मंगोत्रा, पुलिस अधीक्षक रामबन और हेड कांस्टेबल सुग्रीव कुमार के नेतृत्व वाला दल निकट ही था इसलिए इस दल ने तत्काल जबावी कार्रवाई की और आतंकवादियों का पीछा किया, जिन्होंने एक पेड़ के पीछे आड़ ले ली थी और वहां से पुलिस अधीक्षक रामबन औ रहेड कांस्टेबल सुग्रीव कुमार पर गोली चलायी थी। वे उन्हें निष्क्रिय करने में सफल हो गये। कुल मिलाकर गोलीबारी लगभग 6 घंटे तक जारी रही जिसमें लश्कर-ए-तैयबा संगठन के दो दुर्दांत आतंकवादी मारे गए । बाद में मृतक आतंकवादियों की पहचान:

(1) मो. अयाज मलिक उर्फ मूसा पुत्र अब्दुल रहीम मलिक निवासी शगुन बनिहाल (श्रेणी-ए) और

(2) फारुक अहमद सी उर्फ जुलकारनैन पुत्र मो. रुस्तम सी निवासी उगाद, तहसील और जिला डोडा (श्रेणी-सी) के रूप में की गई।

अभियान के दौरान डीआईजी डीकेआर रेंज बटोट, निरीक्षक सुजाद मीर और हेड कांस्टेबल सबसे आगे रहे और अपनी जान की परवाह किए बिना बहादुरी से लड़े, जिसके परिणामस्वरूप अपने आप में लशकर-ए-तैयबा के डिवीजन कमाण्डर, जो इस क्षेत्र में पिछले 10 वर्ष से सक्रिय था, सहित लश्कर-ए-तैयबा संगठन के दो कट्टर आतंकवादी मारे गए। उनसे निम्नलिखित शस्त्र और गोलाबारूद बरामद किए गए:-

1.	ए.के.- 47	01
2.	ए. के. 74	01
3.	ए. के. मैगजीन	06
4.	ए. के. गोलाबारूद	160 राउन्ड
5.	थोराया सेट	01
6.	मोबाइल फोन	01
7.	कम्पास	01
8.	दूरबीन	01
9.	पाउच	02
10.	चीनी ग्रेनेड	01
11	कम्बल	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुजाद मीर, निरीक्षक और सुग्रीव कुमार, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.04.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 102-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. संजीव कुमार मिश्र,
उप निरीक्षक

2. कौलेश्वर यादव,
   हवलदार
3. मुरारी मोहन प्रधान,
   कांस्टेबल
4. अमित कुमार हेम्ब्रम,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29 मार्च, 2010 को अपराह्न लगभग 12.30 बजे बोराम पुलिस स्टेशन के कमान अधिकारी को अपने स्रोतों से यह सूचना मिली कि कई जघन्य नक्सली घटनाओं में वांछित कुख्यात नक्सल नेता प्रबोध सिंह उर्फ गंगाधर सिंह उर्फ गिड्डू सरदार पुत्र समर सिंह, निवासी गांव पोटकादीह, पुलिस स्टेशन बोराम, जिला पूर्वी सिंहभूम ने टोला बागूडीह के गांव पोखरिया में शरण ले रखी है। सूचना मिलने पर एस आई संजीव कुमार मिश्र, कमान अधिकारी, बोराम पुलिस स्टेशन ने तत्काल सशस्त्र बल के 1-6 सैनिकों सहित गांव पोखरिया टोला बागूडीह के लिए कूच किया। गांव पहुंचकर सशस्त्र बल के साथ कमान अधिकारी ने संभावित छिपने के स्थान की छानबीन और तलाशी शुरू कर दी। तलाशी अभियान के दौरान जब कमान अधिकारी एस आई संजीव कुमार मिश्र गारे और टाइल से बने किस्तोपदों सिंह के मकान के निकट पहुंचे, तो हवलदार कौलेश्वर यादव और कांस्टेबल मुरारी मोहन प्रधान ने कमान अधिकारी की कमान के तहत मकान में घुसने का प्रयास किया। अचानक मकान के भीतर मौजूद नक्सलवादियों ने पुलिस बल को मारने के इरादे से गोलियां चलानी शुरू कर दीं और इस प्रक्रिया में उन्होंने तत्काल एक के बाद एक तीन राउण्ड गोलियां चलाईं। पुलिस कार्मिकों ने मिट्टी के मकान को घेरते हुए बचाव की पाजीशन ली और कमान अधिकारी की कमाण्ड में कांस्टेबल मुरारी मोहन प्रधान ने अपनी इन्सास राइफल से एक राउण्ड गोली चलाई। कमान अधिकारी की कमाण्ड में पुलिस दल ने घटना स्थल पर अपनी पोजीशन ली और नक्सलियों को चिल्लाकर आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। नक्सली भीतर से पुलिस कार्मिकों पर गोलियां चलाते रहे। कमान अधिकारी ने स्थानीय ग्रामीणों की सहायता ली और वे नक्सलियों पर आत्मसमर्पण करने का दबाव डालने के लिए दृढ़ संकल्प थे। कुछ समय बाद सी आर पी एफ के अतिरिक्त बल ने भी वहां पहुंचकर कमान अधिकारी की कमांड में पोजीशन ले ली। इस प्रक्रिया में एक कर्मी ने टाइल से बनी छत से अन्दर झांकने का प्रयास किया किन्तु अचानक प्रबोध सिंह ने मकान के अन्दर से उस पर गोली चला दी।

कुछ समय बाद, नक्सलवादी प्रबोध सिंह ने बचकर भागने और पुलिस को भ्रम में डालने के लिए मकान के भीतर आग लगा दी। तलाशी अभियान के दौरान, क्षेत्र के कुख्यात नक्सली कमांडर दालमा स्क्वार्ड प्रबोध सिंह का शव बरामद हुआ।पुलिस दल ने शब के बगल से पिस्तौल, जिस पर इटली में निर्मित लिखा, 7.65 एम एम के चलाए गए 3 कारतूस बरामद किए गए, यह उत्कृष्ट अभियान एस आई संजीव कुमार मिश्र के नेतृत्व में सफलतापूर्वक पूरा किया गया जिसमें हवलदार कौशलेश्वर यादव, कांस्टेबल मुरारी मोहन प्रधान, कांस्टेबल अमित कुमार हेम्ब्रम और पुलिस दल के अन्य सदस्यों ने सक्रिय सहयोग दिया। यह अनुकरणीय साहसपूर्ण और उत्कृष्ट बहादुरी का कृत्य पुलिस बल के सदस्यों के लिए निश्चिय रूप से प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करेगा।

इस अभियान से दालमा क्षेत्र में सक्रिय सशस्त्र माओवादी समूह का मनोबल गिर गया क्योंकि उनका आतंकवादी नेता प्रबोध सिंह मारा गया था, जो बोराम पुलिस स्टेशन के चौकीदार तेजपाल सिंह की हत्या सहित 28 जघन्य नक्सली घटनाओं में वांछित था और पुलिस स्टेशन पर हमला करने सहित अन्य घटनाओं के लिए भी जिम्मेदार था। यह अभियान इतना प्रभावशली रहा कि इस मुठभेड़ के बाद बोराम पुलिस स्टेशन के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत कोई नक्सली घटना नहीं हुई है।

इस संबंध में, आईपीसी की धारा 307, 353, 427, 436 और आयुध अधिनियम 25 (।-ख) क/26/27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत दिनांक 29.03.2010 को बोराम पुलिस स्टेशन में मामला संख्या 8/10 दर्ज किया गया था और जांच के पश्चात आई पी सी की धारा 307, 353, 427, 436 और आयुध अधिनियम 25 (।-ख) क/26/27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत दिनांक 30.09.2010 को अंतिम रूप से फार्म संख्या 11/10 प्रस्तुत किया गया था। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने भी इस मुठभेड़ की जांच की थी और पुलिस को क्लीन चिट प्रदान की थी।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री संजीव कुमार मिश्र, उप निरीक्षक, कौलेश्वर यादव, हवलदार, मुरारी मोहन प्रधान, कांस्टेबल एवं अमित कुमार हेम्ब्रम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.03.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 103-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री परमेश्वर प्रसाद,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

रनिया पुलिस स्टेशन क्षेत्र में पीएलएफआई आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया सूचना के आधार पर खूंटी के पुलिस अधीक्षक और कमान अधिकारी, 133 बटालियन सी आर पी एफ द्वारा दिनांक 4.7.2008 को एक अभियान चलाने की योजना बनाई गई और रनिया पुलिस स्टेशन के उप-निरीक्षक एवं प्रभारी अधिकारी, उप-निरीक्षक श्री परमेश्वर प्रसाद को जी/133 बटालियन, सीआरपीएफ की दो प्लाटूनों और जी/133 बटालियन, सीआरपीएफ के निरीक्षक संजय कुमार सहित राज्य पुलिस बल के घटक के साथ अभियानों की योजना बनाने और उसे संचालित करने का कार्य सौंपा गया।

छापामार दल ने 2 घंटे के भीतर लगभग 20 कि.मी. की दूरी तय की। जब यह दल कोयलागढ़ पहुंचा तो उन्होंने कोयलागढ़ गांव के ठीक पीछे पहाड़ी पर कुछ आवाजें सुनीं और वहां पर कुछ रोशनी भी दिखाई दी। उप-निरीक्षक परमेश्वर प्रसाद ने आतंकवादियों की मौजूदगी महसूस की और तत्काल सारे दल को सतर्क कर दिया। पुलिस दल ने तब पहाड़ी की घेराबंदी की और आंतंकवादियों के विरुद्ध अभियान शुरू कर दिया। तथापि, नक्सलियों ने पुलिस की गतिविधि देखकर और तत्काल पुलिस दल पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। गोलीबारी इतनी तीव्र थी कि पुलिस दल को आश्रय के लिए भागना पड़ा और यद्यपि पुलिस दल ने जवाबी गोलीबारी की, किन्तु वे नक्सलियों को नियंत्रित नहीं कर पाए। इसी बीच सी आर पी एफ के निरीक्षक संजय कुमार सिंह की बायीं कोहनी में गोली लग गई।

पुलिस दल के लिए स्थिति बहुत प्रतिकूल हो गई थी क्योंकि नक्सली ऊंचाई पर थे और पर्याप्त रूप से सुरक्षित थे जबकि पुलिस दल नीचे जमीन पर था और शत्रुओं की गोलीबारी के सामने था। इसके अतिरिक्त, निरीक्षक को गोली लगने से बल का मनोबल गिर गया था। तथापि, उप निरीक्षक परमेश्वर प्रसाद ने पहल करते हुए और दृढ संकल्प का प्रदर्शन करते हुए सामने से दल का नेतृत्व किया और अनुकरणीय साहस दर्शाया और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए गोलीबारी जारी रखी। उप निरीक्षक परमेश्वर प्रसाद ने अनुभव किया कि यदि नक्सलियों को पहाड़ी से हटाया नहीं गया तो वे अपने घायल पुलिस अधिकारी को बचा नहीं पाएंगे। अत: अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर वे शत्रुओं की गोलियों के बीच पहाड़ी की ओर दौड़े और अकेले ही जवाबी गोलियां चलाने लगे। नक्सलवादी उनके इस साहस और दृढ़ संकल्प के आगे टिक नहीं पाए और अपने शस्त्र, गोलाबारूद और मृत साथियों को छोड़कर भाग खड़े हुए। इसी समय एस आई परमेश्वर प्रसाद ने अपने दल के घायल साथी को वहां से हटाने की योजना बनाई और उसे प्रेरित करते रहे। गोलीबारी रूकने के बाद सारे अभियान क्षेत्र की घेराबंदी और तलाशी की गई। क्षेत्र की पूरी तलाशी करने पर एक शव पाया गया जिसकी पहचान 25 वर्षीय सलमान हीरो निवासी चालंगी, पुलिस स्टेशन लापंग पीएलएफआई का नक्सलवादी के रूप में की गई। दो अन्य नक्सलवादियों नामत: दुर्गा सिंह, आयु 19 वर्ष, निवासी झरिया पुलिस स्टेशन लापंग और 15 वर्षीय नीलू टोपनो, निवासी पासम, पुलिस स्टेशन रनिया को गिरफ्तार कर लिया गया। 9एमएम की 02 पिस्तौले (इटली में निर्मित), 9 एमएम पिस्तौल की 4 मैगजीनें, 7.62 एम एम बोल्ट की 02 एक्शन राइफलें, 7.62 एम एम बोल्ट एक्शन राइफल की 01 मैगजीन, 7.62 एम एम के 52 जिन्दा कारतूस, 9 एम एम के 17 जिन्दा कारतूस, 315 बोर के 17 जिन्दा कारतूस, 9 एम एम का एक खोखा, 7.62एम एम के 02 खाली खोखे, बेल्ट सहित एक होल्स्र पिस्तौल, 02 बंडोलियर, 03 मोबाइल सेट (नोकिया), 9900/- रु. नकद, पीएलएफआई के 20 लेटर पैड, पीएलएफआई के 25 पेम्फलेट, 04 प्रस्तावना किताबें और बारूदी सुरंग के विस्फोट में प्रयुक्त एक बूस्टर भी बरामद किया गया।

इस पूरे अभियान में आरंभ से ही उप निरीक्षक परमेश्वर प्रसाद का दृढ़ संकल्प अनुकरणीय था क्योंकि एक सच्चे बहादुर नेता की भांति उन्होंने अपने दल का स्वयं आगे आकर नेतृत्व किया और उनके दृढ़ संकल्प की वजह से ही वे घायल अधिकारी की जान बचाई जा सकी। उनकी सतर्कता, त्वरित कार्रवाई, भविष्य के बारे में सोचने की योग्यता और किया गया बहादुरी का कृत्य उत्कृष्ट और प्रशंसनीय था। न केवल एक दुर्दांत नक्सलवादी मारा गया और उस क्षेत्र में पीएलएफआई का मनोबल डावांडोल हुआ बल्कि उनके घायल साथी को समय पर हटा लेने से निरीक्षक संजय कुमार सिंह की जान भी बचाई जा सकी। उप निरीक्षक परमेश्वर प्रसाद का हमले के समय धैर्य, अपने दल को सही-सलामत और युद्धरत बनाए रखने की योग्यता और लड़ने का दढ़ संकल्प अनुकरणीय था। इस कार्रवाई से उस क्षेत्र में न केवल पीएलएफआई की जड़ें हिल गईं बल्कि बलों का मनोबल भी बढ़ा और पुलिस कार्रवाई के प्रति लोगों का विश्वास सुदृढ़ हुआ।

इस मुठभेड़ में श्री परमेश्वर प्रसाद, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.07.2008 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 104-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. संजय कुमार सिंह,
   उप-निरीक्षक

2. जय प्रकाश नारायण चौधरी,
   उप-निरीक्षक

3. बाबूलाल टुडु,
   हवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02 अप्रैल, 2010 को पुलिस दल को 21.30 बजे सूचना मिली कि गांव बनतोरिया, टोला श्रीरामपुर में इकट्ठा हुआ नक्सलवादियों का एक सशस्त्र दल अप्रियघटनाओं को अंजाम देने की योजना बना रहा है। दल में 3-4 सशस्त्र नक्सलवादी शामिल थे। तदनुसार, पूर्वी सिंहभूम जिले के पदामदा पुलिस स्टेशन के उप निरीक्षक संजय कुमार सिंह और एमजीएम पुलिस स्टेशन के कमान अधिकारी एसआई जयप्रकाश नारायण चौधरी के संयुक्त नेतृत्व में एक छापामार दल बनाया गया। दोनों अधिकारियों ने, डीएपी और सीआरपीएफ सहित तत्काल मध्यरात्रि में ही गांव बनतोरिया, टोला श्रीरामपुर के लिए पैदल ही प्रस्थान किया और चारों ओर से गांव को घेर लिया। किन्तु नक्सलवादियों को गांव में पुलिस के आने का पता चल गया और उन्होंने पुलिस पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। पुलिस ने नक्सलियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा किन्तु असफल रहे। तब संपूर्ण पुलिस दल को घेराबंदी बनाए रखने और सुरक्षित पोजीशन लेने का आदेश दिया गया। इसी बीच कुछ नक्सलियों ने पुलिस दल पर लगातार गोलियां चलाते हुए दक्षिण दिशा से बचकर भागने का प्रयास किया। तो उसी समय, पुलिस ने आत्म रक्षा में नक्सलियों पर गोलियां चलाई।

भोर में दो स्वतंत्र साक्षियों की मौजूदगी में जब गांव में और उसके आस-पास के क्षेत्र की तलाशी ली गई, तो एक कट्टर नक्सलवादी को गांव की दक्षिणी दिशा में घायल पाया गया। नक्सली को पुलिस की गोली लगी थी। उसके नजदीक 7.65 एम एम गोला-बारूद के चार जिंदा कारतूस सहित एक पिस्तौल और आठ खाली खोखे मिले, जिनमें तीन खोखे 7.65 एमएम और पांच खोखे 8 एम एम गोलाबारूद के थे। साक्षियों द्वारा घायल नक्सलवादी की पहचान कट्टर सीपीआई माओवादी नक्सल लगभग 30 वर्षीय सुनील गोरे उर्फ अमर सिंह उर्फ अमर गोराई पुत्र डब्ल्यू गोराई, पुलिस स्टेशन कमलपुर, जिला पूर्वी सिंहभूम के रूप में की गई। ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि उक्त माओवादी सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्रा दस्ते का सक्रिय सदस्य और उस क्षेत्र का कमांडर था। वह उस क्षेत्र में अनेक जघन्य नक्सलवादी घटनाओं के लिए जिम्मेदार था और दस्ते का शूटर था। बाद में अस्पताल ले जाते हुए उस नक्सली की मृत्यु हो गई। तलाशी दल ने मुठभेड स्थल से लूटी हुई एक यामहा क्रक्स मोटर साइकिल, मोबाइल, 7 सिमकार्ड आदि भी बरामद किए। इस मुठभेड़ में उप निरीक्षक संजय कुमार सिंह और उप निरीक्षक जयप्रकाश नारायण चौधरी ने अपनी-अपनी ए.के 47 राइफलों से क्रमश: एक और दो राउन्ड गोलियां चलाई जबकि हवलदार बाबूलाल टुडु ने अपनी इंसास राइफल से दो राउन्ड गोलियां चलाई जिसमें उपर्युक्त एरिया कमांडर मारा गया।

इस संबंध में पटामदा पुलिस स्टेशन में आई पी सी की धारा 307/355/414, आयुध अधिनियम की धारा 25 (।-ख) 'क'/26/27 और सी.एल.ए. अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत दिनांक 03.04.2010 आईपीसी की धारा 307/353/414, आयुध अधिनियम की धारा 25 (।-ख) 'क'/26/27 और सीएलए अधिनियम की धारा 17 के अंतर्गत दर्ज किया गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री संजय कुमार सिंह, उप-निरीक्षक, जय प्रकाश नारायण चौधरी, उप-निरीक्षक एवं बाबूलाल टुडु, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा मफलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.04.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 105-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अभय सिंह,
पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10.08.2011 को लगभग 23.30 बजे पुलिस स्टेशन तलैया की इतवारा चौकी के निकट आबिद नाम का एक मुस्लिम लड़का जब नमाज अदा करके घर लौट रहा था, हुकुम कंजर नामक एक हिन्दू लड़के की बाइक से पानी की बौछार से गीला हो गया। आपस में मामूली सी गाली गलौच/अपशब्दों के बाद दोनों वहां से चले गए। इस घटना से गुस्सा होकर 100-150 मुस्लिम लोग इकट्ठे हो गए और कंजर मोहल्ले पर धावा बोल दिया जहां हुकुम कंजर रहता था। उनके मकानों को लूटा गया और सामान को तोड़ा फोड़ा गया और मकानों में आग लगा दी गई तथा कंजरों को पीटा गया महिलाओं और बच्चों को मकानों से बाहर घसीटा गया।

भोपाल नियंत्रण कक्ष के माध्यम से घटना की सूचना मिलने पर भोपाल के पुलिस अधीक्षक श्री अभय सिंह ने घटना की विकरालता और गंभीरता का अनुभव करते हुए आस-पास के पुलिस स्टेशनों के एसएचओ को स्थिति से निपटने के लिए प्रभावित घटना स्थल पर पहुंचने का निर्देश दिया और स्वयं घटना स्थल के लिए निकल पड़े। पुलिस अधीक्षक भोपाल, अभय सिंह ने घटना स्थल पर जाकर पाया कि वहां चारों ओर अव्यवस्था और तबाही मची हुई है। पुलिस अधीक्षक अभय सिंह ने बहुमूल्य समय गंवाए बिना सारे पुलिस बल को इकट्ठा किया और उन्हें तनावपूर्ण स्थिति को नियंत्रित करने के बारे में बताया। ए एस पी जोन-3, सी एस पी कोतवाली, सी एस पी हनुमानगंज और सी एस पी शाहजहांबाद की कमाण्ड में क्रमश: चार दल बनाए गए और महत्वपूर्ण चौराहों पर तैनात कर दिए गए। इसके अतिरिक्त, तत्काल 8-10 नियत स्थानों पर भी पुलिस बल तैनात कर दिए गए।

रमजान का पवित्र महीना होने के कारण मुस्लिम शीघ्र ही दुबारा इकट्ठे हो गए। पत्थरों, तलवारों, चाकुओं, लाठियों और पेट्रोल बमों से लैस लगभग 1000-1500 मुस्लिम दूसरी बार कंजरों के मोहल्ले की ओर बढ़े ताकि वे कंजर समुदाय का जान-माल का नुकसान कर सकें। चारों ओर से मुस्लिम जनसंख्या से घिरे होने के कारण कंजर मोहल्ला पूरी तरह से अल्पसंख्यक है। खराब दृश्यता के कारण गुमनामी का लाभ उठाते हुए दंगाई पानी के सतत प्रवाह की तरह बड़ी संख्या में बढ़ रहे थे। भोपाल के पुलिस अधीक्षक श्री अभय सिंह ने उपलब्ध पुलिस बल को शीघ्रता से समझाया और बुद्धिमतापूर्वक उन्हें दंगाइयों को कंजर मोहल्ले की ओर बढ़ने से रोकने के लिए तैनात किया। पुलिस ने दंगाइयों को अनैतिक गतिविधियां रोकने की चेतावनी दी किन्तु वे जान-माल को अत्यधिक क्षति पहुंचाने पर अड़े हुए थे। भारी पथराव शुरू हो गया। पुलिस अधीक्षक, भोपाल, श्री अभय सिंह ने अपने पूरे दल को दंगाइयों से सख्ती से निपटने के लिए एकजुट किया और आंसू गैस छोड़कर दंगाइयों को कंजर मोहल्ले की ओर जाने से रोका। लेकिन वे पुन: इकट्ठे हो गए और पुलिस बल पर पत्थरों, पेट्रोल बमों और अन्य हथियारों से हमला कर दिया। पुलिस अधीक्षक, भोपाल, श्री अभय सिंह दंगाइयों को पीछे खदेड़ने के लिए। अपनी जान की परवाह किए बगैर अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए बहादुरीपूर्वक आगे बढ़े। अपने कर्तव्य को निभाते हुए वे पथराव से बुरी तरह घायल हो गए। एक पत्थर श्री अभय सिंह की दायीं आंख में लगा और वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घायल होने के बावजूद वे अपनी टीम को दंगाइयों को खदेड़ने के लिए प्रेरित करते रहे। उनके निडर एवं प्रेरक नेतृत्व ने सम्पूर्ण पुलिस टीम को इस कठिन

परिस्थिति में भरसक प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया। काफी प्रयास करने के पश्चात पुलिस अधीक्षक भोपाल, श्री अभय सिंह के कुशल नेतृत्व में इस नाजुक स्थिति को नियंत्रित किया जा सका।

सांप्रदायिक दृष्टि से पुराना भोपाल अत्यंत संवेदनशील है। विगत में छोटे-छोटे मुद्दों पर साम्प्रदायिक घटनाएं होती रहती थीं जो साम्प्रदायिक दंगों में बदल जाते थे। उपर्युक्त पृष्ठभूमि में और अपनी दायीं आंख में गंभीर चोट के बावजूद पुलिस अधीक्षक भोपाल, श्री अभय सिंह ने इस नाजुक स्थिति को नियंत्रित करने में अनुकरणीय साहस और कर्तव्य परायणता का प्रदर्शन किया। यदि कुशलता और साहस के साथ कार्रवाई न की गई होती, तो साम्प्रदायिक विध्वंस हो गया होता।

बरामदगी:

06 देशी राउण्ड, रिवाल्वर-02, 04 राउण्ड गोलाबारूद, 01 चाकू और 08 तलवारें।

इस एक्शन में श्री अभय सिंह, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.08.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 106-प्रेज/2014 - राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री राजा बाबू सिंह,
पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह मामला पुलिस स्टेशन देहात, भिण्ड की एफ आई आर संख्या 133/06 और प्रश्नगत घटना से संबंधित न्यायिक जांच रिपोर्ट के बारे में है, जिसमें जो चरणा सिकरवार नामक कुख्यात अंतर्राज्यीय डाकुओं के गैंग से जुड़ा दुर्दान्त डाकू रामू तोमर दिनांक 31.03.2006 को हुई भयंकर गोलीबारी में मारा गया था। भगौड़ा घोषित किए गए डाकू रामू तोमर की गिरफ्तारी पर 15000/- रु. का पुरस्कार रखा गया था।

दिनांक 31.03.2006 को देर रात में पुलिस अधीक्षक भिण्ड श्री राजा बाबू सिंह को एक युक्तिपूर्ण सूचना मिली कि डाकू चरणा सिकरवार, रामू तोमर और उनके सहयोगी पुलिस स्टेशन देहात, भिण्ड के अंतर्गत जवासा गांव के सरपंच के बेटे का अपहरण करने के लिए आ रहे हैं। श्री सिंह तत्काल सक्रिय हो गए और एक कार्रवाई योजना बनाई। तदनुसार, पुलिस बल को जवासा गांव की ओर जाना था। श्री सिंह ने पूर्व निर्धारित स्थल पर पहुंचकर पुलिस बल को शुरू किए जाने वाले अभियान के बारे में व्यावसायिक ढंग से संक्षेप में समझाया। उन्होंने तीन पुलिस दल बनाए। पुलिस दल संख्या-1 (हमला दल) का नेतृत्व श्री सिंह द्वारा, पुलिस दल-2 और 3 का नेतृत्व क्रमश: उप निरीक्षक विजय सिंह तोमर और ए पी सी मेवालाल द्वारा किया गया। पुलिस दल सं. 1, 2 और 3 क्रमश: पूर्वी, दक्षिण–पश्चिम और दक्षिण दिशा से पैदल ही मुखविर द्वारा बताए गए सही गंतव्य तक गया। दल सं.-1 ने देहरा जवासा के संभावित मार्ग, जो साधारण जंगल का रास्ता था, पर रणनीतिक घात लगा दी। लगभग 0130 बजे पुलिस अधीक्षक श्री सिंह की अगुवाई वाले दल सं.-1 को पैरों की ठोकरों और धीरे-धीरे फुसफुसाने की यह आवाज सुनाई दी कि "अपहरण के बाद हमें शीघ्र ही लौट जाना चाहिए क्योंकि आजकल भोर जल्दी हो जाती है।" श्री सिंह ने तत्काल पुलिस दल को सतर्क किया और वीरतापूर्वक डाकुओं को आत्मसमर्पण करने की चुनौती दी किन्तु उन्होंने मारने के इरादे से पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलिया दागनी शुरू कर दीं।

डाकू ऊंची समतल जमीन पर थे और वे प्रभावशाली स्थिति में थे, जिसके कारण उनकी गोलियां पुलिस दल की जान के लिए आसन्न खतरा बनी हुई थीं। श्री सिंह और सीएसपी श्री एम.एल. धोंडी डाकुओं की घातक गोलियों से बाल-बाल बचे। पुलिस दल के लोग अपेक्षाकृत नीची जमीन पर थे जिससे वे रणनीतिक दृष्टि से काफी असुरक्षित स्थिति में थे। इस जोखिम भरी स्थिति में जहां डाकू पुलिस पर लगातार गोलियां चला रहे थे, वहीं पुलिस के लिए उन्हें गिरफ्तार करना अथवा निरस्त्र करना बहुत ही कठिन काम था। लेकिन

श्री सिंह ने अदम्य साहस से अपने बल का मनोबल बढ़ाया और उन्हें आत्मरक्षा में गोलियां चलाने के लिए प्रेरित किया। अपनी जान को जोखिम में डालते हुए उन्होंने अपनी ए.के. 47 राइफल से टस से मस न होने वाले डाकुओं पर लगातार गोलीबारी की। डाकुओं द्वारा की गई गोलीबारी इतनी खतरनाक थी कि सीएसपी को एक गोली लगते-लगते बची और श्री सिंह ने स्वयं मुड़कर अपना बचाव किया और सीएसपी को झुकाकर उनकी सुरक्षा की। श्री सिंह ने असाधारण बहादुरी के इस कार्य में अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डाला और बिना पलक झपकाए आत्मरक्षा में लगातार खुंखार डाकुओं पर गोलियां चलाते रहे। इस अभियान में श्री सिंह की गोली एक डाकू को लगी और वह चीखते हुए जमीन पर गिर गया। तथापि, डाकू पुलिस पर गोलियों की भारी बौछार कर रहे थे। पुलिस ने हमले का जवाब दिया और साहसपूर्वक जवाबी गोलीबारी की। इससे डाकू निकटवर्ती जंगल में भागने के लिए मजबूर हो गए।

बाद में इस भयंकर मुठभेड स्थल की पूरी तरह तलाशी ली गई। इस तलाशी में, एक शव बरामद किया गया, जिसकी पहचान डाकू राम् तोमर के रूप में की गई, जिसे भगोड़ा डाकू घोषित किया गया था और उसकी गिरफ्तारी पर 15000/- रु. इनाम रखा गया था। घटना स्थल से एक बंडोलियर में 04 खाली खोखों सहित .315 बोर की राइफल और 06 जिन्दा कारतूस बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में श्री राजा बाबू सिंह, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.04.2006 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 107-प्रेज/2014-राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक
सर्व/श्री

1. मुंशी चुक्कू पुंगाटी, (मरणोपरान्त)
   पुलिस कांस्टेबल
2. शामनदास जयराम उईके,
   पुलिस नायक
3. सरजू मनतू वेलादी,
   पुलिस नायक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस कांस्टेबल मुंशी पनघटी, पुलिस नायक शामनदास जयराम उईके और पुलिस नायक सरजू वेलादी-दिनांक 19.05.2011 को नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड के दौरान सी-60 दल और गढ़चिरौली पुलिस की सर्वोत्कृष्ट नक्सल-रोधी विंग के सदस्य थे। ये तीनों अनेक नक्सली मुठभेडों में बड़ी बहादुरी से लड़े थे। पुलिस कांस्टेबल पुंगाटी अक्तूबर, 2010 में मिरकल फाटा में, जहां एक एम पी वी वाहन में विस्फोट किया गया था, नक्सलियों के साथ हुई भयंकर मुठभेड़ में अपने नम्र स्वभाव के साथ बहादुरी से लड़े थे और अपने साथियों को बचाया था। उन्होंने दिनांक 21.12.2010 को पुलिस दल पर आईईडी के विस्फोट की घटना के दौरान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

दिनांक 19.05.2011 को भामरागढ़ से अहेरी तक एक सड़क को खोलने की योजना बनाई गई थी। यह रास्ता नक्सली गतिविधियों की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। ताडगांव से बेजुर तक सड़क खोलने के कार्य की जिम्मेदारी मधुकर नेताम और रमेश दलाई की अगुवाई वाले पुलिस दलों को सौंपी गई थी। दिनांक 19.05.2011 को 0600 बजे पुलिस दल सड़क खोलने के लिए ताडगांव से बेजुर की ओर गए। आठ नए भर्ती हुए विशेष पुलिस अधिकारी (एसपीओ) भी पुलिस दलों के साथ थे। पुलिस नायक उईके ने मधुकर नेताम के दल के डिप्टी कमांडर के रूप में, सुरक्षा की दृष्टि से भूमि के उस हिस्से की भलीभांति तलाशी लेने के बाद 6-7 पुलिस कर्मी तैनात किए। इस प्रक्रिया के दौरान जब पुलिस दल को वहां एक बारूदी सुरंग का पता चला, तब पुलिस नायक उईके ने कांस्टेबल पनघटी, 2 एसपीओ और 6 अन्य पुलिस कर्मियों को तब तक उस क्षेत्र की सुरक्षा करने के लिए तैनात किया जब तक कि बीडीडीएस द्वारा

आईईडी का सुरक्षित रूप से निपटान न कर दिया जाए और वे अन्य पुलिस कार्मिकों के साथ आगे न बढ़ जाएं। दुर्भाग्य से ओलिव ग्रीन वर्दी में सड़क के किनारे घने जंगल में छिपे हुए और घात लगाकर बैठे हुए 200-300 सशस्त्र नक्सलवादियों ने बारूदी सुरंग वाले उक्त स्थान को घेर लिया। ज्यों ही पुलिस दलों का बड़ा समूह बारूदी सुरंग स्थल से गुजरा, घात लगाए नक्सलियों ने पुलिस दलों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। कांस्टेबल पुंगाटी, ने तत्काल उपलब्ध कवर लेते हुए अपनी ए.के.-47 राइफल से जवाबी गोलियां चलाईं। चूंकि नक्सलवादी वहां तैनात दोनों एस पी ओ को निशाना बना रहे थे, इसलिए कांस्टेबल पुंगाटी, ने उन्हें कवर फायरिंग दी और भारी गोलीबारी का अनुमान लगाते हुए एसपीओ को उपयुक्त कवर लेने का आदेश दिया। चूंकि एसपीओ सुधाकर मात्तमी और सुरेन्द्र कोठारे क्योंकि गोलियां लगने से जख्मी हो गए थे, इसलिए कांस्टेबल पुंगाटी अपने सुरक्षित कवर से बाहर निकलने से अपने आप को नहीं रोक पाए और कवर फायर करते हुए घायल एसपीओ की ओर बढ़े ताकि उन्हें सहायता प्रदान कर सकें। इसी बीच पुलिस नायक उईके ओर नायक वेलादी अपने साथियों को नक्सलियों की घात तोड़ने के लिए प्रेरित करते हुए रणनीतिपूर्वक घटनास्थल की ओर बढ़े। कांस्टेबल पुंगाटी द्वारा यूबीजीएल का विवेकपूर्वक प्रयोग करके भारी गोलीबारी करते हुए आक्रामक रूप से आगे बढ़ने के परिणामस्वरूप 2-3 नक्सलवादियों को घतक चोटें लगीं। इस भयंकर गोलीबारी में पुलिस कांस्टेबल पुंगाटी की टांग में एक गोली लगी। पुलिस नायक उईके ओर वेलादी ने अपने सहकर्मियों की जान को खतरे का आभास करते हुए उनके पास जाने का साहसपूर्ण निर्णय लिया और अपने साथियों को प्रेरित करते हुए बहादुरी से नक्सलियों की ओर बढ़ना शुरू किया जो उन्हें घेरने का प्रयास कर रहे थे। बहादुरी से कवर फायरिंग करते हुए उन्हें आगे बढ़ते देख नक्सली घने जंगल में भागने के लिए मजबूर हो गए। इसी बीच पुलिस कांस्टेबल उईके द्वारा वायरलेस सेट के माध्यम से समय पर स्थिति की सूचना देने के फलस्वरूप भामरागढ़ और अहेरी से अतिरिक्त बल भी पहुंच गया था। कार्रवाई के दौरान दोनों एसपीओ और पुलिस नायक पुंगाटी ने घायल होने की वजह से क्षेत्र में ही दम तोड दिया। घटना स्थल की तलाशी लेने पर 4 भारमर राइफलों, खून के धब्बों और कई स्थानों पर शवों को घसीटने के निशानों के साथ-साथ 5 कि.ग्रा. बारूदी सुरंग का विस्फोटक बरामद हुआ जिससे नक्सलियों को काफी नुकसान हुआ प्रतीत होता है। पुलिस नायक उईके और पुलिस नायक वेलादी ने लगभग दो से ढाई घंटे तक हुई सम्पूर्ण गोलीबारी के दौरान पुलिस बलों को प्रेरित किया और साहस एवं युक्तिपूर्वक नेतृत्व किया, जिससे न केवल पुलिस बल के कई कार्मिकों की बहुमूल्य जानें बचाईं गईं, बल्कि नक्सलवादियों को एक ऐसे भू-भाग में, जहां वे योजनाबद्ध घात लगाकर बेहतर पोजीशन में थे, घातक रूप से घायल किया गया।

पुलिस कांस्टेबल मुंशी पुंगाटी, पुलिस नायक शामनदास उइक और पुलिस नायक सरजू वेलादी वीरतापूर्वक लड़े और नक्सलवादियों की लगातार भारी गोलीबारी में भी नहीं झुके। इन सबकी इस वीरतापूर्वक कार्रवाई ने उस दिन नक्सलवादियों के बुरे इरादों को विफल करने में बहुत योगदान दिया और मुंशी पुंगाटी ने अपना कर्तव्य निभाने में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान देकर शहादत प्राप्त की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) मुंशी चुक्कू पुंगाटी, पुलिस कांस्टेबल, शामनदास जयराम उईके, पुलिस नायक और सरजू मनतू वेलादी, पुलिस नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 108-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. व्यंकटेश हनुमंतु मुंगीवार,
   पुलिस हेड कांस्टेबल
2. वासुदेव राजम मडावी,
   पुलिस नायक

3. पवन मल्ला अर्का,
   पुलिस कांस्टेबल

4. विजय राजन्ना सल्लम,
   पुलिस नायक

5. रविकुमार पोचम गंधम,
   पुलिस नायक

6. सुर्यकान्त गंगाराम आत्रम,
   पुलिस नायक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस हेड कांस्टेबल व्यंकटेश हनुमंत मुंगीवार, पुलिस नायक वासुदेव राजम मडावी, पुलिस कांस्टेबल पवन मल्ला अर्का, पुलिस नायक विजय राजन्ना सल्लम, पुलिस नायक रविकुमार पोचम गंधम, पुलिस नायक सूर्यकान्त गंगाराम आत्रम गढ़चिरौली पुलिस के सर्वोत्कृष्ट नक्सल-रोधी विंग के विशेष अभियान दस्ते (स्थानीय रूप से सी-60 दल के रूप मे प्रसिद्ध) के सदस्य हैं। हेड कांस्टेबल व्यंकटेश मुंगीवार सी-60 दल के कमांडर हैं और पुलिस नायक वासुदेव मादवी उप-कमांडर हैं जबकि अन्य कार्मिक उनके दल के सदस्य हैं। उन्हें वर्ष 2013 में डीजीपी के प्रतीक चिह्न से सम्मानित किया गया है।

दिनांक 19.01.2013 को लगभग 19.15 बजे यह विश्वस्त सूचना मिलने पर कि नक्सलवादी गोविन्दगांव क्षेत्र में एक बैठक आयोजित करने के लिए ग्रामीणों को इकट्ठा करने का प्रयास कर रहे हैं, अहेरी के डीजीपी और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के आदेशों और मार्गदर्शन के अनुसार, एक नक्सल-रोधी अभियान चलाने की योजना बनाई गई। तदनुसार, व्यंकटेश मुंगीवार का दल (25 कार्मिक), राजेश टोपो का दल (22 कार्मिक) और मात्तमी दल के 9 कार्मिकों सहित अर्थात विशेष अभियान दस्ते के कुल 56 कार्मिक लगभग 21.30 बजे प्राणहित से उक्त क्षेत्र में नक्सल-रोधी अभियान चलाने के लिए वाहनों से रवाना हुए।

पुलिस पार्टी की स्थिति का पता न चले और ऐसे अभियान के लिए सभी आवश्यक गोपनीयता बनाए रखने के लिए यह योजना बनाई कि मुंगीवार का दल गोविन्दगांव से लगभग 2 कि.मी. आगे जाकर 'टी' पाइंट पर उतरेगा और गोविन्द गांव की दक्षिणी दिशा की ओर पैदल ही बढ़ेगा और रणनीतिक स्थिति लेगा, जबकि राजेश टोपो का दल जिमालगट्टा 'टी' पाइंट से 2 कि.मी. पहले उतर जाएगा और गोविन्दगांव-येनकांबन्दा सड़क के साथ-साथ उत्तर पूर्वी दिशा में रास्ते बंद करेगा। श्री व्यंकटेश ने अपने दल को 'ए''बी''सी' और 'डी 4 ग्रुपों में बांटा और 'ए' और 'बी' ग्रुप को मुख्य फायर ग्रुप की जिम्मेदारी सौंपी और ग्रुप 'सी' और 'डी' को कट-ऑफ और हमला/वाहक ग्रुप की ड्यूटी करने के निर्देश दिए गए। श्री व्यंकटेश, वासुदेव मादवी, सन्तोष बोंकुलवार और निरंजन पीपरे को क्रमश: ग्रुप 'ए' 'बी' 'सी' और 'डी' के ग्रुप लीडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। श्री विजय सल्लम, रविकुमार गंधम, सूर्यकांत आत्रमऔर पवन अरका भी मुख्य फायर ग्रुप के सदस्य थे। 'सी' और 'डी' ग्रुप ने जंगलों की ओर जाने वाली सड़क के आर-पार गांव के दक्षिण की ओर नाले के आगे कट-ऑफ के रूप में अपनी पोजीशन ली। जैसे ही दोनो फायर ग्रुप गांव के पास पहुंचने वाले थे, उन्होंने उसी ओर से नागरिकों को नक्सलियों की बैठक से लौटते हुए देखा। इस नाजुक स्थिति में, दोनों ग्रुपों ने रात के अंधेरे में नजदीकी कवर का अधिकतम लाभ उठाया और उस स्थिति में युक्तिपूर्वक आवश्यकतानुसार झुकते एवं लेटते हुए गांव की ओर बढ़ते रहे और साथ-साथ उस ओर से गुजरते ग्रामीणों पर पूरी नजर रखे हुए थे।

लगभग 3-4 कि.मी. की दूरी तय करने में अर्थात् वाहन से उतरने से लेकर गोविंदगांव के 'टी' पाइंट तक लगभग 50 मीटर पहुंचने में पूरे तीन घंटे लगे। दिनांक 20.01.2011 को लगभग 01.30 बजे जब व्यंकटेश और वासुदेव की अगुवाई में मुख्य फायर ग्रुप 'V' बनाते हुए जा रहे थे और 'टी' पाइंट से 5 से 8 मीटर की दूरी पर पोजीशन ले बढ़ रहे थे, तभी अचानक 5 से 6 व्यक्ति 'टी' पाइंट पर पहुंच गए। स्ट्रीट लाइट की रोशनी में यह लगा कि यह ग्रुप नक्सलियों का है। किन्तु जैसे ही मुख्य फायर ग्रुप के सदस्य 'टी' पाइंट से केवल 5 से 8 मीटर की दूरी पर पोजीशन लेने वाले थे, तभी नक्सलियों ने पुलिस पार्टी की पोजीशन का अन्दाजा लगाते हुए उन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। पुलिस पार्टियों ने भी नक्सलियों पर जवाबी गोलियां दागीं। नक्सलवादी एक-दूसरे का नाम ले-लेकर पुकार रहे थे और पुलिस पार्टियों को घेरने का संदेश प्रसारित कर रहे थे जिससे यह पता चला कि वे उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में मौजूद हैं। उसी समय, भारी जोखिम की स्थिति और गोलियों से घायल होने का खतरा, मानव जीवन को आसन्न खतरा होने के बावजूद, मुख्य फायर ग्रुप के बहादुर जवान नामत:, व्यंकटेश मुंगीवार, वासुदेव मादवी, विजय सल्लम, रविकुमार गंधम, सुर्यकांत आत्रमऔर पवन अरका ने शीघ्रता से कार्रवाई की और नक्सलियों पर गोलियां चलाते हुए आगे बढ़े। इसी बीच 'सी' और 'डी' ग्रुप और राजेश टोपो की टीम ने घटना स्थल की घेराबंदी शुरू कर दी। बढ़ती हुई गोलीबारी और पुलिस पार्टियों के दवाब को महसूस करते हुए कुछ नक्सलवादी घने अंधेरे का

लाभ उठाते हुए जंगल की ओर भाग गए। नक्सलियों की ओर से पूरी तरह गोलीबारी रूकने के बाद, घटना स्थल की एहतियाती तलाशी करने पर 6 घायल नक्सली शांत स्थिति में इधर-उधर गिरे हुए मिले। इनमें से 5 नक्सलियों से दो एसएलआर राइफलें एक .303 राइफल, एक 8 एम एम मॉडिफाइड राइफल जैसे आग्नेयास्त्र बरामद किए गए। इस मुठभेड़ में मारे गए 6 नक्सलियों में 1 ए सी एस-सट-डी सी एम, 1 दलम कमाण्डर, 2 डिप्टी कमाण्डर और 2 दलम सदस्य शामिल थे। मुठभेड़ के दौरान व्यंकटेश मुंगीवार, वासुदेव मादवी, विजय सल्लम, रवि कुमार गंधम, सूर्याकांत आत्रम और पवन अरका पुलिस पार्टियों में बल भरने के लिए बहादुरी से लड़े।

खुफिया सूचना मिलते ही तात्कालिक कार्रवाई करने, रात्रि के समय सतर्कतापूर्वक अभियान की योजना बनाने, कुशलतापूर्वक फील्ड गतिविधियों का सख्ती से पालन करने और घटनास्थल के गांव के निकट होने के बावजूद आसाधारण एहतियाती तथा नियंत्रित गोली चलाने के ऐसे सही आदेश देने के किसी नागरिक को हताहत न होने देने के लिए परिणामस्वरूप यह मुठभेड़ अत्यंत सफल रही।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री व्यंकटेश हनुमंतु मुंगीवार, पुलिस हेड कांस्टेबल, वासुदेव राजम मडावी, पुलिस नायक, पवन मल्ला अर्का, पुलिस कांस्टेबल, विजय राजन्ना सल्लम, पुलिस नायक, रविकुमार पोचम गंधम, पुलिस नायक और सूर्यकान्त गंगाराम आत्रम, पुलिस नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.01.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 109-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. दिगम्बर अशोकराव पाटील, पुलिस उप-उपरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
2. बन्नू चम्मू हलामी, पुलिस नायक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. नागेश जागेश्वर टेकाम, पुलिस नायक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
4. येशु संतु तुलावी, पुलिस नायक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.05.2013 को खुफिया आधारित सूचना मिलने पर परिवीक्षाधीन पुलिस उप-निरीक्षक दिगम्बर पाटील पार्टी कमांडर, बानू हलामी, पार्टी कमांडर नागेश टेकाम और पार्टी कमांडर येशु तुलावी ने अपने दलों के साथ गढ़चिरौली से नक्सलियों के स्थान की ओर कूच किया। लगभग 1800 बजे जब वे हेतलकासा गांव से लगभग 1.5 कि.मी. की दूरी पर जंगल क्षेत्र की तलाशी कर रहे थे, तब उन्होंने 40-50 सशस्त्र नक्सलवादियों को जंगल क्षेत्र में घात लगाए देखा। नक्सलियों ने एक के बाद एक 6 बारूदी सुरंगों में विस्फोट किए और पुलिस पार्टी को मारने के इरादे से अचानक उन पर गोलियां दागनी और उनके शस्त्र छीनने शुरू कर दिए। इस स्थिति में, पुलिस उप-निरीक्षक पाटील, पार्टी कमांडर नागेश टेकाम, बानू हलामी और येशू तलावी ने पुलिस दलों को साहस के साथ जमीन पर सुरक्षात्मक कवर लेने के लिए कहा। तदनुसार पुलिस दलों ने भी पहाड़ी के साथ-साथ नदी की दायीं ओर से आत्म रक्षा में जवाबी गोलियां चलायीं। इसी बीच नागेश टेकाम और पुलिस कांस्टेबल विजय ताल्ते को नक्सलियों द्वारा शुरू में चलाई गईं गोलियों से 3 स्पिलंटर चोटें आईं। नक्सलियों द्वारा क्षेत्र में पहले से ही लाभकारी पोजीशन प्राप्त करने की वजह से प्रारंभ में नियंत्रण स्थापित कर लेने के बावजूद और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि और कुछ पुलिस कर्मी घायल हो गए हैं, पुलिस उप-निरीक्षक पाटील और सभी तीनों पार्टी

कमांडरों ने अपने बहादुरीपूर्ण प्रयासों और जवाबी हमले के साहसिक समन्वय के माध्यम से पुलिस दलों का मनोबल बढ़ाया। पुलिस दलों द्वारा अपना वर्चस्व बढ़ाए जाने के परिणामस्वरूप, नक्सलवादी पहाड़ियों और घने जंगल का फायदा उठाते हुए घटनास्थल से भाग गए। नक्सलियों की ओर से गोलाबारी बंद होने के बाद पुलिस उप-निरीक्षक पाटील और सभी पार्टी कमांडरों ने घटना स्थल की घेराबंदी की और क्षेत्र की उचित रूप से छानबीन करते हुए हमले के स्थल की ओर बढ़े। घटना स्थल की प्रारंभिक छानबीन में उन्होंने पुरुष नक्सलवादी के शव सहित काली स्लिंग वाली एक 12 बोर की राइफल, 12 बोर राइफल के 19 जिन्दा कारतूसों वाला गोलाबारूद का एक पाउच, 9 एम एम कैलिबर के 5 राउंड, काले रंग के तार के 2 बण्डल, काले रंग का एक पिट्ठू, 30 पेंसिल सैल और अन्य नक्सली सामग्री बरामद की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दिगम्बर अशोकराव पाटील, पुलिस उप-निरीक्षक, बन्नू चम्मू हलामी, पुलिस नायक, नागेश जागेश्वर टेकाम, पुलिस नायक और येशु संतु तुलावी, पुलिस नायक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.05.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 110-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों का नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. गोविन्दा बाली फरकाड़े, पुलिस नायक (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) (मरणोपरान्त)
2. शगीर मुनिर शेख, पुलिस नायक (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
3. पंकज दिलीप गोडसेलवार, पुलिस नायक (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
4. सुधीर समाधान वाघ, पुलिस उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
5. नितीन मुकेश बड़गुजर, पुलिस उप-निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
6. नागेश जागेश्वर टेकाम, पुलिस नायक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
7. भैय्याजी वारलु कुलसंगे, पुलिस हेड कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.04.2013 को लगभग 0900 बजे मुखविर से परिवीक्षाधीन गुप्त सूचना मिलने पर पुलिस उप-निरीक्षक नितिन बड़गूजर और परिवीक्षाधीन पुलिस उप-निरीक्षक सुधीर वाघ ने सिंदेसर जंगल के क्षेत्र में नक्सल-रोधी अभियान चलाने के लिए तत्काल अपनी टीमों को मुख्यालय पर बुलाया। मुख्यालय पर उनकी टीम को कार्मिकों को एकत्र हो जाने पर, उन्होंने उन्हीं अभियान के बारे में बताया। पुलिस उप-निरीक्षक बड़गूजर और सुधीर वाघ और पार्टी कमांडर भैयाजी कुलसंगे और नागेश टेक ने भू-भाग को ध्यान में रखते हुए और आकस्मिकता बनाए रखने के लिए सिंदेसर जंगल के क्षेत्र में पहुंचने के लिए मार्ग का चयन किया। एक घंटे के भीतर हर दृष्टि

से तैयारी करने के पश्चात लगभग 1000 बजे उन्होंने वाहनों द्वारा मुख्यालय से कूच किया और लगभग 1100 बजे लक्ष्य के निकट जंगल में उतर गए। उसके बाद उन्होंने कुशलतापूर्वक सिंदेसर जंगल की तलाशी करते हुए पैदल आगे बढ़ना शुरू किया। थोड़ी दूर चलने के बाद, अचानक पुलिस कर्मियों की ओर भारी गोलियां बरसने लगीं। पुलिस पार्टी ने तत्काल कवर लिया तथा अधिकारियों और पार्टी कमांडरों के आदेशों के अनुसार धैर्य और साहसपूर्वक स्थिति का जायजा लिया। जैसे ही उन्होंने कुछ नागरिकों की आड़ में हरे कपड़ों में कुछ नक्सलवादियों को देखा, परिवीक्षाधीन पुलिस उप-निरीक्षक बड़गूजर और वाघ ने अपनी पार्टी के सदस्यों को उस ओर गोलियां न चलाने का आदेश दिया ताकि नागरिकों को कोई नुकसान न पहुंचे। उन्होंने नक्सलियों को अपने हथियार डालने और आत्मसमर्पण करने की चेतावनी भी दी किन्तु चेतावनी से भयभीत हुए बिना वे पुलिस पार्टी पर लगातार गोलियां दागते रहे और साथ ही चिल्लाकर एक-दूसरे को ग्रामीणों को वहां से न जाने देने की हिदायत भी दे रहे थे क्योंकि जब तक ग्रामीण वहां होंगे, तब तक पुलिस गोली नहीं चलाएगी और वे नागरिकों की आड़ में पुलिस पार्टी को मार सकेंगे। यह देखकर कि यह स्थिति नागरिकों के साथ-साथ पुलिस पार्टियों के जीवन के लिए जोखिम भरी होगी, दिलेर पुलिस पार्टी अर्थात् गोविन्द फरकडे शागीर शेख और पंकज गोडसेलवार अपनी जान की परवाह किए बिना निडरता से आगे बढ़े और ऊंची आवाज में ग्रामीणों को वहां से हटने अथवा भागकर सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कहने लगे। जब वे ग्रामीणों को आवाज लगा रहे थे, तब नक्सलियों ने पुलिस कर्मियों पर गोली चलाई तथा पुलिस नायक गोविन्द फरकडे की छाती में गोली लग गई और वे नीचे गिर गए। ऐसी नाजुक स्थिति का मुकाबला करते हुए पुलिस कांस्टेबल शागीर शेख और पुलिस कांस्टेबल दिलीप गोडसेलवार ने बिना संतुलन खोए, उचित रूप से आड़ ली और चिल्लाकर नागरिकों को सुरक्षित स्थान पर आड़लेने के लिए कहा और साथ ही नक्सलवादियों पर गोलियां दागीं।

उनके प्रयास निष्फल नहीं हुए और ग्रामीणों ने सुरक्षित स्थानों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। यह पुष्टि कर लेने के बाद सभी नागरिक सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं, परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक बड़गूजर और वाघ तथा पार्टी कमांडर कुलसंगे और टेकम ने अपने कमाण्डो को नक्सलियों पर गोली चलाने का संकेत दिया ताकि स्थिति का मुकाबला किया जा सके। पुलिस उप-निरीक्षक बड़गूजर ने अपनी पार्टी को बायीं ओर से और परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक वाघ ने अपने साथियों को दायीं ओर से कवर करने के निर्देश दिए और परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक बड़गूजर और कुलसंगे अपनी जान की परवाह किए बगैर बहादुरी से नक्सलियों पर भारी गोलीबारी करते हुए अपने जवानों के साथ आगे बढ़े। चुंकि परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक वाघ और उनके जवान उनकी ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे नक्सलियों पर लगातार गोलियां चला रहे थे, इसलिए नक्सलियों ने अपना विचार बदलकर जंगल की ओर भागना शुरू कर दिया और परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक वाघ और उनके जवानों ने वीरतापूर्वक उनका पीछा किया और गोलियां चलाईं। पुलिस पार्टी का बढ़ता दवाब महसूस करते हुए नक्सलवादी घने जंगल का फायदा उठाकर जंगल में भाग गए। लगभग आधे घंटे तक दोनों ओर से भारी गोलीबारी होती रही थी। ज्यों ही नक्सलियों की ओर से गोलीबारी बन्द हुई, परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक बड़गूजर और वाघ तथा पार्टी कमांडर कुलसंगे और टेकम ने अपने जवानों को उस स्थान की छानबीन करने की हिदायत दी। साथ ही साथ उन्होनें उस स्थान को भी घेर लिया जहां एक जवान नक्सलियों की गोली लगने के कारण गिर गया था। वह जवान बेहोश था। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, वहां एक पुरुष और तीन महिला नक्सलवादी पुलिस की गोली लगने के बाद बेहोश पाए गए। नक्सलवादियों के पास में 01 एसएलआर राइफल, 01 एसएलआर मैगजीन, एक 12 बोर की राइफल, 12 बोर की राइफल के ग्यारह जिन्दा कारतूस, एक भारमर राइफल, चार क्लेमोर बारूदी सुरंगे और चार डेटोनेटर पाए गए।

घटना स्थल पर पाए गए बेहोश जवान फरकड़े, 02 अज्ञात नागरिकों, 01 अज्ञात पुरुष नक्सलवादी और 03 अज्ञात महिला नक्सलवादियों को तत्काल चिकित्सीय सहायता के लिए पी एच सी धनोरा ले जाया गया। चिकित्सा अधिकारी ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

सिंदेसर की यह मुठभेड, जिसे पुलिस पार्टी द्वारा गुप्त सूचना मिलने पर अपनी जान को जोखिम में डालते हुए नागरिकों की सुरक्षा के लिए भारी खतरा उठाते हुए तत्काल अंजाम दिया गया था, अत्यंत सफल रही। सामान्यतया नक्सलवादी अपने मृतक साथियों को मुठभेड़ के बाद उठा ले जाते हैं, ताकि उनके अन्य नक्सली साथियों का मनोबल न गिरे। किन्तु इस बार, परिवीक्षाधीन पुलिस-निरीक्षक और वाघ, पार्टी कमांडर कुलसंगे, टेकम, पुलिस नायक फरकड़े, पुलिस नायक शेख और पुलिस कांस्टेबल गोडसेलवार नक्सलियों को उनके शस्त्रों और गोलाबारूद सहित दबोचने में सफल रहे थे। वे वीरता से लड़े और नक्सलवादियों की ओर से लगातार भारी गोलीबारी में भी झुके नहीं। इस बहादुरीपूर्ण कार्रवाई में उन सभी ने उस दिन नक्सलवादियों के बुरे मंसूबों को विफल करने में अत्यधिक योगदान दिया और इस प्रक्रिया से पुलिस नायक गोविन्द फरकडे ने अपना कर्तव्य निभाते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया और शहादत प्राप्त की।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) गोविन्दा बाली फरकाड़े, पुलिस नायक, शगीर मुनिर शेख, पुलिस नायक, पंकज दिलीप गोडसेलवार, पुलिस नायक, सुधीर समाधान वाघ, पुलिस उप-निरीक्षक, नितिन मुकेश बड़गुजर, पुलिस उप-निरीक्षक, नागेश जागेश्वर टेकाम, पुलिस नायक और भैय्याजी वारलु कुलसंगे, पुलिस हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.04.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 111-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सम्भाजी नारायण गुरव,
   पुलिस उप निरीक्षक
2. भजनराव मनु गावड़े,
   पुलिस नायक
3. कुमारशहा राजु उसेन्डी,
   पुलिस कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.05.2012 को नक्सलियों की उपस्थिति के बारे में खुफिया सूचना मिलने पर पुलिस उप निरीक्षक सम्भाजी गुरव ने पार्टी कमांडर भजन गावडे और उनकी पार्टी के 24 जवानों और 206 कोबरा बटालियन के 55 जवानों सहित नक्सल-रोधी तलाशी अभियान चलाने के लिए गढ़चिरौली मुख्यालय से पावरवेल जंगल की ओर प्रस्थान किया। सतत तलाशी अभियान के दौरान, वे अगले दिन लगभग 0830 बजे पावरवेल गांव पहुंचे। जब ये पुलिस दल जंगल क्षेत्र से पावरवेल गांव के पास जा रहे थे, तभी अचानक 40-50 सशस्त्र नक्सलियों ने, जो गांव के निकट जंगल में पहले ही से घात लगाए हुए थे, पुलिस दलों को मारने और उनके हथियार छीनने के इरादे से उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

इस स्थिति में, पुलिस उप निरीक्षक गुराव और पार्टी कमांडर भजनराव गावडे ने नेतृत्व संभाला और बहादुरी से इन पुलिस पार्टियों को आत्मरक्षा करने और स्थिति को नियंत्रित करने के लिए जवाबी गोलियां चलाने का निर्देश दिया। नक्सलियों की ओर से गोलियों की बौछार शुरू होने के बाद, पुलिस उप निरीक्षक गुराव आगे आए और पुलिस कांस्टेबल कुमारशाहा उसेन्डी के साथ नक्सलियों पर भारी गोलीबारी करते हुए बहादुरी से आगे बढ़े। पुलिस उप निरीक्षक गुराव द्वारा प्रदर्शित इस बहादुरी की वजह से पार्टी के अन्य सदस्यों ने भी नक्सलियों पर भारी गोलीबारी की, जिसके परिणामवरूप नक्सलवादी बढ़ते दवाब को महसूस करके घने जंगल का फायदा उठाते हुए घटनास्थल से भाग खड़े हुए। नक्सलियों की ओर से गोलीबारी बन्द होने के बाद, पुलिस उप निरीक्षक गुराव और उनके दल ने उस क्षेत्र की छानबीन की जहां उन्हें एक पुरुष नक्सलवादी का शव मिला जिसकी पहचान बाद में राहुल ध्रुर्वा (नक्सल दलम का कट्टर सदस्य) के रूप में हुई।

कुछ समय बाद, इस पुलिस दल को सूचना मिली कि कुछ नक्सलवादी पावरवेल गांव में छिपे हुए हैं। अतः, पुलिस उप निरीक्षक गुराव और पाटी कमांडर गावडे ने अपनी जान को आसन्न संकट के बारे में बिना सोचे अपनी टीमों को गांव को घेरने का निर्देश दिया और स्वयं मकानों की तलाशी लेने में जुट गए। उन्होंने एक मकान में संदिग्ध गतिविधियां देखीं। इसलिए, पुलिस उप निरीक्षक गुराव ने सभी आवश्यक एहतियात बरतते हुए उस मकान के अन्दर प्रवेश किया। उन्होंने 2 महिला नक्सलवादियों को ओलिव ग्रीन वर्दी पहने देखा जो उन पर हमला करने का प्रयास कर रही थीं। तत्पश्चात पुलिस उप निरीक्षक गुराव ने साहस के साथ स्थिति का मुकाबला किया और उन दोनों महिला नक्सलियों को 02 हथियारों और बड़ी मात्रा में गोला-बारूद सहित गिरफ्तार किया।

पुलिस उप निरीक्षक गुराव और कमांडर गावडे ने खुफिया सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई करते हुए अभियान का नेतृत्व किया और साहसपूर्वक जवाबी गोलीबारी की जबकि पुलिस कांस्टेबल उसेंडी ने निडरता से अपने प्रभारी की सहायता की और गोलीबारी के दौरान अत्यंत धैर्य का प्रदर्शन किया। एक नक्सलवादी को सफलतापूर्वक मारने के बाद भी इन तीनों लोगों ने धैर्य बनाए रखा और कुशल समन्वय से उन्होंने संदिग्ध क्षेत्र की घेराबंदी की और अपनी जान की परवाह किए बगैर 2 कट्टर महिला नक्सलवादियों को बहादुरी से गिरफ्तार कर लिया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सम्भाजी नारायण गुरव, पुलिस उप निरीक्षक, भजनराव मनु गावडे, पुलिस नायक और कुमारशहा राजु उसेन्डी, पुलिस कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.05.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 112-प्रेज/2014- राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम वार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. रिंगरंग टी.जी. मोमिन, अपर पुलिस अधीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. राबर्ट ए.एम.संगमा, उप निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. राजेन्द्र पी. काहित, बटालियन कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
4. प्रोबिंनस्टर खरबानी, बटालियन कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
5. जितदेन संगमा, बटालियन कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)
6. रैपसालंग व्हालंग, बटालियन कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12 अप्रैल, 2013 को सोंगसाक पुलिस स्टेशन के अंतर्गत कोकसी नेंगसात गांव में आधुनिक हथियारों और गोलाबारूद से पूर्णत: लैस अपने 8-10 कैडरों के साथ गारो नेशनल लिबरेशन आर्मी (जीएनएलए) के कमांडर-इन-चीफ, सोहन डी. शीरा के संभावित कैम्प की स्थिति के बारे में विश्सनीय स्रोत से सूचना मिली थी। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर, कोबरा टीम को भी ऑपरेशन में शामिल होने के लिए कहा गया था और एक कार्य योजना तैयार की गई थी। योजना के अनुसार, श्री आर.टी.जी. मोमिन एमपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी गारो हिल्स जिला के नेतृत्व में एस डब्ल्यू ए टी के दल और श्री डी. एस. पाल, उप कमांडेंट के नेतृत्व में कोबरा दल वाले अभियान दलों ने पहचान छिपाने और संदिग्ध क्षेत्र में पहुंचने के लिए घने जंगल और जोखिम भरे क्षेत्र को पार करके 23:00 बजे अभियान शुरू किया। लगभग 04:30 बजे, कोबरा के साथ एसडब्ल्यूएटी दल ने बचकर निकलने के सभी संभावित मार्गों को रोकने के लिए रणनीतिक तरीके से अपनी पोजीशन ली, जिसे योजना स्तर पर पहले ही निर्धारित कर लिया गया था। श्री रिंगरंग टी. जी. मोमिन, एम.पी.एस, अपर पुलिस अधीक्षक ने भी देवेन्द्र एस. पाल, उप कमांडेंट के साथ कट-ऑफ पर पोजीशन ले ली। जैसे ही प्रत्येक कट-आफ ने अपनी पोजीशन संभाली, उप निरीक्षक राबर्ट ए. एम. संगमा (एस डब्ल्यू ए टी) और और उप-निरीक्षक/जी डी एम.एस. रावत, कोबरा नेतृत्व में हमला पार्टी को क्षेत्र में अपनी तलाशी शुरू करने के निर्देश दिए गए, जिसे सील कर दिया गया था।

लगभग 06:00 बजे जब हमला दल गांव के अंदर एक घर की ओर जा रहा था, तो जी एन एल ए उग्रवादियों की ओर से उन पर भारी गोलीबारी हुई। उप-निरीक्षक राबर्ट ए. एम. संगमा, उप-निरीक्षक/जीडी एम.एस. रावत और पूरे दल के पास उग्रवादियों का खातमा करने के लिए उन पर की जा रही भारी गोलीबारी से लड़ने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। अधिकारियों ने बीएनसी राजेन्द्र पी. काहित, बीएनसी प्रोबिंस्टर खरबानी, बीएनसी जिदतेन संगमा, बीएनसी रैपसालंग व्हालंग और हमला दल के अन्य कोबरा कर्मियों के साथ

वीरतापूर्वक कुछ दूरी तक उग्रवादियों का पीछा किया और उन पर अक्रामक रूप से जवाबी हमला किया। जिस आक्रमता के साथ हमला दल ने उग्रवादियों पर हमला किया उससे अंतत: वे भागने पर मजबूर हो गए और जमीन पर खून के धब्बों से यह स्पष्ट था कि इस गोलीबारी में कुछ उग्रवादी घायल हो गए होंगे।

उग्रवादियों ने हमला दल पर अपने कंधों से पीछे की ओर गोलीबारी करते हुए विभिन्न दिशाओं में बचने का प्रयास किया। उनमें से अनेक को उस कटऑफ की ओर जाते हुए देखा गया, जहां श्री देवेन्द्र एस. पाल, उप कमांडेंट और श्री रिंगरंग टी.जी. मोमिन, एमपीएस अपर पुलिस अधीक्षक ने अपने दल के साथ पोजीशन ली हुई थी। पर्याप्त कवर न होने के बाबजूद, अधिकारियों और कर्मियों ने उन पर गोलीबारी करने वाले उग्रवादियों पर गोलीबारी की। इस संघर्ष के दौरान यह स्पष्ट था कि उनमें से एक विद्रोही गंभीर रूप से घायल हो गया था और एक अन्य विद्रोही भी घायल हुआ था, जिससे अन्य उग्रवादी दिशा बदलने पर मजबूर हो गए।

बचने के प्रयास में, उग्रवादी कटऑफ-6 की दिशा में दौड़े जहां बी एन सी रैपसालंग व्हालंग कोबरा साथियों के साथ इंतजार कर रहे थे। उग्रवादी जो कि क्षेत्र से बचकर निकलने के लिए उग्रतातापूर्वक लक्ष्यहीन गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों पर कटऑफ-6 की ओर से दलों ने गोलीबारी की जिसमें एक उग्रवादी गंभीर रूप से घायल हो गया और घटना स्थल पर ही उसकी मौत हो गई, जबकि बाकी उग्रवादी बचकर भाग निकले।

कुछ देर बाद जब सभी दिशाओं से गोलीबारी बंद हो गई, तो पूरे क्षेत्र की पूरी तरह से तलाशी ली गई और मुठभेड़ स्थल से जीएनएलए कैडरों के दो शवों के साथ एक ए के-56 राइफल, एक 7.65 पिस्तौल, चार जिलेटिन स्टिकें, पचास विस्फोटक, तीन वायरलेस सेट और अन्य अपराध संकेती सामग्री बरामद की गई। विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त बाद की रिपोर्टों से यह भी पता चला कि उनमें से अनेक गंभीर रूप से घायल हो गए थे, जिनमे से कुछ की कई दिन के बाद मौत हो थी, यद्यपि उनके शवों का पता नहीं लगाया जा सका था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रिंगरंग टी.जी. मोमिन, अपर पुलिस अधीक्षक, राबर्ट ए.एम. संगमा, उप निरीक्षक,राजेन्द्र पी. काहित, बटालियन कांस्टेबल, प्रोबिंनस्टर खरबानी, बटालियन कांस्टेबल, जितदेन संगमा, बटालियन कांस्टेबल और रैपसालंग व्हालंग, बटालियन कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.04.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 113-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
2. संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. पबित्र मोहन नायक, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)
4. शिव शंकर नायक, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.08.2013 को श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक को कोरापुट जिले के मछकुंड पुलिस स्टेशन के अंतर्गत छिलिबा वन क्षेत्र में गोल्ला रामलु ऊर्फ माधव, डीसीएम रैंक के नेतृत्व में माओवादियों के सशस्त्र कैडर के छोटे दल की उपस्थिति के संबंध में

खुफिया जानकारी प्राप्त हुई थी। तदनुसार, दिनांक 23 अगस्त, 2013 को उस क्षेत्र में अभियान शुरू किया गया था। श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने अभियान दल का नेतृत्व किया, जिसमें मल्कानगिरि पुलिस के 15 पुलिस कर्मी और मुखबिर शामिल थे। जब दल अभियान क्षेत्र की ओर जा रहा था, तो अचानक उन्होंने 8 से 10 सशस्त्र लोगों की हलचल देखी और उनमें से कुछ नक्सली वर्दी अर्थात् ऑलिव ग्रीन में भी थे। उन्हें नक्सली समझते हुए पुलिस दल ने उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस दल ने अपने बचाव में जबाव कार्रवाई की। उग्रवादी उपयुक्त स्थिति में थे और अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने स्थिति का जायजा लेने के बाद दायीं ओर से उग्रवादियों पर हमला करने का निर्णय लिया। उन्होंने मुख्य दल से नक्सलियों को गोलीबारी में उलझाए रखने के लिए कहा और स्वयं तीन अन्य इच्छुक कर्मियों नामत: श्री संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान), कोरापुट, कांस्टेबल पवित्र मोहन नायक और कांस्टेबल एस. एस. नायक के साथ युक्तिपूर्वक15-20 मीटर की दूरी तक दायीं बाजू की ओर रेंगकर गए। वहां रेंगते वक्त नक्सलियों को उनका पता चलने और उनकी गोली लगने की हर संभव सभांवना थी, लेकिन यह भय उन्हें उनको सौंपे गए कार्य को पूरा करने से नहीं रोक सका। ऐसा लगता है कि नक्सलियों को पुलिस दल का आभास हो गया था, क्योंकि उन्होंने उनकी ओर एक ग्रेनेड फेंका था। यद्यपि ग्रेनेड लक्ष्य पर नहीं लगा और पुलिस दल भी जमीन पर लेट गया था लेकिन फिर भी कांस्टेबल पवित्र मोहन नायक और कांस्टेबल शिवशंकर नायक को साधारण स्पिंल्टर चोट आई, लेकिन इससे उनके उत्साह को झटका नहीं लगा। श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक कांस्टेबल पवित्र मोहन नायक के साथ दायीं ओर 6-7 मीटर आगे बढ़े और इसके बाद इन दोनों ने सामने आकर उग्रवादियों पर गोलीबारी आरंभ कर दी। यद्यपि इससे उनकी जान को खतरा था लेकिन भाग्य ने उनका साथ दिया और इससे नक्सलियों को झटका लगा क्योंकि उन्हें अप्रत्याशित दिशा से गोलीबारी का सामना करना पड़ा। इससे पहले कि उग्रवादी उनकी ओर गोलीबारी कर पाते, श्री संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक और कांस्टेबल शिवशंकर नायक ने भी अपनी जान की परवाह किए बिना सामने आकर नक्सलियों पर गोलीबारी आरंभ कर दी। पुलिस का मुख्य दल पहले से ही नक्सलियों पर गोलीबारी कर रहा था। तीन ओर से की गई गोलीबारी से उग्रवादी हक्के बक्के रह गए और उन्होंने पीछे हटना शुरू कर दिया और पुलिस दलों पर गोलीबारी भी करते रहे। संभवत: इस समय नकसली हताहत हो गए होते लेकिन प्रतिकूल क्षेत्र ओर घने जंगल का सहारा लेकर वे घटना स्थल से बचकर निकल गए। दोनों ओर से 15-20 मिनट तक गोलीबारी हुई। कुछ समय तक इंतजार करने के बाद मुख्य दल हमला दल के साथ आ मिला और कुशलतापूर्वक छिलिया गांव की ओर चलना आरंभ कर दिया। जैसे ही पुलिस दल गांव में प्रवेश करने वाला था, उन्हें फिर कुछ दूरी से रूक-रूक कर हुई गोलीबारी का सामना करना पड़ा, जिसका पुलिस दल ने अच्छी तरह जबाव दिया। इसके बाद काफी लंबी खामोशी रही और कुछ समय के बाद पुलिस दल ने गांव में प्रवेश किया। तलाशी के दौरान पिस्तौल के साथ एक माओवादी कैडर का शव मिला। बाद में उसकी पहचान डीसीएम रैंक के खूंखार नक्सली गोल्ला रामुलू उर्फ माधव के रूप में हुई। 50 से अधिक पुलिस कर्मियों की हत्या में उसका हाथ था। उसने अपने दल के साथ जून, 2008 में मल्कानगिरि जिले (कट-ऑफ क्षेत्र) के इलमपाका रजर्वायर में आंध्र प्रदेश पुलिस के 38 ग्रेहाउन्डस कमांडो की हत्या की थी इसके अलावा, दिनांक 10.02.2012 को इसने 107 बटालियन, बी एस एफ के कमांडेंट और द्वितीय कमान अधिकारी सहित बी एस एफ के चार कर्मियों की भी हत्या की थी और अनेक ठेकेदारों तथा सिविलियनों की हत्या के अलावा वर्ष 2011 में कलेक्टर, मल्कानगिरि के अपहरण में शामिल था। आंध्र प्रदेश सरकार ने उसके सिर पर चार लाख रु. के इनाम की घोषणा की थी

पुलिस कर्मियों द्वारा निभाई गई व्यक्तिगत भूमिका

1. श्री अखिलेश्वर सिंह, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक

इन्होंने अभियान के दौरान न केवल पूर्ण कमांड और नियंत्रण का प्रदर्शन किया बल्कि आवश्यकता पड़ने पर व्यक्तिगत उदाहरण भी प्रस्तुत किया। दोनों ओर से गोलीबारी के दौरान, आरंभिक स्तर पर नक्सली बेहतर स्थिति में थे और उग्रवादियों द्वारा पुलिस पोजीशन को रौंदे जाने का खतरा था। उस समय कोई भी गलत कार्रवाई अथवा निष्क्रियता पुलिस दल के लिए घातक सिद्ध हो सकती थी। तथापि, श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक ने अपना संतुलन नहीं खोया और स्थिति का जायजा लेकर दायीं ओर से उग्रवादियों पर हमला करने के लिए पुलिस कार्मिकों का हमला दल बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने मुख्य दल को जरूरी अनुदेश देने के बाद आगे बढ़कर हमला दल का स्वयं नेतृत्व किया। दायीं ओर रेंगकर जाते समय उग्रवादियों की भीषण गोलीबारी के कारण उनके मारे जाने की हर संभावना थी। स्थिति की मांग के अनुसार उन्होंने कांस्टेबल पवित्र मोहन नायक के साथ नक्सलियों पर धावा बोल दिया। उस कार्रवाई में उन्हें सामने आना पड़ा जिसने उन्हें अत्यधिक जोखिम में डाल दिया और उन्हें उग्रवादियों का आसान लक्ष्य बना दिया। तथापि, भाग्य ने उनका साथ दिया और सब कुछ ठीक हो गया। इस पूरे अभियान में वे हर स्तर पर शामिल थे। उन्होंने इस अभियान की सफलता में बड़ी भूमिका निभाई है। उन्होंने अभियान के विभिन्न स्तर पर अपनी जान को जोखिम में डाला।

2. श्री संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान)

उन्होंने काफी अच्छी तरह अभियान लीडर की सहायता की ओर स्वेच्छा से हमला दल का हिस्सा बने जबकि उन्हें पता था कि उनकी जान को जोखिम होगा। दायीं ओर रेंगकर जाते समय पूरी तरह सामने आने के कारण वे शहीद हो गए होते, लेकिन फिर भी

उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा किया। अभियान में कांस्टेबल शिवशंकर नायक के साथ सामने आकर उन्होंने नक्सलियों पर गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप नक्सली पुलिस हमला दल के दूसरे भाग पर जवाबी गोलीबारी नहीं कर सके। अंतत: इस कार्रवाई से नक्सलियों के समक्ष पीछे हटने के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा था। वास्तव में यह एक वीरतापूर्ण कार्रवाई थी, क्योंकि वे नक्सलियों द्वारा चलाई गई गोलियों का निशाना बन सकते थे। उन्होंने योजना के पूर्ण निष्पादन में टीम लीडर की सहायता की।

3. श्री पबित्र मोहन नायक

यद्यपि अभियान में इन्हें मामूली स्पिल्टंर चोट आई थी, लेकिन फिर भी वे हमला दल का हिस्सा बनने के लिए सामने आए। दायी ओर रेंगकर जाते समय उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डाला, क्योंकि उन्हें गोली लग सकती थी। इसके बाद वे श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के साथ सामने आए और नक्सलियों पर गोलियां बरसाकर उन्हें पहला झटका दिया। वास्तव में यह एक वीरतापूर्ण कार्य था क्योंकि नक्सली गोलीबारी के बीच सामने आकर उन्होंने अपनी जान को खतरे में डाला। तथापि, इस दांव का लाभ मिला और यह अभियान पुलिस की सफलता के साथ समाप्त हुआ।

4. कांस्टेबल शिव शंकर नायक

इन्हें भी आपरेशन में मामूली स्पिल्टंर चोट आई थी लेकिन वे स्वेच्छा से हमला दल का हिस्सा बने। अन्य सदस्यों के साथ दायीं ओर रेंगकर जाते समय स्पष्ट रूप से उनकी जान को खतरा था। उस समय कुछ भी हो सकता था, लेकिन उन्होंने विचलित हुए बिना घबराए अपने कार्य को पूरा किया। इसके बाद उन्होंने श्री संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) के साथ सामने आकर नक्सलियों पर गोलीबारी की जिससे नक्सली हक्के-बक्के रह गए और इससे वे अंतत: पीछे हटने पर मजबूर हो गए। इस कार्य के दौरान उन्होंने वास्तव में अपनी जान को खतरे में डाला।

बरामदगी:-

1. ए के -47 के 11 जिन्दा कारतूस
2. 9 एम एम कारतूस के 14 खाली खोखे
3. .303 कारतूस के 9 खाली खोखे
4. .303 का 1 जिंदा कारतूस
5. एसएलआर (7.62) के पांच खाली खोखे

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, संतोष कुमार मल्ल, अपर पुलिस अधीक्षक, पबित्र मोहन नायक, कांस्टेबल और शिव शंकर नायक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 114-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक
सर्व/श्री

1. दिव्य लोचन राज,
   उप-निरीक्षक
2. चित्त रंजन जेना,
   कांस्टेबल
3. समोदर कुलिसिका,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10-11.09.2013 की मध्यवर्ती रात्रि में स्वयं के स्रोतों से विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि के. सिंहपुर पुलिस स्टेशन की सीमाओं के अंतर्गत कदराका, बोन्डिली, तेपापदार ग्रामों के क्षेत्र में बंटी के नेतृत्व में महिला माओवादियों सहित 12-15 सशस्त्र सीपीआई (माओवादी) कैडरों की आवाजाही हो रही है, जिनकी योजनाएं अपनी उपस्थिति स्थापित करने के लिए क्षेत्र में आतंक फैलाने और सरकारी प्रतिष्ठानों में विस्फोट करके सरकार के विरुद्ध युद्ध छोड़ने तथा सरकारी अधिकारियों को अशक्त बनाने की थी।

सूचना के आधार पर, माओवादियों को पकड़ने और उनकी घृणित-योजनाओं को विफल करने के लिए जिला स्वैच्छिक बल (डीवीएफ) रायगढ़ को शामिल करके दिनांक 11.09.2013 की भोर में उस क्षेत्र में आसूचना आधारित नक्सल-रोधी कार्रवाई की योजना बनाई गई।

जब उप निरीक्षक दिव्य लोचन राज्य पुलिस अभियान दल अर्थात् डी वी एफ रायगढ़ के दल का नेतृत्व कर रहे थे और दिनांक 11.09.2013 की दोपहर में कदराका-बोंदिली जंगल क्षेत्र में अभियान चला रहे थे, तब दल को माओवादियों के समूह की उपस्थिति का आभास हुआ और अभियान दल ने डे-विजन डिवाइस की मदद से माओवादियों के समूह के एक कैम्प को देखा। पुलिस अभियान दल के प्रभारी उप निरीक्षक दिव्य लोचन राज ने तुरंत पुलिस दल को दो दलों में बांटा, जिसमें 8 सदस्यों का एक कार्रवाई दल था और बाकी सदस्य कट-ऑफ-टीम का हिस्सा थे। तीनों पुलिस कर्मी कार्रवाई दल में थे और आगे बढ़कर नेतृत्व कर रहे थे और उन्होंने रणनीतिक स्थानों पर पोजीशन ले ली थी। तब अभियान दल के कार्रवाई दल ने ऊंची आवाज में माओवादियों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी और अपने हथियार डालने के लिए कहा, लेकिन माओवादियों के समूह ने नहीं सुना तथा पुलिस अभियान दल पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी।

यह देखकर अभियान दल के उप निरीक्षक दिव्य लोचन राज, कांस्टेबल चित्त रंजन जेना और कांस्टेबल समोदर कुलिसिका ने अपनी पोजीशन ली और अपने बचाव में माओवादी समूह पर गोलीबारी की। दोनों ओर से लगभग आधा घंटे तक गोलीवारी हुई। पुलिस अभियान दल के इन तीनों सदस्यों ने अनुकरणीय वीरतापूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया और अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर पूरी शक्ति से माओवादियों का सामना किया। पुलिस अभियान दल का नेतृत्व करने में इन तीनों सदस्यों द्वारा प्रदर्शत धैर्य, सूझ-बूझ, बुद्धिमता और रण-कौशल उत्कृष्ट साबित हुआ और माओवादी संघर्ष से निपटने में बड़ी उपलब्धि प्राप्त हुई।

पुलिस दल के हमले का सामना न कर सकने के कारण माओवादियों ने पीछे हटने का प्रयास किया और निकटवर्ती क्षेत्रों तथा घनी झाड़ियों की मदद से वहां से भाग गए। पुलिस अभियान दल ने कुछ दूरी तक माओवादियों का पीछा किया, लेकिन माओवादी घटना स्थल से भागने में सफल रहे। इसके बाद डीवीएफ अभियान दल ने पूरे क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया और एक महिला माओवादी का शव बरामद किया जो ओलिव ग्रीन यूनिफार्म में थी और उसके पास एक .303 की राइफल थी।

बाद में पुलिस अभियान दल ने माओवादियों के अस्थायी गोदाम को नष्ट कर दिया और क्षेत्र से .303 की 3 राइफलें, .303 के बॉल कारतूस, .303 की 3 मैगजीनें, 17 कारतूस से भरी 1 इन्सास मैगजीन, 1 बाकी-टॉकी, बड़ी संख्या में गोलियों/सेलाइन/इंजेक्शन/कॉटन आदि के किट, नक्सली ओलिव ग्रीन यूनिफार्म, किट बैग, बर्तन, बड़ी संख्या में कास्मैटिक सामान बरामद किए।

इस गोलीबारी में पुलिस अभियान डीवीएफ दल के सदस्यों ने अपनी जान को गंभीर जोखिम के बावजूद कर्तव्य के प्रति समर्पण, निर्भीकता और उच्च कोटि के निष्ठापूर्ण प्रयासों का प्रदर्शन किया है, जिसके परिणामस्वरूप एक महिला माओवादी को मारा जा सका और माओवादियों के अस्थायी कैंप को नष्ट किया जा सका। रायागढ़ जिला पुलिस की इस उपलब्धि से ओडिशा पुलिस को एक और गौरव प्राप्त हुआ है और रायागढ़ जिले में नक्सली खतरे का सामना करने में बल का मनोबल भी बढ़ा हुआ है। दूसरी ओर रायागढ़ पुलिस द्वारा महिला माओवादी का मार गिराना और बड़ी संख्या में माओवादी-संबंधी सामग्री की बरामदगी से सीपीआई (माओवादी) समूह को बड़ा झटका लगा है जिससे जिलों में उनकी पकड़ कमजोर हुई है।

अभियान के दौरान, श्री दिव्य लोचन राज, उप निरीक्षक ने अभियान दल के अन्य सदस्यों की जान के जोखिम की परवाह न करते हुए आगे बढ़कर पुलिस दल का नेतृत्व किया और सफलतापूर्वक माओवादी हमले को नियंत्रित किया और गोलीबारी में एक महिला माओवादी को मार गिराया। दृढ़ निश्चय के साथ और अपनी और दल के अन्य सदस्यों की जान को जोखिम के बावजूद उन्होंने अभियान का नेतृत्व किया। इन्होंने छोटे दल के साथ निर्भीक और नवीनतम योजना बनाने और इसका निष्पादन करने में अनुकरणीय वीरतापूर्ण युद्धकौशल का प्रदर्शन किया और नक्सलियों के क्षेत्र में ही सफलतापूर्वक शत्रुओं का खात्मा किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दिव्य लोचन राज, उप निरीक्षक, चित्त रंजन जेना, कांस्टेबल और समोदर कुलिसिका, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.09.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 115-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जयंत कुमार नायक,
   उप निरीक्षक
2. पबित्र कुमार पात्रा,
   हवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29.08.2013 की शाम को पुलिस अधीक्षक, बोलांगीर को अपने विश्वसनीय स्रोत से सुस्पष्ट सूचना मिली कि बोलनगीर जिले के तुरेकेला पुलिस स्टेशन से लगभग 10 कि.मी. पर खुजेन गांव के निकट डंडेल पहाड़ी क्षेत्र में बोलनगीर-बारगढ़-महासमुन्द मंडल के प्रतिबंधित सीपीआई माओवादी कैडर डेरा डाले हुए हैं। उक्त क्षेत्र पश्चिम दिशा में बोलनगीर जिला मुख्यालय से 110 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह क्षेत्र अधिकांशत: घना मिश्रित जंगल है, जहां झरने और काफी ऊंची पहाड़ियां भी हैं। लगभग सभी सड़कों, गाड़ी पथों और पैदल पथों पर बारूदी सुरंगें होने का संदेह रहता है और सड़क यात्रा के साथ-साथ क्षेत्रपार की यात्रा के लिए खतरनाक है। क्षेत्र में प्रतिकूल स्थिति होने के बावजूद बोलनगीर जिले के एसओजी हमला दल सं.41 के अन्य पुलिस कर्मियों सहित नामित सदस्यों को तुरेकेला पुलिस स्टेशन सीमाओं के डंडेल वन क्षेत्र के निकट बड डाकला गांव में गहन छानबीन के लिए छोड़ा गया और उन्होंने दिनांक 29.08.2013 को लगभग 23:00 बजे छानबीन आरंभ की।

दिनांक 30.08.2013 को शाम के समय उप-निरीक्षक (सशस्त्र) जयंत कुमार नायक, एसओजी एटी सं. 41 के समग्र नेतृत्व में पबित्र कुमार पात्रा को उनके जगल युद्ध के व्यापक अनुभव और रात में चलने की अच्छी जानकारी के कारण उन्हें अभियान दल के स्काउट के रूप में तैनात किया गया और पुलिस दल ने तुरेकेला पुलिस स्टेशन के 10 कि.मी. दक्षिण में खुजेन गांव के निकट घने डंडेल पहाड़ी क्षेत्र में लगभग 17:00 बजे छानबीन का अभियान आरंभ किया। अपने दल के साथ पबित्र कुमार पात्रा ने देखा कि ओलिव ग्रीन यूनिफार्म और हथियारों के साथ बोलनगीर-बारगढ़-महासमुंद मण्डल के प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) समूह के 8-10 सदस्य, पुरुष और महिला दोनों, सामने कुछ दूरी पर हैं। सबसे पहले यह पबित्र कुमार पात्रा ने देखा और इसकी सूचना दल के कमांडर, उप-निरीक्षक (सशस्त्र) जयंत कुमार नायक को दी गई। जयंत कुमार नायक ने दल की दो फायरिंग दलों (एक दल दक्षिण दिशा में और पूर्व दिशा में अन्य पुलिस कर्मियों के साथ स्वयं एवं पबित्र कुमार पात्रा और दल के शेष सदस्यों को कट-ऑफ पार्टी में बांटकर तुरंत एक रणनीतिक अभियान की योजना बनाई। दल के कमाण्डर ने पुलिस के रूप में अपनी पहचान बताई और माओवादियों को आत्मसमर्पण करने की सलाह दी लेकिन उन्होंने इस सलाह पर कोई ध्यान नहीं दिया और अन्य पुलिस कर्मियों को मारने के लिए अपने हथियारों से अंधाधुध गोलाबारी आरंभ कर दी जो सामने की ओर थे और दल का नेतृत्व कर रहे थे। जयंत कुमार नायक ने फिर माओवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा लेकिन माओवादी कैडरों ने नहीं सुना बल्कि पुलिस कर्मियों की ओर गोलीबारी की। तब पुलिस दल के सदस्यों ने महसूस किया कि माओवादियों का समर्पण करने का इरादा नहीं है और वे उन्हें तथा अन्य पुलिस कर्मियों को मारना चाहते हैं। तब जयंत कुमार नायक एवं पबित्र कुमार पात्रा और 2 अन्य पुलिस कर्मी पूर्व दिशा में गए और दो अन्य पुलिस कर्मियों ने दूसरे छोर अर्थात् दक्षिण दिशा को कवर किया और उन्होंने अपने बचाव में गोलीबारी की तथा अपने आप को छिपाकर माओवादियों की ओर रेंगना आरंभ किया। दोनों अधिकारी सशस्त्र माओवादियों की भारी गोलीबारी से भयभीत हुए बिना रेंगकर माओवादियों के काफी नजदीक आ गए जो पुलिस दल पर भीषण रूप से गोलीबारी कर रहे थे। दोनों अधिकारी माओवादियों के काफी नजदीक आ गए और उन्हें मारने के लिए उन पर गोलीबारी की। इस प्रक्रिया में दल के अन्य सदस्यों की जान बचाने के लिए उन्होंने अपनी जान को बड़े जोखिम में डाल दिया। लगभग एक घंटे तक दोनो ओर से गोलीबारी हुई जिसमें दोनों अधिकारी और बोलन गीर जिले के अन्य पुलिस कर्मी अपनी जान की परवाह किए बिना

बहादुरी से लड़े। इस गोलीबारी के दौरान इन दोनों अधिकारियों और अन्य पुलिस कर्मियों ने एक महत्वपूर्ण सशस्त्र पुरुष माओवादी कैडर को मार गिराया जो अपने हथियार से गोलीबारी करके पुलिस दल को कड़ी टक्कर दे रहा था। अधिकारियों से हमले के खतरे को भांपकर बाकी उग्रवादी घने जंगल, शिलाखंडों और पहाड़ी क्षेत्र का फायदा उठाकर घटना-स्थल से भाग गए। श्री जयंत कंमार नायक एवं पबित्र कुमार पात्रा ने काफी दूर तक अपने हमला दल के साथ उग्रवादियों का पीछा किया, लेकिन वे बचकर भाग निकले।

अत: दोनों अधिकारियों व्यक्तियों ने अतुलनीय वीरतापूर्ण कार्य का प्रदेर्शन किया और वे प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) के सशस्त्र विद्रोहियों को पकड़ने में सर्वोच्च बलिदान देने के लिए तैयार थे। उन्होंने दल भावना के अच्छे उदाहरण और अत्यधिक वीरतापूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया।

इस वीरतापूर्ण कार्य से दोनों अधिकारियों ने सीपीआई (माओवादी) को भारी क्षति पहुंचाई, जिसके परिणामस्वरूप एक अज्ञात सशस्त्र पुरुष माओवादी कैडर की मौत हुई।

बरामदगियां:

1. एक .303 राइफल
2. एक देशी बन्दूक
3. एक .303 जिन्दा कारतूस
4. 12 बोर के 20 जिन्दा कारतूस
5. खाली खोखे
6. एक आई ई डी (नॉन-इलेक्ट्रिकल) वाला एक प्लास्टिक बॉक्स
7. 6 किट बैग
8. बड़ी संख्या में माओवादी साहित्य
9. दैनिक उपयोग की वस्तुएं

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जयंत कुमार नायक, उप-निरीक्षक एवं पबित्र कुमार पात्रा, हवलदार ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 116-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. श्री सत्यजीत कंडनकेल,
   उप निरीक्षक
2. निरंजन सारंगी,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.09.2013 को पुलिस अधीक्षक, बारागढ़ को पुलिस स्टेशनों, ब्लॉक कार्यालयों, मोबाइल टावरों, सीआरपीएफ कैम्पों आदि को निशाना बनाने के इरादे से पाइकमल पुलिस स्टेशन की सीमाओं के अंतर्गत गंधामरधन की पहाड़ियों में माओवादियों के एक समूह की निरंतर आवाजाही और उपस्थिति के बारे में खुफिया जानकारी मिली । तदनुसार, उन्हें पकड़ने और उनकी घृणित योजनाओं को विफल करने के लिए एक अभियान की योजना बनाई गई। दिनांक 04.09.2013 को रात्रि 09.00 बजे सहायक कमांडेंट जे. के. उपाध्याय

के नेतृत्व में सीआरपीएफ और डीवीएस (जिला स्वैच्छिक बल) को शामिल करके एक संयुक्त अभियान दल बनाया गया था। दल ने सभी मानक कार्रवाई प्रक्रियाओं का पालन करते हुए गंधामरधन पहाड़ियों के जंगलों में तलाशी आरंभ की। दिनांक 06.09.2013 को प्रात: लगभग 11.00 बजे अभियान दल ने जंगल क्षेत्र में हथियारों के साथ ओलिव ग्रीन यूनिफॉर्म में लगभग 30 से 35 व्यक्तियों को देखा। अभियान बल जब उनके करीब आने लगा, तो उन्होंने अभियान बल पर गोलीबारी आरंभ कर दी। अभियान बल ने उनकी गोलीबारी से बचने के लिए रणनीतिक पोजीशन ली, अपनी पहचान बताई और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। इसके बदले, नक्सलियों ने पुलिस दल को घेरने के इरादे से उपयुक्त पोजीशन से स्वचालित हथियारों का उपयोग करके पुलिस दल पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। दल के नेता, सहायक कमांडेंट जे. के. उपाध्याय ने अपना संतुलन खोए बिना अपने दल को दो समूहों में बांटने का रणनीतिक निर्णय लिया। एक छोटा हमला दल जिसमें वे स्वयं उप निरीक्षक सत्यजीत कंडनकेल, कांस्टेबल निरंजन सारंगी और कांस्टेबल चित्रसेन गोंड थे और उप निरीक्षक विवेकानंद मोहंता के नेतृत्व में मुख्य समूह था। तब उन्होंने मुख्य समूह से उनके नेतृत्व वाले हमला दल को कवर फायर उपलब्ध कराने के लिए कहा ताकि वे उनके नजदीक जा सके और नक्सलियों के क्षेत्र के लाभ को समाप्त कर सकें। वे उप निरीक्षक एस. कंडनकेल, कांस्टेबल निरंजन सारंगी ओर कांस्टेबल जी डी चित्रसेन गोंड के साथ नक्सलियों की ओर से निरंतर गोलीबारी में अपनी जान को जाखिम में डालकर लगभग 40 से 50 मीटर तक बायीं दिशा की ओर रेंगकर गए और रणनीतिक स्थान पर जगह बनाई तथा नक्सली समूह पर गोलीबारी आरंभ कर दी। उप निरीक्षक सत्यजीत ने नक्सलियों की ओर 05 राउन्ड यूबीजीएल चलाई जिससे नक्सलियों में आतंक फैल गया। उसके बाद सहायक कमांडेंट जे. के. उपाध्याय, उप निरीक्षक, कंडनकेल, कांस्टेबल निरंजन सारंगी और कांस्टेबल जी डी चित्रसेन गोंड ने रेंगकर और लगातार गोलीबारी करते हुए नक्सली समूह के और अधिक नजदीक आना आरंभ किया। उन तीनों के इस निडर कार्य से नक्सली अचम्भे में आ गए क्योंकि उन पर अप्रत्याशित रूप से अनेक स्थलों से गोलीबारी आरंभ हो गई। इससे नक्सलियों का मनोबल टूट गया और वे घायल होने लगे जिसने उन्हें घने जंगल और पहाड़ी क्षेत्र का सहारा लेकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। लगभग 20-25 मिनट तक दोनों ओर से गोलीबारी हुई। आधा घंटे की शांति के बाद टीम लीडर ने मुख्य समूह से उनके साथ शामिल होने और लंबी लाइन से तलाशी आरंभ करने के लिए कहा। तलाशी के दौरान उन्होंने 12 बोर की एक एसबीबीएल बन्दूक, 12 बोर के 07 जिन्दा कारतूस, 12 बोर के 02 खाली कारतूस, 13 सुपर डाइन विस्फोटक, 23 विशेष साधारण डेटोनेटर, तार के साथ डेटोनेटर, एक बंडल कोरडैक्स, एक टुकड़ा तार, लाल स्टार के साथ ओलिव ग्रीन कैप, बड़ी संख्या में माओवादी साहित्य और किट बैग के साथ-साथ ओलिव ग्रीन यूनिफार्म में एक पुरुष माओवादी कैडर का शव बरामद किया। ।

विश्वसनीय खुफिया जानकारी से पता चला कि इस गोलीबारी में घायल हुए दो और नक्सली कैडरों की बाद में मौत हो गई थी। इस कार्रवाई से न केवल नक्सली समूहों को जबरदस्त झटका लगा है बल्कि वे इस क्षेत्र में हिंसात्मक कार्रवाई करने की अपनी तत्काल योजनाओं में भी विफल हो गए।

1. श्री सत्यजीत कंडनकेल, पुलिस उप-निरीक्षक, डीवीएफ बारागढ़ का वीरतापूर्ण कार्य

उन्होंने इस अभियान में दल के नेता, सहायक कमांडेंट जे. के. उपाध्याय की सहायता की और इसमें अंतर्ग्रस्त जान के जोखिम को जानते हुए स्वेच्छा से हमला दल का हिस्सा बने। रणनीतिक स्थल से नक्सलियों पर हमला करने के लिए बायीं ओर से रेंगते समय वे नक्सलियों की लगातार गोलीबारी के सामने आ गए लेकिन यह उन्हें दल के नेता की सहायता करने से नहीं रोक सका। उन्होंने यूबीजीएस फायर किए जिसने नक्सली समूह के लिए एक झटके का काम किया और उनमें से अनेक को घायल किया।

2. श्री निरंजन सारंगी, कांस्टेबल, डी वी एफ बारागढ़ का वीरतापूर्ण कार्य

सम्पूर्ण अभियान के दौरान उन्होंने अभियान दल के लिए स्काउट के रूप में कार्य किया। उन्होंने सबसे पहले नक्सलियों को देखा और दल के लीडर को इसकी सूचना दी। उन्होंने इस अभियान में दल के लीडर सहायक कमांडेंट जे. के. उपाध्याय की मदद की और इसमें अंतर्ग्रस्त अपनी जान को जोखिम के बारे में जानते हुए भी स्वेच्छा से हमला दल का सदस्य बने। रणनीतिक स्थल से नक्सलियों पर हमला करने के लिए बायीं ओर से रेंगकर जाते समय वे नक्सलियों की लगातार गोलीबारी के सामने आ गए, लेकिन यह उन्हें अपने दल के सदस्यों की मदद करने से नहीं रोक सका। उन्होंने लगातार गोलीबारी की और नक्सली समूह के निकट रेंगकर गए और उन्हें क्षति पहुंचाई, जिससे अंतत: वे पीछे हटने पर मजबूर हो गए।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सत्यजीत कंडनकेल, उप निरीक्षक और निरंजन सारंगी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.09.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 117-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, ओडिशा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों का नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अखिलेश्वर सिंह
   पुलिस अधीक्षक
2. सत्य सुन्दर बेहरा
   हवलदार
3. शिव शंकर नायक
   कांस्टेबल
4. मनोज कुमार परिडा
   कांस्टेबल
5. पबित्र मोहन नायक
   कांस्टेबल
6. मोतिसिंह नायक
   कांस्टेबल
7. त्रिबिजय खारा
   कांस्टेबल
8. सनत कुमार पात्रा
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सिलाकोटा वन क्षेत्र में पड़ाव डाले हुए नक्सलियों के संबंध में खुफिया जानकारी पर कार्रवाई करते हुए मल्कानगिरि जिले के सिलाकोटा वन क्षेत्र में दिनांक 13.09.2013 को एक अभियान शुरू किया गया। श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि (एम के जी) ने 44 पुलिस कर्मियों वाले अभियान दल का नेतृत्व किया, जिसमें 16 एसओजी कमांडो और 27 डीवीएफ कमांडो भी शामिल थे। दिनांक 13.09.2013 को 2230 बजे भेजे जाने के बाद दल सामान्य रास्ते को छोड़कर लगातार कच्चे रास्ते से आगे बढ़ता रहा। अगले दिन सुबह 0515 बजे दल ने जंगल क्षेत्र में कुछ दूरी पर कुछ व्यक्तियों को देखा। दूरबीन और एनवीडी से ध्यानपूर्वक देखने से पता चला कि संभवत: यह नक्सली कैम्प है क्योंकि वहां सशस्त्र व्यक्ति थे और उनमें से कुछ को नक्सली यूनिफार्म में भी देखा गया। दो संतरी भी दिखाई पड़े जो कैंप की रक्षा कर रहे थे। इसके अलावा, गाडे हुए पोलीथीन के तीन टेंटों का भी पता चला। श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि स्थिति को भांपने के बाद घने पेड़-पौधों की आड़ लेकर चुपचाप दल को लेकर आगे बढ़े। दल कैंप से लगभग 75 मीटर पहले तक पहुंच गया। वहां पर 35-40 नक्सलियों के होने का अनुमान था। पुलिस अधीक्षक, मलकानगिरि के आदेश के अनुसार डीवीएफ और एसओजी के कुल सदस्यों को चार समूहों में बांटा गया, जिसमें एसओजी के क्रमश: 16 कमांडो (समूह-1), 9 (समूह-2), 9 (समूह-3) और 10 (9+1) (समूह-4) कमांडो शामिल थे। 16,9 और 9 कमांडो वाले समूहों को कट-ऑफ दल के रूप में कार्य करने के लिए तीन सामरिक स्थलों पर भेजा गया और पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के नेतृत्व में 9 कमांडो वाले समूह ने हमला दल के रूप में कार्य किया। उसके बाद संदिग्ध नक्सलियों को ऊंची आवाज में आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। उन्हें दोबारा समर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन इस बार नक्सलियों ने पुलिस दल को निशाना बनाकर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल सं. 3 कवर में था लेकिन नक्सलियों से बातचीत करने के लिए एक को ऊपर आना पड़ा। पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि सामने आए और उन्होंने हवलदार सत्य सुंदर बेहरा, कांस्टेबल शिव शंकर नायक, कांस्टेबल मनोज कुमार परिडा, कांस्टेबल मोती सिंह नायक, कांस्टेबल पबित्र मोहन नायक, कांस्टेबल सनत कुमार पात्रा और कांस्टेबल त्रिबिजय खारा के साथ हमला दल बनाया और कवर पोजीशन लेने के लिए 15 मीटर रेंगकर गए, यद्यपि उस दौरान नक्सलियों द्वारा इनमें से किसी को भी देखे जाने पर वह शहीद हो सकता था। लेकिन कवर पोजीशन से उग्रवादियों पर गोलीबारी करने से कोई फायदा नहीं हुआ, इसलिए पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि कांस्टेबल शिव शंकर नायक, कांस्टेबल पबित्र मोहन नायक, कांस्टेबल सनत कुमार पात्रा के साथ कुछ सेकंड के लिए बाहर आए और नक्सलियों पर हमला किया जिससे 2-3 नक्सलियों को घातक चोटें आईं। लेकिन अन्य उग्रवादी बल और नक्सली समूहों ने दो ग्रेनेड फेंकने के अलावा पुलिस

दल पर भारी गोलीबारी की। यद्यपि ग्रेनेड निशाने पर नहीं लगे फिर भी सात पुलिस कर्मियों को मामूली स्प्लिंटर चोटें आईं। उपयुक्त पोजीशन में होने के कारण नक्सलियों के सफल होने का हर संभव मौका था और इसके अतिरिक्त वे संख्या में हमला दल से अधिक थे। इस समय कोई भी निष्क्रियता पुलिस बल के लिए घातक साबित हो सकती थी। इसलिए पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने हमला दल को दो भागों में बांटा। वे कांस्टेबल शिव शंकर नायक, कांस्टेबल पबित्र मोहन नायक और कांस्टेबल सनत कुमार पात्रा के साथ दायीं ओर 10 मीटर गए। इसके अलावा, श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि नक्सलियों पर हमला करने के लिए सामने आए लेकिन सामने दो नक्सलियों को देखा जिन्होंने उन पर गोलीबारी की। वे तुरंत एक पेड़ के पीछे सुरक्षित पोजीशन लेने के लिए अपने दायीं ओर कूदे जबकि अन्य तीन कमांडों पीछे आ गए। लगभग एक मिनट तक पुलिस अधीक्षक, मल्लकानगिरि और दो अन्य नक्सलियों के बीच गोलीबारी जारी रही। फिर वहां विराम था। मौके का फायदा उठाकर वे आधे उठकर सामने आए और इससे पहले कि नक्सली उन पर गोलीबारी करते, उन्होंने सेकंडों में ही दोनों नक्सलियों को मार गिराया। उसी समय उनके हमला उप-दल के अन्य तीन कार्मिक उनके पास आ गए और उसके बाद उन्होंने उग्रवादियों पर गोलीबारी आरंभ कर दी, यद्यपि ऐसा करते समय वे नक्सलियों के सामने आ गए थे। इस कार्रवाई से नक्सली फिर हताहत हुए। इसी दौरान हवलदार एस. एस. सुंदर बेहरा, कांस्टेबल मनोज कुमार परिडा, कांस्टेबल मोतीसिंह नायक, और कांस्टेबल त्रिबिजय खारा वाला अन्य हमला उप-समूह भी सामने आ गया और उग्रवादियों पर गोलियां बरसाईं जिससे उग्रवादियों को घातक गोलियां लगीं। यद्यपि नक्सलियों ने भी जवाबी हमला किया लेकिन सौभाग्यवश दोनों हमला उप-समूह कर्मी सुरक्षित रहे। इस कार्रवाई से उग्रवादी परेशान हो गए और उन्होंने दायीं ओर से बचकर निकलने का प्रयास किया लेकिन पुलिस दल संख्या दो के सामने आ गए। यद्यपि उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी की लेकिन पुलिस दल सं. दो ने उचित जवाब दिया और परिणामस्वरूप नक्सली हक्के-बक्के रह गए। उनके पास पीछे हटने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था। अब तक दोनों हमला उप-समूह इकट्ठे हो गए थे और उन्होंने नक्सलियों पर भारी गोलीबारी की। उग्रवादी परेशान थे और उन्होंने बचकर निकलने के लिए इधर-उधर भागना आरंभ कर दिया। पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के निर्देशन के तहत हमला समूह ने बचकर भाग रहे उग्रवादियों का पीछा करना आरंभ किया, यद्यपि उन्हें भी दूसरी ओर से गोलीबारी का सामना करना पड़ा। हताहत होने की सभी संभावनाएं थीं। तथापि बहादुर पुलिस दल कर्मियों ने न केवल नक्सलियों को मार गिराया बल्कि अपनी जान भी बचाई। इस प्रक्रिया में कुछ नक्सली घने पेड़-पौधों का सहारा लेकर बचकर निकलने में सफल रहे। दोनों ओर से 30 मिनट तक गोलीबारी हुई। कुछ देर इंतजार करने के पश्चात पुलिस दल ने क्षेत्र की तलाशी ली और उनके हथियारों के साथ नक्सलियों के 13 शव मिले जिसमें एक महिला नक्सली भी शामिल थी। अभियान के बाद जिला अस्पताल, मल्कानगिरि में सभी सात घायल कर्मियों की मेडीकल जांच की गई। डॉक्टर ने सभी की चोटों को सामान्य पाया और उन्हें प्रथम चिकित्सा उपचार देकर जाने दिया। इस मुठभेड़ के दोरान भारी मात्रा में हथियार एवं गोलाबारूद बरामद किया गया।

श्री अखिलेश्वर सिंह,, पुलिस अधीक्षक की व्यक्तिगत भूमिका

उन्होनें नक्सलियों की इस मुठभेड में मुख्य भूमिका निभाई है, उन्होंने सूचना विकसित की और युद्ध भूमि पर पुलिस दल का नेतृत्व भी किया। जब कभी आवश्यकता हुई उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना सामने आकर नेतृत्व किया जो दूसरों के लिए एक उदाहरण है। इस अभियान में भारी सफलता, उनके पूर्ण कमांड और नियंत्रण की वजह से प्राप्त हुई है। उन्होंने अभियान में महत्वपूर्ण तात्कालिक निर्णय लिए और जोखिम भरे कार्यों के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया जिससे दूसरों को भी प्रेरणा मिली। अभियान में एक समय नक्सली पुलिस हमला समूह को रौंद सकते थे। उस समय, कोई भी गलत निर्णय पुलिस दल के लिए घातक साबित हो सकता था। तथापि, अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि उस समय सामने आए और हमला दल को गोलीबारी आरंभ करने का आदेश दिया और अकेले ही 02 नक्सलियों को मार गिराया, यद्यपि इस प्रक्रिया में वे शहीद हो सकते थे। इसके बाद भी उन्होंने तीन कांस्टेबल के साथ सामने आकर अपनी जान को दांव पर लगाकर नक्सलियों पर धावा बोला। इस अभियान के दौरान उन्होंने कई बार अपनी जान को जोखिम में डाला। उन्होंने अपने दल के साथ बचकर भाग रहे नक्सलियों का पीछा किया और उन्हें मार गिराया जबकि उन्हें उग्रवादियों की गोली लग सकती थी। उनका प्रयास व्यर्थ नहीं गया और पुलिस 13 नक्सलियों का मार गिराने में सफल रही, जिसने ओडिशा पुलिस में एक इतिहास रच दिया। यह अभियान आने वाले वर्षों में मील का पत्थर साबित होगा और जिस प्रकार श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने अपनी जान को निरंतर जोखिम होने के बावजूद इस अभियान में सफलता प्राप्त की, वह अनुकरणीय है।

श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि का सुस्पष्ट विशिष्ट वीरतापूर्ण कार्य इस अभियान में भारी सफलता का एक मुख्य कारक है।

कांस्टेबल शिव शंकर नायक, पबित्र मोहन नायक और सनत कुमार पात्रा की व्यक्तिगत भूमिका

यद्यपि वे जोखिम से अवगत थे, फिर भी स्वेच्छा से हमला दल का हिस्सा बने। ये वे व्यक्ति थे, जिन्होंने पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के साथ सबसे पहले सामने जाकर नक्सलियों पर गोलियां बरसाईं लेकिन इस कार्रवाई ने उन्हें नक्सलियों की गोलीबारी के लिए असुरक्षित भी बना दिया था। यद्यपि उन्हें इस अभियान में सामान्य चोटें आईं तथापि इससे वे विचलित नहीं हुए। अभियान को

जारी रखते हुए उन्होंने सामने आकर पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि के साथ उग्रवादियों पर फिर गोलीबारी की। यद्यपि इस कार्रवाई में नक्सली हताहत हुए लेकिन यह सब उनकी जान के जोखिम पर हुआ। इसके अलावा, उन्होंने अन्य साथियों के साथ न केवल नक्सलियों का पीछा किया बल्कि उग्रवादियों को भी मार गिराया। उग्रवादियों का पीछा करते समय दूसरी ओर से गोली लगने की हर संभावना थी लेकिन फिर भी उन्होंने सफलतापूर्वक कार्रवाई को अंजाम दिया।

हवलदार सत्य सुन्दर बेहरा की व्यक्तिगत भूमिका

उन्होंने काफी अच्छी तरह अभियान लीडर की सहायता की और स्वेच्छा से हमला समूह का हिस्सा बने, जबकि उन्हें पता था कि इसमें उनकी जान दांव पर होगी। गोलीबारी के दौरान हमला समूह के साथ रेंगते समय, सामने आने पर वे शहीद हो सकते थे। अभियान के दौरान यद्यपि उन्हें मामूली स्प्लिंटर चोटें आईं, लेकिन फिर भी उन्होंने आदेशों का पालन किया। जब पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने अपने हमला उप-समूह के साथ नक्सलियों पर गोलीबारी की, तब वे भी सामने आए और दूसरी ओर से उग्रवादियों पर गोलीबारी करने के लिए अन्य हमला उप-समूह का नेतृत्व किया यद्यपि इस प्रक्रिया में उन्होंने अपनी जान को खतरे में डाल दिया था वे उस दल का भी हिस्सा थे जिसने गोलीबारी के बीच बचकर भाग रहे उग्रवादियों का पीछा किया था। यह वास्तव में एक वीरतापूर्ण कार्य था क्योंकि नक्सलियों द्वारा चलाई गई गोलियां उन्हें अपना निशाना बना सकती थीं, लेकिन उन्होंने बेहिसक आदेश का पालन किया और पुलिस दल नक्सलियों को हताहत करने में सफल रहा।

कांस्टेबल मनोज कुमार परिडा, कांस्टेबल मोतिसिंह नायक और कांस्टेबल त्रिबिजय खारा की व्यक्तिगत भूमिका

वे भी हमला समूह के सदस्य थे। हमले के साथ रेंगते समय यदि उग्रवादियों को उनका पता चल जाता तो वे शहीद हो सकते थे। यद्यपि उन्हें भी कार्रवाई के दौरान मामूली स्प्लिंटर चोटें आई लेकिन फिर भी उन्होंने आदेश का पालन किया। जब पुलिस अधीक्षक, मल्कानगिरि ने अपने हमला उप-समूह के साथ नक्सलियों पर गोलीबारी की तो हवलदार एस.एस. बेहरा की कमांड में उन्होंने भी दूसरी ओर से नक्सलियों पर हमला किया। ऐसा करते समय उन्हें सामने आना पड़ा जिससे वे अत्यधिक असुरक्षित हो गए, और वे सुभेद्य लक्ष्य बन गए। अन्य लोगों के साथ उन्होंने भी पीछे हट रही नक्सलियों का पीछा किया और उन्हें मार भी गिराया, यद्यपि ऐसा उन्होंने अपनी जान की कीमत पर किया। लेकिन दांव काम आया क्योंकि इस अभियान में भारी सफलता मिली।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अखिलेश्वर सिंह, पुलिस अधीक्षक, सत्य सुंदर बेहरा, हवलदार, शिव शंकर नायक, कांस्टेबल, मनोज कुमार परिडा, कांस्टेबल, पबित्र मोहन नायक कांस्टेबल, मोतिसिंह नायक, कांस्टेबल, त्रिबिजय खारा, कांस्टेबल और सनत कुमार पात्रा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.09.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 118-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, तमिलनाडु पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एस. लक्ष्मणन
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री एस. लक्ष्मणन और श्री पी. रवीन्द्रन, पुलिस निरीक्षक, ऑपरेशन, विशेष प्रभाग, एसबी सीआईडी, चेन्नई, तमिलनाडु को खुखांर मुस्लिम उग्रवादियों फकरुद्दीन उर्फ फकरुद्दीन अली अहमद, बिलाल मलिक, पन्ना इस्माइल (जिहादी विचारक) का पता लगाने और उन्हें पकड़ने का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था, जो एल. के. आडवानी की रथ यात्रा के मार्ग में पाइप बम लगाने, एस. वेल्लाइप्पन, हिंदू मुन्नानी स्टेट सेक्रेटरी, आडिटर वी. रमेश, भाजपा राज्य महासचिव की हत्या और बेंगलुरू बम विस्फोट सहित अनेक मामलों में वांछित थे। कुशलता के साथ समय पर खुफिया जानकारी और अपनी जान को जोखिम मे डालकर उक्त दोनों पुलिस निरीक्षकों द्वारा की गई समन्वित कार्रवाई के परिणामस्वरूप दिनांक 04.10.2013 को चेन्नई, तमिलनाडु में फकरुद्दीन अली अहमद की गिरफ्तारी हुई।

फकरुद्दीन अली अहमद वार्षिक "तिरूपति मंदिर तिरुकुडाई" शोभायात्रा के दौरान चेन्नई में एक हिंदू संगठन के नेता की हत्या करने के लिए टोह (रेकी) लगा रहा था। उसकी गिरफ्तारी के दौरान, दोनों निरीक्षक फकरुद्दीन अली अहमद द्वारा प्रस्तुत सख्त शारीरिक विरोध को नियंत्रित करने में सफल रहे। फकरुद्दीन अली अहमद की समय पर गिरफ्तारी से राज्य में एक बड़ा साम्प्रदायिक आसदभाव होने से रोका जा सका। फकरुद्दीन अली अहमद से कठोर पूछताछ के कारण दल उसके सहयोगी बिलाल मलिक और पन्ना इस्माइल के ठिकानों के बारे में सूचना एकत्र कर सका।

श्री एस. लक्ष्मणन, पुलिस निरीक्षक सहित दल बिलाल मलिक और पन्ना इस्माइल को पकड़ने के लिए दिनांक 05.10.2013 को तड़के पुत्तूर, आंध्र प्रदेश राज्य में उनके छिपने के ठिकाने पर पहुंचा। उन्होंने उनके छिपने के ठिकाने की पहचान की और मुस्लिम स्ट्रीट, पुत्तूर में उनके मकान को घेर लिया। जब निरीक्षक श्री एस. लक्ष्मणन ने दूधवाला बताकर दरवाजा खटखटाया, तो बिलाल मलिक ने दरवाजा खोला। जब श्री एस. लक्ष्मणन ने उसे पकड़ने का प्रयास किया, तो बिलाल मलिक और पन्ना इस्माइल ने उन्हें अपने घर के अंदर खींच लिया, दरवाजा बंद कर दिया और उन्हें मारने के इरादे से चाकू और हंसिए से श्री एस. लक्ष्मणन पर हमला कर दिया। लक्ष्मणन ने उनके हमले का सामना किया। इसी बीच अन्य पुलिस कर्मियों ने श्री एस. लक्ष्मणन को बचाने और आरोपियों को पकड़ने का साहसिक प्रयास किया। कार्तिकेन, उप पुलिस अधीक्षक, एसआईडी, सीबीसीआईडी ने श्री एस. लक्ष्मणन को बचाने के लिए अपने सरकारी हथियार से पन्ना इस्माइल पर एक गोली चलाई, घायल पन्ना इस्माइल और बिलाल मलिक ने सायना बानू, बिलाल की पत्नी और उनके तीन बच्चों के साथ घर के दूसरे कमरे में शरण ली। श्री एस. लक्ष्मणन को पास के अस्पताल ले जाया गया और बाद में चेन्नई स्थानांतरित कर दिया गया, जहां 34 दिनों तक उनका उपचार हुआ। उन्हें सिर, चेहरे और पसलियों में अनेक चोटें आई थीं। श्री एस. लक्ष्मणन, पुलिस निरीक्षक का वीरतापूर्ण और अनुकरणीय साहसिक कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। बिलाल मलिक और पन्ना इस्माइल ने दिनांक 05.10.2013 को सांय 4.45 पर पुलिस के सामने आत्म समर्पण किया।

बरामदगी:

विस्फोटक सामग्री-7 कि.ग्रा., 125 ग्राम के 81 पैकेटों में घोल विस्फोटक, विस्फोटकों के साथ पाइप बम-4, रिवाल्वर-01, विस्फोटक के बिना पाइप बम-2, देशी बम-1, इलेक्ट्रिकल डेटोनेटर-106, 9 बोल्ट की बैटरियां-7।

इस मुठभेड़ में श्री एस. लक्ष्मणन, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.10.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 119-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, उत्तराखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुनीत नेगी, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 14.08.2013 को रात में लगभग 2200 बजे सौम्या गौतम नाम की एक महिला ने चेतक मोटर साइकिल मोबाइल-14 को सूचना दी कि संतोष नर्सिंग होम में डॉ. हीना खरे के आवास पर किसी उपद्रव की आशंका है। इस सूचना पर कांस्टेबल सुनीत नेगी और कांस्टेबल विशाल कन्नौजिया घटना स्थल पर गए। बदमाश, जो संख्या में 6 थे, सतर्क हो गए और नगद तथा जेबरात के साथ नर्सिंग होम के पिछले दरवाजे से भाग गए।

इसी बीच डॉ. हीना खरे ने दरवाजा खोला और पुलिस कर्मी को डकैती और बदमाशों के भागने की सूचना दी। कांस्टेबल सुनीत नेगी तुरंत बचकर भागते रहे बदमाशों की ओर दौड़े और उनके पीछे कांस्टेबल विशाल कन्नौजिया भी दौड़े। बदमाशों का पीछा करते हुए कांस्टेबल सुनीत नेगी ने पास के खेत से 6 बदमाशों में से एक बदमाश को पकड़ लिया। यह देखकर, बाकी बदमाशों ने पुलिस दल पर गोलीबारी की। खतरा होने के बाबजूद कांस्टेबल सुनीत नेगी ने विशिष्ट साहस दिखाते हुए एक बदमाश से पिस्तौल छीन ली। इसी बीच,

जब संघर्ष जारी था, जब अन्य बदमाशों ने कांस्टेबल सुनीत नेगी पर गोली चला दी जिससे वे घायल हो गए। बदले में कांस्टेबल सुनीत नेगी ने अपनी सर्विस पिस्तौल से गोली चलाई और दूसरे कांस्टेबल ने अन्य बदमाशों से कट्टा भी छीन लिया। लेकिन अन्य बदमाशों ने कांस्टेबल सुनीत नेगी से अपने आदमियों को बचाने के लिए नजदीक से उनकी छाती पर गोली चलाई। जैसे ही अन्य पुलिस कर्मी घटना स्थल पर पहुंचे, बदमाश अंधेरे का लाभ उठाकर भाग गए। कांस्टेबल सुनीत नेगी को अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत लाया गया घोषित कर दिया गया।

कांस्टेबल सुनीत नेगी ने स्पष्ट रूप से अपनी जान को जोखिम में डाला और संपूर्ण मुठभेड़ के दौरान अपने कर्तव्य के प्रति अनुकरणीय निष्ठा का प्रदर्शन किया। कांस्टेबल सुनित नेगी के वीरतापूर्ण कार्य की मीडिया और लागों ने काफी अधिक सराहना की। उन्होंने वीरता और कर्तव्य के प्रति निष्ठा का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

की गई बरामदगी:

1. चार जिंदा कारतूस और 01 खोखे के साथ .32 बोर की एक देशी पिस्तौल।
2. देशी कट्टा-01
3. नगद -19,500/- रु.
4. लगभग 3,000/- रु. के सिक्के
5. जेवरात

इस मुठभेड़ में (स्वर्गीय) श्री सुनीत नेगी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 120-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, उत्तराखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री विवेक कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.08.2013 को मकान सं. ए-657 जीडी, कॉलोनी मयूर विहार, दिल्ली में झगड़े के संबंध में एक सूचना प्राप्त हुई थी, जिस पर पुलिस घटना स्थल पर गई और पाया कि वहां एक महिला श्रीमती मोही की हत्या कर दी गई है। घर में लूटपाट और तोड़फोड़ की गई थी। नौकरानी से पूछताछ में पता चला कि दो लोगों ने श्रीमती मोही की हत्या की है और उनके बेटे इशु (3 वर्ष) का अपहरण कर लिया गया है तथा बच्चे को सुरक्षित छोड़ने के लिए 50 लाख रु. की मांग की है।

पुलिस ने निगरानी उपकरण की मदद से हरिद्वार में दोषियों का पता लगाया। दिल्ली पुलिस दल ने एसओजी हरिद्वार के साथ बड़ा तलाशी अभियान आरंभ किया। दिनांक 26.08.2013 को शाम के समय उप निरीक्षक, अरूण सिन्धु (दिल्ली पुलिस) और कांस्टेबल विवेक कुमार (एसओजी हरिद्वार) ने नदी के किनारे बच्चे के साथ तीन लोगों को देखा। अपहरणकर्ताओं ने पुलिस दल को देखकर पुलिस दल पर चाकुओं से हमला किया जिसमें उप निरीक्षक सिंधु घायल हो गए। इस समय कांस्टेबल विवेक कुमार ने 3 साल के बच्चे की जान बचाई और विशिष्ट साहस का प्रदर्शन करते हुए दोषियों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन एक अपहरणकर्ता ने उन्हें मारने के इरादे से कांस्टेबल विवेक कुमार के पेट पर चाकू से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद कांस्टेबल विवेक कुमार दूसरे आरोपी की ओर दौंड़े और अपनी जान को खतरे में डालकर गंगा नदी में कूद गए और बाद में इशु को अपहरणकर्ताओं से सुरक्षित बचा लिया गया। तीसरा ओरापी घटना स्थल से भाग गया। कांस्टेबल विवेक कुमार के वीरतापूर्ण कार्य ने निर्दोष बच्चे को बचाया।

कांस्टेबल विवेक कुमार ने स्पष्ट रूप से अपनी जान को जोखिम में डाला और सम्पूर्ण अभियान के दौरान अपने कर्तव्य के प्रति अनुकरणीय निष्ठा का प्रदर्शन किया। कांस्टेबल विवेक कुमार की वीरतापूर्ण कार्रवाई की विभिन्न राज्यों के पुलिस के उच्च अधिकारियों और मीडिया के साथ-साथ बड़ी संख्या में लोगों ने सराहना की। उन्होंने वीरता और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा का एक उदाहरण स्थापित किया है।

बरामदगी:

1. 10 मोबाइल फोन
2. जेवरात
3. तेज धार वाले हथियार
4. इंजेक्शन सिरिंज, क्लोरोफार्म

इस एक्शन में श्री विवेक कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 121-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अशोक कुमार सिंह,
   निरीक्षक
2. सुनील कुमार त्यागी,
   निरीक्षक
3. महेन्द्र प्रताप सिंह,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पिछले कई दिनों से अलीगढ़ जिले में लगातार सनसनीखेज हत्या के कारण उप पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ के नेतृत्व में अलीगढ़ में पहले से ही एक एसटीएफ टीम कार्य कर रही थी। इसी बीच सिविल लाइन क्षेत्र से नामी ग्रामी डॉ. मन्नान वासनवाला का अपहरण हो गया। उनके अपहरण से अलीगढ़ में सनसनी फैल गयी। उच्च अधिकारियों के आदेश के अनुसार यह मामला एसटीएफ और अलीगढ़ पुलिस को सौंप दिया गया था। एसटीएफ स्टाफ के साथ उप पुलिस अधीक्षक और निरीक्षक श्री सुनील कुमार त्यागी के नेतृत्व में एक दल का गठन किया गया था और दूसरे दल का गठन स्थानीय पुलिस के साथ श्री अशोक कुमार सिंह, निरीक्षक, एसओजी के नेतृत्व में किया गया था।

दिनांक 1.07.2006 को मुखबिर से सूचना मिली कि अपहृत डॉ. मन्नान को बदमाशों ने कस्बा अतरोली के मोहल्ला ब्रहममपुरी में स्थित शमशाद के घर में रखा है और वे एक करोड़ रु. की फिरौती लेने का प्रयास कर रहे हैं। इस सूचना को सच मानकर निरीक्षक सुनील कुमार त्यागी और निरीक्षक अशोक कुमार सिंह सभी सदस्यों और मुखबिर के साथ कस्बा अतरोली पहुंचे। मुखबिर रात्रि लगभग 9.30 बजे शमशाद के चौक से आया और बताया कि यह वही घर है जहां डॉ. मन्नन को छिपाकर रखा गया है और यह कहकर मुखबिर वहां से चला गया। दोनों पुलिस दलों ने उसी वक्त शमशाद के घर पर धावा बोल दिया। घर की छत पर बैठे दो लोगों ने पुलिस दलों पर गोलियां चलाई और छत से कूद गए तथा पुलिस दल पर गोलीबारी करते हुए मोटरसाइकिल पर भाग गए। उसी समय निरीक्षक त्यागी ने

निरीक्षक राजेश द्विवेदी और अन्य पुलिस बल से डॉ. मन्नान का पता लगाने के लिए कहा। मोटरसाइकिल पर बैठा व्यक्ति लगातार पुलिस दल पर गोलीबारी कर रहा था, लेकिन सभी पुलिस कर्मी लगातार बदमाशों का पीछा कर रहे थे। दोनों बदमाशों ने मंदिर वाली गली के पास वाली गली, जो रामघाट रोड की ओर जाती है में अपनी मोटरसाइकिल गिरा दी और दोनों बदमाश गली के पास वाले गढ्ढों में छिप गए और पुलिस कर्मियों पर गोलियां चलाईं। पुलिस कर्मियों ने देखा कि वे सभी मारे जाएंगे, तो उन्होंने वाहन छोड़ दिया और गली तथा वाहन के निकट स्थित गढ्ढों में छिप गए। निरीक्षक त्यागी और निरीक्षक अशोक कुमार सिंह चिल्लाए और उन्हें अपनी पहचान बताई और उन्हें पुलिस बल के सामने आत्म समर्पण करने की चेतावनी दी, लेकिन दोनों बदमाशों ने उन्हें मारने के इरादे से दोबारा गोली चलाई। पुलिस दल ने जब महसूस किया कि पुलिस दल बदमाशों की गोली से मारा जा सकता है, तो निरीक्षक त्यागी और निरीक्षक अशोक ने कांस्टेबल महेन्द्र प्रताप सिंह और बल के साथ अपने बचाव में जवाबी गोलीबारी की। इस भयंकर और आमने-सामने की मुठभेड़ में एक बदमाश चिल्लाया कि मुझे गोली लग गई है और दूसरे बदमाश को घटना स्थल से भाग जाने को कहा। उप निरीक्षक विनोद कुमार और कमांडो शिव कुमार ने उनका पीछा किया। रात्रि के लगभग 10 बजे थे जब पुलिस कर्मियों को गोलीबारी की आवाज सुनाई नहीं दी, तब वे उस स्थान पर पहुंचे जहां से बदमाश गोलीबारी कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक बदमाश मृत पड़ा है और बदमाश के दायीं हाथ की ओर एक पिस्तौल भी पड़ी थी।

बरामदगी:-

मैगजीन के साथ एक पिस्तौल और .32 बोर का एक जिन्दा कारतूस।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अशोक कुमार सिंह, निरीक्षक, सुनील कुमार त्यागी, निरीक्षक और श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.07.2006 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 122-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

डॉ. जी.के. गोस्वामी,
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 23.10.2002 को डॉ. जी. के. गोस्वामी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, इटावा को सूचना मिली कि अपराधियों ने न्यायालय परिसर में एक विचाराधीन आरोपी की हत्या कर दी है और पुलिस कर्मियों सहित अनेक लोगों को घायल कर दिया है। डा. जी. के. गोस्वामी ने अपने अधीनस्थ अधिकारियों को नाकाबंदी करने और वाहनों की तलाशी आरंभ करने के अनुदेश दिए और इन खूंखार अपराधियों को पकड़ने के लिए स्वयं गए। काली वाहन मंदिर के निकट डॉ. जी. के. गोस्वामी के नेतृत्व में पुलिस दल ने संदिग्ध वाहन को रोकने का प्रयास किया लेकिन अपराधियों ने पुलिस दल पर गोलीबारी आरंभ कर दी और घने बीहड (चंबल की तंगघाटी) में भागने का प्रयास किया। चूंकि घटना स्थल पर लोग एकत्र हो गए थे, इसलिए पुलिस द्वारा गोलीबारी करने से निर्दोष लोग हताहत हो सकते थे। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में, डॉ. जी. के. गोस्वामी ने उन्हें चुनौती दी और अनुकरणीय नेतृत्व एवं साहस का प्रदर्शन करते हुए तथा अपनी जान की परवाह किए बिना अपराधियों के पास पिस्तौल/रिवाल्वर के साथ पांच अपराधियों को पकड़ने में सफल रहे। पूछताछ में पता चला कि यह एक अनुबंधित हत्या (कान्ट्रैक्ट किलिंग) थी और वे अंतर्राष्ट्रीय रूप से वांछित और कुख्यात छोटा राजन गैंग के सक्रिय सदस्य थे। उनमें से कताब राजन वर्ष 1989 से मुम्बई पुलिस द्वारा वांछित था और वर्ष 1996 से भगोड़ा घोषित कर दिया गया था। इस प्रकार डॉ. जी. के. गोस्वामी के नेतृत्व में पुलिस दल ने इस विशिष्ट सफलतापूर्ण अभियान में अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

बरामदगी:

1. मैगजीन के साथ एक पिस्तौल, .455 बोर के 02 जिन्दा कारतूस।

2. मैगजीन के साथ एक पिस्तौल, .32 बोर के 08 जिन्दा कारतूस।

3. एक रिवाल्वर, 38 बोर के 06 जिन्दा कारतूस।

4. 32 बोर की फैक्ट्री निर्मित एक पिस्तौल।

5. 05 खाली खोखे।

इस मुठभेड़ में डॉ. जी. के. गोस्वामी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.10.2002 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 123-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आलोक रजौरिया,
अपर पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.11.2011 को जामबनी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत खुशीबनी जंगल क्षेत्र के आस-पास सीपीआई (माओवादी) के शीर्ष पोलित ब्यूरो सदस्य और उसके गुरिल्ला दल की आवाजाही की सूचना मिलने पर श्री आलोक रजौरिया, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) ने श्री प्रवीण कुमार त्रिपाठी, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, मिदनापुर, झाड़ग्राम के साथ स्रोतों का कुशलतापूर्वक उपयोग करके और विभिन्न प्रकार सूचनाओं को सम्मिलित करके उनके छिपने के ठिकानों की टोह ली। टोह के दौरान, अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर उन्होंने भारी बारुदी सुरंगों वाले जंगल क्षेत्र को पार किया जो पूरी तरह से सशस्त्र माओवादी समूहों के अधिकार में था।

क्षेत्र की टोह लेने के बाद, विनीत कुमार गोयल, डीआईजी, मिदनापुर रेंज के नेतृत्व में अभियान की योजना बनाने में उन्होंने अग्रणी भूमिका निभाई। योजना बनाने के बाद, विनीत कुमार गोयल, आईपीएस ने संयुक्त बलों को योजना की संक्षिप्त जानकारी दी।

दलों को उनके संबंधित स्थानों पर छोड़ने के बाद लगभग 16.30 बजे आलोक रजौरिया, के नेतृत्व में जब हमला दल लक्षित छिपने के ठिकाने के पास जा रहा था, तो 12-15 सशस्त्र कैडरों ने अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी और ग्रेनेड फेंके। इस पर आलोक रजोरिया, आईपीएस और उनके हमला दल के सदस्यों – डीएपी झाड़ग्राम के कांस्टेबल तपस घोष, 207 कोबरा बटालियन के सहायक कमांडेंट नागेन्द्र सिंह, सहायक कमांडेंट बिनोज पी. जोसफ, कांस्टेबल/जीडी एस. श्रीनु, कांस्टेबल/जीडी एस. मथुबेला, कांस्टेबल/जीडी बिरेन्द्र कुमार सिंह, कांस्टेबल/जीडी दीपक कुमार ने असाधारण साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपनी जान को जोखिम में डालकर और गोली चलाने तथा आगे बढ़ने की रणनीत को अपनाते हुए आगे बढ़े और सशस्त्र कैडरों द्वारा बरसाई गई गोलियों और ग्रेनेड स्पिंलन्टरों के बीच गोलीबारी की। आलोक रजौरिया, ने असाधारण वीरता और नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए, गोलीबारी के अलावा, इस सच्चाई के बावजूद कि माओवादी भारी गोलीबारी कर रहे हैं, पुलिस की ओर से किसी के हताहत न होने के इरादे से आगे बढ़ने में अपने दल की गतिविधि को समन्वित करना जारी रखा। लगभग आधा घंटे तक गोलीबारी जारी रही। गोलीबारी और ग्रेनेडों के विस्फोटों के दौरान नागेन्द्र सिंह का दायां हाथ स्पिंलटर से घायल हो गया।

आगे बढ़ते सैन्य दलों को रोकने में नाकामयाब माओवादी घने पेड़-पौधों और अंधेरे का फायदा उठाकर क्षेत्र से भाग गए। आधा घंटे की गोलीबारी के बाद क्षेत्र की तलाशी के दौरान, हाथ में एके-47 के साथ एक शव जमीन पर पड़ा हुआ मिला (बाद में जिसकी पहचान किशन जी, सीपीआई (माओवदी) के शीर्ष पोलित ब्यूरो सदस्य के रुप में हुई)। आगे और तलाशी के दौरान, एक एकेएम राइफल, नगदी के साथ के बैग, माओवादी साहित्य, हार्ड डिस्क और अन्य सामग्री भी आस-पास से मिली।

सम्पूर्ण अभियान के दौरान खूंखार माओवादियों की भारी गोलीबारी और जान को संभावित खतरे के बावजूद आलोक रजौरिया ने अपने छोटे हमला दल के साथ उनको सौंपे गए कार्यों को करने में अनुकणीय साहस, निष्ठा, कौशल, अपनी कमांड वाले बल पर प्रभावी कमांड/नियंत्रण और सशस्त्र कैडरों तथा पुलिस दलों के बीच काफी कम दूरी के कारण जब मौत काफी करीब थी, तब ऐसी प्राणघातक परिस्थिति में पूर्ण धैर्य का प्रदर्शन किया। उन्होंने लगभग उत्कृष्टता के साथ अपने छोटे दल का नेतृत्व किया और इस प्रकार बहादुरी का उच्च मानदंड स्थापित किया। सूचना एकत्र करने, ठिकानों की टोह लेने, तथा योजना बनाने से लेकर इसके सफलतापूर्वक निष्पादन तक अभियान के हर स्तर पर उन्होंने आगे बढ़कर नेतृत्व किया और अनुकरणीय नेतृत्व, बहादुरी और सौंपे गए कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, धैर्य, कुशलता, दल निर्माण और इन सबसे अधिक प्राणघातक परिस्थितियों में निर्भीकता का प्रदर्शन करते हुए अपने कर्तव्य को अपने जीवन से भी पहले रखा।

बरामदगी:

1. शस्त्रागार सं. केटी-435182 के साथ एके-47 राइफल-01
2. स्थिर बट सं. एसएपी/8-31 वाली एके-47 राइफल, शस्त्रागार सं. बीई-445317, स्लिंग लगी हुई, चैम्बर में 7.62 एमएम के एक जिंदा कारतूस और मैगजीन में 7.62 एमएम का एक जिन्दा कारतूस भरा हुआ-01
3. काले रंग की अनेक पाकेट वाला चैन लगा हुआ छोटा रैक्सिन बैग (जिसमें हार्ड डिस्क, पेन ड्राइव और माओवादी साहित्य था) -01
4. मोटोरोला वायरलेस हैंड सेट-01
5. क्षतिग्रस्त स्थिति में हार्ड डिस्क स्टोर जेट 500 जीबी-01
6. क्षतिग्रस्त स्थिति में हार्ड डिस्क सीगेट 320 जीबी-01
7. टूटी हुई सीडी-01
8. पेंसिल टॉर्च लाइट (काले रंग की)-01
9. सैमसंग मोबाइल फोन (काला रंग)-01
10. नोकिया मोबाइल फोन (काला रंग)-01
11. प्लास्टिक पाकेट में यूएसबी कोर्ड-01
12. डाटा कार्ड-04
13. मोबाइल चिप्स-14
14. रिलायंस मोबाइल सिमकार्ड-01
15. बीएसएनएल मोबाइल सिम कार्ड-01
16. 4 जीबी डाटा ट्रैवेलर पेन ड्राइव-01
17. कार्ड रीडर जेमबोनिक-01
18. एक प्लास्टिक पाकेट जिसमें पुलओ, तेल की शीशी, कॉटन पीस थे -01
19. विभिन्न मूल्य वर्ग की 84535रु. की नगद
20. 7.62 एमएम के खाली कारतूस-02
21. कोर्ड के साथ नोवाक्स की हियरिंग एड मशीन-01
22. खून के धब्बों के साथ एबी-553446 बीयू नम्बर वाली सैमसंग मोबाइल बैटरी और रोजाना उपयोग में आने वाले बर्तन/सामग्री

इस मुठभेड़ में श्री आलोक रजौरिया, अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.11.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 124-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. गौरव गोडबोले, निरीक्षक (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
2. सुनील कुमार टी.पी., हेड कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 26 अगस्त, 2013 को 03 अधीनस्थ अधिकारियों और 15 अन्य रैंक वाला एक दल हथियार, गोला-बारुद, विस्फोटक और अन्य विविध भंडार ले जा रहे तीन वाहनों (5 टन-02 और टाटा 709-01) में टीएचक्यू बालीमेला से बटालियन मुख्यालय, गांधीनगर (गुजरात) के लिए रवाना हुआ।

दिनांक 27 अगस्त, 2013 को, सेक्टर टैक्टिकल हेडक्वार्टर, कोरापुर में रात्रि में रुकने के बाद निरीक्षक गौरव गोडबोले की कमान में दल एनएच-26 पर विशाखापटनम की ओर आगे बढ़ा। लगभग 0915 बजे, जब वाहन पोट्टांगी से आगे लगभग 6 किमी. पर एक पुलिया से गुजर रहे थे, तो आखिरी वाहन (5 टन) पर भयंकर विस्फोट हुआ। माओवादियों ने एक शक्तिशाली स्थानीय रुप से निर्मित विस्फोटक उपकरण (आईईडी) का विस्फोट किया था, जिसके बाद भारी गोलीबारी भी की। विस्फोट की तीव्रता इतनी अधिक थी कि वाहन 40 फीट तक हवा में उड़ गया। उसी समय 60-70 माओवादियों, जिन्होंने उपयुक्त योजना के साथ सुविचारित घात लगाकर हमला किया था, ने छोटी पहाड़ी से बीएसएफ दल पर भारी गोलीबारी की।

निरीक्षक गोडबोले, जो बीच के वाहन में सह-ड्राइवर सीट पर बैठे हुए थे, को एक गोली लगी, जो उनके शरीर के बाएं निचले भाग से निकल गई। गंभीर रुप से घायल होने के बावजूद, दृढ़ निश्चय और साहस का प्रदर्शन करते हुए निरीक्षक गौरव गोडबोले ने स्थिति संभाली और नक्सली गोलीबारी का जवाब दिया तथा साथ ही साथ वाहनों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का निर्देश दिया। तदनुसार, पहले और दूसरे वाहन को स्थल से 200 मीटर आगे ले जाया गया। तथापि, दूसरे वाहन की पोजीशन ऐसी थी कि माओवादियों द्वारा बरसाई जा रही गोलियां बाएं और पीछे की ओर से वाहन पर लग रही थी। सैन्य दल वाहन से बाहर कूद गया और निरीक्षक गौरव गोडबोले को नजदीकी अस्पताल में ले जाने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने ऐसी संकट की घड़ी में दल को छोड़ने से इंकार कर दिया। उन्होंने प्रथम उपचार (फर्स्ट एड) लेने से भी मना कर दिया क्योंकि नक्सली बीएसएफ पार्टी पर हमला करने के लिए पहाड़ी पर दोबारा इकट्ठा हो रहे थे और इस समय बिना समय गवांए नक्सली हमले का जबाव देने के लिए दल का नेतृत्व करना था। अपनी चोट की परवाह न करते हुए और नक्सलियों के तीव्र हमले के सामने निरीक्षक गौरव गोडबोले ने आखिरी वाहन के घायल कार्मिकों को निकालने के लिए दूसरे वाहन के दल को कवर फायर देने के लिए नजदीकी पहाड़ी में ऊपर की ओर पोजीशन लेने के लिए एक टीम तैनात की।

भारी गोलीबारी के बीच और अपनी स्वयं की जान की परवाह किए बिना, हेड कांस्टेबल सुनील कुमार टी.पी., जो कि बचाव दल में थे, अपनी व्यक्तिगत जान की परवाह किए बिना सड़क के एक ओर पड़े वाहन के मलबे की ओर गए। उन्होंने देखा कि वाहन में बैठे बीएसएफ कर्मी चारों तरफ पड़े हुए हैं। नक्सली वाहन पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे। हेड कांस्टेबल सुनील कुमार टी.पी. ने गोलीबारी करके नक्सलियों को उलझाया और वाहन के मलबे के निकट पहुंचे और देखा कि दो जवान गंभीर रुप से घायल हैं और वाहन के मलबे के नीचे फंसे हुए हैं। उन्होंने मलबे से बाहर निकलने में उनकी मदद की और नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बावजूद उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले गए।

इसी बीच, भारी गोलीबारी करते हुए नक्सलियों के एक समूह ने हथियारों और गोला-बारुद को लूटने तथा घायल जवानों को मारने के इरादे से क्षतिग्रस्त वाहन की ओर बढ़ने का प्रयास किया। निरीक्षक गोडबोले अपनी टुकड़ी को लडाई जारी रखने और गोलीबारी

करके नक्सलियों पर दबाव बनाने के लिए प्रेरित करते रहे। उनके अनुकरणीय साहस और विशिष्ट गोलीबारी अनुशासन का परिणाम अच्छा रहा और अंतत: नक्सली अपनी जान बचाने के लिए वहां से भाग गए।

इस अभियान में बीएसएफ दल ने संख्या में अधिक खूंखार नक्सली कैडरों के सुविचारित रुप से घात लगाकर किए गए हमले को विफल करके अनुकरणीय व्यावसायिकता, धैर्य और बहादुरी का प्रदर्शन किया। निरीक्षक गौरव गोडबोले और हेड कांस्टेबल सुनील कुमार टी.पी. ने उक्त मुठभेड़ में निडर साहस, मित्रता की भावना और नि:स्वार्थ उत्साह का प्रदर्शन किया और इस प्रकार हथियारों और गोलाबारुद को लूटे जाने से बचाने के साथ-साथ घायल कर्मियों की जान भी बचाई।

बरामदगी:

कोरडेक्स (लाल रंग-लगभग 23 फीट, डेटोनेटर-01 और जिलेटिन स्टिक-01)।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गौरव गोडबोले, निरीक्षक और सुनील कुमार टी.पी., हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 125-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मोहम्मद साजिद खान,
   उप कमांडेंट
2. नेत्र प्रसाद,
   कांस्टेबल
3. हाजी मलंग,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

127 बटालियन, बीएसएफ पखांजुरे (छत्तीसगढ़) में तैनात है, जोकि देश का एक अति संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। बटालियन की जिम्मेदारी का क्षेत्र घने जंगलों वाला पहाड़ी क्षेत्र है। सामान्य क्षेत्र में नाला और जल-निकाय हैं, जो इसे लहरदार क्षेत्र को जोखिम भरा और कठिन बना देता है। यह नक्सलियों का पुराना गढ़ है। जनजातियों की अधिकता होने के कारण, नक्सलियों को स्थानीय लोगों का समर्थन प्राप्त है।

दिनांक 19 जनवरी, 2013 को, विशिष्ट सूचना के आधार पर, 127 बटालियन, बीएसएफ के 20 कर्मियों और छत्तीसगढ़ पुलिस के 20 कर्मियों का एक दल गांव टेकामेटा और भुरभुसी के सामान्य क्षेत्र में अभियान चलाने के लिए लगभग 0900 बजे सीओबी बान्डे से रवाना हुआ। इस अभियान का नेतृत्व श्री मोहम्मद साजिद खान, उप कमांडेंट, कंपनी कमांडर, 127 बटालियन, बीएसएफ द्वारा किया गया। भुरभुसी गांव के निकट पंहुचने पर लगभग 1200 बजे श्री मोहम्मद साजिद खान, उप कमांडेंट ने गांव और आस-पास के क्षेत्र के नक्शे का मूल्यांकन करके क्षेत्र को घेरने के लिए दल को दो समूहों में बांटा। दोनों दल एक दूसरे की आपसी सहायता से चल रहे थे। कुछ दूरी पर जाने के बाद, बीएसएफ के स्काउट कांस्टेबल नेत्र प्रसाद और कांस्टेबल हाजी मलंग ने कुछ संदिग्ध गतिविधियां देखीं। उन्होंने समझदारीपूर्वक कंपनी कमांडर को सूचित किया, जिन्होंने तुरंत दोनों दलों को सतर्क किया और दलों को पोजीशन लेने का आदेश दिया। जब श्री साजिद खान आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे, तो अचानक पास की टेकरी पर घने पेड़ पौधों में पोजीशन लिए हुए नक्सलियों की ओर से भारी गोलीबारी हुई। अभियान दल के सतर्क सदस्यों ने तेजी से अपनी पोजीशन ली और कारगर गोलीबारी से जवाबी कार्रवाई की।

इसी बीच दो नक्सलियों को पास के नाले से टेकरी की ओर दौड़ते हुए देखा गया, जिनमें से एक नक्सली 12 बोर की राइफल से गोलीबारी कर रहा था। अधिकारी ने स्थिति का जायजा लेने के बाद उप-निरीक्षक अर्जेश कुमार चौबे की कमांड में एक उप-समूह बनाया और कवरिंग फायर के तहत पास वाली छोटी टेकरी की ओर कुशलतापूर्वक जाने का निर्देश दिया ताकि वहां से नक्सलियों को उलझाया जा सके। श्री साजिद खान ने भारी गोलीबारी से घबराए बिना नक्सलियों की उपस्थिति की पुष्टि करने के लिए स्काउटों और छत्तीसगढ़ के हेड कांस्टेबल राजपूत के साथ नक्सली पोजीशन की ओर रेंगना आरंभ किया। उन्होंने नजदीक से नक्सलियों पर गोलीबारी की और सफलतापूर्वक एक नक्सली को मार गिराया, बाद में जिसकी पहचान सुमित्रा, प्रतापपुर एलजीएस की उप कमांडेंट के रुप में हुई। इसी बीच उप-निरीक्षक अर्जेश कुमार चौबे ने नक्सलियों की सही-सही पोजीशन का पता लगा लिया जो बीएसएफ पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। कंपनी कमांडर ने कांस्टेबल किशन कुमार को नक्सलियों के इरादे को चूर-चूर करने और उन्हें उनकी पोजीशन से हटाने के लिए नक्सलियों पर एक उच्च विस्फोटक (एचई) बम फायर करने का निर्देश दिया। छत्तीसगढ़ पुलिस का दल भी बीएसएफ दल के दायीं ओर से लगभग 400-500 मीटर की दूरी से नक्सलियों पर गोलीबारी कर रहा था।

कंपनी कमांडर ने कांस्टेबल हाजी मलंग और कांस्टेबल नेत्र प्रसाद को स्थिति का जायजा लेने के लिए टेकरी के निकट छोटी चट्टान की ओर जाने के लिए कहा। अपनी जान और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना कांस्टेबल हाजी मलंग और कांस्टेबल नेत्र प्रसाद पूर्ण साहस और बहादुरी दिखाते हुए एलएमजी की कवर फायर के तहत उच्च स्तरीय कौशल का प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़े। मध्यम आकार की चट्टान के पीछे नक्सलियों को पोजीशन लिए हुए देखकर उन्होंने नजदीक से नक्सलियों पर गोली चलाई और एक नक्सली को मार गिराया, बाद में जिसकी पहचान सुनोती के रुप में हुई।

नक्सलियों ने गोलीबारी बंद कर दी और नक्सलियों की ओर से कोई प्रतिक्रिया न देखकर कंपनी कमांडर ने टेकरी की ओर एक छोटा दल भेजा। टेकरी पर पहुंच पर दल ने देखा कि नक्सली मक्का के खेतों और घने पेड़-पौधों का फायदा उठाकर पूर्व की ओर से घने जंगल में भागने में कामयाब हो गए थे। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, दल ने हथियारों, गोला-बारुद और अन्य सामग्रियों के साथ दो महिला नक्सलियों के शव बरामद किए।

बरामदगी:

1.	.303 राइफल	-	01
2.	12 बोर की राइफल	-	01
3.	.303 राइफल के जिंदा कारतूस	-	16
4.	12 बोर के जिंदा कारतूस	-	06
5.	.315-12 बोर की गन के जिंदा कारतूस	-	18
6.	ईएफसी-एके-47 सीरिज	-	03
7.	ईएफसी 7.62 एमएम एसएलआर	-	01
8.	नक्सली यूनिफार्म	-	02
9.	मैगजीन पाउच	-	02
10.	पुल थ्रू	-	02

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मोहम्मद साजिद खान, उप कमांडेंट, नेत्र प्रसाद, कांस्टेबल और हाजी मलंग, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.01.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 126-प्रेज/2014- राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सुनील दुबे,
   सहायक कमांडेंट

2. एम. राम कृष्णा,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 31 दिसम्बर, 2013 को लगभग 2025 बजे सपागंधा बस्ती की पश्चिमी दिशा में सशस्त्र माओवादियों की गतिविधि के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर, 2 अधिकारियों, 2 अधीनस्थ अधिकारियों और 12 अन्य रैंक (ओडिशा पुलिस के एक एसपीओ सहित) वाला एक दल 8 मोटरसाइकिलों पर विशेष अभियान के लिए रवाना हुआ। लगभग 2120 बजे, विशेष अभियान दल गांव-सपागंधा पहुंचा और घेरा डाला तथा तलाशी अभियान चलाया लेकिन गांव में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। सपागंधा गांव में माओवादियों का पता न चलने पर दल ने कंपनी आपरेटिव बेस (सीओबी) रामगिरी वापस लौटने का निर्णय लिया।

अभियान दल को दो समूहों में बांटा गया। 3 मोटर साइकिलों वाला पहला समूह श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट/कंपनी कमांडर के नेतृत्व में था और 5 मोटर साइकिलों वाला दूसरा समूह पहले समूह के पीछे लगभग 150 मीटर की दूरी पर चल रहा था। पहले समूह में, कांस्टेबल पी.पी. बिस्वाल पहली मोटर साइकिल चला रहे थे और उप-निरीक्षक विनोद कुमार पीछे बैठे हुए थे। दूसरी मोटर साइकिल श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट चला रहे थे और कांस्टेबल एम. रामकृष्णा पीछे बैठे हुए थे और तीसरी मोटर साइकिल कांस्टेबल निलेश्वर कुमार चला रहे थे और एसपीओ विश्वनाथ मुदुली पीछे बैठे हुए थे।

लगभग 2210 बजे अग्रणी समूह बीरीगुडा गांव के निकट पहुंचा। जब पहली मोटरसाइकिल ने 2-3 घरों को पार किया और दूसरी मोटर साइकिल ने गांव में प्रवेश ही किया था, तभी अचानक एक नक्सली दूसरी मोटरसाइकिल के सामने आया और श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल एम. रामकृष्णा पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। वे तेजी से चलती मोटरसाइकिल से कूदे, अपनी पोजीशन ली और नक्सली गोलीबारी का कारगर जवाब दिया। कांस्टेबल एम. रामकृष्णा की दायीं एड़ी पर गोली लगी और श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट के बाएं टखने के जोड़ और बाएं कंधे पर चोटें आईं। उसी समय, आस-पास के पांच स्थानों पर पोजीशन लिए हुए अनेक नक्सलियों (लगभग 50) ने विभिन्न हथियारों से उन पर भारी गोलीबारी की। वास्तविक स्थिति का जायजा लेकर, उन्होंने रेंगकर/लुढ़ककर तेजी से अपनी पोजीशन बदली और पास के खेत में लट्ठे के पीछे अपनी पोजीशन ली और कारगर गोलीबारी से जवाबी कार्रवाई की। वे स्थल से लगभग 100 मीटर दूर एक खाईं में पहुंचने तक गोलीबारी करते हुए और कुशलता से चलते हुए अपनी पोजीशन बदलते रहे, जहां पहली और तीसरी मोटरसाइकिल भी उनके साथ शामिल हो गई और नक्सलियों पर प्रभावी गोलीबारी की। भारी गोलीबारी के बीच और अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट ने आगे बढ़कर अपने दलों का नेतृत्व किया। उन्होंने अपना धैर्य बनाए रखा और यह सुनिश्चित किया कि दल न केवल जवाबी हमला करे बल्कि इन नक्सलियों को हानि भी पहुंचाए। इसी बीच, फंसे दल की सहायता के लिए दूसरे दल के सदस्य कांस्टेबल मिलेश्वर सिंह ने यूबीजीएल की दो राउण्ड गोलियां चलाई, जिसके बाद लांस नायक आर.एक्स. लाकड़ा ने दो उच्च विस्फोटक (एच.ई.) बम फेंके। इससे सु-स्थापित नक्सलियों में हड़कम्प मच गया और उन्हें अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा।

क्षेत्र की तलाशी के दौरान घटना स्थल के निकट काफी खून देखा गया और एक इंसास (आईएनएसएएस) भी बरामद हुई, जिससे पता चलता था कि नक्सली समूह का एक सदस्य गंभीर रूप से घायल हुआ था। विश्वसनीय सूचनाओं से पता चला कि उक्त अभियान के दौरान दो मिलिशिया कैडर घायल हो गए थे, जिनकी बाद में मौत हो गई।

श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल एम. रामकृष्णा ने अपनी चोटों की परवाह किए बिना उक्त मुठभेड़ में निर्भीक साहस का प्रदर्शन किया, जिससे इनके अपने दल को जान की कोई हानि न होने के अलावा नक्सलियों को वापस हटने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुनील दुबे, सहायक कमांडेंट और एम. राम कृष्णा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.12.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 127-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अशोक कुमार राय,
   निरीक्षक

2. जंग बहादुर यादव,
   उप निरीक्षक

3. उत्तम बासुमतारी,
   कांस्टेबल

4. कुलोधर दास,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 4/5.03.2012 की रात्रि में लगभग 2230 बजे लगभग 100 सशस्त्र नक्सलियों/सीपीआई (माओवादी) के एक समूह ने सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड, पिपरवार की सीआईएसएफ अशोका चौकी पर हमला कर दिया। माओवादियों ने तीन ओर से चौकी को घेर लिया और उन्होंने सीआईएसएफ कार्मिकों को आत्मसमर्पण न करने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। उन्होंने सीआईएसएफ कार्मिकों को गोली न चलाने और अपने हथियार सौंपने की चेतावनी दी। कैंप कमांडर के नेतृत्व में सीआईएसएफ कार्मिकों ने नक्सलियों को कैम्प/चौकी के निकट न आने की जवाबी चेतावनी दी।

अचानक नक्सलियों ने वस्तुत: सीआईएसएफ कैम्प की सभी दिशाओं से भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। चौकी पर ड्यूटी और ऑफ ड्यूटी वाले सभी सीआईएसएफ कर्मियों ने अपनी संबंधित पोजीशन ली और नक्सलियों पर जवाबी गोलीबारी की। नक्सलियों और सीआईएसएफ कर्मियों के बीच भारी गोलीबारी सुबह 0430 बजे तक चार घंटे से अधिक समय तक जारी रही। रात भर सीआईएसएफ कर्मियों द्वारा प्रभावशाली जवाबी कार्रवाई के कारण नक्सली सीआईएसएफ कैम्प में प्रवेश नही कर सके। सीआईएसएफ कर्मियों ने साहसी मुकाबले से नक्सली प्रयास को पूर्णत: विफल कर दिया और नक्सली आधुनिक हथियारों को लूटने और बल कार्मिकों को व्यापक रूप से हताहत करने की अपनी घृणित योजना में सफल नहीं हो सके।

अशोका चौकी पर इस हमले की सूचना निरीक्षक/कार्यकारी ए. के. राय (सीआईएसएफ के नजदीक बचरा कैंप प्रभारी) की दी गई। बिना कोई समय गंवाए वे 15 कर्मियों और क्यू आर टी के अतिरिक्त सैन्य दल के साथ अशोका कैम्प की ओर गए। अपनी जान को गंभीर खतरे में डालकर, यह दल अशोका चौकी के काफी नजदीक पहुंचने में सफल रहा और फायरिंग पोजीशन ले ली। उन्होंने सीसीएल कर्मचारियों को पिट ऑफिस के क्षेत्र से निकाला और नक्सलियों को गोलीबारी में उलझाया, जिसके परिणामस्वरूप नक्सली सीसीएल के आवासीय और कार्यालय क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सके। इसके अतिरिक्त सैन्य दल ने गोलीबारी करके नक्सलियों को भ्रमित कर दिया जिससे वे अंतत: पीछे हटने पर मजबूर हो गए।

संपूर्ण अभियान के दौरान, सीआईएसएफ की टुकड़ी ने विभिन्न कैलिबर की लगभग 521 राउंड गोलियां चलाईं। बाद में सीआईएसएफ और स्थायी पुलिस की संयुक्त तलाशी कार्रवाई के दौरान हथियारों/गोलाबारूद और हैंड ग्रेनेड के साथ दो नक्सलियों के शव बरामद हुए। सीआईएसएफ दल ने न केवल अपने आप को और अपने हथियारों को बचाया, बल्कि अनेक सिविलियनों एवं सीसीएल

कर्मचारियों की जान और उपक्रम की सम्पत्ति बचाने में भी सफल रहे। सीआईएसएफ के इस साहसिक और वीरतापूर्ण कार्य की सभी लोगों ने सराहना की।

इस घटना में, निम्नलिखित सीआईएसएफ कर्मी सक्रिय रूप से शामिल थे:

(क) अशोक कुमार राय, निरीक्षक :- सीआईएसएफ में इनकी नियुक्ति दिनांक 03.08.1991 को हुई थी और दिनांक 03.05.2011 को सीआईएसएफ यूनिट सीसीएल एनके और पिपरवार में तैनात किए गए थे। दिनांक 04.03.2012 को वे बचरा चौकी में क्यूआरटी प्रभारी थे। नक्सली हमले की सूचना मिलने पर वे तुरन्त सक्रिय हो गए और अशोका चौकी के कमांडर के साथ मिलकर काम किया। उन्होंने कैम्प कमांडर को सुरक्षा के बारे में बताया और खुद पिपरवार पार्किंग क्षेत्र (अशोका कैंप के काफी निकट) की ओर कुशलतापूर्वक क्यूआरटी का नेतृत्व किया। इसके अलावा, वे अपने अतिरिक्त दल के साथ पिट ऑफिस की ओर गए और अशोका कैंप के काफी नजदीक पोजीशन ले ली। उन्होंने पिट आफिस से सीसीएल कर्मचारियों को निकालने में दल का नेतृत्व किया। नक्सलियों ने फिर गोलीबारी की, जिसका उन्होंने और उनके नेतृत्व वाले अतिरिक्त दल ने भी जवाब दिया।

निरीक्षक ए. के. राय चौकी कमांडर के निरंतर संपर्क में थे। उन्होंने कांस्टेबल प्रवीण पी.वी को कवर फायर प्रदान किया, जिनके पैर में गोली लग गई थी। उन्होंने कांस्टेबल को वहां से निकाला और उन्हें सीसीएल, अस्पताल, बचरा भेजा। इसके साथ-साथ, चौकी कर्मियों का मनोबल बढ़ाने के भी प्रयास किए। सीआईएसएफ की कारगर और रणनीतिक जवाबी कार्रवाई के कारण सीआईएसएफ की ओर से किसी के हताहत होने की सूचना नहीं मिली और अभियान में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

(ख) जंग बहादुर यादव, उप निरीक्षक:- सीआईएसएफ में इनकी नियुक्ति दिनांक 08.01.1973 को हुई थी और दिनांक 16.01.2011 को सीआईएसएफ यूनिट सीसीएल एनके एवं पिपरवार में तैनात किए गए थे। दिनांक 04.03.2012 को उक्त चौकी पर चौकी कमांडर के रूप में तैनाती के दौरान, उन्होंने तुरंत कार्रवाई की और अपने अधीन सभी कर्मियों को उचित रूप से समझाया। उन्होंने नक्सलियों को चुनौती दी और तुरंत अपने साथियों के साथ रणनीतिक पोजीशन ली और उपयुक्त तरीके से जवाबी कार्रवाई की। उप निरीक्षक जे. बी. यादव ने स्थिति को अपने नियंत्रण में किया और दो सब-पोस्टों के बीच समन्वय सुनिश्चित किया। नक्सलियों ने तीन ओर से गोलीबारी की और सीआईएसएफ चौकी पर भारी गोलीबारी हुई, उप निरीक्षक जे.बी. यादव ने अपने साथियों को नियंत्रित गोलीबारी करके नक्सली हमले का जवाब देने के लिए विशिष्ट निर्देश दिए।

उप निरीक्षक जे. बी. यादव द्वारा लिया गया अन्य महत्वपूर्ण रणनीतिक निर्णय रोशनी के स्रोत पर गोलीबारी करना था, जो सीआईएसएफ कैम्प के बाहर था और सीआईएसएफ कैम्प को प्रकाशमान कर रहा था। उप निरीक्षक यादव ने स्थिति को पूरे नियंत्रण में रखा, जो लगभग साढ़े चार घंटे तक बनी रही और रणनीतिक कमांडर के रूप में असाधारण कौशल का प्रदर्शन किया। वे एलएमजी पोस्ट पर कार्मियों को बदलते रहे जो कि छत पर थी और जिसे सबसे अधिक जोखिम था। उनके इस निर्णय के कारण एलएमजी पोस्ट ने नक्सलियों को सर्वाधिक क्षति पहुंचाई। उन्होंने अपने कर्मिकों का मनोबल बढ़ाने के सभी प्रयास किए। उनकी कमान में प्रभावी और रणनीतिक जवाबी कार्रवाई के कारण, नक्सली अपनी योजना में सफल नहीं हो सके और वे हताहत हुए।

(ग) कांस्टेबल उत्तम बासुमतारी और कांस्टेबल कुलोधर दास: सीआईएसएफ में उनकी नियुक्ति दिनांक 16.06.2007 को हुई थी और क्रमश: दिनांक 16.03.2012 और 09.03.2008 को सीआईएसएफ यूनिट एनके एवं पिपरवार में तैनात किए गए थे। दिनांक 04.03.2012 को उन्हें छत के ऊपर मोर्चे पर लगाया गया था। नक्सलियों को चौकी की ओर आता हुआ देखकर, उन्होंने तुरंत इस खतरे की सूचना दी और अन्य चौकियों पर तैनात सभी कर्मियों को सतर्क किया। उन्होंने नक्सलियों को चेतावनी दी और तुरंत सामरिक पोजीशन ली और जवाबी गोलीबारी की। उन्होंने पोस्ट कमांडर और अन्य कर्मियों के साथ उचित रूप से समन्वय स्थापित किया। नक्सलियों ने भी तीन ओर से भारी गोलीबारी की। उन्होंने उपयुक्त रूप से जवाबी गोलीबारी की जिससे नक्सलियों को अधिकतम क्षति पहुंची जिसका सबूत आस-पास के क्षेत्रों में शवों को घसीटने के निशान और खून के धब्बे थे। हमले के दौरान नक्सलियों को अधिकतम क्षति पहुंचाने में ये दोनों कांस्टेबल काफी सफल रहे।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अशोक कुमार राय, निरीक्षक, जंग बहादुर यादव, उप निरीक्षक, उत्तम बासुमतारी, कांस्टेबल और कुलोधर दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.03.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 128-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सन्नी सलाथिया, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

208 कोबरा टीम के साथ कमांडेंट-168 बटालियन की कमान में एक विशेष अभियान की योजना बनाई गई थी, जिसमें छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में पामेद पुलिस स्टेशन के अंतर्गत कोरागुट्टा गांव की घेराबंदी और तलाशी की जानी थी। बासागुडा के बेस कैम्प से दिनांक 19.04.2013 को 1700 बजे अभियान आरंभ किया जाना था। विभिन्न स्थलों से सैन्य दलों को बेस कैम्प में एकत्र होना था। तदनुसार, दिनांक 19.4.2013 को कमांडेंट 168 बटालियन, सीआरपीएफ अपने मार्गरक्षक के साथ बीजापुर में अपने बटालियन मुख्यालय से तीन वाहनों में चले। अपनाई गई रणनीति के अनुसार सैन्य दल सिविल प्रकार के वाहनों में चले और अपने बीच लगभग 10 मिनट का अंतर रखा। कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया भी कमांडेंट के मार्गरक्षक दल के एक सदस्य थे और दूसरे वाहन में बैठे हुए थे। एक चतुर प्रेक्षक और अच्छा निशानची होने के कारण उन्हें सामने की सड़क और अपने बायीं ओर के जंगल पर नजर रखने का कार्य सौंपा गया था और तदनुसार वे सह-ड्राइवर की सीट पर बैठे हुए थे। लगभग 1230 बजे, जब दूसरा वाहन मुरडांडा में सीआरपीएफ कैम्प से लगभग 2 किमी. दूर था, कांस्टेबल जीडी सन्नी सलाथिया ने सड़क पर दो संदिग्ध व्यक्तियों को देखा। उन्होंने तुरंत ड्राइवर को वाहन रोकने का आदेश दिया। जैसे ही वाहन रुका और कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया उससे नीचे उतरे, दोनों व्यक्ति जंगल की ओर दौड़े लेकिन उनमें से एक व्यक्ति का हथियार कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया की पैनी नज़र से नहीं बच सका। उन्होंने तुरंत अन्य सैनय दलों को इसकी सूचना दी और उन्हें पकड़ने के लिए भाग रहे नक्सलियों के पीछे दौड़े। अन्य सैन्य दल भी पीछे गए। जैसे ही वे उस स्थान के निकट पहुंचे जहां से नक्सली जंगल में घुसे थे, पेड़ों और झाड़ियों के पीछे छिपे नक्सलियों के एक समूह ने उन पर भारी गोलीबारी की। ऐसे अचानक और अप्रत्याशित हमले के लिए तैयार दल सक्रिय हो गए और नक्सलियों द्वारा ली गई पोजीशन की दिशा में जबाबी गोलीबारी की। यह जानकर कि उनकी संख्या सैन्य दल की संख्या से अधिक है और वे अनुकूल पोजीशन में हैं, नक्सलियों ने जंगल में भागने के बदले सैन्य दलों को घेरने और उनकी हत्या करने के बाद उनके हथियार लूटने का प्रयास किया।

इस मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया ने अपनी दायीं ओर कुछ नक्सलियों की गतिविधि को देखा। उन्हें यह समझने में समय नहीं लगा कि नक्सली उन्हें घेरने और अनेक दिशाओं से हमला करने का प्रयास कर रहे हैं। जवाबी हमला करने और नक्सलियों द्वारा तैयार की जा रही हमले की योजना को विफल करने के लिए वे नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बीच अपने दायीं ओर रेंगकर गए और आमने-सामने आने के बाद उन पर गोलीबारी की। इस निडर साहसिक हमले से एक नक्सली घायल हो गया और उनका आगे बढ़ना रुक गया लेकिन इस प्रयास में उनके पेट और पैर में गोलियां लगने से वे गंभीर रुप से घायल हो गए। इस मर्मभदक दर्द और बहते खून से घबराए बिना वे कवर के लिए रेंगकर एक पेड़ के पीछे गए और नक्सलियों को उलझाए रखा। गंभीर रूप से घायल होने बाद भी उन्होंने नक्सलियों को आगे बढ़ने से रोका, उनमें से एक को घायल किया और नक्सलियों की घृणित योजना को विफल किया। कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया के साहस और बहादुरी से धूल चाटने और अतिरिक्त सैन्य दल के पहुंच जाने के भय से नक्सलियों ने अपने घायल साथी के साथ वहां से भागना उचित समझा। मुठभेड़ की खबर सुनकर दो वाहन भी घटना स्थल पर पहुंच गए और कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया को तुरंत बेस कैम्प बसागुडा ले जाया गया और इसके बाद हेलिकाप्टर से सरकारी मेडिकल कालेज, जगदलपुर ले जाया गया, लेकिन अच्छा उपचार होने के बावजूद वे दिनांक 20.04.2013 को शहीद हो गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर पाया गया कि जिस स्थान पर कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया ने संदिग्ध गतिविधि देखी थी, वह स्थान ताजा खुदा हुआ था और ऐसी आशंका है कि नक्सली वहां आईईडी लगाने की योजना बना रहे थे।

इस अभियान में कांस्टेबल/जीडी सन्नी सलाथिया गंभीर चोटों के बावजूद न केवल वीरतापूर्वक लड़े बल्कि अनेक सैनिकों की जानें भी बचाई और उनके हथियारों को लूटे जाने से बचाया। उन्होंने सही समय पर संदिग्ध आईईडी लगाते हुए देखकर भी सैनिकों की जानें बचाई, वरना यदि नक्सली सफलतापूर्वक आईईडी लगा देते तो यह काफी खतरनाक हो सकता था। बहादुर सिपाही ने अन्य लोगों की जानें बचाने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उन्होंने नक्सलियों के साथ लड़कर अपने नि:स्वार्थ कार्य में सच्चे शौर्य, बहादुरी और सैनिक भावना का प्रदर्शन किया और अंतत: राष्ट्र की सेवा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस मुठभेड़ में (स्वर्गीय) श्री सन्नी सलाथिया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.04.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 129-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री ग्रिश हालकी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन गंगलूर, जिला बीजापुर, छत्तीसगढ़ के अंतर्गत गांव मेटापाल में पीएलजीए की मिलिट्री प्लाटून की उपस्थिति के बारे में सूचना मिलने पर, डी आई जी (आपरेशन) बीजापुर द्वारा घेराबंदी और तलाशी अभियान की योजना बनाई गई । विशेष कार्रवाई दलों और सीआरपीएफ के कोबरा सैन्य दल चेरपाल में एफ/85 बटालियन के कंपनी बेस में एकत्र हुआ । क्षेत्र और नवीनतम खुफिया जानकारी का विश्लेषण कर अंतिम कार्य योजना बनाने और शामिल सैन्य दलों को उचित जानकारी देने के बाद उन्होंने अभियान शुरू किया। क्षेत्र से नक्सलियों को बच निकलने का कोई मौका न देने के लिए तीन दिशाओं से क्षेत्र को कवर करने के लिए सैन्य दल को तीनों समूहों में बांटा गया। क्षेत्र में नक्सलियों के मजबूत खुफिया नेटवर्क को ध्यान में रखते हुए, ये दल दिनांक 17.02.2013 को रात के सन्नाटे में अर्थात् 2300 बजे लक्ष्य के लिए चोरी-चोरी उस स्थान से निकले। रात्रि के दौरान जोखिम भरे क्षेत्र में लगभग 15 कि.मी. चलने और नक्सलियों की सतर्क समयपूर्व चेतावनी प्रणाली को सफलतापूर्वक धोखा देने के बाद दल अपने लक्ष्य के नजदीक पहुंच गया। योजना के अनुसार, नक्सलियों पर तीन दिशाओं से हमला करने के लिए सैन्य दल को तीन समूहों में बांटा गया। इनमें से एक समूह को गांव के सामने वाली पहाड़ियों पर चुपचाप जाने और कट-ऑफ के रूप में कार्य करने का आदेश दिया गया, जबकि दो अन्य समूह दो दिशाओं से गांव की तलाशी लेंगे। जैसे ही कट-ऑफ समूह वहां पहुंचा और तलाशी दल तलाशी आरंभ करने के लिए गांव की ओर बढ़े, गांव में उपस्थित नक्सलियों ने अपने स्वचालित हथियारों से आगे बढ़ रहे सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सैन्य दलों ने तुरंत पोजीशन ली और अत्यधिक संयम के साथ जवाबी गोलीबारी की क्योंकि गांव में सिविलियनों के मौजूद होने की संभावना थी। लगातार गोलीबारी कर रहे नक्सलियों को निरस्त्र करने के लिए, सैन्य दल युद्ध कौशल और क्षेत्र कौशल का उपयोग करते हुए उनकी ओर बढ़े। सैन्य दलों को अपनी ओर आता देखकर नक्सलियों ने गांव में आने वाले मार्गों पर लगाए गए आई ई डी का विस्फोट करना आरंभ कर दिया। गोलीबारी और विस्फोट दलों को आगे बढ़ने से नहीं रोक सके और सैन्य दलों का कड़ा मुकाबला देखकर नक्सलियों ने एक के बाद एक पहाड़ियों की ओर भागना आरंभ कर दिया। दूसरी ओर, गांव से गोलीबारी और आई ई डी के विस्फोट की आवाज सुनकर नक्सलियों को पीछे से कवर करने के लिए कट-ऑफ समूह ने आगे बढ़ना आरंभ कर दिया। 199 बटालियन के कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी समूह के स्काउट थे और अन्य सैन्य दलों को गांव की ओर ले जा रहे थे। जैसे ही दल पहाड़ी से थोड़ा नीचे गया, अचानक उनका सामना वन में छिपे भारी हथियारबंद नक्सलियों से हुआ। सैन्य दलों को देखकर नक्सली समूह ने तुरंत अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी । नक्सलियों की गोलीबारी सैन्य दलों को रूकने के लिए मजबूर कर दिया। तब नक्सलियों ने भारी गोलीबारी कवर का उपयोग करके भागने का प्रयास किया। लेकिन कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी नक्सलियों को बचकर भागने का मौका नहीं देना चाहते थे। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की उपेक्षा करते हुए भाग रहे विद्रोहियों पर गोलीबारी की और भारी गोलीबारी का सामना करते हुए उनके पीछे दौड़े। कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी के कठोर साहस से उत्साहित होकर उनके दल के अन्य साथी उनके पीछे आए। वे इस बात की परवाह किए बिना कि उनके साथी उनसे दूर हैं और प्रत्यक्ष गोलीबारी में उनकी सहायता नहीं कर सकते, नक्सलियों का पीछा करते रहे। जवाबी गोलीबारी में उन्होंने कुछ नक्सलियों को घायल कर दिया और भाग रहे नक्सलियों की गति को धीमा कर दिया। लेकिन उस दिन भाग्य शायद नक्सलियों के साथ था क्योंकि नक्सलियों का वह समूह जो गांव से भाग गया था, वह भी संयोग उसी रास्ते पर पहुंच गया। इस समूह ने अपने साथियों को खतरे में देखकर तुरंत कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी पर गोलीबारी की और उन्हें घेरने का प्रयास किया। समर्थन पाकर अन्य नक्सलियों ने भी घिरे हुए कांस्टेबल पर गोलीबारी आरंभ कर दी। कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी ने शीघ्र ही अपने आप को नक्सलियों से घिरा हुआ पाया और उनके साथी अभी भी दूर थे, लेकिन यह बहादुर सिपाही घबराया नहीं । वे गोलियों की बौछार के बीच, जिनमें से कुछ जमीन पर लग

रही थीं, रेंगकर एक गड्ढे तक गए, वहां पर अपनी पोजीशन ली और घेरने वाले नक्सलियों पर अपनी यूबीजीएल से ग्रेनेड फायर करना आरंभ किया। कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी की यूबीजीएल से ग्रेनेडों की बरसात और नक्सलियों की ओर बढ़ रहे उनके साथियों की गोलीबारी से नक्सलियों का मनोबल गिर गया और उन्होंने घटना-स्थल से भागना आरंभ कर दिया। कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी की गोलीबारी से एक नक्सली गंभीर रूप से घायल हो गया था और दूसरे नक्सली उसे अपनी पीठ पर ले जाने का प्रयास कर रहे थे। यह देखकर कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी फिर से अपनी सुरक्षित पोजीशन से बाहर निकले और उन पर गोलीबारी की, जिससे वे इस घायल कैडर को छोड़कर भागने पर मजबूर हो गए। कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी गिरे हुए नक्सली की ओर दौड़े और उससे उसकी भारमर राइफल छीन ली। यद्यपि घायल नक्सली को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा सहायता दी गई थी, लेकिन उसने दम तोड़ दिया। मारे गए नक्सली से एक भारमर बंदूक और तीर बम बरामद हुए। सैन्य दलों ने क्षेत्र की पूरी तरह तलाशी ली और 10 कि.ग्रा. का एक पाइप बम भी बरामद किया गया।

कांस्टेबल/जीडी ग्रिश हालकी ने सम्पूर्ण अभियान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आती मौत के सामने बहादुरी से लड़े। भीषण गोलीबारी के दौरान, अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने हमला करने का साहस किया और एक नक्सली को मार गिराने में कामयाब हुए थे। एक सशस्त्र सैनिक के प्रशिक्षण के अनुसार वे संख्या में अधिक नक्सलियों से अधिक उग्रता और रोष के साथ लड़े।

इस मुठभेड़ में श्री ग्रिश हालकी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.02.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 130-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. रोहित कुमार,
   सहायक कमांडेंट
2. हरजिन्दर सिंह,
   उप-निरीक्षक
3. विकाश कुमार सिंह,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह सूचना मिलने पर कि कुन्दन पहान, राज्य समिति सदस्य के नेतृत्व में नक्सलियों के एक बड़े समूह ने क्षेत्र में एक कैंप स्थापित किया है, कोबरा और राज्य पुलिस के दलों द्वारा पुलिस स्टेशन अर्की, जिला खूंटी, झारखंड के अंतर्गत गांव मरंगबुरु के आसपास के जंगल में दिनांक 04 से 06 फरवरी, 2011 तक एक अभियान आरंभ किया गया था। कैम्प की तलाशी लेने और हमला करने के लिए तीन हमला दल बनाए गए थे। प्रत्येक दल में कोबरा दलों और झारखंड राज्य पुलिस के झारखंड जगुआरों वाले दो हमला दलों को तलाशी और ध्वस्त करने का कार्य सौंपा गया था और सीआरपीएफ तथा राज्य पुलिस वाले एक हमला दल को नक्सलियों के भागने के मार्गों को बंद (कट-आफ) करने का कार्य सौंपा गया था। दिनांक 04 फरवरी को हमला दलों को रात्रि में अभियान क्षेत्र में प्रविष्ट करा दिया गया था और क्रमश: मरंगबुरु पहाड़ी, संदिरी वन और टम्परटोला बेस में जाने का आदेश दिया गया था। हमला दल घने जंगल से आडे-तिरछे चुपचाप और नक्सलियों के बाहरी सुरक्षा घेरे का तोड़कर सुबह 0600 बजे अपने-अपने लक्ष्य के नजदीक पहुंच गए। हमला दल-1 और हमला दल-2 ने नक्सली कैंप की तलाश में अपने संबंधित क्षेत्रों की छानबीन आरंभ की। हमला दल 1 ने मरंगबुरु पहाड़ी के नीचे पहुंचकर अपने आप को दो भागों में बांटा और दो तरफ से ऊपर की ओर बढ़े। निरीक्षक ऋषिकेष मीणा की कमान में 203 कोबरा की टीम सं. 12

दाएं से चल रही थी और श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में टीम सं. 10 बाएं से चल रही थी। जब टीमें पहाड़ी की चोटी के निकट पहुंच रही थी, तब टीम सं. 12 नक्सलियों की भारी गोलीबारी में घिर गई। दल कर्मियों ने जवाबी कार्रवाई की और नक्सलियों को उलझाया। गोलियों की आवाज सुनकर टीम सं. 10 बायीं ओर से नक्सलियों को घेरने के लिए आगे बढ़ी । जैसे ही वे घने जंगल से होते हुए थोड़ा आगे बढ़े, इसके सदस्यों को अचानक नक्सलियों का एक सुस्थापित कैंप मिला। श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी विकाश कुमार, जो दल का नेतृत्व कर रहे थे, नक्सलियों की सीधी गोलीबारी के सामने आ गए, जो सुरक्षित मोर्चों के पीछे थे और उन पर निशाना साध रहे थे। जान को जोखिम भरी यह स्थिति उनके होश उड़ा सकती थी, लेकिन अपने धैर्य पर नियंत्रण करते हुए वे नीचे झुक गए और नक्सलियों पर वापस गोलीबारी की। ये दोनों भाग्यशाली थे कि नक्सलियों द्वारा की गई गोलियों की बौछार उनके पास से निकल गई लेकिन उनके तीन साथी घायल हो गए। दल के सदस्य किसी तरह रेंगकर चले और गोलियों के बीच शिला-खंडो और पेड़ों के पीछे पहुंचे। उन पर चलाई जा रही गोलियों से कुछ गोलियां उनके शरीर के ऊपर से जा रही थीं और कुछ जमीन पर लग रही थीं। कांस्टेबल/जीडी विकास कुमार के साथ श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट, जो सबसे आगे थे, ने लगातार गोली बारी का सामना करते हुए अब अपने दल के साथियों की मदद से नक्सलियों की मोर्चाबंदी को तोड़ने का प्रयास किया और मोर्चा संभाले हुए नक्सलियों पर भारी गोलीबारी की। एक भीषण नजदीकी युद्ध चल रहा था जिसमें सैन्य दल अपनी बहादुरी, धैर्य और संकल्प से नक्सलियों की प्रबल और सुरक्षित पोजीशनों को नाकाम कर रहे थे। जब गोलीबारी हो रही थी तो श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट, ने सैन्य दल को घेरने के लिए कुछ नक्सलियों को बायीं ओर से आगे बढ़ते देखा और उन पर अचानक तथा अप्रत्याशित हमला किया। उन्होंने तुरंत कांस्टेबल/जीडी चंचल कुमार और अन्य कार्मिकों को कैम्प की ओर गोलीबारी जारी रखने का आदेश दिया जबकि वे और कांस्टेबल/जीडी विकाश कुमार अपनी जान की परवाह किए बिना अपने कवर से फिसलते हुए बाहर निकले और आगे बढ़ रहे नक्सलियों पर भारी गोलीबारी की। इस हमले में दो नक्सली गंभीर रूप से घायल हो गए और वे सभी अपनी अपनी सुरक्षित पोजीशनों में चले गए। हताश होकर नक्सलियों ने भारी गोलीबारी की, जिसमें एक गोली कांस्टेबल/जीडी चंचल कुमार के हथियार में लगी और उससे गोली चलनी बंद हो गई। स्थिति का लाभ उठाते हुए एक नक्सली उन पर गोली चलाने और उनका हथियार लूटने के लिए कांस्टेबल/जीडी चंचल कुमार की ओर बढ़ा लेकिन इसे कांस्टेबल/जीडी विकाश कुमार की सतर्क आंखों ने देख लिया और उन्होंने एक गोली चलाई तथा घटना-स्थल पर ही उस नक्सली को मार गिराया। इससे नक्सली हतोत्साहित हो गए और वे ग्रेनेड और देशी बम फेंकने लगे। लड़ाई को कठिन होता देखकर श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट ने उप निरीक्षक/जीडी हरजिन्दर सिंह को यूबीजीएल के साथ हमले की पहली पंक्ति तक जाने और इससे भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया। उप निरीक्षक/जीडी हरजिन्दर सिंह नक्सलियों की भारी गोलीबारी के बीच उपलब्ध सीमित कवर का उपयोग करके रेंगते हुए आगे बढ़े और यथा संभव नक्सलियों के करीब पहुंच गए। उन्होंने नक्सली मोर्चों के करीब पहुंचकर यूबीजीएल फायर किया और इसके बाद उन पर ग्रेनेड फेंके। उप निरीक्षक/जीडी हरजिन्दर सिंह की इस कार्रवाई से नक्सलियों का मनोबल टूट गया। उनके हमले की अग्रिम पंक्ति ने कोबरा को आगे बढ़ने से रोकने के लिए गोलीबारी जारी रखी जबकि बाकी नक्सली अपने साथ शवों और घायल व्यक्तियों को लेकर घटना-स्थल से भाग गए। जब उनकी अग्रिम पंक्ति भी सैन्य बलों को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकी, तो वे भी एक-एक करके घने जंगल में विलीन हो गए। नक्सलियों के साथ कठिन संघर्ष के बाद सैन्य दल कैंप की मोर्चेबंदी को तोड़ने और उसे उजाड़ने में सफल रहे। अत्यधिक ऊंचाई से घात लगाकर किए गए हमले का सामना करने में कोबरा कर्मी काफी कुशलता, अनुकरणीय साहस और दृढ़ निश्चय के साथ लड़े। यद्यपि सैन्य दलों को कोई शव नहीं िमला, लेकिन उनके दस्तावेज से इस बात की पुष्टि हुई है कि इस मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गए थे। आगे और विश्लेषण से पता चला कि सैन्य दलों की गतिविधि की सूचना मिलने पर नक्सलियों ने कैंप खाली कर दिया था और बल कर्मियों को बड़े पैमाने पर हताहत करने के लिए अनेक घातें लगाईं थीं। यह अभियान जंगल युद्ध कला की एक उत्कृष्ट नजदीकी लड़ाई थी, जिसमें शत्रु को प्रभावशाली ऊंचाई और मजबूत कवर का लाभ मिला हुआ था। फिर भी दल अत्यधिक व्यावसायिक कुशलता, बहादुरी और अनुकरणीय साहस के साथ लड़ा और नक्सलियों को उचित जवाब दिया।

बरामदगी:

1.	भारमर राइफल	-	01
2.	नॉन-इलेक्ट्रिक डैटोनेटर	-	10
3.	उच्च विस्फोटक बम के खोखे	-	08
4.	उच्च विस्फोटक फायरिंग पिन	-	02
5.	विभिन्न गोलाबारूदों के खाली खोखे	-	75
6.	बैटरी	-	05
7.	पोलीथीन शीट		

8. खाद्य सामग्री और नक्सली साहित्य

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रोहित कुमार, सहायक कमांडेंट, हरजिन्दर सिंह, उप-निरीक्षक और विकाश कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.02.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 131-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. विश्व रंजन,
   सहायक कमांडेंट
2. राम बिलास,
   हेड कांस्टेबल/ड्राइवर
3. सदानंद यादव,
   हेड कांस्टेबल/ड्राइवर
4. इलंगबाम यामा सिंह,
   हेड कांस्टेबल
5. विष्णु पाधा जमातिया,
   हेड कांस्टेबल
6. शशीन्द्र कुमार शर्मा, (मरणोपरांत)
   कांस्टेबल
7. शैलेन्द्र नाथ बेरा,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

चक्रबंधा वन अपनी रणनीतिक स्थिति अर्थात जिला मुख्यालय से दूरी, झारखंड और उत्तर प्रदेश में बच निकलने के मार्ग, अगम्य क्षेत्र, पहाड़ी और घने जंगल और टूटी सड़कों के साथ खराब संचार सुविधा के कारण नक्सलियों के लिए सुरक्षित ठिकाना माना जाता था। नक्सलियों द्वारा बेस एरिया स्थापित करने के लिए इस क्षेत्र का चयन इरादतन किया जाता था। इस क्षेत्र को एक गढ़ के रुप में भी विकसित किया गया था, जहां बड़ी मात्रा में कार्मिक-रोधी और वाहन-रोधी बारुद सुरंगें बिछा दी जाती थीं, सुरक्षा बलों को फंसाने के लिए घात लगाकर हमला करने के संभावित स्थानों की पहचान कर ली जाती थी और प्रवेश मार्गों पर संतरियों की तैनाती कर दी जाती थी। इस क्षेत्र पर एक मिलिट्री कंपनी और अरविन्दजी, सीपीआई(माओवादी) के केन्द्रीय समिति सदस्य की कमान में एक प्लाटून के कब्जे में था, जिसे स्थानीय गुरिल्ला दस्तों का विधिवत समर्थन प्राप्त था। क्षेत्र में रहने वाले लोगों को उनका समर्थन करने और तोड़-फोड़ तथा विनाशकारी गतिविधियों में भाग लेने के लिए मजबूर किया जाता था। इस पृष्ठभूमि में और अपने समक्ष आने वाली सभी बाधाओं को जानते हुए 47,159,205, 215 सीआरपीएफ, एसटीएफ और सिविल पुलिस के सैन्य दलों ने उनके बेस पर कार्रवाई करने और धावा बोलने की योजना बनाई। अपेक्षित योजना और तैयारी के पश्चात ऐसे सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए सैन्य दलों ने दिनांक 10.06.2012 को चक्रबंधा वन में प्रवेश किया। उन्होंने वन क्षेत्र की छानबीन और सफाई करना तथा बारुदी सुंरग वाले मार्गों को सुरक्षित बनाना आरंभ किया। लगभग 0600 बजे जब 159 बटालियन का हमला दल सं.-। जंगल और पहाड़ियों के बीच में मार्ग को सुरक्षित कर

रहा था (गांव-बलथारवा से लगभग 2 किमी. पहले), तभी फ्रंट पार्टी 1-1½ किमी. के क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा लगाई गई घात टुकड़ी की भारी गोलीबारी में आ गई। उन्होंने सड़क पर श्रृंखलाबद्ध लगाए गए 85 से अधिक आईईडी का विस्फोट किया और अपने आधुनिक हथियारों से सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी की। कुछ सेकंड में ही शांत जंगल आईईडी विस्फोटों की ऊंची आवाजों और गोलियों के रूप में चारों और बरसती मौतों से युद्ध क्षेत्र में बदल गया। गोलियों की बौछार और आईईडी के विस्फोटों का सामना करते हुए बहादुर सैन्य दलों ने तुरंत रणनीतिक पोजीशन ली और नक्सलियों को चुनौती देते हुए प्रभावी रूप से जवाबी कार्रवाई की। हेड कांस्टेबल/जीडी ई. यामा सिंह, हेड कांस्टेबल/जीडी बी.पी. जमातिया, कांस्टेबल/जीडी शशीन्द्र कुमार शर्मा और अन्य लोगों को ले जा रहा बुलेट प्रूफ बंकर अनेक बारुदी सुरंगों के विस्फोट के कारण घात में फंस गए। उपर्युक्त तीनों कार्मिक आतंकित नहीं हुए, बल्कि अपनी रणनीतिक प्रतिकूल पोजीशन को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। पहले उन्होंने बंकर को नक्सलियों और घायल सैनिकों के बीच खड़ा किया, जिसने एक अवरोध के रुप में कार्य किया और फिर बंकर द्वारा प्राप्त ऊंचाई का लाभ उठाया और प्रभावी रुप से नक्सलियों पर गोलीबारी की। इससे सुरक्षा बलों को बड़े पैमाने पर हताहत करने का नक्सलियों का उद्देश्य विफल हो गया। बंकर से भारी गोलीबारी ने नक्सलियों को क्रोधित कर दिया और बंकर उनका मुख्य लक्ष्य बन गया। हताश होकर उन्होंने अपने स्वचालित हथियारों से बंकर पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। गोलीबारी की मात्रा इतनी अधिक थी कि गोलियों ने बी.पी. बंकर के फायरिंग स्लाट में प्रवेश करना आरंभ कर दिया। लेकिन इससे बंकर के अंदर बैठा साहसी सैन्य दल विचलित नहीं हुआ और वे नक्सली पोजीशनों पर गोलीबारी करते रहे। एक नक्सली की गोली कांस्टेबल/जीडी शशीन्द्र कुमार शर्मा को लगी। गंभीर चोट के बावजूद इस बहादुर सिपाही ने गोलीबारी जारी रखी और नक्सलियों को भारी नुकसान पहुंचाया। उन्होंने युद्धक्षेत्र में नक्सलियों से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की।

श्री विश्व रंजन, सहायक कमांडेंट, जो इस हमला दल के कमांडर थे, घात क्षेत्र से बाहर थे। अपने सैनिकों और बंकर को घात में फंसा हुआ और नक्सलियों की लगातार गोलीबारी का सामना करते हुए देखकर, वे कांस्टेबल/जीडी राम बिलास, कांस्टेबल/जीडी एस.एन. बेरा और 03 अन्य कार्मिकों के साथ दूसरे बंकर पर चढ़े और अपने सैनिकों की सहायता करने के लिए इसे तेजी से घात क्षेत्र में ले गए। कमांडर का यह कार्य सामान्य स्थिति में बुनियादी सिद्धांतों के विरुद्ध हो सकता था, लेकिन उनकी बहादुरी, साहस और व्यावसायिकता के इस कार्य और अपनी सैन्य टुकड़ी तथा कर्तव्य के प्रति समर्पण से नक्सली आश्चर्यचकित रह गए। यूबीजीएल का उपयोग करके कमांडर और उनके छोटे दल की फायर सहायता ने फंसी सैन्य टुकड़ियों में नई जान फूंक दी और मिलकर उन्होंने नक्सलियों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया।

अपने कमांडर का साहस देखकर हेड कांस्टेबल/ड्राइवर सदानंद यादव, जो एमपीवी चला रहे थे, ने भी भारी गोलीबारी के बीच में अपना वाहन घुसा दिया और नक्सलियों की सीधी गोलीबारी से घायल और फंसे हुए कर्मियों को कवर करना आरंभ किया। अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने घात क्षेत्र से 02 घायल कर्मियों और अन्य फंसे कर्मियों को एक-एक करके बाहर निकाला और उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले आए। वे घायल कर्मियों को उपचार उपलब्ध कराने के लिए इमामगंज की ओर आगे बढ़े। यह वाहन घात हमला क्षेत्र से लगभग 7-8 किमी. की दूरी पर सेबरा और कर्मस्थान के बीच फिर से भारी आईईडी विस्फोट में आ गया जिससे एमपीवी वाहन लगभग 10 फीट ऊपर हवा में उड़ा गया। लेकिन हेड कांस्टेबल/ड्राइवर सदानंद यादव ने वाहन पर नियंत्रण बनाए रखा और वाहन को सड़क के किनारे सुरक्षित ले आए। कुल मिलाकर हेड कांस्टेबल/ड्राइवर सदानंद यादव ने इस अभियान के दौरान 12 जवानों की बहुमूल्य जानें बचाई।

बाद में, घटना स्थल पर व्यापक तलाशी के दौरान भारी मात्रा में खाली कारतूस, कॉरडेक्स वायर और नक्सलियों द्वारा आईईडी विस्फोट में उपयोग किए गए इलेक्ट्रिक वायर के साथ नक्सलियों के दो शव बरामद हुए। बाद में उनकी पहचान फूल चंद भुइयां और सुकुन उर्फ केलू भुइयां के रुप में हुई। समजीत भुइयां नामक एक नक्सली भी सैन्य टुकड़ियों द्वारा पकड़ा गया था।

इस वीरतापूर्ण कार्य को करने में, उपर्युक्त कर्मियों ने प्रतिकूल परिस्थितियों में बड़ी संख्या में नक्सलियों के विरुद्व अत्यधिक व्यक्तिगत जोखिम उठाते हुए उत्कृष्ट वीरता, विशिष्ट बहादुरी और अपूर्ण साहस का प्रदर्शन किया है। उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई से ही इस अभियान में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विश्व रंजन, सहायक कमांडेंट, राम बिलास, हेड कांस्टेबल/ड्राइवर, सदानंद यादव, हेड कांस्टेबल/ड्राइवर, इलंगबाम यामा सिंह, हेड कांस्टेबल, विष्णु पाधा जमातिया, हेड कांस्टेबल, (स्वर्गीय) शशीन्द्र कुमार शर्मा, कांस्टेबल और शैलेन्द्र नाथ बेरा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.06.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 132-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. देवेन्द्र सिंह पाल,
   उप कमांडेंट
2. महिपाल सिंह रावत,
   उप निरीक्षक
3. अनिल कुमार यादव,
   उप निरीक्षक
4. चंदन कुमार,
   कांस्टेबल
5. बिजु कुमार रामचारी,
   कांस्टेबल
6. सुनील पासवान,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.04.2013 को नेंगसात के जंगल में काफी भीतर एक हटमेंट में आधुनिक हथियारों से लैस दस कैडरों के साथ जीएनएलए के सोहन-डी-शीरा (कमांडर-इन-चीफ) की उपस्थिति के बारे में विश्वसनीय सूचना मिलने पर, मेघालय पुलिस के एसडब्लूएटी दल के साथ कोबरा के सैन्य दलों ने 210 कोबरा के देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट की कमान में एक अभियान शुरु किया गया। 2300 बजे ब्रीफिंग के बाद, दल अभियान के लिए निकले और 0015 बजे जंगल की सीमा पर पहुंचे। रात्रि के दौरान पहाड़ी के ऊपर स्थित दुश्मन वाले जोखिम-भरे क्षेत्र में ऊपर की ओर चढ़ाई करना एक अत्यंत कठिन और जोखिम भरा कार्य था, लेकिन फिर भी दल 0430 बजे तक धीरे-धीरे हटमेंट के निकट पहुंचने में सफल रहे। कोबरा की कट-ऑफ टीमों ने अपने आप को कुशलतापूर्वक लक्ष्य क्षेत्र के आस-पास पोजीशन किया और हमला दल अंतिम तलाशी और हमले के लिए तैयार हो गया। पिछली मुठभेड़ों को ध्यान में रखते हुए, जिनमें विद्रोही किसी तरह घेरे से चुपके से बचकर निकल गए थे, अभियान कमांडर श्री देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट ने एक मजबूत कट ऑफ दल की योजना बनाई और व्यक्तिगत रुप से इसकी कमान संभालने का निर्णय लिया। भागने से रोकने के लिए 8 कट-ऑफ लगाए गए थे और उन्हें छिपाकर और सामरिक रुप से लगाने के बाद श्री देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट ने अपने आप को कट-ऑफ सं. 2 के साथ रखा और उप-निरीक्षक/जीडी एम.एस. रावत की कमान में हमला दल को आगे बढ़ने और हटमेंट की तलाशी लेने का आदेश दिया। हमला दल कुशलतापूर्वक छिपने के संभावित स्थान पर पहुंचा और विद्रोहियों के अचानक आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार हो गया। तलाशी ली गई लेकिन विद्रोहियों का पता नहीं चला। दिनांक 13.4.2013 को लगभग 0600 बजे कुछ सशस्त्र विद्रोहियों को पास वाली पहाड़ी से हटमेंट की ओर नीचे आते हुए देखा गया। वे कट-ऑफ 3 और 4 के बीच आए, लेकिन कट-ऑफ रणनीतिक रुप से शांत रहे, धैर्यपूर्वक इंतजार किया और विद्रोहियों को घेरे में आने दिया। जैसे ही विद्रोहियों ने हेड कांस्टेबल/जीडी डी.एल. मीणा की कमान वाले कट-ऑफ 3 के घातक क्षेत्र में प्रवेश किया, उन्हें चेतावनी दी गई और उन्हें अपने हथियार डालने का निर्देश दिया गया लेकिन विद्रोहियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की और इधर-उधर भाग गए। कट-ऑफ 3 ने भी जवाबी कार्रवाई की लेकिन सीमित गोलीबारी की क्योंकि हमला दल भी उसी दिशा में था। उनमें से लगभग 6 विद्रोही हमला दल की ओर दौड़े और हमला दल को देखकर उन्होंने उन पर निकट से अंधाधुंध गोलीबारी की। हमला करने वाले विद्रोहियों के रुप में मौत से अचानक मुठभेड़ और उनकी आग उगलती बंदूकें किसी भी साहसी सिपाही को भयभीत कर सकती थी, लेकिन अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना और अपने काफी नजदीक से जाती गोलियों से बेखबर उप-निरीक्षक/जीडी एम.एस. रावत, कांस्टेबल/जीडी चंदन कुमार और कांस्टेबल/जीडी बिजु रामचारी गोलियों के बदले गोलियां चलाकर विद्रोहियों पर जवाबी हमला किया। तीव्र गोलीबारी तीन बहादुर सिपाहियों को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकी और उन्होंने गोलीबारी की और रणनीतिक तरीके से विद्रोहियों की ओर आगे बढ़े। तीव्र संघर्ष लगभग 5 मिनट तक चला जिसके बाद विद्रोही तेजी से जंगल की ओर चले गए। संघर्ष के दौरान दो विद्रोहियों को गोली लगी लेकिन वे जंगल में बच निकलने में सफल रहे।

कुछ विद्रोही अपनी जान बचाने के लिए सीधे कट-ऑफ सं. 2 की ओर भागे जहां से श्री देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट मुठभेड़ को समन्वित कर रहे थे। जब विद्रोहियों ने अपने आप को घिरा हुआ पाया, तो वे घायल शेर बन गए और सैन्य दलों पर अंधाधुंध गोलीबारी की। गोलीबारी इतनी तेज थी कि सैन्य दल आगे नहीं बढ़ सके और विद्रोहियों पर जवाबी गोलीबारी नहीं कर सके। श्री देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट, अपने साथियों की जान को खतरे को भांपकर कवर से बाहर निकले और अपनी जान की परवाह किए बिना विद्रोहियों पर धावा बोल दिया। उनकी लक्षित और सही गोलीबारी के कारण एक विद्रोही मारा गया और अन्य दो घायल हो गए जिनकी बाद में मौत होने की सूचना मिली। इससे विद्रोही दूसरी दिशा की ओर भागे। बच कर भागने के लिए कुछ विद्रोही सीधे उप-निरीक्षक/जीडी अनिल कुमार यादव के नेतृत्व वाली कट-ऑफ सं. 6 की ओर भागे। सैन्य-टुकड़ियों से पुन: चेतावनी मिलने पर, बच कर भाग निकलने के अपने अंतिम प्रयास में विद्रोहियों ने घेरा तोड़ने की हर संभव कोशिश की। सामान्य हथियारों के साथ-साथ देशी हथियारों से भारी गोलीबारी हुई जिससे पूरी घाटी हिल गई। उप-निरीक्षक/जीडी अनिल कुमार यादव और उनके दल ने हमले का सामना करते हुए विद्रोहियों पर जवाबी गोलीबारी की लेकिन विद्रोहियों द्वारा की गई भारी गोलीबारी के कारण वे लक्षित गोलीबारी नहीं कर सके। ऐसा महसूस होने पर उप-निरीक्षक/जीडी अनिल कुमार यादव ने अपने साथी कांस्टेबल/जीडी सुनील पासवान को अपने साथ आने के लिए कहा और वे दोनों चुपके से विद्रोहियों की गोलीबारी से बाहर निकल गए। गोलीबारी और देशी हथियारों के विस्फोटों के बीच वे लगभग 50 गज तक रेंगकर उस स्थान तक गए जहां से जवाबी हमला किया जा सके। इसके अलावा, पेड़-पौधों का फायदा उठाकर वे विद्रोहियों के और नजदीक पहुंच गए और उनमें से 3 पर प्रहार किया। एक विद्रोही की घटना-स्थल पर ही मौत हो गई और अन्य विद्रोही अपनी जान बचाने के लिए भागे और घने जंगल में भागने में सफल रहे।

गोलीबारी बंद होने के बाद, क्षेत्र की अच्छी तरह से तलाशी ली गई और एक एके-56 राइफल, एक 7.65 एमएम पिस्तौल, चार जिलेटिन स्टिक, पचास डेटोनेटर, तीन वायरलेस सेटों और कई अन्य अभिशंसी सामानों के साथ जीएनएलए कैडर के दो शव बरामद किए गए। चार अन्य जीएनएलए कैडरों की मौत की भी सूचना मिली थी, लेकिन उनके शव बरामद नहीं किए जा सके।

यह अभियान अत्यधिक सामरिक कुशलता और साहस के साथ चलाया गया था, जिसके परिणामस्वरुप भारी हथियारबंद और खूंखार विद्रोही को निष्क्रिय किया गया और इसे विद्रोह के इतिहास में याद किया जाएगा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री देवेन्द्र सिंह पाल, उप कमांडेंट, महिपाल सिंह रावत, उप निरीक्षक, अनिल कुमार यादव, उप निरीक्षक, चंदन कुमार, कांस्टेबल, बिजु कुमार रामचारी, कांस्टेबल एवं सुनील पासवान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.04.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 133-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. महेन्द्र कुमार,
   द्वितीय-कमान
2. सिंकु शरण सिंह,
   सहायक कमांडेंट
3. मोहन सिंह बिष्ट,
   उप निरीक्षक
4. दलीप सिंह,
   कांस्टेबल

5. अमित कुमार,
   कांस्टेबल

6. अजीत कुमार सिंह,
   कांस्टेबल

7. नवनीश कुमार,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बिहार के गया एवं औरंगाबाद जिले में चक्रबंधा के बारुदी सुरंग से पटे, जंगलों तथा पहाड़ी वाले क्षेत्र में पड़ोसी राज्यों के वरिष्ठ नक्सली कैडरों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर, 205 कोबरा, 159, 47 एवं 153 बटालियनों के कमांडेंटों के समन्वय से श्री उमेश कुमार, आई.पी.एस., डी.आई.जी., सी.आर.पी.एफ., पटना ने वहां एक अभियान चलाने की योजना बनाई। दिनांक 06.09.2012 के इस अभियान योजना सं. 205060912215 के अनुसार दिनांक 07.09.2012 को 0200 बजे से 04 दिनों के लिए बिहार के गया और औरंगाबाद जिले में पड़ने वाले चक्रबंधा जंगल के क्षेत्र में तलाशी एवं मुकाबला संबंधी अभियान के संचालन के लिए स्थानीय पुलिस के साथ 205 कोबरा की 08 टीमों, 203 कोबरा की 04 टीमों, 159 बटालियन, सी.आर.पी.एफ. की 04 कंपनियों, 47 बटालियन की 02 कंपनियों तथा 153 बटालियन और 215 बटालियन की प्रत्येक की 01 कंपनी और एसटीएफ की 04 टीमों को कार्य सौंपा गया। उपयुक्त ब्रीफिंग के पश्चात सभी टीमों की संपूर्ण कमान 205 कोबरा के द्वितीय कमान, महेन्द्र कुमार को सौंपी गयी।

अभियान के दूसरे दिन, अर्थात दिनांक 08.09.2012 को लगभग 0600 बजे शुरु किए गए अभियान के बाद जब महेन्द्र कुमार, 2-आई/सी के पर्यवेक्षण में डी/205 कोबरा की 02 टीमें (सिंकु शरण सिंह, सहायक कमांडेंट, के नेतृत्व में टीम सं. 10 और महेन्द्र कुमार सिंह, 2-आई/सी, के नेतृत्व में टीम सं.12) लगभग 1120 बजे लक्षित क्षेत्र के नजदीक पहुंच रही थी, तभी उन्हें डुमरी नाला की ओर लगभग 350 मीटर की दूरी पर एक शक्तिशाली आईईडी का धमाका सुनाई दिया, जिसके फौरन बाद इन दलों की टुकड़ियों पर नक्सलियों की ओर से गोलियों की बौछार की जाने लगी। नक्सली ऊंचाई वाले स्थानों पर चट्टानों के पीछे सुरक्षित रुप से छिपे हुए थे जो कि उन्हें प्राकृतिक एवं अभेद्य बचाव प्रदान कर रहा था और साथ ही उन्होंने अपने सामने के हिस्से में बारुदी सुरंग बिछा रखी थी और इस प्रकार वे सुरक्षा बलों को प्रभावी रुप से भारी क्षति पहुंचाने की स्थिति में थे। तथापि, कोबरा के उच्च प्रशिक्षण प्राप्त और कठिन परिस्थितियों में भी लड़ने के लिए तैयार टुकड़ियां नक्सलियों के इरादे कामयाब नहीं होने दे सकती थीं।

मुख्य दलों को कवरिंग फायर प्रदान करने के लिए पीछे छोड़कर, 2 आई/सी, महेन्द्र कुमार ने सहायक कमांडेंट सिंकु शरण सिंह, एसआई/जीडी मोहन सिंह बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी अमित कुमार, कांस्टेबल/जीडी नवनीश कुमार और कांस्टेबल/जीडी अजीत कुमार सिंह के एक छोटे समूह के साथ भारी बारुदी सुरंग बिछे हुए क्षेत्र की परवाह किए बगैर नक्सलियों पर गोलीबारी करते हुए बेहद सूझबूझ से आगे बढ़ना जारी रखा और उन्होंने नक्सलियों को उनके स्थान से खदेड़ कर अत्यधिक रणनीतिक महत्व वाले ऊंचे स्थान पर कब्जा कर लिया। यद्यपि, रुक-रुक कर लगभग 5 घंटे तक गोलीबारी होती रही, तथापि, दिलेर लड़ाकों की यह छोटी सी टुकड़ी रेंगते हुए नक्सलियों के बेहद नजदीक वाले स्थान पर पहुंच गयी जहां गोली से बचने का ठिकाना नहीं था और वहां से उन्होंने थोड़ा ऊपर उठते हुए गोलीबारी की सही दिशा के लिए पहले दिखाने एचई बम, यूबीजीएल शेल और राइफल ग्रेनेड का प्रयोग करके कम से कम उन दो नक्सलियों को मार गिराया, जो सुरक्षा बलों के दल/टीम पर गोलियों की बौछार कर रहे थे। इसके पश्चात, उपर्युक्त टीम ने प्रभावी रुप से यूबीजीएल शेल, 51 एमएम मोर्टार, एचई बम और राइफल ग्रेनेड का प्रयोग करना शुरु कर दिया। 2-आई/सी, महेन्द्र कुमार की टुकड़ी और इस छोटी टीम द्वारा सामने से अचानक किए गए हमले से नक्सली भौंचक्के रह गए और वे पीछे हटने पर मजबूर हो गए। संपूर्ण अभियान के दौरान, उपर्युक्त अधिकारी और उनकी टीम के सदस्यों ने अनुकरणीय साहस, बहादुरी और वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया, जिसमें गंभीर व्यक्तिगत जोखिम शामिल था।

इसी बीच, उप कमांडेंट, लाल के अधीन टीम सं. 2 और सहायक कमांडेंट, नीरज कुमार के अधीन टीम सं.3, जिन्हें पहले ही इस गोलीबारी वाले स्थान के पश्चिमी ओर से एक तरफ से आगे बढ़ने का आदेश दिया गया था, चट्टानों से भरे भूभाग और बारुदी सुरंग वाला क्षेत्र होने के कारण वांछित मार्ग पर थोड़ी धीमी गति से आगे बढ़ रही थी। लगभग 1646 बजे टीम सं. 3(जो 1130 बजे से ही पश्चिमी ओर से सूझबूझ से आगे बढ़ रही थी) जब डुमरी नाला के दक्षिण पूर्व की ओर लगभग 170 मीटर आगे बढ़ी, तभी उसके स्काउट्स कांस्टेबल/जीडी भृगु नंदन चौधरी और कांस्टेबल/जीडी दलीप सिंह नक्सलियों की गोलीबारी के दायरे में आ गए और उन्होंने आत्मरक्षा में जवाबी गोलियां चलाईं, जिसमें एक नक्सली स्काउट मारा गया। इसके बाद फिर से वहां भारी गोलीबारी शुरु हो गई और कांस्टेबल/जीडी जोध सिंह, अमन कुमार, मनोज कुमार, रंजेश राय और टीम लीडर एसी नीरज कुमार के साथ-साथ उक्त दोनों स्काउट नक्सलियों के साथ

सूझबूझ से मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ गए। उसी समय नक्सलियों ने आईईडी से धमाका किया जिससे कांस्टेबल/जीडी भृगु नंदन चौधरी, कांस्टेबल/जीडी दलीप सिंह, कांस्टेबल/जीडी जोध सिंह और एसी नीरज कुमार घायल हो गए।

दल में आगे होने के कारण कांस्टेबल/जीडी भृगु नंदन चौधरी के दोनों पैर बुरी तरह से जख्मी होकर पूरी तरह से विकृत हो चुके थे। तथापि, असहनीय पीड़ा के बावजूद यह स्थिति उन्हें रेंगते हुए आगे बढ़कर एक गड़े के निकट पोजीशन लेने और नक्सलियों पर गोलीबारी जारी रखने से नहीं रोक सकी और अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने कांस्टेबल/जीडी दलीप सिंह के शस्त्र की मैगजीन को बदला, जो कि आईईडी के धमाके के परिणामस्वरुप उनके हाथ से फिसल गया था और ऐसा करते हुए उन्होंने दलीप सिंह को नक्सलियों पर गोलीबारी जारी रखने में सहायता प्रदान की। कांस्टेबल/जीडी दलीप सिंह ने भी शुरुआती झटके से उबरते हुए अपने घायल हाथों से नक्सलियों पर गोलीबारी शुरु कर दी और उन्हें मुख्य दल के सदस्यों को घायल करने तथा उनके हथियार छीनने के लिए नजदीक आने से रोकते हुए एक निश्चित दूरी पर उलझाए रखा। यदि टीम सं. 3 के स्काउट्स ने असाधारण साहस का प्रदर्शन नहीं किया होता, तो बड़ी संख्या में दल के सदस्य हताहत हो जाते। आईईडी के धमाकों से घायल होने के बावजूद नक्सलियों से मुकाबला जारी रखते हुए कांस्टेबल/जीडी दलीप सिंह ने मौत को ललकारने वाले साहस एवं बहादुरी का प्रदर्शन किया।

इस अभियान में, बुद्धिमत्तापूर्ण योजना, सटीक निष्पादन, सही रणनीति के साथ-साथ अत्यंत व्यक्तिगत जोखिम के समक्ष 2-आई/सी, महेन्द्र कुमार, एसी, सिंकु शरण सिंह, एसआई/जीडी मोहन सिंह बिष्ट, कांस्टेबल/जीडी, अमित कुमार, कांस्टेबल/जीडी, दलीप सिंह, कांस्टेबल/जीडी, नवनीश कुमार और कांस्टेबल/जीडी अजीत कुमार सिंह द्वारा प्रदर्शित अनुकरणीय नेतृत्व एवं बहादुरी, असाधारण साहस एवं वीरता के कारण सफलता प्राप्त हुई, जिसके लिए वे सराहना एवं सम्मान के पात्र हैं।

विभिन्न चैनलों तथा समाचार पत्रों की रिपोर्टों के माध्यम से प्राप्त आसूचना संबंधी सूचनाओं के अनुसार इन मुठभेड़ों के दौरान सीपीआई (माओवादी) के एक जोनल कमांडर, अरबिंद भुइयां सहित कम से कम आधा दर्जन कुख्यात नक्सली मारे गए थे और इस गोलीबारी में दर्जनों अन्य नक्सली घायल हुए थे। एक संदिग्ध नक्सली को, जिसे ए-205 कोबरा की टीम सं.-02 द्वारा गिरफ्तार कर सिविल पुलिस के हवाले कर दिया गया था, और प्रारंभिक पूछताछ के उपरांत रिहा कर दिया गया था।

बरामदगी:-

01. इलेट्रॉनिक डेटोनेटर-96
02. बेस प्लग और स्प्रिंग के साथ भारी विस्फोटक हथगोले के 15 खोखे और बेस प्लग के बगैर 03 हथगोले
03. डेटोनेटिंग कॉर्ड-150 मीटर
04. लैंड माइन बम-65
05. भारी विस्फोटक पाउडर-02 कि.ग्रा.
06. डायरेक्ट करंट चार्जर-01
07. टिफिन बम-01
08. डेटोनेटर के साथ पाइप बम-01
09. डेटोनेटर के बगैर पाइप बम-07
10. काले रंग का बिजली का तार-40 मीटर
11. गोला बारुद 30-6-6 के खोखे-37
12. गोला बारुद 30-0-6 के जिंदा राउंड-01
13. 7.62 एमएम चार्जर क्लिप-03
14. 7.62 एमएम के खोखे-79
15. 7.62 एम एम x 39 एमएम के खोखे-59
16. 5.56 एमएम के खोखे-19
17. 7.2 के जिंदा राउंड-10

18. 7.2 के खोखे-07

19. नक्सल साहित्य-02

20. वसंत जी की चिकित्सा पर्ची-01

21. बैग-01

22. पॉलीथीन शीट-20 मीटर

23. बिजली रहित डेटोनेटर-03

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री महेन्द्र कुमार, द्वितीय कमान, सिंकू शरण सिंह, सहायक कमांडेंट, मोहन सिंह बिष्ट, उप निरीक्षक, दलीप सिंह, कांस्टेबल, अमित कुमार, कांस्टेबल, अजीत कुमार सिंह, कांस्टेबल और नवनीश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.09.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 134-प्रेज/2014 राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. गुरुचरण कालिंदिया,
   सहायक कमांडेंट

2. धर्मेंद्र राय,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29.05.2012 को 20:30 बजे श्री गुरुचरण कालिंदिया, सहायक कमांडेंट को पुलिस अधीक्षक, शिवसागर से पुलिस स्टेशन-मथुरापुर के अंतर्गत गांव-लेंगीबोर में उल्फा/एटी के कुख्यात कैडरों, रुपांतर काकोती, आधरुमन बरुआ, फणींद्र मोरन/रॉबिन चेतिया की मौजूदगी के बारे में सूचना मिली। यूनिट कमांडेंट, श्री शैलेन्द्र के साथ विचार-विमर्श के पश्चात सक्रिय कार्रवाई के दौरान अतिरिक्त सहायता के लिए निरीक्षक/जीडी, ग्यासुद्दीन की कमान के अधीन टीम सं.17 के साथ-साथ आक्रमण के मोड में श्री गुरुचरण कालिंदिया, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन टीम सं. 10 के साथ बदलते वर्तमान परिदृश्य के अनुसार वहां घेराबंदी डालने और तलाशी अभियान की योजना बनाई गई।

दिनांक 30.05.2012 को दोनों टीमों को छोटे समूहों में विभाजित कर उन्हें घेराबंदी के लिए पुन: छोटे-छोटे समूहों में विभाजित करने के अलावा कट ऑफ डालने के लिए संदिग्ध क्षेत्रों में अलग-अलग हिस्सों में तैनात कर दिया गया। उसी समय सहायक कमांडेंट, श्री गुरुचरण कालिंदिया की कमान के अधीन एक सेक्शन को असम पुलिस कमांडो के एक सेक्शन के साथ पहाड़ी भूभाग में इधर-उधर स्थित घरों के विभिन्न क्लस्टरों में तलाशी के कार्य में लगाया गया। जैसे ही सहायक कमांडेंट, श्री गुरुरचरण कालिंदिया के कमान वाली टीम एक ऊंचे टीले के नीचे से गुजर रही थी, उसी समय ऊंचाई पर रणनीतिक दृष्टि से पोजीशन लिए हुए उल्फा के समूह ने अचानक स्वचालित हथियारों से उस टुकड़ी पर गोलीबारी शुरु कर दी, जिसका कोबरा तथा असम पुलिस की संयुक्त टीमों द्वारा तत्काल जवाब दिया गया। सहायक कमांडेंट, श्री गुरुचरण कालिंदिया और कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र राय ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर आगे बढ़कर जवाबी हमला किया और अंतत: उल्फा के समूह की हिम्मत जवाब दे गई और वे टीले से नीचे कूद गए। श्री गुरुचरण कालिंदिया और कांस्टेबल/जीडी धर्मेन्द्र राय ने उनका पीछा किया और दो उग्रवादियों को उलझाते हुए अपना निशाना बनाया और इसी बीच उग्रवादियों

ने कोबरा पार्टी पर दो हथगोले फेंके लेकिन सहायक कमांडेट श्री गुरुचरण कालिंदिया के नेतृत्व वाली पार्टी ने उन्हें नाकाम कर दिया। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण बुरी तरह से घायल कैडरों ने भाग कर नागालैंड में प्रवेश कर लिया और वे चारों ओर जंगल में उगी घनी झाड़ियों में छिप कर गायब हो गए। उसके बाद टुकड़ी ने बेहद सूझबूझ से उस क्षेत्र की तलाशी ली और उन्होंने वहां से 01 मैगजीन तथा 42 जिंदा राउंड के साथ 01 एके-56, 02 हथगोले, 01 पिस्तौल की मैगजीन, 01 आईईडी और 10 कारतूस बरामद किया।

दिनांक 01.06.2012 को, पुलिस पार्टी को गांव-लेंगीबोर (असम-नागालैंड सीमा) से बुरी तरह से घायल अवस्था में हीरेन गोगोई उर्फ रॉबिन चेतिया नामक उल्फा के एक कैडर को गिरफ्तार करने में सफलता मिली और उसे अस्पताल में दाखिल करवाया गया। उसने बताया कि मुठभेड़ के दौरान उल्फा के कुख्यात कैडर प्रदीप गोगोई, रुपांतर कोकोनी, आधरुमण बरुआ और फणींद्र मोरन उनके साथ थे और उनमें से दो को कोबरा पार्टी की गोली लगी थी।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गुरुचरण कालिंदिया, सहायक कमांडेंट और धर्मेंद्र राय, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.05.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 135-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सौनक कुमार दास, (मरणोपरांत)
सहायक कमांडेंट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री सौनक कुमार दास, सहायक कमांडेंट को दिनांक 31.05.2013 को लगभग 1330 बजे विश्वस्त सूत्र से यह सूचना प्राप्त हुई कि छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमा पर उनकी जिम्मेवारी वाले क्षेत्र में नक्सलियों के एक समूह ने डेरा डाल रखा है और वे सुरक्षा बलों पर भारी हमले की योजना बना रहे हैं। सौनक कुमार दास, सहायक कमांडेंट ने तत्काल अपने सुरक्षा बलों को इकटठा कर 'ए' स्तर के अभियान की योजना बनाई और उन्होंने चिड़ईपानी क्षेत्र के गहरे और घने जंगलों में, जहां नक्सलियों के छिपे होने की सूचना थी, अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया। अधिकारी और उनकी टुकड़ी ने जंगल को छान मारा, लेकिन उन्हें किसी संदिग्ध गतिविधि का पता नहीं चला। अगले दिन जब टुकड़ी अपने शिविर की ओर लौट रही थी, तभी पुन: श्री सौनक कुमार दास, एसी को अपने स्थानीय स्रोत से सूचना मिली कि नक्सलियों का एक समूह खल्लारी नाले से आगे खल्लारी के जंगल में छिपा हुआ है। चूंकि वह क्षेत्र बेहद दुर्गम और जोखिम भरा था, इसलिए श्री सौनक कुमार दास, सहायक कमांडेट ने बोराई के थाना प्रभारी से टेलीफोन पर संपर्क किया। सिविल पुलिस के प्रतिनिधियों के साथ-साथ सौनक कुमार दास, एसी बी/डी के विशेष प्लाटूनों के साथ उसे क्षेत्र के लिए फौरन रवाना हो गए।

बताए गए क्षेत्र के निकट पहुंचने से पूर्व श्री सौनक कुमार दास, एसी ने सूचना की पुष्टि करने के लिए गांव में स्थानीय स्रोत से संपर्क किया और उन्होंने सूचना की पुष्टि की प्राप्ति के आधार पर कट ऑफ के रुप में खल्लारी नाला के किनारे बी/211 की प्लाटून को तैनात कर दिया और स्थानीय पुलिस के मार्गदर्शन में वे लक्षित क्षेत्र की ओर आगे बढ़ गए। जब यह पार्टी खल्लारी गांव के साथ वाले घने जंगल में आगे बढ़ रही थी, तभी उन्होंने वहां कुछ संदिग्ध गतिविधियों के साथ-साथ पद चिन्ह देखे, जो संदिग्ध रुप से उन नक्सलियों के प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने जंगल के काफी भीतर घुसते हुए, पद चिन्हों के पीछे चल कर टुकडी का नेतृत्व करते हुए नक्सलियों का ठिकाना ढूंढ़ निकाला। जब यह पार्टी नक्सलियों के छिपने के ठिकाने के निकट पहुंची, तभी एक छोटे चट्टान के पीछे छिपे भारी हथियारों से लैस नक्सलियों के एक समूह ने अलग-अलग दिशाओं से पुलिस दल पर गोलियों की बौछार शुरु कर दी। तत्काल, श्री सौनक कुमार दास, एसी और उनकी टुकड़ी ने प्रभावी गोलीबारी के साथ इसका जवाब दिया। तत्पश्चात, डी/211 की टुकड़ी और सशस्त्र नक्सलियों के बीच परस्पर भारी गोलीबारी हुई।

अफरा-तफरी वाली इस गोलीबारी में श्री सौनक कुमार दास, एसी को गोली लग गई। गोलियों से छलनी होने के बावजूद उन्होंने प्रभावी रुप से अपनी टुकडी का नेतृत्व करते हुए जवाबी हमला जारी रखा। उनके सतत एवं उत्साहवर्धक प्रयासों के कारण टुकड़ी ने पूरे जोश के साथ बहादुरी से नक्सलियों का मुकाबला किया। टुकड़ी द्वारा की गई प्रभावी गोलीबारी के परिणामस्वरुप नक्सली, जो कि भारी हथियारों से लैस थे और अपना आधिपत्य कायम रखने के लिए ऊंचाई वाले स्थानों पर बैठे हुए थे, अपनी पोजीशन को छोड़कर घने जंगल की आड़ में भागने को मजबूर हो गए और भागते समय वे अपने थैले व अन्य आवश्यक सामग्रियां पीछे छोड़ गए। यद्यपि, सामने रह कर नेतृत्व प्रदान कर रहे श्री सौनक कुमार दास, एसी घायल थे और उनके शरीर से काफी खून बह रहा था, तथापि, उन्होंने नक्सलियों पर गोली चलाते हुए अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और अपनी टुकड़ी को जवाबी हमले के लिए प्रेरित किया। ऐसा करके उन्होंने सुरक्षा बलों को बड़ी क्षति से बचाया। गंभीर रुप से घायल सौनक कुमार दास, एसी को फौरन वहां से नागरी जन स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया, जहां उन्हें 'मृत लाया गया' घोषित कर दिया गया। उनकी मृत्यु का कारण 'गोली लगने से घायल होने के कारण हुआ आघात और हैमरेज'' बताया गया। इसके बाद अगले दिन कुछ स्थानीय लोगों द्वारा सूचित किया गया कि नक्सलियों के छिपने वाले स्थान पर चारों तरफ खून के धब्बे थे, और कुछ स्थानीय समाचार पत्रों ने भी खबर दी कि दोनों ओर से गोलीबारी के दौरान कुछ नक्सली या तो मारे गए थे या बुरी तरह घायल हो गए थे।

श्री सौनक दास, एसी एक बहादुर अधिकारी थे, जिन्होंने सामने से टुकड़ी का नेतृत्व किया। गंभीर रुप से घायल होने के बावजूद और अपनी जान की परवाह किए बगैर उन्होंने बड़ी संख्या में भारी हथियारों से लैस नक्सलियों के विरुद्व अपने जवानों का नेतृत्व किया। इस अधिकारी के साहसिक एवं बहादुरीपूर्ण कार्य ने सुरक्षा बलों को हताहत करने के नक्सलियों के प्रयास को विफल किया और अपने कार्मिकों की जान बचाई। इस अधिकारी ने राष्ट्र के लिए कर्त्तव्य की राह पर अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

इस मुठभेड़ में (स्व.) श्री सौनक कुमार दास, सहायक कमांडेंट ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.06.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 136-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जयशंकर कुमार उपाध्याय, (मरणोपरांत)
   सहायक कमांडेंट
2. चित्रसेन गौंड,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन-पाइकमल, जिला-बोलनगीर के अंदर गंधमर्धन पहाड़ी (बोलनगीर-बारगढ़, सीमा) के क्षेत्र में माओवादी समूह (20-25) की मौजूदगी और वहां उनके द्वारा कुछ हिंसक गतिविधियों को अंजाम देने की योजना बनाने की सूचना की प्राप्ति के आधार पर 216 बटालियन, सीआरपीएफ, 12 बटालियन, सीआरपीएफ, राज्य के एसओजी और डिस्ट्रिक्ट वालंटरी फोर्स (डीवीएफ) की टुकड़ियों को शामिल करते हुए एक अभियान चलाने की योजना बनाई गई। सैन्य टुकड़ियों को 4 दलों में विभाजित किया गया और उन्हें जंगल की सघन तलाशी लेने का कार्य सौंपा गया, जिसमें पूरा दो दिन का समय लगता था। सभी दलों को अलग-अलग दिशाओं से इस कार्य में लगाया गया, ताकि वे उग्रवादियों के भाग निकलने के मार्गों को कवर कर सकें और उन पर बहु-आयामी हमले की शुरूआत कर सकें। 12वीं बटालियन के सहायक कमांडेंट, जयशंकर कुमार उपाध्याय के नेतृत्व में बारगढ़ के डीवीएफ के 14 कार्मिकों के साथ-साथ सीआरपीएफ के बारह कार्मिकों के एक दल द्वारा मर्यादापल्ली की ओर से दिनांक 04.09.2013 को अभियान की शुरूआत की गई। यह

क्षेत्र भौगोलिक रूप से बेहद कठिनाई वाला है जहां की स्थलाकृति में खड़ी पहाड़ी और घने जंगल हैं और यह माओवादियों की सशक्त मौजूदगी के लिए बदनाम है। गंधमर्दन पहाड़ी की विभिन्न चोटियों और जंगलों की दिनांक 04.09.2013 और 05.09.2013 तक दो दिनों की तलाशी के पश्चात सैन्य टुकड़ियां पहाड़ी की चोटी के ऊपर रात्रि विश्राम के पश्चात दिनांक 06.09.2013 को लगभग 0400 बजे नीचे उतरने लगीं। जैसे ही ये टुकडियां उस क्षेत्र को पार करते हुए आगे बढ़ रही थीं, तभी नागीहरन नाला के निकट उन पर नक्सलियों ने घात लगाकर हमला कर दिया और अंधाधुंध भारी गोलीबारी करने लगे। नक्सलियों ने नाले के दोनों तरफ पोजीशन ले रखी थी और वे बेहतर स्थिति में थे। सैन्य टुकड़ियों ने जल्द ही स्वयं को जोखिमप्रद स्थिति में पाया, जहां नक्सलियों की आग उगलती बंदूकों की गोलियों और उनकी ओर फेंके गए हथगोलों के विस्फोटों से उनकी जान गंभीर खतरे में थी। शुरूआती आघात और अचरज से उबरते हुए सहायक कमांडेंट, जयशंकर कुमार उपाध्याय ने अत्यंत साहस का प्रदर्शन करते हुए दुश्मन की भारी गोलीबारी का प्रभावी जवाब दिया और टुकड़ियों का भी मनोबल बढ़ाया। थककर चूर होने और घिर जाने के बावजूद सैन्य टुकड़ियों ने बहादुरीपूर्वक जवाबी कार्रवाई की और वे रेंगते हुए सुरक्षित स्थानों की ओर चले गए।

दोनों ओर से बेहद नजदीक से भयंकर गोलीबारी हुई, लेकिन सुरक्षा बलों के समक्ष भारी बाधाएं थीं, क्योंकि नक्सली ऊंचे स्थानों पर निर्मित अपने सुरक्षित मोर्चे पर अच्छी तरह से तैनात थे, जबकि सैन्य टुकड़िया लगभग खुले स्थान में उपलब्ध न्यूनतम कवर के पीछे स्वयं को बमुश्किल सुरक्षित रख पा रही थीं। स्थिति को भांपते हुए और यह देखते हुए कि कवर और जमीन को चारों ओर से भेदते हुए गोलियों एवं गोलाबारूदों की बौछार के बीच उनके जवानों का जीवन खतरे में है, कमांडर, जयशंकर कुमार उपाध्याय ने दुश्मन के ऊपर जवाबी हमले की योजना बनाई। उन्होंने अपनी टुकड़ी को यूबीजीएल ग्रेनेड का प्रयोग करते हुए नक्सलियों की सभी पोजीशन पर भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया और उनकी ओर सूझबूझ से आगे बढ़ने के लिए भी कहा, जबकि किनारे से हमला करने के लिए दोनों ओर से जारी भारी गोलीबारी के बीच ही वे कांस्टेबल/जीडी चित्रसेन के साथ अपने स्थान से फिसलते हुए थोड़ा नीचे आ गए। अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालते हुए उनकी जोड़ी लगभग 50 मीटर तक रेंगते हुए नक्सलियों के बायीं ओर पहुंच गई और अधिकतम गोलीबारी करते हुए उन्होंने भारी जवाबी हमला शुरू कर दिया। किनारे से किए गए हमले के साथ-साथ टुकड़ियों की ओर से ठोस एवं बहादुरीपूर्ण प्रतिक्रिया से दुश्मन भौंचक्के रह गए और उन्होंने तीव्र गोलीबारी बंद कर दी। इस बदलती परिस्थिति का लाभ उठाते हुए जयशंकर कुमार उपाध्याय, सहायक कमांडेंट और उनके सहयोगी कांस्टेबल/जीडी चित्रसेन गौंड ने तालमेल बनाकर एक-दूसरे को सहायता देते हुए आगे बढ़कर गोलीबारी की और तीन नक्सलियों को अपना निशाना बनाया। नक्सलियों के घायल होने से उनके सभी साथियों को भारी झटका लगा जिससे उनका हौसला पस्त हो गया और घने जंगल एवं पहाड़ी स्थलाकृति का लाभ उठाते हुए वे वहां से भागने लगे। कमांडर और उनके सहयोगी ने भाग रहे नक्सलियों का पीछा किया और उन्होंने काली वर्दी पहने एक नक्सली के शव को बरामद किया जिससे कुछ ही दूरी पर एक 12 बोरे की बंदूक पड़ी हुई थी। अभियान क्षेत्र से विस्फोटक, कैम्पिंग सामग्री और नक्सल साहित्य जैसी अभिशंसी सामग्रियां भी जब्त की गईं।

मुठभेड़ के दौरान श्री जयशंकर कुमार उपाध्याय, सहायक कमांडेंट और उनके सहयोगी कांस्टेबल/जीडी चित्रसेन गौंड ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर भारी जोखिम उठाते हुए कर्तव्य के प्रति उच्च स्तर की पेशेवरता और समर्पण के साथ अनुकरणीय साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया। उन्होंने न सिर्फ अपने बल के कार्मिकों के ऊपर घात/हमले और परिणामी नुकसान के प्रयास को विफल किया, बल्कि सीपीआईएम (एम) के कैडर को मार गिराया। उनका नेतृत्व, कमान और नियंत्रण अनुकरणीय था और अत्यंत जीवट, दृढ़ निश्चय तथा धैर्य के प्रदर्शन के कारण यह दल अभियान में सफल रहा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) जयशंकर कुमार उपाध्याय, सहायक कमांडेंट और चित्रसेन गौंड, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.09.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 137-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आशुतोष तिवारी,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 30.01.2012 को 159वीं बटालियन, सीआरपीएफ यूनिट द्वारा तैयार की गई आसूचना संबंधी विशेष सूचना के आधार पर द्वितीय कमान छोटे लाल के नेतृत्व में 159वीं बटालियन, सीआरपीएफ का त्वरित कार्रवाई दल, निरीक्षक/जीडी सुदर्शन कुमार सिंह के साथ निरीक्षक/जीडी पी. सुरेश की कमान में बटालियन की दो प्लाटूनें, श्री शंभू प्रसाद, सहायक पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), गया के कमान में गया पुलिस का सिविल घटक, श्री आर.बी. सिंह, कमांडेंट-159 बटालियन, सीआरपीएफ की संपूर्ण कमान में कारपी पुलिस स्टेशन, जिला अरवल (बिहार) का सिविल पुलिस घटक पुलिस स्टेशन-कारपी, जिला-अरवल (बिहार) के अंदर गांव-लोधीपुर में छापेमारी और तलाशी संबंधी कार्रवाई के लिए गया।

लगभग 1800 बजे गांव-लोधीपुर के निकट पहुंच कर छापेमारी एवं तलाशी दल ने लोदीपुर गांव के खेतों में धान की कटी हुई फसलों के ढ़ेर में तलाशी शुरु की। कमांडेंट श्री आर.बी. सिंह ने हेड कांस्टेबल/जीडी आशुतोष तिवारी को बुलाकर उन्हें धान के पुआल के एक ढ़ेर की तलाशी लेने का निर्देश दिया। पुआल के ढ़ेर को हटाने/तलाशी लेने के दौरान हेड कांस्टेबल/जीडी आशुतोष तिवारी की निगाह लाल कपड़े के एक बंडल के ऊपर पड़ी और उन्होंने कमांडेंट, श्री आर.बी. सिंह को वहां बुला लिया। गठरी की तलाशी लेने पर उसके अंदर कुछ हथियार/गोलाबारुद मिले । इसके बाद कमांडेंट, आर.बी. सिंह ने पुआल के दूसरे ढ़ेर की तलाशी लेने का निर्देश दिया। जब तलाशी दल पुआल के दूसरे ढ़ेर की तलाशी लेने के लिए आगे बढ़ा, तभी उनकी नजर हाथ में कार्बाइन थामे हुए हथियारों के जखीरे की रक्षा कर रहे एक व्यक्ति/नक्सली के ऊपर गई। भूतपूर्व सैनिक निरीक्षक/जीडी प्रमोद कुमार ने भी कार्बाइन थामे नक्सली को देखा, जो पुआल के ढ़ेर में छिपा हुआ था और उसकी उंगली कार्बाइन के घोड़े पर थी।

इस समय पुलिस दल उस खेत में नक्सली के कार्बाइन की गोलीबारी के दायरे में बेहद असुरक्षित था और स्थिति उनके लिए घातक हो सकती थी। अपनी सुरक्षा और जीवन की परवाह किए बगैर हेड कांस्टेबल/जीडी आशुतोष तिवारी भाग कर लगभग 15 गज की दूरी तक गए और उन्होंने सामने से उस नक्सली के ऊपर छलांग लगाते हुए उसे गोली चलाने का कोई मौका दिए बगैर गिराते हुए उससे हथियार छीन लिया और इस प्रकार पुलिस दल के सदस्यों की जान भी बचाई और वे घायल भी नहीं हुए। बाद में 2-आई/सी, छोटे लाल, सहायक पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), गया, शंभू प्रसाद और कांस्टेबल/जीडी, जगदीश राय गोदारा ने तेजी दिखाते हुए उस नक्सली को पकड़ लिया और उसकी कार्बाइन ले ली। यह अदम्य साहस का ऐसा कृत्य था, जिससे पुलिस दल के सदस्यों को नक्सली के हाथों घायल होने/मारे जाने से बचाया जा सका।

इस बहादुरीपूर्ण कृत्य के निष्पादन में उपर्युक्त हेड कांस्टेबल/जीडी ने विपरीत परिस्थितियों में अपने जीवन को बेहद जोखिम में डालते हुए उल्लेखनीय शौर्य, असाधारण बहादुरी एवं अद्वितीय साहस का प्रदर्शन किया है। उनके वीरतापूर्ण कार्य के कारण अन्य सदस्यों के प्राणों की रक्षा के साथ-साथ अभियान में बड़ी सफलता प्राप्त हुई।

बरामदगी:-

1. 9 एमएम कार्बाइन-01
2. .303 बोल्ट एक्शन पुलिस राइफल-02
3. .315 बोर बेल्जियम सेमी ऑटोमेटिक राइफल-01
4. .315 बोर बोल्ट एक्शन राइफल-03
5. .315 बोर का जिंदा गोला बारुद-90
6. .303 गोलाबारुद-129
7. 9 एमएम गोलाबारुद-20
8. .303 खाली खोखे-02
9. बेल्जियम सेमी ऑटोमेटिक राइफल मैगजीन-04
10. .303 मैगजीन-06
11. कार्बाइन मैगजीन-01
12. चार्जर क्लिप-05

13. मोबाइल सेट-01

14. बंदोलियर-07

इस मुठभेड़ में श्री आशुतोष तिवारी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30.01.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 138-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. आर.के. बहाली,
   सहायक कमांडेंट

2. मो. राशिद खान,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02 अगस्त, 2011 को अतिरिक्त उप निदेशक, एसआईबी से आसूचना संबंधी यह सूचना प्राप्त होने पर कि केपीएलटी के उग्रवादियों ने दीमापुर के एक चाय बागान के मालिक श्री जे.डी. शर्मा से एक लाख रु. की राशि की जबरन मांग की है और उन्होंने मांग पूरी नहीं करने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी है। एफ/155 के सहायक कमांडेंट श्री आर.के. बहाली को केपीएलटी के उग्रवादियों को पकड़ने के लिए योजना बनाने का कार्य सौंपा गया। तदनुसार श्री आर.के. बहाली, एसी ने एक विस्तृत एवं सुनियोजित गोपनीय अभियान की योजना बनाई और जिला-कार्बी आंगलोंग, असम के अधीन बोकाजान पुलिस स्टेशन के थाना प्रभारी सहित राज्य पुलिस के चार कार्मिकों तथा सीआरपीएफ के आठ कार्मिकों के एक छोटे दल को शामिल करते हुए एक संयुक्त अभियान शुरु किया गया। श्री जे.डी. शर्मा (चाय बागान मालिक) से संपर्क कर उन्हें विश्वास में लिया गया। श्री जे.डी. शर्मा से संपर्क करने के लिए उग्रवादियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मोबाइल नंबर हासिल किया गया और चाय बागान के मालिक की भूमिका निभाते हुए सौदा पक्का करने के लिए उग्रवादियों के साथ संपर्क स्थापित करने का कार्य एफ/155 के कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान को सौंपा गया। इस तथ्य से पूर्णतया अवगत होने के बावजूद कि वे गंभीर जोखिम का सामना करने जा रहे हैं, कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान ने स्वेच्छा से इस जिम्मेदारी को स्वीकार किया और वे सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए रवाना हो गए। उन्होंने संदिग्ध केपीएलटी उग्रवादियों से फोन पर संपर्क किया और अभियान की योजना के अनुसार जबरन मांगे गए पैसे के लेन-देन का स्थान तय किया। उग्रवादियों ने उन्हें यह स्पष्ट निर्देश दिया था कि वे जबरन मांगे गए पैसे के लेन-देन वाले निर्धारित स्थान पर अपने किसी भी सहयोगी को साथ में लेकर नहीं आएं। सौंपे गए कार्य के निष्पादन में कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान की क्षमता में पूर्ण विश्वास जताते हुए श्री आर.के. बहाली, एसी (एफ/155 के कंपनी कमांडर) और बोकाजान के थाना प्रभारी ने संयुक्त रुप से यह निर्णय लिया कि जब कांस्टेबल/जीडी, मो. राशिद खान पूर्व निर्धारित समय और स्थान पर उग्रवादियों को पैसा देने के लिए अकेले रवाना होंगे, तो इस छोटे दल के अन्य सदस्य तीन नागरिक वाहनों अर्थात एक ट्रक, एक टाटा मैजिक और एक ऑटोरिक्शा में उन्हें कवर प्रदान करने के लिए उनको घेरे में लेते हुए आगे बढ़ेंगे और मौका मिलते ही उग्रवादियों को दबोच लेंगे। दिनांक 10.8.2011 को लगभग 1540 बजे कांस्टेबल/जीडी, मो. राशिद खान (चाय बागान के मालिक के वेश में) उग्रवादी समूह को पैसे देने के लिए पूर्व-निर्धारित स्थान पर पहुंचे जो कि घने जंगल से गुजरता हुआ पुलिस स्टेशन बोकाजान के अंदर लखीजान जाने वाले मार्ग के बीच में था। ट्रक में उनके पीछे चल रहे श्री आर.के. बहाली, एसी, बोकाजान के थाना प्रभारी, कांस्टेबल/जीडी प्रवीण शिंदे और कांस्टेबल/जीडी राजीव दास ने वाहन में खराबी का बहाना करते हुए निर्धारित स्थल से कुछ मीटर पहले ही

अपने ट्रक को रोक दिया। टाटा मैजिक में सवार समूह ने वहां से कुछ मीटर आगे अपनी गाड़ी रोक दी और भाड़े के लेन-देन का रुप देते हुए बातचीत में शामिल हो गए। धावा बोलने वाले दस्ते के अन्य सदस्य एक ऑटो में बैठे थे और उन्होंने उचित दूरी बनाए रखी। जब कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान सौंपी जाने वाली सामग्री को लेकर सड़क पर अकेले आगे बढ़ रहे थे, तभी भारी हथियारों से लैस एक उग्रवादी घने जंगल से निकल कर बाहर आया और उसने कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान को अपने साथ जंगल की ओर चलने का निर्देश दिया। वह उगव्रादी उन्हें कुछ कदम जंगल के भीतर ले गया जहां भारी हथियारों से लैस उग्रवादी समूह के अन्य सदस्य उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। भारी हथियारों से लैस उग्रवादियों से स्वयं को अकेला घिरा पाकर किसी भी व्यक्ति की हिम्मत जवाब दे जाती, लेकिन कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान ने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए उग्रवादियों को अपने साथ बातचीत में उलझाए रखा ताकि वास्तविक योजना के अनुसार उन्हें अपेक्षित सामग्री सौंपने में विलंब हो सके। इसी बीच इस बात से बेखबर रहते हुए कि उग्रवादियों का एक स्काउट किसी भी प्रकार के अनधिकृत आवागमन पर नजर रख रहा है, धावा बोलने वाला दस्ता इकट्ठा होकर अत्यधिक तेजी से उस स्थान के निकट पहुंच गया। धावा बोलने वाले सुरक्षा बलों के दस्ते को आगे बढ़ता देखकर उनके ऊपर नजर रख रहे उग्रवादी ने अपने स्वचालित हथियार से उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरु कर दी। इसी बीच उग्रवादियों ने यह महसूस करते हुए कि चाय बागान के मालिक के वेश में कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान द्वारा उन्हें जाल में फंसाया गया है, उन्होंने उनके ऊपर गोली चला दी, लेकिन उन्होंने पास के गड्ढ़े में छलांग लगाकर बाल-बाल अपनी जान बचाई। अपने ऊपर गोलीबारी होते देख धावा बोलने वाले दल ने प्रभावी रुप से जवाबी गोलीबारी की। कांस्टेबल/जीडी, मो. राशिद खान, जो धावा बोलने वाले दस्ते और उग्रवादियों के बीच भारी गोलीबारी के बीच फंस गए थे, रेंगते हुए गोलीबारी वाले क्षेत्र से बाहर निकले और उन्होंने एक पेड़ के पीछे जाकर पोजीशन ले ली। तब तक सभी उग्रवादी जंगल में पेड़ों की आड़ में छिप गए थे और वे वहां से लगातार सैन्य टुकड़ी पर भारी गोलीबारी कर रहे थे। कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान ने भी कपड़ों के अंदर छिपा कर रखी हुई अपनी पिस्तौल निकाली और उन्होंने सैन्य टुकड़ी की सहायता में गोलीबारी शुरु की। उग्रवादियों की ओर से अचानक हुई तीव्र प्रतिक्रिया के कारण श्री आर.के. बहाली, एसी, ट्रक से कूद कर बाहर आ गए और उन्होंने मुठभेड़ स्थल की ओर जाकर उग्रवादियों को ललकारा। एक सच्चे कमांडर के रुप में अदम्य साहस और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर आगे बढ़ना जारी रखा और वे अपनी एके-47 राइफल से उग्रवादियों के ऊपर भारी गोलीबारी करते रहे। कमांडर के बहादुरीपूर्ण व्यवहार ने सैन्य टुकड़ी में नया जोश भर दिया। अपने साहसी कप्तान के मार्ग-दर्शन और निर्देशों के अधीन, लड़ाई में बहादुरीपूर्वक मुकाबला करने के लिए पूरी तरह जोश से भरी सैन्य टुकड़ी ने उगव्रादियों को घेरने के लिए दो किनारे से आगे बढ़ना शुरु किया। सैन्य टुकड़ी की घोर प्रतिक्रिया से भौंचक्के उग्रवादी, जो इस बदलते घटनाक्रम के लिए तैयार नहीं थे, सैन्य टुकड़ी को दूर रखने के लिए, उनके ऊपर गोलीबारी करते हुए वहां से भागने लगे। पीछे हट रहे उग्रवादियों के इरादे को भांपते हुए और उनकी हरकतों को देखते हुए कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान अपने छिपने के ठिकाने से निकल कर बाहर आ गए और उन्होंने सभी चेतावनियों को दरकिनार करते हुए और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर भाग रहे उग्रवादियों का पीछा किया। उन्होंने सैन्य टुकड़ी पर लगातार गोलीबारी कर रहे उग्रवादियों के ऊपर गोली चलाना जारी रखते हुए एक उग्रवादी को घायल कर दिया। घायल उग्रवादी घने जंगल की ओर भागा लेकिन कमांडर, श्री आर.के. बहाली, एसी और कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान ने तब तक उसका पीछा करना नहीं छोड़ा जब तक कि वह गिर नहीं गया और दम नहीं तोड़ दिया।

बहादुरी के इस कार्य के निष्पादन में, श्री आर.के. बहाली, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी मो. राशिद खान ने स्वयं को विपरीत परिस्थितियों के बीच पाकर भी निजी जोखिम उठाते हुए उल्लेखनीय शौर्य, असाधारण बहादुरी और अद्वितीय साहस का प्रदर्शन किया। उनकी अभियान संबंधी दूरदर्शिता और ठोस कार्रवाई के कारण इस अभियान में भारी सफलता प्राप्त हुई।

बरामदगी

तीन जिंदा राउंड भरी हुई एक मैगजीन के साथ बर्मा निर्मित एक 0.22 के एफ पिस्तौल। मृत उग्रवादी के शरीर की तलाशी लेने पर 560 रु. के साथ एक पर्स और 03 सिम कार्ड के साथ एक मोबाइल भी बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री आर.के. बहाली, सहायक कमांडेंट और मो. राशिद खान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.08.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 139-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. कोमल सिंह,
   उप महानिरीक्षक
2. मोहम्मद अशरफ,
   कांस्टेबल
3. वी. राधाकृष्णन,
   कांस्टेबल
4. बीजु जी.एस.
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

नक्सलियों के इकट्ठा होने के बारे में अपने स्वयं के स्रोत से विशिष्ट सूचना की प्राप्ति पर बीजापुर में स्थित उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन्स) सीआरपीएफ ने पुलिस अधीक्षक, बीजापुर के साथ विचार-विमर्श करके छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के कुरचेली, इरसूमेट्टा पलनार और बोदलापुसनार गांव के आम क्षेत्रों में तलाशी लेने एवं ध्वस्त करने संबंधी अभियान की योजना बनाई। चार विभिन्न दिशाओं से लक्षित क्षेत्र तक पहुंचकर धावा बोलने की योजना बनाई गई। हमला करने के लिए सभी दल आगे जाकर पास के जंगलों में रुके, जैसे कि:- दिनांक 27.08.2013 को लगभग 2130 बजे पार्टी सं. (I) गंगलूर से इरसूमेट्टा के लिए रवाना हुई, दिनांक 27.08.2013 को लगभग 1230 बजे पार्टी सं. (II) चेरपाल से पलनार के लिए रवाना हुई, दिनांक 28.08.2013 को लगभग 0300 बजे पार्टी सं. (III) अपने लक्ष्य बोदलापुसनार के लिए रवाना हुई और पार्टी सं. (IV) बीजापुर से सड़क मार्ग से पंजेर गांव तक और उसके बाद पैदल कुरचेली गांव की ओर रवाना हुई। उपर्युक्त चार गांवों में 0930 बजे एक साथ तलाशी अभियान शुरु किया गया। श्री कोमल सिंह, उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन्स), बीजापुर की कमान में पार्टी सं.(IV) ने अपने दल को तीन छोटे समूहों में विभाजित किया और उन्होंने गांव की घेराबंदी करने के बाद तलाशी शुरु की। तलाशी का कार्य 1430 बजे तक जारी रहा लेकिन कुछ भी बरामद नही हुआ। तब सैन्य टुकड़ी ने एक वैकल्पिक मार्ग से वापस जाने का निर्णय लिया। गांव से बमुश्किल 300 मीटर बाहर आकर जब वे एक नाले को पार कर रहे थे, तभी वहां घनी झाड़ियों में छिपे हुए नक्सलियों ने सैन्य टुकड़ी पर भारी गोलीबारी शुरु कर दी, जिसका सैन्य टुकड़ी ने करारा जवाब देते हुए उन्हें खदेड़ दिया। नक्सली मुकाबला किए बगैर ही भाग कर जंगल के काफी भीतर वापस चले गए। इस प्रकार उस क्षेत्र के आस-पास नक्सलियों की मौजूदगी की पुष्टि हो गई लेकिन वे किस दिशा में थे और कितनी दूरी पर थे, यह अभी भी अस्पष्ट था। एक अन्य बात की भी पुष्टि हो गई कि नक्सली एक उपयुक्त स्थान और समय पर सुरक्षा बलों के ऊपर हमला करने की कोशिश करेंगे। नक्सल-रोधी अभियानों के अपने लंबे अनुभव और ज्ञान पर भरोसा करते हुए श्री कोमल सिंह, उप पुलिस महानिरीक्षक (ऑपरेशन्स), बीजापुर ने अपनी एक टुकड़ी नक्सलियों को हमला करने का प्रलोभन देने और अन्य टुकड़ियों को उस हमले का जवाब देने के लिए तैयार रखने की योजना बनाई। लगभग 1730 बजे जैसे ही पिछली टुकड़ी अपेक्षाकृत खुले स्थान में आयी, तभी अत्याधुनिक हथियारों से लैस काली वर्दी पहने नक्सलियों ने उनके ऊपर तीन तरफ से अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। श्री कोमल सिंह, उप पुलिस महानिरीक्षक (ऑपरेशन्स), बीजापुर, जो सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे और इस अवसर की प्रतीक्षा में थे, हमलावर दस्ते का स्वयं आगे रहकर नेतृत्व किया और वे नक्सली ठिकानों की दिशा में आगे बढ़ गए। नक्सली सुरक्षा पंक्ति को तोड़कर उस टुकड़ी को चारों ओर से घेरने का प्रयास कर रहे थे। अपनी टुकड़ी के ऊपर मंडराते खतरे को भांपते हुए और यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी योजना विफल न हो जाए, कांस्टेबल/जीडी वी. राधाकृष्णन, कांस्टेबल/जीडी बीजु जी.एस. और कांस्टेबल/जीडी मोहम्मद अशरफ के साथ उप पुलिस महानिरीक्षक श्री कोमल सिंह हथगोलों का विस्फोट करते हुए और अपने हथियारों से भारी गोलीबारी करते हुए नक्सलियों की ओर आगे बढ़ने लगे। दूसरी ओर से की जा रही भारी गोलीबारी और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर उप पुलिस महानिरीक्षक, श्री कोमल सिंह और उनकी पार्टी गोलीबारी करते हुए आगे बढ़ने की युक्ति को अपनाते हुए आगे बढ़ रही थी। दोनों ओर से बेहद नजदीक से हुई इस भयानक गोलीबारी में कुछ नक्सली घायल हो गए। जवाबी हमला और घायल होने से भौंचक्का हुए नक्सलियों ने तेजी से पीछे हटना शुरु किया लेकिन उप पुलिस महानिरीक्षक, श्री कोमल सिंह कोई अवसर गंवाना नहीं चाहते थे और उन्होंने भाग रहे नक्सलियों का पीछा करने की योजना बनाई। उप पुलिस महानिरीक्षक के नेतृत्व में सैन्य टुकड़ी ने लगभग 2 किमी. तक नक्सलियों का पीछा किया और वहां एक बार फिर से नक्सलियों ने ऊंचे स्थान का लाभ

उठाते हुए उनके ऊपर गोलीबारी शुरु कर दी। वहां पुन: एक भयानक मुठभेड़ हुई जहां नक्सलियों को अधिपत्य कायम रखने के लिए ऊंचे स्थान और घने जंगल का लाभ हासिल था। नीची जमीन और सामरिक दृष्टि से गैर-लाभप्रद स्थिति में होने के बावजूद सैन्य टुकड़ी ने बगैर रुके आगे बढ़ना जारी रखा और उन्होंने एक नक्सली को मार गिराया। कुछ अन्य नक्सली भी घायल हुए लेकिन वे पहाड़ी स्थलाकृति, घनी झाड़ियों और अंधेरे का लाभ उठाते हुए भागने में सफल हो गए। यह मुठभेड़ लगभग 1½ घंटे तक चली । उस स्थान की संपूर्ण तलाशी ली गई और वहां से एक नक्सली का शव, 12 बोर की एक बंदूक, 9 एमएम की एक पिस्तौल, एक देशी पिस्तौल (.315 बोर), एक एचई-36 ग्रेनेड, गोलाबारुद और बड़ी मात्रा में साहित्य सामग्री बरामद की गई। उस स्थान पर पाए गए खून के धब्बों से अन्य 04 से 05 नक्सली कैडरों के घायल होने अथवा मारे जाने का संकेत मिला। तत्पश्चात पुलिस पार्टी रात के दौरान मुठभेड़ स्थल के निकट ही रुक गई और उन्होंने दिनांक 29.08.2013 को 0700 बजे वहां से अपनी वापसी शुरु की। वापसी के मार्ग पर नक्सलियों ने पुलिस पार्टी पर 3 स्थानों पर गोलीबारी की, जिसका करारा जवाब दिया गया। सैन्य टुकड़ी द्वारा कैंप की ओर जाने वाले रास्ते पर लगाया गया एक आईईडी भी बरामद किया गया।

उप पुलिस महानिरीक्षक (ऑपरेशन्स) बीजापुर, श्री कोमल सिंह द्वारा तैयार की गई अत्यंत सतर्कतापूर्ण योजना और उनके द्वारा प्रदर्शित नेतृत्व गुण, अदम्य साहस, समर्पण तथा कांस्टेबल/जीडी वी. राधाकृष्णन, कांस्टेबल/जीडी बीजु जी.एस. और कांस्टेबल/जीडी मोहम्मद अशरफ द्वारा प्रदर्शित कर्तव्यपरायणता के परिणामस्वरुप नक्सलियों के गढ़ में इस अभियान में सफलता प्राप्त हुई।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कोमल सिंह, उप महानिरीक्षक, मोहम्मद अशरफ, कांस्टेबल, वी. राधाकृष्णन, कांस्टेबल और बीजु जी.एस., कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 140-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. रमेश कुमार,
   निरीक्षक

2. मनोज यादव,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस महानिरीक्षक, बस्तर रेंज द्वारा प्रदान की गई एक विशिष्ट सूचना के आधार पर कि नक्सलियों ने गांव करकोटी में एक बैठक बुलाई है और वे वहां एक जन अदालत भी लगा सकते हैं, राज्य पुलिस के साथ सीआरपीएफ की 80वीं और 212वीं बटालियन द्वारा वहां तलाशी लेने एवं उन्हें तबाह करने के अभियान की योजना बनाई गई। राज्य पुलिस के साथ निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार की कमान में ए/80 बटालियन की दो प्लाटूनों और सहायक कमांडेंट विकास किरण की कमान में डी/212 की दो प्लाटूनों को उनके आधार शिविर अर्थात क्रमश: बस्तनार तथा कोडरनार से अभियान के लिए रवाना किया गया। लक्षित गांव छत्तीसगढ़ के दांतेवाड़ा जिले के पुलिस स्टेशन बारसुर के अंदर कंकनपारा के घने जंगल के भीतर स्थित था। सैन्य टुकड़ियों ने भोर होने से पहले दो दिशाओं से उस गांव में प्रवेश करने की योजना बनाई। उन्होंने 18-19/7/2012 की मध्यरात्रि, अर्थात गहरी रात्रि में अपने आधार शिविर को छोड़ा और अपने लक्षित गांव की ओर चल पड़े। अपने लक्ष्य के निकट पहुंचने के लिए सैन्य टुकड़ियों को घने जंगल, दुर्गम भू-भाग, खराब मौसम और वहां की विरोधी जनता से जूझना पड़ा। एक पूर्व निर्धारित स्थल पर मिलने के पश्चात उस गांव और आस-पास के जंगल की सघन तलाशी ली गई, लेकिन वहां कुछ नहीं मिला।

तलाशी लेने के बाद, दोनों दल अपने-अपने आधार शिविरों की ओर वापस लौटने लगे। छत्तीसगढ़ के जंगल के अंदरुनी भागों से वापस लौटना हमेशा जोखिम से भरा हुआ कार्य था क्योंकि नक्सलियों को सैन्य टुकड़ियों की आवाजाही का पता चल गया था और किसी उपयुक्त समय और स्थान पर प्रहार करने के लिए वे घने जंगल का लाभ उठाते हुए सैन्य टुकड़ियों का पीछा करने लगे। नक्सलियों ने वहां की स्थलाकृति, अपने मजबूत संचार नेटवर्क और स्थानीय गुरिल्ला दस्तों के मजबूत आधार का लाभ उठाते हुए सुरक्षा बलों पर अचानक एवं आकस्मिक हमला करने की योजना बनाई। जब ए/80 की सैन्य टुकड़ी गांव अरला और करकोती के बीच एक जंगल को पार कर रही थी, तभी उस टुकड़ी के स्काउट कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव को वहां दलदल वाली जमीन पर जूतों के कुछ निशान दिखाई पड़े। उन्होंने फौरन स्थिति का आकलन किया और इसके बारे में अपने कमांडर निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार को सूचित किया। वहां जूते के निशान की मौजूदगी से यह पता चल रहा था कि नक्सली आस-पास ही मौजूद थे, क्योंकि गांव के निवासी आम तौर पर जूते नहीं पहनते। निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार, राज्य पुलिस के टीआई रुपक शर्मा और कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव ने अत्यधिक सतर्कता से जूते के उन चिन्हों का पीछा करना शुरु किया। जूते के निशान उन्हें पहाड़ियों से घिरे एक खुले स्थान तक लेकर गए। इससे कमांडर के मन में शंका उत्पन्न हुई। उस स्थान के इर्द-गिर्द नक्सलियों के घात लगाकर हमला करने की संभावना काफी बढ़ गई क्योंकि सभी संकेत उसी तरफ इशारा कर रहे थे। एहतियात बरतते हुए कमांडर ने अपने दल को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया और उनमें से एक को पश्चिमी किनारे से गोपनीय रुप से आगे बढ़ने का आदेश दिया। उन्होंने यह योजना बनाई थी कि वे घात का पर्दाफाश कर देंगे और दूसरा दल उसके ऊपर हमला कर देगा। घात का पता लगाने के लिए यह आवश्यक था कि सैन्य टुकड़ी को नक्सलियों के सामने लाने का भारी जोखिम लिया जाए। अपने कमांडर की योजना के बारे में सुनकर और यह अहसास करते हुए भी कि जैसे ही वह नक्सलियों के सामने जाएगा, उसे नक्सलियों की गोली लग सकती थी, कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव ने अपने समूह के नेतृत्व की स्वयं इच्छा जताई। टुकड़ी बहादुरी से खुले स्थान की ओर आगे बढ़ी और घात की प्रतीक्षा में बैठे नक्सलियों ने योजनानुसार उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव ने जरा भी समय गंवाए बगैर और गोलियों की बौछार की परवाह किए बगैर घात का जवाब दिया और बहादुरी एवं निडरता से उनकी ओर आगे बढ़े। निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार ने भी उनका पीछा किया और नक्सलियों पर गोलियां चलाईं। नक्सलियों ने रणनीति बनाकर घात लगाई थी और उन्होंने सुरक्षित आड़ के पीछे अपना प्रभुत्व कायम रखने वाले स्थानों में डेरा डाल रखा था। निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार और कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर ऊपर की ओर चढ़ाई करनी शुरु कर दी ताकि वे नक्सलियों के नजदीक पहुंचकर अंतिम हमला कर सकें। नक्सलियों के नजदीक पहुंचने की कवायद में और भारी गोलीबारी के बीच नक्सलियों की एक गोली कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव के पांव में लगी। कांस्टेबल के पैर में गोली के जख्म से खून बहने लगा और वे दर्द से निढ़ाल हो गए। अपने कांस्टेबल की स्थिति देख कर निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार गोलियों का मुकाबला करते हुए अपने कवर से बाहर आए और उन्होंने कांस्टेबल को वहां से खींच कर कवर के पीछे लिया। ऐसा लगा कि नक्सली इस क्षण की प्रतीक्षा में थे क्योंकि निकटवर्ती पहाड़ी में छिपे नक्सलियों के दूसरे समूह ने भी सैन्य टुकड़ी पर गोलीबारी शुरु कर दी। वे दोनों अब दो दिशाओं से हो रही गोलीबारी के बीच फंस गए थे और उनकी जान पर आसन्न जोखिम मंडरा रहा था। यह देखते हुए कि नक्सलियों का दूसरा समूह उसी दिशा में था जहां उन्होंने अपने दूसरे समूह को भेजा था, निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार ने उन्हें आगे बढ़कर नक्सलियों को उलझाने का आदेश दिया। उसी समय यह देखते हुए कि गोलीबारी की मात्रा में वृद्धि हो गई है और उसी स्थान पर बने रहना खतरनाक है, वे दोनों लगातार गोली चलाते हुए दूसरे कवर के लिए आगे बढ़ गए। इस प्रक्रिया में नक्सलियों की एक और गोली कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव की पीठ में लग गई। इस क्षण में जीतने के लिए या तो लड़ाई जारी रखने या पीछे हटने का निर्णय लेने की आवश्यकता थी और निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार ने बदनामी के साथ जिंदा रहने की जगह सम्मानपूर्वक मरने की राह को तरजीह दी। जब निकटवर्ती पहाड़ी में छिपे नक्सलियों को दूसरे समूह ने उलझा रखा था, तो निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार ने अपनी टुकड़ी को जान की परवाह किए बगैर आगे बढ़ कर नक्सलियों पर भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया। कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव सहित दल के सभी सदस्य समुद्र की लहरों की तरह नक्सलियों की ओर आगे बढ़ने लगे जिससे नक्सलियों का मनोबल टूट गया और वे वहां से भागने के लिए मजबूर हो गए। सैन्य टुकड़ियों ने नक्सलियों का पीछा किया लेकिन वे वहां से निकलने के अपने पूर्व-निर्धारित मार्ग से पहाड़ी भू-भाग का लाभ उठाते हुए भाग निकले।

अभियान और घात की जवाबी कार्रवाई के दौरान निरीक्षक/जीडी रमेश कुमार ने महान नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन किया और उन्होंने अपनी सैन्य टुकड़ी का उत्साह बढ़ाते हुए नक्सलियों को हराने के लिए उनके साथ घनघोर लड़ाई की, जिससे मजबूर होकर नक्सली भाग खड़े हुए। इसी प्रकार, कांस्टेबल/जीडी मनोज यादव ने गंभीर रुप से घायल होने के बावजूद अपनी अत्यधिक पीड़ा पर काबू पाते हुए बेहद सुरक्षित स्थानों पर डटे नक्सलियों के मंसूबों को तबाह कर दिया। उनकी पैनी निगाह और दुस्साहस ने न केवल पूरे समूह को घात का शिकार होने से बचाया, बल्कि नक्सलियों को हार के साथ पीछे हटने के लिए भी मजबूर किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रमेश कुमार, निरीक्षक और मनोज यादव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.07.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 141-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राकेश राव,
   कमांडेंट

2. जितेन्द्र कुमार सिंह,
   हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री राकेश राव, कमांडेंट दिनांक 12 दिसम्बर, 2012 मैडेड स्थित 170 बटालियन की कंपनी कैंप से लगभग 18 किमी. की दूरी पर गांव कचलरम में नक्सल सेना दलम की मौजूदगी के बारे में आसूचना ब्यूरो (आईबी) से सूचना प्राप्त होने पर कंपनी के दौरे पर डी/170 बटालियन में गए थे। गांव कचलरम को नक्सलियों द्वारा घोषित मुक्त क्षेत्र माना जाता है, जहां घने जंगल और दुर्गम पहाड़ी भू-भाग हैं और कोई भी बल उस क्षेत्र में कभी नहीं गया है और यह क्षेत्र एओआर यूनिट के अधिकार क्षेत्र में भी नहीं आता है। लेकिन श्री राकेश राव, कमांडेंट, 170 बटालियन द्वारा आईबी की सूचना पर विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। तत्काल, अभियान की योजना तैयार की गई और दिनांक 12.12.2012 की शाम तक इस अभियान के लिए सिविल पुलिस के चार प्रतिनिधियों के साथ सी/170, डी/170, एसएटी और कमांडेंट, सुरक्षा के 86 कार्मिकों को इकट्ठा किया गया। नीचे दिए गए विवरण के अनुसार श्री राकेश राव, कमांडेंट 170 के संपूर्ण कमान में सभी 86 कार्मिकों (सीआरपीएफ-82, सिविल पुलिस-4) को तीन दलों में विभाजित किया गया:-

i) पार्टी सं. 1 - (32 सदस्य) श्री रोकेश राव, कमांडेंट की सीधी कमान में

ii) पार्टी सं. 2 – (29 सदस्य) श्री सूरज मल, एसी की कमान में

iii) पार्टी सं. 3 - (35 सदस्य) श्री राहुल माथुर, एसी के कमान में

सभी दलों को रेत के मॉडल पर ब्रीफ किया गया और उन्हें लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ने के लिए ग्रिड के संदर्भ दिए गए जिसके बाद वे मैडेड सीआरपीएफ कैंप से 2030 बजे अपने गंतव्य के लिए रवाना हो गए। वह अत्यधिक अंधेरी रात थी और तीनों दल जीपीएस, एनवीडी आदि की सहायता से एक ही कतार में आगे बढ़ रहे थे और वहां का भू-भाग इतना दुर्गम, कठिन एवं संवेदनशील था कि पूरी रात चलने के बाद भी संपूर्ण दस्ता मात्र 8 किमी. की ही दूरी तय कर सका। सुबह में आईबी, बीजापुर से आसूचना संबंधी सूचना की पुन: पुष्टि की गई और यह पता चला कि नक्सल सेना दलम गांव कचलरम से लगभग 2 किमी. और आगे बढ़ गया है और वे गांव कोरेनजेट की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते के निकट जंगल में नाले के पास ठहरे हुए हैं। फौरन सभी पार्टियां घात वाले संभावित स्थानों से बचने के लिए नियमित रास्ते को छोड़कर घने जंगलों और पहाड़ियों के बीच से कच्चे रास्तों से आगे बढ़ने लगीं। लक्ष्य से लगभग 3 किमी. पूर्व मानचित्र पर लक्षित स्थल का विश्लेषण कर उसे परखा गया और 170 बटालियन के कमांडर द्वारा स्वयं कागज पर सभी कमांडरों को ब्रीफ किया गया। सभी तीनों पार्टियों को उनकी विशिष्ट भूमिका के साथ अलग-अलग जीआर सौंपे गए थे, जिसमें सभी पार्टियों के बीच का अंतर 1.5 किमी. था और 170 बटालियन के कमांडर ने वैसी स्थिति उत्पन्न होने पर अंतिम हमले की योजना के बारे में उसी स्थान पर 32 सदस्यों वाली अपनी पार्टी को पुन: ब्रीफ किया। अंतिम ब्रीफिंग के अनुसार राकेश राव, कमांडेंट, 170 बटालियन के साथ-साथ हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र सिंह सहित कमांडेंट, सुरक्षा (13 सदस्य) को विस्तारित रेखा पर सबसे आगे रहना था और सहायता के लिए लगभग 150 मीटर की दूरी पर नजर का संपर्क बनाए हुए 18 कार्मिकों वाले एसएटी को पीछे रहना था ताकि लक्षित स्थल पर पहुंचने तक रहस्य को कायम रखा जा सके। जैसे ही कमांडेंट, सुरक्षा लक्षित नाले के निकट पहुंचे, तभी काले रंग की वर्दी पहने नक्सलियों ने आगे बढ़ रहे कमांडेंट, सुरक्षा पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। सीआरपीएफ पार्टी ने तत्काल गोलीबारी का जवाब दिया और उसके बाद

ऑटोमेटिक, सेमी ऑटोमेटिक एवं देशी हथियारों से तीन दिशाओं से गोलीबारी होने लगी। ऐसा लग रहा था कि लगभग 35 की संख्या में वहां मौजूद नक्सली सुरक्षा दस्ते को छोटा समझते हुए कमांडर, सुरक्षा को घेरना चाह रहे थे। कमांडेंट, सुरक्षा के ऊपर मंडराते गंभीर खतरे को भांपते हुए तत्काल यूबीजीएल थामे कार्मिक ने उन दिशाओं में गोली चलाने का आदेश दिया जहां से गोलीबारी हो रही थी। जब कमांडेंट, सुरक्षा का संपूर्ण दस्ता सामने से और दाहिनी ओर से हो रही एलएमजी की गोलीबारी पर ध्यान केन्द्रित किए हुए था, तभी बीच-बीच में सामने की ओर बायीं तरफ से गोली चला रहे वहां पर छिपे 2-3 नक्सलियों का एक छोटा समूह आगे बढ़ रहे कमांडेंट, सुरक्षा द्वारा नाला पार कर लेने पर बाईं ओर से पार्टी पर हमला करने की प्रतीक्षा में था। वहां 2-3 सशस्त्र नक्सलियों की मौजूदगी को देखते हुए हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह के साथ-साथ श्री राकेश राव, कमांडेंट ने सामने आकर गोलियों की बौछार के बीच एक-दूसरे को परस्पर सहायता प्रदान करते हुए सामने बायीं ओर छिपे नक्सलियों की ओर रेंगते हुए आगे बढ़ना शुरु किया और उन्होंने गोलीबारी कर रहे उन नक्सलियों पर हमला कर दिया। जवाब में वहां छिपे हुए नक्सलियों ने श्री राकेश राव, कमांडेंट, 170 बटालियन और हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी, लेकिन उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सके। तथापि, आगे बढ़ रहे सीओ, सुरक्षा के अन्य कार्मिकों की जान बचाने के लिए स्वयं अपने जीवन की परवाह किए बगैर और स्वयं को गंभीर जोखिम में डाल कर, हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह की कवरिंग फायर के साथ श्री राकेश राव, कमांडेंट, 170 बटालियन ने बेहद नजदीक से एक नक्सली को मार गिराने में सफलता प्राप्त की। दोनों ओर से भारी गोलीबारी के बाद नक्सलियों को जल्दबाजी में वहां से भागना पड़ा और उन्हें मारे गए नक्सली का शव और हथियार/अन्य सामग्री भी ले जाने का अवसर नहीं मिला। सुरक्षा दल द्वारा मुठभेड़ के दौरान गोलीबारी करने के मामले में अत्यधिक नियंत्रण रखा गया और उन्होंने अत्यंत पेशेवर तथा विशिष्ट तरीके से गोली चलाई।

कमांडेंट श्री राकेश राव और हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह द्वारा अपनी जान को भारी जोखिम में डालते हुए प्रदर्शित उल्लेखनीय वीरतापूर्ण कार्रवाई, अनुकरणीय नेतृत्व, सूझ-बूझ, मानसिक एवं शारीरिक स्फूर्ति के परिणामस्वरुप नक्सलियों द्वारा घोषित तथाकथित मुक्त क्षेत्र समझे जाने वाले कचलरम वन जैसे क्षेत्र में एक नक्सली को मारा जा सका। समस्त अभियान के दौरान 170वीं बटालियन, सीआरपीएफ के कमांडेंट श्री राकेश राव और हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह से मौत बेहद करीब थी, जो गोलियों की बौछार के बीच भी जिंदा रहे। इस अभियान के संचालन के लिए मैडेड से घोर अंधेरी रात में सैन्य दल को कच्चे और दुर्गम रास्तों से 36 किमी. पैदल चलना पड़ा और उन्होंने एक नक्सली को मार गिराया जिसकी बाद में संबंधित पुलिस स्टेशन द्वारा प्रदान किए गए मामले के इतिहास के अलावा स्वयं मजिस्ट्रेट द्वारा पंचनामा रिपोर्ट में फर्सेगढ़ सशस्त्र दलम के डिप्टी कमांडर, कवासी बुधराम के रुप में पहचान की गई। सुरक्षा दल ने मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए शव, हथियार, विस्फोटक एवं अन्य सामग्री को पुलिस के सुपुर्द कर दिया। दिनांक 28.12.2012 के अलर्ट सं. एसक्यूडी 26 के माध्यम से आईबी द्वारा की गई पुष्टि के अनुसार मुठभेड़ में कवासी सन्नू और कोसापाडियम नामक दो और नक्सलियों के गंभीर रुप से घायल होने के कारण नक्सलियों से उनके उपचार के लिए वेंकटेश तथा रामाराव नामक दो चिकित्सकों को बुलाना पड़ा। दिनांक 12.12.2012 से 13.12.2012 तक संचालित इस अभियान के दौरान 170वीं बटालियन के कमांडेंट श्री राकेश राव और हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह ने अपनी जान को जोखिम में डालकर अनुकरणीय साहस और अदम्य वीरता का प्रदर्शन किया। 170वीं बटालियन के कमांडेंट श्री राकेश राव और हेड कांस्टेबल/जीडी जितेन्द्र कुमार सिंह द्वारा संकट के समय प्रदर्शित उल्लेखनीय वीरतापूर्ण कार्रवाई, समर्पण, प्रतिबद्धता एवं नेतृत्व गुण असाधारण रुप से उच्च कोटि के थे जिसके परिणामस्वरुप फर्सेगढ़ सशस्त्र नक्सल दलम का डिप्टी कमांडर मारा गया।

की गई बरामदगी:

01) भारमर शस्त्र-01

02) भारमर को भरने एवं गोली चलाने के लिए प्रयुक्त सामग्री (राउण्ड आदि)

03) डेटोनेटर-23

04) सेफ्टी फ्यूज-01

05) नक्सली चाकू

06) टॉर्च-1

07) नक्सल पिट्ठु-01

08) नक्सल साहित्य के कुछ पन्ने

09) चार्ज करने में प्रयुक्त शुष्क बैटरी 6 वोल्ट-1

10) .315 बोर गोलाबारुद-03

11) कॉर्डेक्स

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राकेश राव, कमांडेंट और जितेन्द्र कुमार सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13.12.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 142-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. रवि कुमार डूडी,
   सहायक कमांडेंट

2. एच. कीपगन,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन-बोरपथर, जिला-कार्बी आंगलोंग (असम) के अंतर्गत लखते/तेरों गांव, डोलामारा में केपीएलटी के सशस्त्र कैडरों की मौजूदगी के बारे में दिनांक 20.06.2012 को पुलिस अधीक्षक, कार्बी आंगलोंग से विश्वस्त सूचना प्राप्त होने पर, 3 जे के राइफल (सेना), 210 कोबरा और राज्य पुलिस (असम) के स्टाफ को शामिल करते हुए एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाने की योजना बनाई गई। रात में उस क्षेत्र की रेकी करने के बाद, अभियान के उपयुक्त निष्पादन के लिए भोर में अभियान शुरू करने का निर्णय लिया गया, क्योंकि वह क्षेत्र घने जंगल और दुर्गम भू-भाग वाला था।

अभियान पार्टी को तीन दलों में विभाजित किया गया और श्री रवि कुमार डूडी, सहायक कमांडेंट कोबरा स्टाफ के दल का नेतृत्व कर रहे थे। जब तलाशी अभियान चल रहा था, तभी उग्रवादियों की नज़र अभियान पार्टी की गतिविधि पर पड़ गई और उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा सेना के स्टाफ का दल (अर्थात् दल सं. 2) उग्रवादियों की भारी गोलीबारी में घिर गया। अभियान के दौरान, श्री रवि कुमार डूडी और कांस्टेबल/जीडी एच. कीपगन 'बडी सिस्टम' का अनुपालन कर रहे थे। स्थिति के महत्व को महसूस करते हुए उन्होंने तत्काल दल सं. 02 की सहायता करने का निर्णय लिया और उन्होंने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालते हुए गोलियों की बौछार के बीच रेंगते हुए लंबी दूरी तय की और दोनों उग्रवादियों के स्थान के निकट पहुंच गए। अचानक उन्होंने देखा कि केपीएलटी का एक उग्रवादी बेहद बर्बरतापूर्वक अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए उनकी तरफ बढ़ रहा है। उक्त उग्रवादी के साथ-साथ अन्य उग्रवादियों की गोलीबारी का जवाब सूझ-बूझ से देने के लिए वे अचानक एक खाई में बैठ गए और वहां से उन्होंने उग्रवादियों के स्थान की दिशा में निशाना लगाते हुए गोलीबारी शुरू की। दोनों ओर से हो रही गोलीबारी के दौरान श्री रवि कुमार डूडी, सहायक कमांडेंट और उनके सहयोगी कांस्टेबल/जीडी एच. कीपगन ने उच्च स्तर के अनुशासन, बहादुरी और दूरदर्शिता को कायम रखा और उन्होंने केपीएलटी के उग्रवादियों को मार गिराने तथा उग्रवादियों के विरूद्ध सफल अभियान के बारे में उदाहरण कायम करने के लिए भी अभियान के निष्पादन में ओजस्वितापूर्ण गुण का प्रदर्शन किया। इस अभियान में कुल 03 दुर्दांत केपीएलटी कैडर मारे गए और इसमें हथियार/गोलाबारूद/विस्फोटक का जखीरा तथा महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद हुए।

की गई बरामदगी:

- तीन ए के-56 राइफल
- ए के-56 राइफल की 06 मैगजीन

- पिस्तौल की मैगजीन – 01 नं.
- 9 एमएम गोलाबारूद -32 नं.
- 5.56 एम एम, इन्सास गोलाबारूद-91 नं.
- 7.62X 39 एम एम गोलाबारूद-120 नं.
- 7.62X 39 एम एम के खाली खोखे-49 नं.
- शिलिंग-03 नं.
- मैगजीन पाउच -03 नं.
- लैपटॉप -01 नं.
- लैपटॉप बैग-01 नं.
- की बोर्ड-01 नं.
- मोबाइल सेट-04 नं.
- मोबाइल चार्जर-04 नं.

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रवि कुमार डूडी, सहायक कमांडेंट और एच. कीपगन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.06.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 143-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. नचुमबेमो यानथन,
   निरीक्षक
2. दीनामनी बैश्य,
   उप निरीक्षक
3. पंकज रहांग,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन-बोरपथर, जिला-कार्बी आंगलोंग, असम में आने वाले गांव हेमलांगशो के आम क्षेत्र में 5/6 केपीएलटी के कैडरों की मौजूदगी के बारे में दिनांक 09.08.2013 को 210 कोबरा यूनिट के आसूचना प्रकोष्ठ से एक गुप्त जानकारी प्राप्त होने के पश्चात पुलिस अधीक्षक, कार्बी आंगलोंग, श्री जोसफ किशिंग, कमांडेंट-210 कोबरा और श्री नीरज कुमार झा, एसी-210 कोबरा ने वहां संयुक्त रुप से तलाशी एवं ध्वस्त करने संबंधी अभियान चलाने की योजना बनाई। विस्तृत योजना एवं ब्रीफिंग के पश्चात 210 कोबरा और सिविल पुलिस के संयुक्त सैन्य दल द्वारा दिनांक 09.08.2013 को 2230 बजे अभियान शुरु किया गया। सैन्य दल अत्यंत दुर्गम रास्तों से कठिनाई भरी यात्रा पूरी करते हुए दिनांक 10.08.2013 को 0130 बजे लक्षित गांव के निकट पहुंचा। उस क्षेत्र के भू-भाग और सामान्य स्थलाकृति का

विश्लेषण करने के पश्चात अभियान के कमांडर द्वारा वहां से भाग निकलने के संभावित मार्गों पर दो जगह अवरोधक (कट ऑफ) लगाए गए। अवरोधक लगाने के बाद दो हमला दल बनाए गए, जिसमें से पहले हमला दल को निरीक्षक नचुमबेमो यानथन की कमान में और दूसरे हमला दल को नीरज कुमार झा, एसी की कमान में रखा गया। हमला दलों ने बेहद सूझ-बूझ से पोजीशन ली और वे हमला करने के लिए धैर्यपूर्वक भोर होने का इंतजार करने लगे। जैसे ही भोर हुई, सैन्य दल बेहद सूझ-बूझ के साथ तत्परता से आगे बढ़ते हुए संदिग्ध क्षेत्र के निकट पहुंचे और वहां उन्हें झोपड़ियों के दो समूह मिले। निरीक्षक नचुमबेमो यानथन की कमान में पहले हमला दल ने झोपड़ियों के बायीं ओर के समूह को अपना लक्ष्य बनाया और नीरज कुमार झा, एसी की कमान में दूसरे हमला दल ने झोपड़ियों के दायीं ओर के समूह को अपना लक्ष्य बनाया। जैसे ही पहला हमला दल झोपड़ियों के बायीं ओर के समूह के निकट पहुंचा, उन झोपड़ियों के भीतर छिपे उग्रवादियों ने उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। निरीक्षक/जीडी नचुमबेमो यानथन और कांस्टेबल/जीडी पंकज रहांग ने, जो कि अपनी टीम को लेकर खोज में निकले थे, गोलीबारी का जवाब तुरंत नहीं दिया, बल्कि वे गोलीबारी के बीच ही उग्रवादियों के ठिकाने वाली झोपड़ियों को अन्य झोपड़ियों से अलग करने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे और उन्होंने बेहद सावधानी से स्थिति की समीक्षा करने एवं उग्रवादियों के गुप्त ठिकाने की पहचान करने के बाद नियंत्रित रुप से जवाबी गोलीबारी की ताकि संपार्श्विक नुकसान को टाला जा सके। अन्य सैन्य दल कवर फायर देते हुए सूझ-बूझ से उनके पीछे चल रहे थे। उसके बाद जवाबी आक्रमण करने के लिए निरीक्षक/जीडी नचुमबेमो यानथन और कांस्टेबल/जीडी पंकज रहांग ने उग्रवादियों के और समीप जाने का निर्णय लिया क्योंकि उन झोपड़ियों के भीतर आम नागरिकों की मौजूदगी से इनकार नहीं किया जा सकता था। अपनी जान को जोखिम में डालते हुए वे आगे बढ़े लेकिन उग्रवादियों ने उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरु कर दी और उन्हें एक पेड़ की आड़ लेनी पड़ी। उग्रवादी इतने पर ही नहीं रुके और उन्होंने गोलीबारी तेज करते हुए ग्रेनेड फेंकना भी शुरु कर दिया। यह देखते हुए कि पेड़ के पीछे ठहरने से कुछ हासिल नहीं होगा और यह उनके लिए खतरनाक साबित होगा, उन्होंने उग्रवादियों को बांध कर रखने के लिए उनके ऊपर मिलकर गोली चलाई और उस झोपड़ी के निकट पहुंच गए। आगे बढ़ रहे सैन्य दल से घिर जाने पर उग्रवादियों ने ग्रेनेड फेंकने के साथ-साथ भारी एवं अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए वहां से भाग निकलना ही सुरक्षित समझा। तेज गोलीबारी ने सैन्य दल के आगे बढ़ने में फिर से बाधा डाली और इसका लाभ उठाते हुए उग्रवादी झोपड़ी के पिछले हिस्से से भाग निकले लेकिन उनमें से कुछ घायल भी हो गए।

हालांकि, उग्रवादी झोपड़ियों के समूह के बीच से निकल कर भाग सकते थे, लेकिन उन्हें रास्ते में उनकी प्रतीक्षा कर रहे दूसरे बहादुर सैन्य दल के रोष का सामना करना पड़ता। दो उग्रवादी अवरोधक (कट ऑफ) पार्टी सं. 1 की ओर भागे जहां उप निरीक्षक/जीडी दीनामनी बैश्य अपनी पार्टी के साथ तैनात थे और अवसर की प्रतीक्षा में थे। सैन्य दल द्वारा रुकने की चुनौती मिलने पर उग्रवादियों ने उनके ऊपर भी गोलीबारी शुरु कर दी। अपनी ओर आती हुई गोलियों की बौछार से बेपरवाह उप निरीक्षक/जीडी दीनामनी बैश्य ने अपनी जान को जोखिम में डालते हुए उग्रवादियों पर जवाबी गोली चलाते हुए दोनों को घायल कर दिया। उनके उल्लेखनीय साहस और मौत के साथ वीरतापूर्ण मुकाबले ने उग्रवादियों के भागने के प्रयास को विफल कर दिया। घायल होने के बाद भी उग्रवादियों ने एक पेड़ की आड़ लेकर दस्ते पर गोलीबारी जारी रखी। इसे देखते हुए उप निरीक्षक/जीडी दीनामनी बैश्य ने अपने सैन्य दल को उनके ऊपर गोलीबारी जारी रखने का आदेश दिया जबकि उन्होंने स्वयं उनके ऊपर किनारे से हमला करने के लिए अपनी दायीं ओर रेंगते हुए बढ़ना शुरु किया। उग्रवादियों के बाजू में पहुंचकर उन्होंने अकेले हमला करते हुए एक उग्रवादी को मार गिराया। अपने साथी की दशा देखकर दूसरा उग्रवादी सैन्य दल पर गोली चलाता हुआ घने जंगल की ओर भागा और उस क्षेत्र से गायब हो गया। गोलीबारी में कमी आने के बाद सैन्य दल के द्वारा उस क्षेत्र के साथ-साथ आस-पास के क्षेत्र की सघन तलाशी ली गई और वहां से एक भरी हुई एके-56 राइफल के साथ केपीएलटी के एक कैडर का शव बरामद हुआ और बाद में उसकी पहचान टॉम टेरोन उर्फ खोई टेरोन के रुप में की गई। आसूचना के स्रोतों/इंटरसेप्शन द्वारा भी एक अन्य केपीएलटी कैडर के मौत की सूचना दी गई लेकिन उसका शव बरामद नहीं किया जा सका।

अभियान के दौरान निरीक्षक/जीडी नचुमबेमो यानथन, उप निरीक्षक/जीडी दीनामनी बैश्य और कांस्टेबल/जीडी पंकज रहांग ने कर्तव्य की राह में उल्लेखनीय साहस एवं पेशेवरता का प्रदर्शन किया। उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद उन्होंने बहादुरीपूर्वक जवाबी कार्रवाई की। उग्रवादियों के ऊपर गोली चलाते समय उनके द्वारा बरते गए असाधारण अनुशासन से संप्रार्श्विक नुकसान को टाला जा सका। उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस, मौत से मुकाबला और फौलादी हौसले के परिणामस्वरुप नजदीकी घोर मुकाबले में सुरक्षा बलों को बगैर किसी क्षति के भारी मात्रा में बरामदगी के साथ-साथ केपीएलटी के एक वरिष्ठ कैडर को मारा जा सका।

की गई बरामदगी:-

1.	एके-56 राइफल	-01
2.	मैगजीन	-01
3.	एके-56 का जिंदा कारतूस	-74

4.	एके-56 का खाली खोखा	-10
5.	मोबाइल सेट	-02
6.	टार्च	-01
7.	पाउच	-01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री नचुमबेमो यानथन, निरीक्षक, दीनामनी बैश्य, उप निरीक्षक और पंकज रहांग, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.08.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 144-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एस. ईलांगो, उप महानिरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्तीय बार)
2. जी. मधु, सहायक कमांडेंट (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. मलेक शाहिद अहेमद, हेड कांस्टेबल/आर ओ (वीरता के लिए पुलिस पदक)
4. दावल साब, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन गंगलूर, जिला-बीजापुर के अंतर्गत गांव-कुरचोली और मुंगा के बीच के जंगल में पीएलजीए की द्वितीय कंपनी के लगभग 50-60 सशस्त्र कैडरों की मौजूदगी की सूचना प्राप्त हुई थी। इस सूचना के आधार पर एस. ईलांगो, उप महानिरीक्षक (आपरेशन), बीजापुर द्वारा गांव-कुरचोली और उसके आस-पास के क्षेत्र की घेराबंदी करने और तलाशी लेने की योजना बनाई गई। दिनांक 23.02.2013 को उपयुक्त ब्रीफिंग के पश्चात एस. ईलांगो, उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन) की संपूर्ण कमान के अधीन विशेष रुप से तैयार किए गए दो दल लक्षित गांव के लिए रवाना हुए। दल सं. I दिनांक 23.02.2013 को 2100 बजे पामलवाया से रवाना हुआ और दल सं. II भी 23.02.2013 को ही 1930 बजे चेरपाल से रवाना हुआ। जब दल सं. II लक्षित गांव के निकट पहुंच रहा था, तभी नक्सलियों ने घात लगाने की कोशिश करते हुए सैन्य दल पर गोलीबारी शुरु कर दी। सैन्य दल ने बहादुरीपूर्वक इसका जवाब दिया, लेकिन वहां की स्थलाकृति का लाभ उठाते हुए नक्सली उस स्थान से भागने में सफल हो गए। इसी बीच दल सं. I अपने लक्ष्य के निकट पहुंच गया और वहां दल को दो हिस्से में विभाजित कर दिया गया, जिसमें एक हिस्से ने गांव के पीछे स्थित पहाड़ी में अवरोधक (कट ऑफ) लगाया, जबकि एस. ईलांगो, उप महानिरीक्षक की कमान में दूसरे हिस्से के सदस्यों ने गांव की तलाशी ली। वहां नक्सलियों के दो गुप्त ठिकानों पर धावा बोला गया और लाखों रु. के विस्फोटक, डेटोनेटर, नक्सली साहित्य, आई ई डी के लिए कार्मिक-रोधी प्रणाली के साथ 22 कंटेनर, पोशाक, राशन एवं किराने के सामान सहित भारी संख्या में सामग्रियां बरामद की गईं। उस गांव तथा आस-पास के क्षेत्रों की सघन तलाशी लेने के बाद सैन्य दल वहां दोपहर के भोजन के लिए रूका। जब सैन्य दल के सदस्य भोजन कर रहे थे तभी नक्सलियों ने उनकी प्रतिक्रिया को भांपने के लिए शुरू में पटाखों के विस्फोट किए ताकि वे उसी के अनुसार अपनी अगली अपराधिक गतिविधि की योजना बना सकें। श्री एस. ईलांगो ने अपने दस्ते को सावधान किया और उन्हें बगैर गोली चलाए धीरे-धीरे आड़ के पीछे चले जाने का निर्देश दिया। वहां अभियान संबंधी दूरदर्शिता और सूझबूझ की स्पर्धा चल रही थी क्योंकि दोनों ही पक्ष एक-दूसरे के दिमाग को पढ़ना चाह रहे थे। कुछ समय बाद नक्सलियों ने एलएमजी से धमाका किया और सैन्य दल ने कुछ दूरी पर काली बर्दी में दो तीन नक्सलियों को वहां पर मौजूद

देख लिया। सैन्य दल अत्यंत धैर्यपूर्वक हमला करने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ ही देर बाद अत्याधुनिक हथियारों से लैस काली बर्दी में लगभग 15 नक्सलियों ने सैन्य दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उप महानिरीक्षक एस. ईलांगो ने अपने दल को नक्सलियों की गोलीबारी का नियंत्रित एवं सीमित गोलीबारी से सधा हुआ जवाब देने का आदेश दिया। सैन्य दल की इस जवाबी कार्रवाई से नक्सलियों के हौसले बुलंद हो गए और वे अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए सैन्य दल की ओर बढ़ने लगे। उप महानिरीक्षक एस. ईलांगो ने 168 वीं बटालियन के सहायक कमांडेंट जी. मधु को बेतार सेट पर संदेश देते हुए कुछ गोपनीय तरीके से पहाड़ी की ओर बढ़ने का आदेश दिया और उनसे कहा कि आदेश मिलने पर वह उन्हें सपोर्ट फायर प्रदान करें। जी. मधु, सहायक कमांडेंट ने अपने साथ कांस्टेबल/जीडी दावल साब और सिविल पुलिस के उप निरीक्षक राजू कोरेती को लेते हुए दाहिने किनारे को कवर किया। जैसे ही नक्सली सैन्य दल के मारक क्षेत्र के भीतर आए, उप महानिरीक्षक एस. ईलांगो ने एचसी/आरओ मलेक शाहिद अहेमद और सिविल पुलिस के उप निरीक्षक अब्दुल समीर के साथ अपनी कवर से बाहर निकलकर नक्सलियों के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी की। सुरक्षा दस्ते के अचानक जवाबी हमले से नक्सलियों के होश उड़ गए और अपनी जान बचाने के लिए उन्होंने आक्रामक गोलीबारी करते हुए पीछे हटना शुरू कर दिया। नक्सलियों द्वारा अत्याधुनिक हथियारों से की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद श्री ईलांगो, उप महानिरीक्षक, एससी/आरओ मलेक शाहिद अहेमद और उप निरीक्षक, अब्दुल समीर ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर निरंतर अपना स्थान बदलते हुए नक्सलियों की ओर बढ़ना जारी रखा। नक्सलियों ने लगभग 100 मीटर पीछे हटते हुए एक नाले में पोजीशन ले ली और वे पुन: इकट्ठा होने लगे। दोनों ओर से गोलीबारी में कुछ नक्सली घायल हो गए थे लेकिन उन्हें उनके अन्य साथी अपने साथ घसीटते हुए नाले में ले गए। तब तक अंधेरा होने लगा था और नक्सलियों ने सुरक्षित कवर के पीछे पोजीशन ले ली थी, जहां से वे उस समय भी सैन्य दल पर गोलीबारी कर रहे थे। उप महानिरीक्षक, एस. ईलांगो हासिल की गई अपनी पहल को गंवाना नहीं चाहते थे और इसलिए उन्होंने उस नाले पर अंतिम हमला करने का निर्णय लिया। वे उप निरीक्षक अब्दुल समीर और एचसी/आरओ मलेक शाहिद अहेमद के साथ मिलकर नाले के ऊपर यूबीजीएल फायर करते हुए उसकी ओर बढ़ गए। साथ ही साथ उन्होंने जी. मधु, सहायक कमांडेंट की कमान वाले दल को आगे बढ़ने और यूबीजीएल फायर करने का आदेश दिया। नक्सलियों की गोलीबारी और दुर्गम स्थलाकृति की परवाह किए बगैर सहायक दल के सदस्य गोलीबारी करते हुए और हथगोले फेंकते हुए नाले की ओर बढ़ गए। श्री जी. मधु के धावा बोलने वाले दल को देखते ही नक्सलियों ने उनके ऊपर भी गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी गोलीबारी से घबराए बगैर सहायक कमांडेंट, जी. मधु, उप निरीक्षक राजू और कांस्टेबल/जीडी दावल साब ने अपने हथियारों से गोलीबारी की और दोनों दलों ने नक्सलियों के ऊपर अंतिम धावा बोल दिया। नक्सली इस हमले का सामना करने का साहस नहीं जुटा पाए और वे अपने अति सुरक्षित स्थानों से निकलकर भागने लगे। कुछ घायल नक्सली वहां से भागने में सफल हो गए, लेकिन हथियार के साथ एक नक्सली का शव वहां पड़ा मिला। तब तक अंधेरा हो चुका था, लेकिन नक्सलियों की ओर से गोलीबारी नहीं रूकी। उन्होंने कुछ दूरी से गोलीबारी जारी रखी और मारे गए नक्सलियों का शव निकालने का प्रयास करते रहे। इस बात को समझते हुए सहायक कमांडेंट, जी. मधु, उप निरीक्षक राजू और कांस्टेबल/जीडी दावल साब ने नक्सलियों की गोलीबारी के बीच गिरे हुए नक्सली के बेहद करीब पोजीशन संभाल ली। नक्सलियों ने पूरी रात भारी गोलीबारी करते हुए शव को अपने कब्जे में लेने के अनेक प्रयास किए लेकिन शव के निकट तैनात सैन्य दल द्वारा उनके मंसूबों को विफल कर दिया गया। सैन्य दल की सूझबुझ, साहस और वीरतापूर्ण कार्रवाई अगले दिन उनके द्वारा नक्सलियों के दो शवों को अपने कब्जे में लेने में सहायक साबित हुई। मृतकों की पहचान सलीम उर्फ सम्बी रेड्डी (नक्सलियों की द्वितीय कंपनी का तकनीशियन) और पुनशार के किस्मत उर्फ मित्तनर (नक्सलियों की द्वितीय कंपनी का चिकित्सक) के रूप में की गई। सलीम पीएलजीए की दूसरी कंपनी के दंडकारण्य एरिया कमांडिंग प्लाटून का जिला समिति का सदस्य और केन्द्रीय तकनीकी समिति का सदस्य भी था। उसके ऊपर दस लाख रू. का इनाम भी घोषित था। किस्मत सेक्शन कमांडर था और उसके ऊपर एक लाख रु. का इनाम था।

इस वीरतापूर्ण कार्रवाई के निष्पादन में उपर्युक्त कर्मियों ने विषम परिस्थितियों में बड़ी संख्या में नक्सलियों के विरुद्ध गंभीर व्यक्तिगत जोखिम उठाते हुए उल्लेखनीय वीरता, असाधारण बहादुरी और अद्वितीय साहस का परिचय दिया है। अभियान संबंधी यह उल्लेखनीय सफलता उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई के कारण ही हासिल हो पाई। यहां यह भी उल्लेख करना प्रासंगिक है कि नक्सलियों की कंपनी के विरुद्ध किसी भी अभियान में हथियार के साथ नक्सलियों के शव की बरामदगी एक दुर्लभ घटना है, लेकिन यह इन अधिकारियों और जवानों की सजग लड़ाई के कारण संभव हुआ।

बरामदगी:

सैन्य दल द्वारा घटना स्थल से निम्नलिखत हथियार/गोलाबारूद एवं अन्य सामग्रियां बरामद की गई थी:-

12 बोर की बंदूक-01, एसएलआर मैगजीन-01, कार्मिक-रोधी प्रणाली के साथ 22 कंटेनर, ग्रेनेड-02, 12 बोर राउंड-22, डेटोनेटर-04, 06 वोल्ट की बैटरी, .303 राउंड-06, .303 के खाली खोखे-02, एस एल आर के खाली खोखे-09, आर डी एक्स-03 कि.ग्रा., कॉर्डेक्स तार-02 फीट, खाली पाउच-02।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री एस. ईलांगो, उप महानिरीक्षक, जी. मधु, सहायक कमांडेंट, मलेक शाहिद अहेमद, हेड कांस्टेबल/आर ओ एवं दावल साब, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का द्वितीय बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.02.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 145-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जी. मधु, सहायक कमांडेंट (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. रंजीत सिंह, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)
3. सजीथ ओ. वी., कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

छत्तीसगढ़ के जिला-बीजापुर में गांव-गोरणा, मनकाली और पंकुर के निकट 20-25 सशस्त्र कैडरों के साथ नक्सल कमांडर गोपी की मौजूदगी के बारे में आसूचना प्राप्त होने पर श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट द्वारा एक अभियान शुरु किया गया। चूंकि नक्सलियों के समूह के वास्तविक स्थान का पता नहीं था, अत: पहले उस क्षेत्र में एक छोटे समूह में जाकर ठहरने और वहां निगरानी रखते हुए उपयुक्त समय पर हमला करने का निर्णय लिया गया। लक्षित क्षेत्र में नक्सलियों का अत्यधिक प्रभाव था क्योंकि यह बीजापुर के घने जंगलों के किनारे पर स्थित था और वहां कम कार्मिकों के साथ कार्य को अंजाम देना बेहद जोखिमपूर्ण था। तथापि, श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट ने इस तथ्य को जानते हुए कि बड़े सैन्य दल की गतिविधि को छिपाकर रखना कठिन होगा, ऐसा जोखिम लेने का निर्णय लिया। उन्होंने उप पुलिस महानिरीक्षक, कार्यालय, बीजापुर में तैनात सीआरपीएफ के विशेष कार्रवाई दल और राज्य के पुलिस कार्मिकों को शामिल करते हुए एक हमला दल का गठन किया और 14 जुलाई, 2013 की भोर में अभियान के लिए रवाना हो गए।

पहले दिन सैन्य दल बेहद सूझबूझ से भोर होने से पूर्व ही गांव-पंकुर के निकट पहुंच गया और एक अच्छी स्थिति वाले स्थान पर तैनात हो गया। उस क्षेत्र की सुबह से रात तक निगरानी की गई और जब वहां कोई भी संदिग्ध मामला नजर नहीं आया तब सैन्य दल अगली सुबह गांव-गोरना और मनकाली की ओर बढ़ गया। दिनांक 15.7.2013 को सैन्य दल ने सुबह से रात तक उस क्षेत्र की निगरानी की। रात के समय उन्हें पास की पहाड़ी में रोशनी तथा कुछ लोगों की संदिग्ध गतिविधियां नजर आईं जिनसे वहां नक्सलियों की मौजूदगी के संकेत मिल रहे थे। तभी सुबह में जंगल की तलाशी लेने का निर्णय लिया गया। दिनांक 16.7.2013 को सुबह में सैन्य दल गुप्त रुप से उस पहाड़ी की ओर बढ़ने लगा लेकिन जैसे ही वे कुछ आगे गए तो उन्होंने पाया कि गंतव्य स्थान तक पहुंचने के लिए उन्हें पंक्तिबद्ध रुप से आगे बढ़ना होगा। उस क्षेत्र में घात की आशंका को देखते हुए श्री जी. मधु ने सैन्य दल को दो समूहों में विभाजित किया, जिसमें से एक का नेतृत्व उन्होंने अपने पास रखा जबकि दूसरे समूह की कमान राज्य पुलिस के एएसआई अंबिका प्रसाद ध्रुव को सौंपी गई। उन्होंने यह योजना बनाई थी कि वह सीधी पंक्ति में आगे बढ़ते हुए वहां किसी भी प्रकार की घात की स्थिति होने पर उसका पर्दाफाश करेंगे, जबकि दूसरा समूह बायीं ओर से आगे बढ़ते हुए उक्त घात के ऊपर जवाबी हमला करेगा। पंक्ति में आगे बढ़ना बेहद जोखिम भरा था और इसमें जान को जोखिम भी था लेकिन घात का पता लगाने के लिए यह आवश्यक था। दूसरे समूह को बाएं किनारे को कवर करने के लिए भेजने के बाद सजीथ ओ. वी. और रंजीत नामक कांस्टेबल के साथ श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट पंक्ति में आगे बढ़ने लगे। बमुश्किल जब यह समूह कुछ ही कदम आगे बढ़ा था, तभी वहां घात लगाकर बैठे नक्सलियों ने उनके ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी

शुरु कर दी। कमांडर और उनका सैन्य दल इस दुर्लभ अवसर की प्रतीक्षा में था और उन्होंने गोलियों की बौछार की परवाह किए बगैर घात का जवाब दिया और वे बेहद निडरता एवं साहसी तरीके से आगे बढ़ते रहे। नक्सलियों ने बेहद रणनीतिक तरीके से घात लगाई और वे सुरक्षित आड़ में ऊंचाई पर स्थित अपने प्रभाव वाले स्थानों पर तैनात थे। सजीथ ओ. वी. और रंजीत नामक कांस्टेबल के साथ श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ाई करना शुरु किया ताकि वे नक्सलियों के निकट पहुंच कर उनके ऊपर अंतिम धावा बोल सकें। नक्सलियों ने अत्यंत सावधानी से इस घात की योजना बनाई थी और वे सैन्य दल की इस गतिविधि की प्रतीक्षा में थे, क्योंकि निकटवर्ती पहाड़ी में छिपे नक्सलियों के दूसरे समूह ने भी आगे बढ़ रहे सैन्य दल पर गोलीबारी शुरु कर दी। ऐसी स्थिति में ये तीनों दो दिशाओं से हो रही गोलीबारी के बीच फंस गए थे और उनकी जान पर गंभीर खतरा मंडरा रहा था। यह देखते हुए कि नक्सलियों का दूसरा समूह उसी दिशा में था जहां उन्होंने अपने दल को भेजा था, श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट ने उन्हें नक्सिलयों की ओर बढ़ कर उन्हें उलझाने का आदेश दिया। उसी समय अपने ऊपर हो रही गोलीबारी और फेंके जा रहे हथगोलों की मात्रा में वृद्धि को देखते हुए उन्होंने अपने साथ मौजूद दो कांस्टेबलों को यूबीजीएल से गोली चलाने का आदेश दिया। अपने चारों ओर जमीन में लग रही गोलियों की परवाह किए बगैर दोनों कांस्टेबल ने अपनी आड़ से बाहर निकल कर खड़े होकर गोलियां चलानी शुरु कर दी क्योंकि लेट कर गोली चलाना मुश्किल था। यूबीजीएल की गोलीबारी ने नक्सलियों के हौसले को पस्त कर दिया जिसके परिणामस्वरुप उनकी ओर से गोलीबारी की मात्रा कम हो गयी। इसी प्रकार नक्सलियों के दूसरे समूह को भी उलझा दिए जाने के कारण उस दिशा से भी गोलीबारी रुक गई। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट ने अपनी टुकड़ी को भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया जबकि कांस्टेबल सजीथ ओ. वी. और कांस्टेबल रंजीत के साथ वे सूझबूझ से आगे बढ़ने लगे। सहायक गोलीबारी एवं सूझबूझ के साथ गोलीबारी करने और आगे बढ़ने के कारण वे नक्सलियों के निकट पहुंचने में सफल रहे। उनके निकट पहुंच कर उन्होंने देखा कि हरे रंग की पोशाक में एक नक्सली लगातार उनके ऊपर गोलीबारी कर रहा है। बगैर समय गंवाए तीनों बहादुर सेनानियों द्वारा सधी हुई एवं निशाना लगाकर की गई गोलीबारी से उसे मार गिराया गया। अपने एक साथी कैडर की यह दशा देखकर नक्सली एक-दूसरे के लिए सहायक गोलीबारी करते हुए उस क्षेत्र से भागने लगे। इन तीनों ने काफी दूरी तक उनका पीछा करते हुए उनमें से कुछ और नक्सलियों को घायल कर दिया, लेकिन वे पहाड़ी स्थलाकृति, घने जंगल और वहां से भागने के पूर्व निर्धारित रास्तों का लाभ उठाते हुए निकल भागने में सफल हो गए। उस क्षेत्र की तलाशी लेने पर वहां से .303 राइफल, .303 के 12 राउंड, एक एचई ग्रेनेड, 04 डेटोनेटर, एक काले रंग के पिट्ठू, नक्सली साहित्य, 02 पाउच, 01 रेडियो और 05 तीर आदि के साथ मदावी हिडमा, पुत्र-हांडो, गांव-गोरना नामक एक वर्दीधारी नक्सली का शव बरामद हुआ।

इस अभियान की सफलता के लिए सैन्य दल के सदस्य गुप्त रुप से 3 दिन और रात जंगल में रहा और नक्सलियों से संपर्क स्थापित किया। ऐसा घात की जवाबी कार्रवाई के दौरान श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी रंजीत सिंह और कांस्टेबल/जीडी सजीथ ओ. वी. द्वारा प्रदर्शित साहस के कारण ही हो पाया और सुरक्षा बलों को भारी नुकसान पहुंचाते हुए हताहत करने की नक्सलियों की योजना विफल हो गई। उनके अदम्य साहस, अद्वितीय बहादुरी और सूझबूझ से युक्त दूरदर्शिता के परिणामस्वरुप न केवल एक नक्सली मारा गया और कुछ नक्सली घायल हुए, बल्कि इससे छोटे दल के अभियान की सफलता का एक उदाहरण भी कायम हुआ।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जी. मधु, सहायक कमांडेंट, रंजीत सिंह, कांस्टेबल और सजीथ ओ. वी., कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16.07.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 146-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. दिलीप कुमार मिश्रा,
   हेड कांस्टेबल

2. टीकम,
   कांस्टेबल

3. अनिल कुमार,
   सहायक कमांडेंट

4. जितेन्द्र सिंह,
   कांस्टेबल

5. मंजीत सिंह,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

झारखंड के लातेहार जिले के घने जंगलों में स्थित पुलिस स्टेशन गारु के अंर्तगत नक्सलियों के सहानुभूति वाले क्षेत्रों, अर्थात सरजू, कुकू, रानीडाह, कटिया, चतम आदि में उनकी आवाजाही के बारे में आसूचना संबंधी विस्तृत सूचना एकत्र करने के बाद, एक नक्सल समूह के अपने नेताओं, मुख्य रुप से मृत्युंजय और इंद्रजीत की कमान में आवाजाही के संबंध में दिनांक 29.04.2014 को सूचना प्राप्त हुई। इसके अलोक में सैन्य दल द्वारा तय की जाने वाली यात्रा की दूरी, नक्सलियों की त्वरित चेतावनी प्रणाली, संपर्क मार्गों में भारी मात्रा में बिछाई गई बारुदी सुरंगों और प्रहरियों की सूझबूझपूर्ण तैनाती पर विचार करते हुए नक्सलियों पर उनके ही गढ़ में घुस कर हमला करना एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य था। अत: उस क्षेत्र में सर्जिकल अभियान चलाने का कार्य सीआरपीएफ के 203 और 209 बटालियनों के शक्तिशाली कोबरा सैन्य दल को सौंपा गया। उन्हें घने जंगल में लक्ष्य की तलाश करके उपयुक्त समय पर हमला करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

तदनुसार "ऑपरेशन-ईगल" की योजना बनाई गई जिसमें प्रत्येक कोबरा के 6 दलों और झारखंड जगुआर के 2 दलों को लक्ष्य की तलाश में जंगल में फैला दिया जाना था। नक्सलियों की त्वरित चेतावनी प्रणाली और उनके द्वारा उस क्षेत्र में लगाई गई आईईडी से बचने के लिए यह आवश्यक था कि सैन्य दल अंधेरे की आड़ में लक्षित क्षेत्र में प्रवेश करे। सैन्य दल सिविल ट्रकों में सवार होकर अपने आधार शिविरों से रवाना हआ और तय स्थान पर ट्रकों से उतर कर वे अंधेरे में गुप्त रुप से जंगल के भीतर चले गए। सभी दल उस क्षेत्र में फैल गए और वे आपसी सहायता कायम रखते हुए सामानांतर रुप से आगे बढ़ने लगे। श्री अनिल कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में आगे बढ़ रहा 209 कोबरा का दल सं. 10 एक ऐसा छोटा दल था, जो तलाशी अभियान का नेतृत्व कर रहा था। चूंकि उस क्षेत्र में अनेक स्थानों पर घात का खतरा था, अत: कांस्टेबल/जीडी टीकम, कांस्टेबल/जीडी जितेंद्र, एचसी/जीडी डी.के. मिश्रा और कांस्टेबल/जीडी मंजीत सिंह को स्काउट का कार्य सौंपा गया था ताकि वे आगे रहते हुए बड़े क्षेत्र को कवर कर सकें। यह दल बेहद सतर्कतापूर्वक जंगल को छानबीन रहा था और नक्सलियों की मौजूदगी अथवा उनसे संबंधित रहस्यों के संकेत की तलाश कर रहा था। जैसे ही यह दल कुछ आगे बढ़ा तभी उसके स्काउटों ने वहां की गीली जमीन पर कुछ पदचिन्ह देखे और उन्होंने अपने दल के अन्य सदस्यों को सतर्क कर दिया। पदचिन्हों के निशान से यह तय था कि वहां कहीं आस-पास में नक्सली अथवा आम नागरिक मौजूद थे। सैन्य दल और अधिक सतर्क हो गया और वह गुप्त रुप से बारीकी से क्षेत्र की तलाशी तेले हुए धीमी गति से आगे बढ़ने लगा। पहाड़ी जंगल के बीच एक ढ़लान पर चढ़ाई करते समय सैन्य दल ने पहाड़ी के ऊपर एक अस्थायी झोपड़ी देखी। कुछ समय के लिए उस झोपड़ी को निगरानी में रखा गया लेकिन जब वहां कोई हलचल/गतिविधि नहीं देखाई पड़ी तो सैन्य दल आगे बढ़ गया। निकटवर्ती पहाड़ी के ऊपर एक और झापेड़ी पर उनकी नजर गई लेकिन इससे पहले कि सुरक्षा दल कोई कार्रवाई कर पाता, वहां छिपे नक्सलियों के द्वारा उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरु कर दी गई। ऐसा महसूस हुआ कि सैन्य दल को अपने मारक ज़ोन में लाने के लिए नक्सलियों ने जाल बिछा रखा था, लेकिन सतर्क सैन्य दल ने पूरी सूझबूझ और बुद्धिमता से इस स्थिति को टाल दिया। सैन्य दल ने तत्काल पोजीशन ली और जवाबी गोलीबारी की। गरज रही बंदूकों और चारों ओर गोलियों की बौछार के बीच दल के कमांडर श्री अनिल कुमार, सहायक कमांडेंट ने किनारे से घात का जवाब देने की रणनीति बनाने की योजना बनाई। एक बड़े पत्थर की आड़ लते हुए, जिसके ऊपर नक्सलियों की गोलियां लगातार लग रही थीं, उन्होंने नक्सलियों के स्थान और मौजूदगी का आकलन किया और तदनुसार अपने दल को दो हिस्सों में विभाजित किया। नक्सलियों ने सामने की पहाड़ी की दो चोटियों पर डेरा डाल रखा था, जिनके बीच एक झरना बह रहा था। लेकिन आगे की कोई कार्रवाई किए जाने से पूर्व नक्सलियों को लक्षित गोलीबारी करने से रोकना आवश्यक था। उन्होंने अपने सैन्य दल को नक्सलियों के ऊपर लगातार भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया और इस प्रयास में स्टीक गोलीबारी करने के लिए वे स्वयं भी आड़ से निकल कर बाहर आ गए। कांस्टेबल/जीडी मंजीत सिंह और कांस्टेबल/जीडी जितेंद्र उस दल का नेतृत्व कर रहे थे, जिस बायें किनारे से धावा बोलना था। वे बेहद खामोशीपूर्वक गोलीबारी वाले क्षेत्र से बाहर निकले और गुप्त रुप से उस दिशा की ओर बढ़ने लगे। नक्सलियों से सामना होने पर उन्होंने उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरु कर दी और हथगोले फेंके। आपसी समन्वय बनाते हुए दूसरा दल भी गोलीबारी वाले क्षेत्र से निकलकर दाहिने किनारे की ओर बढ़ गया।

एचसी/जीडी डी.के. मिश्रा और कांस्टेबल/जीडी टीकम अपने कमांडर के अधीन आगे बढ़कर नक्सलियों के बेहद नजदीक पहुंच गए और उन्होंने वहां डटे हुए नक्सलियों पर भारी गोलीबारी शुरु कर दी। नक्सलियों ने सैन्य दल को बड़े पैमाने पर हताहत करने के उद्देश्य से उनके ऊपर हथगोले फेंकने के साथ-साथ लगातार गोलीबारी की। लेकिन अपने कमांडर के अधीन सैन्य दल ने अपना हौसला नहीं खोया और अपनी-अपनी यूबीजीएल से ग्रेनेड फेंकने के लिए सुरक्षित आड़ से निकल कर बाहर आ गए। इस सैन्य दल की गोलीबारी और अदम्य साहस से नक्सलियों का मनोबल गिर गया और वे पीछे हटने लगे। उन्हें पीछे हटते देखकर तीनों बहादुर सेनानी अर्थात सहायक कमांडेंट श्री अनिल कुमार, एचसी/जीडी, डी.के. मिश्रा और कांस्टेबल/जीडी टीकम ने निकटवर्ती पहाड़ी के ऊपर से अपने ऊपर हो रही गोलीबारी के बावजूद और अपनी जान की परवाह किए बगैर उनका पीछा किया। वहां से भाग रहे नक्सली पहाड़ी के नीचे भागे और अपना पीछा होते देखकर उन्होंने झरने के बीच बड़े पत्थरों की आड़ में बैठ कर पोजीशन ले ली। निकटवर्ती पहाड़ी की चोटी पर डटे नक्सलियों ने भी अपने साथियों की सहायता के लिए वहां पहुंचने की कोशिश की लेकिन कांस्टेबल/जीडी मंजीत सिंह और कांस्टेबल/जीडी जितेंद्र द्वारा प्रभावी रुप से उनका रास्ता रोक दिया गया। नक्सलियों का पीछा कर रहे तीनों सेनानियों ने उन्हें भागने नहीं दिया और वे अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर गोलीबारी करते हुए सूझबूझ से आगे बढ़ते रहे। आगे बढ़ रहे सैन्य दल को देखकर नक्सलियों ने लगातार गोलीबारी करके और हथगोले फेंककर भय का माहौल पैदा करके उसका लाभ उठाते हुए वहां से भागने का अंतिम प्रयास किया। लेकिन इससे बहादुर कमांडो झुके नहीं, बल्कि उन्होंने और अधिक उग्रता से जवाबी गोलीबारी की। बेहद नजदीक से हुई इस गोलीबारी में दो नक्सली मारे गए। इसी बीच कुछ नक्सली उस स्थान से भागने में सफल हो गए और वे भाग कर उसी पहाड़ी की चोटी की ओर गए जहां से अन्य नक्सली गोलीबारी कर रहे थे। वहां से भाग रहे नक्सलियों को देख कर कांस्टेबल/जीडी मंजीत सिंह और कांस्टेबल/जीडी जितेंद्र ने पहाड़ी की चोटी से अपने ऊपर हो रही गोलीबारी की परवाह किए बगैर और सुरक्षा संबंधी सभी एहतियातों दर-किनार करते हुए आड़ से बाहर आकर उनके ऊपर गोलीबारी की। नक्सलियों ने उन सेनानियों को मारने की कोशिश की लेकिन उनकी उग्र प्रतिक्रिया को देखते हुए उस क्षेत्र से भागना ही सुरक्षित समझा। इस गोलीबारी में भी कांस्टेबल/जीडी मंजीत सिंह और कांस्टेबल/जीडी जितेंद्र एक नक्सली को मार गिराने और कुछ अन्य नक्सलियों को घायल करने में सफल रहे।

अभियान के दौरान सैन्य दल द्वारा प्रदर्शित बहादुरी, शौर्य एवं सूझबूझ से पूर्ण दूरदर्शिता के परिणामस्वरुप 03 नक्सली मारे गए और 01 इन्सास राइफल, 02 .303 राइफल, जिंदा राउंड, डेटोनेटर, मोबाइल, कारतूस की थैली, बैग, देशी बम, नक्सली साहित्य एवं अन्य सामग्रियां बरामद हुईं। सैन्य दल द्वारा प्रदर्शित साहस ने अभियान का रुख बदल दिया जिसमें शुरु में दयनीय स्थिति में होने के बावजूद उन्होंने स्थिति पर काबू पाते हुए घात का जवाब दिया और नक्सलियों के तीन कैडरों को मार गिराया। (नक्सलियों के संवाद को इंटरसेप्ट करने पर पता चला कि उनके 05 कैडर मारे गए थे और दो गंभीर रुप से घायल हुए थे)।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री दिलीप कुमार मिश्रा, हेड कांस्टेबल, टीकम, कांस्टेबल, अनिल कुमार, सहायक कमांडेंट, जितेंद्र सिंह, कांस्टेबल और मंजीत सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.04.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 147-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजेन्द्र कुमार,
   सहायक कमांडेंट
2. अनिल कुमार,
   कांस्टेबल
3. बिपिन सिंह,
   कांस्टेबल

4. जी. हरी प्रसाद,
   कांस्टेबल

5. पूरन मल जाट,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05.02.2012 को 1545 बजे विश्वसनीय स्रोत से यह सूचना प्राप्त हुई थी कि पुलिस स्टेशन बेलपहाड़ी, जिला-पश्चिम मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) के अधीन गांव मधुपुर के निकट मधुपुर जंगल में 08-10 सशस्त्र माओवादी कैडर इकट्ठा हुए हैं। यह सूचना प्राप्त होने पर श्री राजेंद्र कुमार, एसी, ओसी बी/169 बटालियन के साथ श्री वीरेंद्र कुमार, उप कमांडेंट, 169 बटालियन, सीआरपीएफ (डीसी/ऑपरेशन्स) ने, जो कि कमांडेंट (एओएल) का प्रभार संभाल रहे थे, गांव मधुपुर के वन क्षेत्र में छापा एवं छानबीन/तलाशी अभियान चलाने की योजना बनाई और उन्होंने इसके बारे में वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित कर दिया।

श्री राजेन्द्र कुमार, एसी द्वारा इस सूचना की सत्यता की जांच की गई और आगे उन्होंने इसकी सूचना वीरेंद्र कुमार, डीसी (ऑपरेशन्स) को दी। श्री वीरेंद्र कुमार, डीसी ने ओसी एफ/169 श्री दीपक शुक्ला, एसी (तदर्थ) और ओसी ए/169 निरीक्षक/जीडी गणेश कुमार को किसी भी प्रकार की घात पर काबू पाने एवं अपना बचाव करने के लिए गांव निगोरिया से भुलाबेदा तक के मार्ग के साथ आरओपी लगाने और जरुरत पड़ने पर अतिरिक्त बल को तैयार रखने का निर्देश दिया। इसके साथ ही उन्होंने श्री राजेंद्र कुमार, एसी को हमला दल के रुप में कार्य करने के लिए अपनी टुकड़ी के साथ सूझबूझ के साथ मधुपुर गांव के लिए कूच करने का निर्देश दिया। इसी बीच, उन्होंने यूनिट क्यू.ए.टी. और जी/169 की विशेष प्लाटून को तैयार किया और मधुपुर गांव के लिए रवाना हो गए। मधुपुर गांव पहुंच कर श्री राजेंद्र कुमार, एसी ने पश्चिम बंगाल पुलिस के एएसआई नारायण प्रमाणिक की कमान के अधीन वाली स्थानीय पुलिस के साथ अपनी रिवर्ज पार्टी को अभियान वाले क्षेत्र के बेहद नजदीक सूझबूझ से अधिपत्य वाले स्थान पर तैनात कर दिया।

गांव के क्षेत्र में पहुंच कर श्री वीरेंद्र कुमार, डीसी और उनके दल ने तत्काल इस गांव और उससे लगे जंगल के क्षेत्र को घेर लिया। श्री राजेंद्र कुमार, एसी के नेतृत्व में हमला दल ने उस क्षेत्र की गहन तलाशी शुरु की। हमला दल द्वारा तलाशी के दौरान, उनकी नजर मधुपुर गांव के छोर पर जंगल के निकट हथियारों से लैस कुछ महिलाओं सहित 8-10 लोगों पर गई जो कि बैठक का अयोजन करते हुए प्रतीत हो रहे थे। सुरक्षा दस्ते को अपनी ओर आते देख उन सभी व्यक्तियों ने माओवादी नारा लगाते हुए सुरक्षा बलों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। हालांकि हमला दल माओवादियों की गोलीबारी में घिर गया था, फिर भी उन्होंने चिल्लाते हुए उनसे गोलीबारी बंद करने और आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने सैन्य दल पर गोलीबारी करना जारी रखा।

सरकारी संपत्ति की रक्षा करने और अपने सहकर्मियों की जान बचाने के अलावा कोई अन्य विकल्प मौजूद नहीं देख कर श्री राजेंद्र कुमार, एसी ने कांस्टेबल/जीडी अनिल कुमार, कांस्टेबल/जीडी बिपिन सिंह, कांस्टेबल/जीडी जी. हरी प्रसाद, कांस्टेबल/बिगुलर पूरन मल जाट के साथ मिलकर निजी बचाव की कवायद करते हुए तथा अद्वितीय साहस एवं बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए आपस में दूरी बनाकर सूझबूझ के साथ आगे बढ़ना शुरु किया और उन्होंने निशाना साधते हुए माओवादी दस्ते पर गोलीबारी शुरु की। दोनों ओर से लगभग 20 मिनट तक गोलीबारी हुई। गोलीबारी रुकने पर सैन्य दल ने माओवादियों की हलचल/गतिविधि को भांपने के लिए उपयुक्त समय तक प्रतीक्षा की। तत्पश्चात, सैन्य ने सभी आवश्यक एहतियाती कदम उठाते हुए पश्चिम बंगाल पुलिस के एएसआई नारायण प्रमाणिक की कमान में सिविल पुलिस के साथ उस क्षेत्र की तलाशी लेना शुरु किया और वहां उन्हें गोली लगने से मारे गए एक माओवादी का शव पड़ा मिला। मृतक के पास खाली मैगजीन के साथ एक काम चलाऊ पिस्तौल थी और उसके दाहिने हाथ में मेड इन यूएसए तराशी हुई एक ऑटोमेटिक पिस्तौल थी और उसकी उंगली पिस्तौल के ट्रिगर पर थी। बाद में राज्य पुलिस के द्वारा मृतक की पहचान एक कट्टर माओवादी नेता अर्जुन महतो उर्फ युधिष्ठिर के रुप में की गई। इसके अतिरिक्त उस क्षेत्र की तलाशी के दौरान निम्नलिखित हथियार/गोलाबारुद बरामद किए गए:- (1) 05 राउंड जिंदा कारतूस भरी हुई 7.65 उत्कीर्ण एक मैगजीन (2) केएफ 7.65 उत्कीर्ण एक दागा गया कारतूस, एक ओएफवी 08-एएफ खाली केस, (3) केएफ 7.65 उत्कीर्ण हुआ एक जिंदा कारतूस, (4) ओएफवी 09-ए7 के निशान वाले 07 राउंड दागे गए कारतूस और (5) ओएफवी 08 एएफ का निशाना वाला एक दागा गया कारतूस।

संपूर्ण अभियान में दुर्दांत नक्सिलयों की ओर से भारी गोलीबारी और अपनी जान को भारी जोखिम के बावजूद उपर्युक्त अधिकारी एवं सुरक्षा कर्मियों ने अनुकरणीय साहस, सौंपे गए कर्त्तव्यों के प्रति समर्पण एवं प्रभावी कमान/नियंत्रण का प्रदर्शन किया। अंतिम धावा की कार्रवाई सूखे हुए धान के खेत और हल्की झाड़ियों वाले क्षेत्र में की गई जहां बचाव के लिए न के बराबर कवर उपलब्ध था। माओवादियों की ओर से की गई भारी गोलीबारी के सामने जान को जोखिम वाली परिस्थितियों में उनके द्वारा प्रदर्शित हिम्मत न केवल अनुकरणीय है, बल्कि यह उच्च कोटि के साहस, वीरता, निष्ठा, समर्पण एवं कर्त्तव्यपरायणता को भी प्रदर्शित करता है। सैन्य दल और नक्सलियों के बीच बेहद कम दूरी से भारी गोलीबारी के कारण मौत हमेशा नजदीक थी।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजेंद्र कुमार, सहायक कमांडेंट, अनिल कुमार, कांस्टेबल, बिपिन सिंह, कांस्टेबल, जी. हरी प्रसाद, कांस्टेबल और पूरन मल जाट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.02.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 148-प्रेज/2014-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजू कुमार,
   सहायक कमांडेंट

2. विनोद सिंह,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस अधीक्षक, ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय से प्रतिबंधित विद्रोही समूह, जीएमएनएलए के वरिष्ठ कैडरों की मौजूदगी के स्थान के बारे में दिनांक 18.07.2013 को अत्यंत विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। प्राप्त सूचना के अनुसार, जूनियर काडरों के साथ-साथ मरकुस एम. संगमा (विलियम नगर के एरिया कमांडर 'जिम्मी' का द्वितीय कमान) नामक जीएनएलए का वरिष्ठ सदस्य अत्याधुनिक हथियारों के साथ बनसामगरे के जंगल क्षेत्र में मौजूद था और वह स्पष्ट रूप से सुरक्षा बलों पर हमला करने वाला था। तदनुसार, श्री जोसेफ किशिंग, कमांडेंट, 210 कोबरा बटालियन और पुलिस अधीक्षक ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय के साथ विस्तृत विचार-विमर्श के पश्चात श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान के अधीन मेघालय पुलिस के स्वात दल के साथ 210 कोबरा के सैन्य दल ने बनसामगरे के जंगल क्षेत्र में अभियान शुरू किया गया। जंगल के कठिन भू-भाग में पूरी रात चलने के बाद, सैन्य दल संदिग्ध स्थल पर पहुंच गया। विद्रोहियों को बचकर निकलने से रोकने की रणनीति के अनुसार कट-ऑफ पार्टियां अनेक स्थानों पर तैनात कर दी गईं और धावा बोलने वाले दल पहाड़ की चोटी पर स्थित विद्रोहियों के छिपने वाले स्थान की ओर कूच कर गए। धावा बोलने वाला दल बेहद सावधानी के साथ गोपनीय तरीके से आगे बढ़ रहा था और वे अभी तक कायम रखी गई गोपनीयता को खोना नहीं चाहते थे। लेकिन जैसे ही वे आगे बढ़े तभी झाड़ी के पीछे छिपे विद्रोहियों के एक संतरी ने उन्हें देख लिया और उसने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसके तुरंत बाद अन्य विद्रोहियों ने भी भारी गोलीबारी शुरू कर दी और उनकी बन्दूकों की गर्जना और गोलीबारी से जंगल का शांत एवं सुरम्य वातावरण रणभूमि में तब्दील हो गया। श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट ने अपने सैन्य दल को भारी गोलीबारी के दायरे में देखकर और उनकी जानों पर गंभीर जोखिम को महसूस करते हुए तत्काल संपूर्ण तीव्रता के साथ विद्रोहियों पर भारी जवाबी गोलीबारी करने का आदेश दिया। वहां अत्यंत नजदीक से दोनों ओर से भारी गोलीबारी हुई, लेकिन विद्रोहियों को जल्द यह अहसास हो गया कि वे सैन्य दल के हौसले का सामना नहीं कर पाएंगे। वहां से भागने के प्रयास में उन्होंने सैन्य दल के ऊपर अनेक हथगोले फेंके और उनके विस्फोटों की आड़ लेते हुए जंगल के अन्दरूनी हिस्सों में पीछे भागना शुरू कर दिया। कुछ समय पश्चात विद्रोहियों की ओर से गोलीबारी बंद हो गई। इस समय तक विद्रोहियों की ओर से लड़ाई बेशक समाप्त हो गई थी, लेकिन श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट ने तब तक यह निर्णय ले लिया था कि वे नक्सलियों को वहां से भागने नहीं देंगे। उन्होंने सभी कट-ऑफ पार्टियों को इस स्थिति से अवगत कराया और उन्हें अतिरिक्त सावधान और सजग रहने का आदेश दिया।

श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट अपने लक्ष्य का पीछा करते हुए अपने दल के साथ जंगल के काफी भीतर पहुंच गए और वहां उन्हें अस्थाई तौर पर तैयार किए गए कुछ मोर्चों के साथ-साथ एक टॉवर मोर्चा भी दिखाई दिया। घिरे हुए विद्रोहियों की ओर से तत्काल एवं अचानक हमले से अपनी जान पर जोखिम के बावजूद उन्होंने घने जंगल की तलाशी जारी रखी। उस स्थान पर घनी एवं ऊंची झाड़ियों

के कारण कोई भी चीज सिर्फ कुछ ही मीटर आगे तक दिखाई देती थी और वह स्थान अचानक हमले के लिए बेहद उपयुक्त था। अपने एवं अपने दल के सदस्यों की जान के जोखिम को महसूस करते हुए श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट ने एक सोचा समझा जोखिम मोल लिया और उन्होंने एक संदिग्ध क्षेत्र की दिशा में कट-ऑफ पार्टी सं. 5 को यूबीजीएल से ग्रेनेड दागने का आदेश दिया। यूबीजीएल से ग्रेनेड दागे जाने के कारण जीएनएलए के दो कैडरों ने अचानक झाड़ी के पीछे से बाहर निकलकर सैन्य दल अंधाधुध गोलीबारी शुरू कर दी। कांस्टेबल/जीडी विनोद सिंह, जो स्काउट की भूमिका में थे, भारी गोलीबारी के दायरे में आ गए लेकिन वह वहां से सुरक्षित बाहर निकलने में सौभाग्यशाली रहे। अचानक हुई इस गोलीबारी के अचम्भे से उभरते हुए कांस्टेबल विनोद ने विद्रोहियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के बावजूद अपना संयम बरकरार रखा और उन्होंने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए जमीन पर लेटकर विद्रोहियों पर जवाबी गोलीबारी की। अपने सहयोगी के जीवन को भारी जोखिम में देखकर श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट अपनी जान की परवाह किए बगैर रेंगते हुए आगे बढ़े और उन्होंने साथ मिलकर जीएनएलए के कैडरों पर जवाबी गोलीबारी की जिसमें उन्होंने एक विद्रोही को मार गिराया जबकि दूसरा भागने में कामयाब हो गया। बाद में वहां ली गई तलाशी में सुरक्षा दल ने उस स्थल से ए.के. 56 राइफल-01, ए.के. 56 मैगजीन-03, ए.के. जिन्दा गोलाबारूद-148, कोल्ट पिस्तौल-01, पिस्तौल के गोलाबारूद-17, वाकी-टॉकी सेट-02 और चीनी ग्रेनेड-01 आदि के साथ मरकुस एम. संगमा नामक जीएनएलए कैडर का शव बरामद किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजू कुमार, सहायक कमांडेंट और विनोद सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.07.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 149-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. कौशल सधन गिरी,
   सहायक कमांडेंट
2. लाल सिंह,
   कांस्टेबल
3. मनीष कुमार तिवारी,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.04.2010 को पताम्दा पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी को पताम्दा पुलिस स्टेशन के अंतर्गत एक दूरस्थ और खतरनाक गांव बत्तोरिया, टोला श्रीरामपुर, जिला पूर्वी सिंहभूम (झारखंड) में माओवादी दस्ते के 3-4 सदस्यों की उपस्थिति के बारे में विश्वसनीय सूचना मिली। सूचना से यह भी पता चला कि ये माओवादी युवाओं को अपने संगठन में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। यह सूचना श्री के.एस. गिरी, कंपनी कमांडेंट, 7 बटालियन, सीआरपीएफ के साथ साझा की गई और तदनुसार एक अभियान की योजना बनाई गई। दिनांक 02.04.2010 को लगभग 2200 बजे सिविल पुलिस दल के साथ दो सशक्त प्लाटून पैदल ही लक्ष्य क्षेत्र की ओर गए। अभियान पर जाने से पहले दलों को सूचना, नियत कार्य और आसन्न खतरों के बारे में उचित रुप से बताया गया था। लक्षित गांव को घेरने और तलाशी के लिए उन्हें दो छोटे समूहों में बांटा गया था। घने अंधेरे, कठिन क्षेत्र, झाडियों, नालों और बारिश के बावजूद सैन्य दल तेजी से आगे बढ़ा और दिनांक 03.04.2010 को लगभग 0230 बजे बन्तोरिया गांव के निकट पहुंच गया। गांव के चारों ओर घना जंगल और पहाड़ियां थीं। नाइट विजन डिवाइस से गांव और आस-पास के जंगलों को देखने के बाद श्री के.एस. गिरि, सहायक कमांडेंट ने घेराव समूह को गांव की घेराबंदी करने का आदेश दिया। जैसे ही घेराव समूह ने गांव की घेराबंदीकरना आरंभ किया,

श्री के.एस. गिरि, सहायक कमांडेन्ट, कांस्टेबल/जीडी लाल सिंह, कांस्टेबल/बीयूजी मनीष कुमार तिवारी और हमला/तलाश दल के कुछ अन्य चुनिन्दा बहादुर जवान किसी संदिग्ध गतिविधि को देखकर गांव के नजदीक गए। गांव के आस-पास लोगों की अवांछित उपस्थिति को भांपकर, गांव के कुत्तों ने भौंकना आरंभ कर दिया। यह सोचकर कि माओवादी सतर्क हो जाएंगे और गांव से भागने का प्रयास करेंगे, श्री के.एस. गिरी, सहायक कमांडेंट ने अपने आधे दल को उसी स्थान पर छोड़ दिया और कांस्टेबल/जीडी लाल सिंह, कांस्टेबल/बीयूजी मनीष कुमार तिवारी और कुछ अन्य कर्मियों के साथ बचकर भागने के रास्ते को बंद करने के लिए तेजी से गांव के दूसरे छोर की ओर गए। उन्होंने तीन मानव परछाइयों को गांव के सबसे दूर वाले छोर की ओर भागते देखा। उन्हें माओवादी समझकर, श्री के.एस. गिरी ने अन्य दलों को पीछे रहने और आवश्यकता पड़ने पर कवर/सपोर्ट फायर देने का आदेश दिया जबकि उन्होंने कांस्टेबल लाल सिंह और कांस्टेबल मनीष कुमार तिवारी के साथ उनका पीछा करना आरंभ किया। यह देखकर कि उनका पीछा किया जा रहा है, माओवादी पीछे मुडे और सैन्य दलों पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। श्री के.एस. गिरी, सहायक कमांडेंट और उनके स्काउट बाल-बाल बचे, लेकिन इस प्रकार बाल-बाल बचने से न घबराकर उन्होंने जवाबी गोलीबारी की और पीछा करना जारी रखा। माओवादी सैन्य दलों की दृढ़ता और साहस को देखकर सैन्य दलों पर गोलीबारी करते हुए जंगल की ओर भागे। श्री के.एस. गिरी, सहायक कमांडेंट और उनके दो साहसी सैनिकों ने अपनी जान को जोखिम में डालकर और माओवादियों द्वारा उनकी जान को होने वाले खतरे की परवाह किए बिना उनका पीछा करना जारी रखा। जब श्री के.एस. गिरी, सहायक कमांडेंट और उनके स्काउट माओवादियों के नजदीक पहुंच गए, तो माओवादी फिर पीछे मुडे और कुछ राउण्ड गोलियां चलाईं। सैनिक फिर नीचे झुक गए और गोलियों उनके नजदीक से निकल गईं। यह देखकर कि जंगल के अंत और माओवादियों के बीच की दूरी कम रह गई है, तीनों ने उन पर गोलियां चलाई और लक्षित तथा सटीक गोलीबारी के कारण भाग रहा एक माओवादी तुरंत नीचे गिर गया। अन्य दो माओवादी घने जंगल में घुसने में सफल रहे और एक पेड़ के पीछे पोजीशन लेकर सैन्य दल पर गोलीबारी की। सैन्य दल ने भी जवाबी गोलीबारी की और दो दिशाओं से उनका सामना करने का प्रयास किया। श्री के.एस. गिरि, सहायक कमांडेंट अकेले ही बांयी ओर गए जबकि दोनों कांस्टेबल अपनी दायीं ओर गए। दोनों दिशाओं से सैन्य दल का हमला देखकर माओवादी जंगल के काफी अंदर चले गए।

भोर में क्षेत्र की पूरी तरह तलाशी ली गई और क्षेत्र से भरी हुई पिस्तौल के साथ एक घायल माओवादी पकड़ा गया। पूछताछ करने पर गांव वालों ने बताया कि घायल व्यक्ति झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले के कमलपुर का निवासी एवं वांछित माओवादी सुनील गोराई उर्फ अमर गोराई है। वहां से ले जाते समय घायल माओवादी की मृत्यु हो गई।

इस सम्पूर्ण अभियान में, सहायक कमांडेंट श्री के.एस. गिरी और उनके दो बहादुर सैनिकों नामत: कांस्टेबल/जीडी लाल सिंह और कांस्टेबल/बीयूजी मनीष कुमार तिवारी ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी जान को गंभीर खतरा/जोखिम होने के बावजूद उन्होंने आगे बढ़कर अभियान का नेतृत्व किया। अभियान के दौरान उनकी पहल, तुरंत कार्रवाई और असाधारण साहस के परिणामस्वरुप बड़ी सफलता मिली, जिसमें एक खूंखार माओवादी मारा गया।

बरामदगी:

1.	आटोमैटिक पिस्तौल	-	01
2.	मैंगजीन	-	01
3.	जिंदा कारतूस	-	04
4.	चलाए गए खाली खोखे (के.एफ.7.65)	-	03
5.	चलाए गए खाली खोखे (के.एफ. 8 एमएम)	-	05
6.	मोबाइल फोन (माइक्रोमैक्स)	-	01 (07 सिमकार्ड के साथ)
7.	यामहा क्रक्स मोटर साइकिल रजि. नं.जेएच-05-6502- 01		
8.	नकदी-700/-रु.		

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कौशल सधन गिरी, सहायक कमांडेंट, लाल सिंह, कांस्टेबल और मनीष कुमार तिवारी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.04.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 150-प्रेज/2014-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री दिनेश सिंह रावत,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 29.03.2010 को लगभग 1230 बजे थाना प्रभारी, पुलिस स्टेशन बोरम, जिला-पूर्वी सिंहभूम, झारखंड के गांव पोखरिया में दलमा प्लाटून के प्रबोध सिंह उर्फ गिड्डू सरदार नामक खूंखार माओवादी की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त हुई। थाना प्रभारी ने इस सूचना को ई कंपनी/7 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कंपनी कमांडर के साथ साझा किया और तदनुसार श्री नीतेश कुमार, सहायक कमांडेंट (इको/7 बटालियन के.रि.पु.ब.) और उप निरीक्षक संजीव कुमार मिश्र (थाना प्रभारी, पुलिस स्टेशन, बोरम) द्वारा संदिग्ध गांव की घेराबंदी कर वहां तलाशी अभियान चलाने की योजना बनाई गई। इस अभियान के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दो प्लाटूनों और राज्य पुलिस के 9 कार्मिकों को शामिल करके एक दल तैयार किया गया। जैसा कि सूचना में बताया गया था कि यदि तत्काल कार्रवाई नहीं की गई तो माओवादी उस क्षेत्र से भाग जाएंगे इसलिए तैयार किए गए हमला दल ने वाहनों में बैठकर तुरंत उस गांव के लिए कूच किया और उन्होंने आनन-फानन में गांव के चारो ओर घेराबेदी कर दी। योजना बनते समय यह तय किया गया था कि दो दिशाओं से उस गांव की तलाशी ली जाएगी ताकि माओवादी के भागने की कोई गुंजाइश न रहे। राज्य पुलिस कर्मियों ने तलाशी दल बनाकर पूर्व दिशा से गांव की तलाशी शुरू की और सीआरपीएफ के सैन्य दल ने दूसरा तलाशी दल तैयार करके पश्चिम दिशा से गांव की तलाशी शुरू की। लगभग 1315 बजे जब राज्य पुलिस का तलाशी दल एक झोपड़ी के अन्दर प्रवेश कर रहा था, तभी उनके ऊपर उसके भीतर से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू हो गई। तत्काल उन्होंने पोजीशन ले ली और सीआरपीएफ से सहायता मांगी। सीआरपीएफ के तलाशी दल के कमांडर नीतेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने गोलीबारी की आवाज सुनकर उसी दिशा में अपने दल को पीछे आने का आदेश दिया। घटनास्थल पर पहुंचकर उन्होंने अपने सैन्य दल को उस झोपड़ी के चारों ओर घेरा डालने का आदेश दिया, जबकि वे स्वयं दरवाजे को कवर करते हुए काफी सूझबूझ के साथ तैनात हो गए। उन्होंने बेहद सूझबूझ से वहां से बचकर भागने के सभी संभावित रास्तों का विश्लेषण किया और यह सुनिश्चित किया कि बचकर भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए जाएं। माओवादियों को आत्मसमर्पण का एक और मौका दिया गया लेकिन इस चेतावनी का भी उनके ऊपर कोई असर नहीं हुआ और उन्होंने इसका जवाब गोलीबारी करके दिया। सामने के दरवाजे से उस झोपड़ी में प्रवेश करना जोखिमपूर्ण था और उसमें जान को खतरा हो सकता था। जब दोनों कमांडर यह सोच रहे थे कि इस स्थिति से कैसे निपटा किया जाए, तभी कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत ने दो दिशाओं से धावा बोलने और दूसरा मोर्चा खोलने के अपने विचार से उन्हें अवगत करवाया। विचार यह था कि दुश्मन के ऊपर उस दिशा से हमला किया जाए जिसके बारे में उसने सोच नहीं रखा हो और इसके लिए वे तैयार भी नहीं हो। यदि उस दिशा से उसे मार गिराना संभव न भी हो तब भी कम से कम इससे उसका ध्यान बंटेगा और इससे सैन्य दल को दरवाजे के करीब पहुंचने का अवसर मिलेगा। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि टाइल को हटाकर छत की ओर से हमला शुरू किया जा सकता है। सशस्त्र माओवादी पर सामने से हमला करना जान को जोखिम में डालने वाला कार्य था लेकिन कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत ने इसकी परवाह नहीं की और उन्होंने स्वेच्छा से छत से हमला करने की कार्रवाई की अगुवाई की। एक बड़े उद्देश्य के लिए अपने जान को जोखिम में डालते हुए कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत गुप्त रूप से छत के ऊपर पहुंच गए और उन्होंने वहां से टाइल को हटाना शुरू कर दिया। जैसे ही उक्त कांस्टेबल ने छत से टाइल को हटाया तभी वहां भीतर फंसे माओवादियों ने उन्हें मारने के उद्देश्य से उनके ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत वहां से बाल-बाल बच निकले लेकिन इससे विचलित हुए बगैर उन्होंने माओवादी के ऊपर जवाबी गोलीबारी की और संभवत: उसे घायल कर दिया। कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत के इस बहादुरीपूर्ण कृत्य से लड़ाई के लिए ने केवल एक दूसरा मोर्चा खुला बल्कि इससे अन्य सैनिकों को दरवाजे की और से नजदीक पहुंचने में सहायता मिली। तत्काल अन्य सैन्य दल ने भी नजदीक आकर दरवाजे के बाहर पोजीशन ले ली। स्वयं को घिरा देखकर और आगे बढ़ रहे सैन्य दल द्वारा पकड़े जाने अथवा मारे जाने के भय से माओवादी ने झोपड़ी में आग लगाकर वहां से भागने का अंतिम प्रयास किया। सैनिक पीछे हट गए लेकिन उन्होंने माओवादी को वहां से भागने का कोई मौका नहीं दिया। आग को बुझाने के प्रयास किए गए लेकिन लकड़ी के खंभों और तख्तों के जलने के कारण झोपड़ी ध्वस्त हो गई। मलबे की तलाशी ली गई और तलाशी के दौरान वहां से हथियार के साथ एक नक्सली का आंशिक रूप से जला शव बरामद किया गया।

अभियान के दौरान कांस्टेबल/जीडी दिनेश सिंह रावत ने न केवल वीरता एवं बहादुरी का प्रदर्शन किया बल्कि उन्होंने एक ऐसा सुझाव भी दिया जिसने अभियान की दिशा बदल दी। अभियान के दौरान उनके द्वारा प्रदर्शित सूझबूझपूर्ण कौशल और अदम्य साहस

अनुकरणीय था। उनकी पहल ने न सिर्फ सैन्य दल के अन्य सदस्यों में अत्यधिक विश्वास एवं हौसला उत्पन्न किया बल्कि इसके कारण एक माओवादी भी मारा गया।

बरामदगी:

1.	ऑटोमेटिक पिस्तौल (इटली में निर्मित)	:	01
2.	मैगजीन	:	01
3.	दागे गए खाली खोखे	:	03

इस मुठभेड़ में श्री दिनेश सिंह रावत, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.03.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 151-प्रेज/2014—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मूल चंद वर्मा,
   निरीक्षक

2. सुमित कुमार,
   कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया:

दिनांक 20 अक्टूबर, 2012, लगभग 1430 बजे सुरक्षा बलों को जम्मू एवं कश्मीर के बारामुला जिले के सोपोर पुलिस स्टेशन के शालपुरा क्षेत्र में आतंकवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त हुई। सूचना के आधार पर सीएएसओ की योजना बनाई गई थी और निरीक्षक एम.सी. वर्मा, एसओजी एवं जेकेपी की कमान में सीआरपीएफ की 179 बटालियन की ई कंपनी के सैन्य दलों द्वारा आरंभ की गई थी। बाद में 22 आरआर को भी इसमें शामिल होने तथा अभियान को और सुदृढ़ बनाने की सूचना दी गई थी। गांव की घेराबंदी करने के बाद, घरों की तलाशी लेने के लिए सीआरपीएफ और एसओजी का एक संयुक्त दल बनाया गया। निरीक्षक एस.सी. वर्मा तलाशी दल का नेतृत्व कर रहे थे और कुशलतापूर्वक एक-एक घर की तलाशी ले रहे थे। लगभग 1525 बजे, जब निरीक्षक एम.सी. वर्मा और उनके साथी नामत: कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी ने एक घर के ढके हुए बरामदे में प्रवेश किया, तब गैलरी के अंत में स्थित एक कमरे में छिपे आतंकवादियों ने उन पर दो ग्रेनेड फेंके और उसके बाद अंधाधुंध गोलीबारी की। सैन्य दल ने तुरंत जवाबी गोलीबारी की और अपनी पोजीशन ले ली। तथापि, ग्रेनेडों के विस्फोट के कारण कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी को उनके बाएं हाथ और बायीं कनपटी पर स्प्लिंटर से चोटें आईं। नजदीकी भयंकर गोलीबारी में अधिकांश सैनिक पीछे हट गए और घर के बाहर पोजीशन ली। तथापि, निरीक्षक एम.सी. वर्मा और कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी, जो सबसे आगे थे, बरामदे में ही रुके रहे और जवाबी कार्रवाई करते रहे। आतंकवादी सुरक्षा बलों को हताहत करने, उन्हें घर में प्रवेश करने से रोकने और पीछे से बच निकलने के लिए कमरे के अंदर से घर के प्रवेश द्वार पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। तथापि, निरीक्षक एम.सी. वर्मा इस स्थिति से नहीं घबराए। वास्तव में उन्होंने एक साहसिक जवाबी हमले की योजना बनाई और अपने साथी कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी की मदद से आतंकवादियों का खात्मा करने के लिए कमरे में प्रवेश करने का साहसिक निर्णय लिया। घर की गैलरी के दोनों ओर कमरे थे और आतंकवादी आखिरी कमरे में छिपे हुए थे जिसका दरवाजा घर के प्रवेश द्वार के सामने अर्थात बरामदा और प्रवेश-द्वार की ओर था। दोनों अपनी जान की परवाह किए बिना जवाबी हमला करने के लिए गोलीबारी करने और आगे बढ़ने की रणनीति को अपनाते हुए आतंकवादियों के निकट जाने की योजना बनाई। आतंकवादी कमरे के अंदर पूरी तरह सुरक्षित थे और पक्की दीवार के पीछे से गैलरी/प्रवेश द्वार पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। जवाबी हमला करने के लिए

दोनों बहादुर सिपाही एक दूसरे की कवरिंग और सहायक गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और आतंकवादियों से दो कमरों के निकट पहुंचने में सफल रहे। अपनी चोट की अधिक परवाह किए बिना कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी इस कार्य में अपने कमांडर की सहायता कर रहे थे जिसमें उनकी जान को जोखिम था और उन्होंने अनुकरणीय पराक्रम और साहस का प्रदर्शन किया। लेकिन शीघ्र ही उनके घावों से बहते खून ने उनकी चेतना को प्रभावित करना आरंभ कर दिया और उन्हें वहां से निकालने की आवश्यकता महसूस की गई। यह भांपकर कि आतंकवादियों से अकेले लड़ना बुद्धिमानी नहीं होगी और उनके साथी को तत्काल चिकित्सा सहायता की जरुरत है, निरीक्षक एम.सी. वर्मा ने कुछ समय के लिए घर से पीछे हटने और नए सैन्य दल के साथ हमला करने की योजना बनाई। बाहर पोजीशन लिए हुए सैन्य दल से सहायता मिलने की आशा बहुत कम थी क्योंकि आतंकवादियों ने अपनी गोलीबारी से घर के प्रवेश-द्वार को कवर किया हुआ था। इस मौके पर, निरीक्षक एम.सी. वर्मा ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर महान साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों की भारी गोलीबारी की परवाह किए बिना कांस्टेबल सुमित कुमार सोनी को निकालने की योजना बनाई। उन्होंने घायल कांस्टेबल को अपने कंधे पर रखा, आतंकवादियों को जवाबी गोलीबारी का मौका दिए बिना उन पर निरंतर गोलीबारी की और घायल कांस्टेबल को घर से बाहर ले आए। तदनंतर वे अपने वीरतापूर्ण कार्य से अपने घायल साथी की जान बचाने में सफल रहे। इसी बीच, जिस घर में आतंकवादी छिपे हुए थे, उसकी घेराबंदी कर ली गई और दलों को सभी बच निकलने के रास्तों पर लगा दिया गया।

मुठभेड़ की सूचना मिलने पर सीआरपीएफ और जेकेपी के वरिष्ठ अधिकारी भी घटनास्थल की ओर गए। रोशनी कम होने के कारण अभियान को रोकना पड़ा और मुठभेड़ स्थल की घेराबंदी की गई। अंदर छिपे आतंकवादी सारी रात बच निकलने के लिए नियमित अंतराल पर गोलीबारी करते रहे।

दिनांक 21 अक्टूबर, 2012 को अंतिम हमला किया गया जिसमें दो आतंकवादी मारे गए जिनकी मुजम्मिल अमीन डार उर्फ उरफी डार, निवासी बदामीबाग, सोपोर (एलईटी डिवीजन कमांडर) और अब्दुल्ला शहीन, निवासी पाकिस्तान के रुप में पहचान हुई।

बरामदगी:

1.	एके सीरीज राइफल	-	01
2.	एके मैगजीन	-	06
3.	चीन में निर्मित पिस्तौल	-	02
4.	पिस्तौल मैगजीन	-	02
5.	एके-47 के जिंदा कारतूस	-	10
6.	पिस्तौल की गोलियां	-	02
7.	चीन में निर्मित ग्रेनेड	-	02 (क्षतिग्रस्त अवस्था में)

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मूल चंद वर्मा, निरीक्षक और सुमित कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.10.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 152-प्रेज/2014-राष्ट्रपति, भारत तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रमेश चन्द्र,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12 दिसम्बर,2012 को 44वीं बटालियन, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा क्षेत्र में आधिपत्य कायम रखने के लिए गश्त शुरू की गई और गश्ती दल को बारूदी सुरंग (माइन) हटाने और तलाशी अभियान संबंधी कार्य सौंपा गया था। कांस्टेबल/जीडी रमेश चन्द्र गश्ती दल के सेक्शन सं. 1 के सदस्य थे, जो कि बाएं किनारे से आगे बढ़ रहा था। जब कांस्टेबल/जीडी रमेश चन्द्र, जो कि बाएं किनारे से दल का नेतृत्व कर रहे थे, एक नाले के निकट पहुंचे, तो उन्हें गोली चलने की आवाज सुनाई दी। वे तत्काल नीचे लेट गए और वहां से उन्होंने उस क्षेत्र की ओर देखना शुरू कर दिया जहां से गोली चलाए जाने की आवाज आई थी। उन्हें यह आभास हो गया कि नक्सलियों ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के सैन्य दल के लिए वहां घात लगा रखी है। इस बल की परम्पराओं के अनुरूप कांस्टेबल/जीडी रमेश चन्द्र ने बिना किसी भय के नक्सलियों की ओर अपनी ए.के.-47 राइफल से 15 राउंड जवाबी गोलियां दागीं। इससे नक्सलियों के घात की योजना पूरी तरह से विफल हो गई और सैन्य दल को पोजीशन लेने तथा नक्सलियों से मुकाबला करने का पर्याप्त समय मिल गया। भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की ठोस प्रतिक्रिया को देखकर नक्सली घात छोड़कर नाले पर उगी घनी झाड़ियों और असमतल भूमि का लाभ उठाते हुए वहां से भाग गए।

तथापि, इस गोलीबारी में नक्सलियों की एक गोली कांस्टेबल/जीडी रमेश चन्द्र की दायीं आंख में लग गई। दायीं आंख में गोली लगने के बावजूद उन्होंने अपना हौसला नहीं गंवाया बल्कि साहस के साथ नक्सलियों से मुकाबला किया। अभियान के बाद उन्हें सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की गईं, लेकिन इसके बावजूद उनकी एक आंख की रोशनी चली गई।

इस मुठभेड़ में श्री रमेश चन्द्र, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरुप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.12.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August, 2014

No. 153-Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Distinguished Service to the under mentioned officers on the occasion of the Independence Day, 2014 :—

1. SHRI A. B. VENKATESWARA RAO, DG, SPECIAL PROTECTION FORCE, SECUNDERABAD, ANDHRA PRADESH.

2. SHRI UMESH SHARRAF, ADDL DGP (PERSONNEL), HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

3. SHRI GHANTA DAYANAND, ASSAULT COMMANDER / ASSISTANT COMMANDANT, GREY HOUNDS, PUPPALAGUDA POST, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

4. SHRI APURBA JIBON BARUAH, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE (ADMN), ASSAM POLICE HEADQUARTER, ULUBARI, GUWAHATI, ASSAM.

5. SHRI SUBRA JYOTI HAZARIKA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE (AP), ULUBARI, GUWAHATI, ASSAM.

6. SHRI KISHOR KUMAR AGRAWAL, ASSISTANT INSPECTOR GENERAL OF POLICE, POLICE HEAD QUARTER RAIPUR, CHHATTISGARH.

7. SHRI PRABHAKAR, DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE, SECURITY (PM) VINAY MARG, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

8. SHRI ASHOK KUMAR SHARMA, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, LAND & BUILDING CELL, POLICE HEADQUARTER, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

9. SHRI VINOD KUMAR MALL, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (SC/ST & WEAKER SECTION) GANDHINAGAR, GUJARAT.

10. SHRI PARMAR CHIMANLAL REVANDAS, JOINT COMMISSIONER OF POLICE, RANGE 1, SURAT CITY, GUJARAT.

11. SHRI V. M. PARGI, JOINT COMMISSIONER OF POLICE (TRAFFIC & CRIME), SURAT CITY, GUJARAT.

12. SHRI KAMESHWAR KUMAR MISHRA, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF POLICE, CRIME AGAINST WOMEN POLICE HEADQUARTER, PANCHKULA, HARYANA.

13. SHRI BHAGWAN DASS JISHTU, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SHIMLA, HIMACHAL PRADESH.

14. SHRI MUNEER AHMAD KHAN, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (TRAFFIC), SRINAGAR, JAMMU AND KASHMIR.

15. SHRI VIJAY SINGH SAMYAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, IRP JAMMU, JAMMU AND KASHMIR.

16. SHRI RAJEEV KUMAR, DGP, POLICE HEADQUARTER, RANCHI, JHARKHAND.

17. SHRI KAMAL PANT, INSPECTOR GENERAL OF POLICE AND ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE, LAW AND ORDER, BANGALORE CITY, KARNATAKA.

18. SHRI S PARASHIVAMURTHY, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, EASTERN RANGE DAVANGERE, KARNATAKA.

19. SHRI B. A. PADMANAYAN, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, STATE INTELLIGENCE, BANGALORE, KARNATAKA.

20. SHRI S. AANANTHAKRISHNAN, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF POLICE (CRIMES), CBCID HEADQUARTERS, PHQ COMPLEX, VAZHUTHACAUD, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA.

21. SHRI KANCHAN LAL MEENA, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF POLICE, SPECIAL OPERATION, POLICE HEADQUARTER, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

22. SHRI KAILASH MAKWANA, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF POLICE (PROVISION), POLICE HEADQUARTER, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

23. SHRI JAWAHAR LAL PATLE, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (SECURITY), SPECIAL BRANCH, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

24. SMT. MENKA GURUNG, ASSISTANT COMMANDANT., 7TH BN, SPECIAL ARMED FORCE, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

25. SHRI PRABHAT RANJAN, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL OF POLICE, ANTI CORRUPTION BUREAU, MUMBAI, MAHARASHTRA.

26. SHRI JANARDAN DASHRATH THOKAL, ASSISTANT COMMISSSIONER OF POLICE, ARMED POLICE NAIGAON, MUMBAI, MAHARASHTRA.

27. SHRI DILIP BHASKAR GHAG, ASSISTANT POLICE SUB INSPECTOR, SPECIAL BRANCH-I, CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT, MUMBAI, MAHARASHTRA.

28. SHRI MOIRANGTHEM MUBI SINGH, DEPUTY COMMANDANT, 1ST BN. MANIPUR RIFLES IMPHAL, MANIPUR.

29. SHRI AMRIT MOHAN PRASAD, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, VIGILANCE DIRECTORATE, CUTTACK, ODISHA.

30. SHRI ARUN KUMAR SARANGI, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, VIGILANCE DIRECTORATE, CUTTACK, ODISHA.

31. SHRI YOGESH BAHADUR KHURANIA, INSPECTOR GENERAL OF POLICE , CID, CB, CUTTACK, ODISHA.

32. SHRI GANESH DUTT PANDEY, DIRECTOR GENERAL OF POLICE CUM- COMMANDANT GENERAL, HOME GUARDS & DIRECTOR CIVIL DEFENCE, CHANDIGARH, PUNJAB.

33. SHRI GOVIND NARAYAN PUROHIT, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, UDAIPUR RANGE, UDAIPUR, RAJASTHAN.

34. SHRI KISHORE SINGH, HEAD CONSTABLE, CRIME BRANCH OFFICE OF THE SUPERINTENDENT OF POLICE, BHARTPUR, RAJASTHAN.

35. SHRI ABHASH KUMAR, ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE (LAW AND ORDER), SOUTH ZONE, CHENNAI, TAMIL NADU.

36. MS. SEEMA AGRAWAL, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (RAILWAY), CHENNAI, TAMIL NADU.

37. SMT. S. SARASWATHY, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, VIGILANCE AND ANTI CORRUPTION CHENNAI, TAMIL NADU.

38. SHRI NEPAL CHANDRA DAS, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (HOME GUARD, POLICE CONTROL & POLICE WELFARE) POLICE HEADQUARTER, AGARTALA, TRIPURA.

39. SHRI SANDEEP SALUNKE, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, TECHNICAL SERVICES LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

40. SMT. RENUKA MISHRA, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, SSB HEADQUARTER NEW DELHI, UTTAR PRADESH.

41. SHRI SUBHASH CHANDRA, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, LUCKNOW ZONE, UTTAR PRADESH.

42. SHRI MAIYA DIN KARNADHAR, DEPUTY INSPECTOR GENERAL (SECURITY), LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

43. SHRI AKHILESHWAR PRAKASH SINGH CHAUHAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SECURITY HEADQUARTERS LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

44. SHRI RAKESH PRAKASH MISHRA, HEAD CONSTABLE, ALLAHABAD, UTTAR PRADESH.

45. SHRI PUSHKAR SINGH SAILAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, INTELLIGENCE DEHRADUN, UTTARAKHAND.

46. SHRI ARUN KUMAR SHARMA, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (HEADQUARTERS), POLICE DIRECTORATE, KOLKATA, WEST BENGAL.

47. SHRI PRADIP KUMAR CHATTOPADHYAY, ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE (IV), KOLKATA, WEST BENGAL.

48. SHRI KUNDAN LAL TAMTA, ADDITIONAL DIRECTOR GENERAL & INSPECTOR GENERAL TRAFFIC, TRAFFIC HEADQUARTERS, KOLKATA, WEST BENGAL.

49. SHRI P. NIRAJNAYAN, PRINCIPAL SECRETARY (COORDINATION), HOME DEPARTMENT, GOVERNMENT OF WEST BENGAL, HOWRAH, WEST BENGAL.

50. SHRI BAHADUR SINGH NEGI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (PCR), CHANDIGARH.

51. SHRI V. SHANMUGAM, SUPERINTENDENT OF POLICE, VAC POLICE UNIT, PUDUCHERRY.

52. SHRI ADITYA MISHRA, INSPECTOR GENERAL (PERS), HQ DIRECTORATE GENERAL NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

53. SHRI AJAY KUMAR TOMAR, INSPECTOR GENERAL, PUNJAB, BORDER SECURITY FORCE.

54. SHRI ASHOK KUMAR SHARMA, INSPECTOR GENERAL, ODISHA, BORDER SECURITY FORCE.

55. SHRI JAYANTI PRASAD UNIYAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, PUNJAB, BORDER SECURITY FORCE.

56. SHRI MAHENDRA SINGH, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, MEGHALAYA, BORDER SECURITY FORCE.

57. SHRI VENU GOPALAN NAIR, SUB INSPECTOR, HEADQUARTER DIRECTORATE GENERAL, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

58. SHRI RAJEEV KUMAR SHARMA, JOINT DIRECTOR (HOZ), BS&F, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

59. SHRI A. K. SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE, BS & FC NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

60. SHRI RAM CHANDER GARVAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CBI ACADEMY GHAZIABAD, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

61. SHRI ABDUL AZIZ, INSPECTOR OF POLICE, ACB CHENNAI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION .

62. SHRI ANIL KISHORE, DEPUTY COMMANDANT, HEADQUARTERS NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

63. SHRI RABINDRA NATH BADI, ASSISTANT SUB INSPECTOR, ASG HYDERABAD, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

64. SHRI AJIT KULSHRESHTHA, INSPECTOR GENERAL, RAF HQ, R K PURAM NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

65. SHRI SATENDRA PAL SINGH, INSPECTOR GENERAL, DTE GENERAL NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

66. SHRI SURAJ BHAN KAJAL, INSPECTOR GENERAL, GROUP CENTER, SONEPAT, HARYANA, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

67. SHRI RAJENDRAN J., COMMANDANT, RAIPUR, CHHATTISGARH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

68. SHRI JANGSHER SINGH, INSPECTOR/GD, 10 BN BARPETA, ASSAM, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

69. SHRI SHAMBHU PRASAD SRIVASTAVA, ASSISTANT DIRECTOR, SIB PATNA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

70. SHRI KIRPA NIDHAN SINGH, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

71. SHRI A. S. S. PRASAD, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

72. SHRI RAJIB KUMAR PATI, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

73. SHRI JASWINDER SINGH RANA, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB CHANDIGARH, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

74. SHRI B. P. BHAKAR, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

75. SHRI A. S. BHINGARE, ASSISTANT CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER/II, SIB MUMBAI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

76. SHRI NITIN AGRAWAL, INSEPTOR GENERAL OF POLICE, DIRECTORATE GENERAL, NEW DELHI, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

77. SHRI SHYAM MEHROTRA, DEPUTY INSEPTOR GENERAL OF POLICE (GD), SHQ (SNR), PANTHA CHOWK SRINAGAR, JAMMU & KASHMIR, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

78. SHRI AVINASH CHANDRA, INSPECTOR GENERAL, FTR HEADQUARTER, LUCKNOW, SASHASTRA SEEMA BAL.

79. MS. SONAM DOLMA, SECTION OFFICER, T C SHAMSHI KULLU HIMACHAL PRADESH, SASHASTRA SEEMA BAL.

80. SHRI GAJENDRA SINGH CHAUDHARY, DEPUTY INSPECTOR GENERAL/ DEPUTY DIRECTOR (TRAINING), NEW DELHI, BUREAU OF POLICE RESEARCH AND DEVELOPMENT.

81. SHRI JAIKRIT SINGH RAWAT, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, HEADQUARTER DIRECTORATE GENERAL, NEW DELHI, NATIONAL DISASTER RESPONSE FORCE.

82. SHRI BHUPATHI MOHAN, INSPECTOR GENERAL-CUM-CHIEF SECURITY COMMISSIONER (RPF), EASTERN RAILWAY HEADQUARTER, KOLKATA, M/O RAILWAYS.

2. These awards are made under rule 4(ii) of the rule governing the grant of President's Police Medal for Distinguished Service.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 154-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Meritorious Service to the under mentioned officers on the occasion of the Independence Day, 2014 :—

1. SHRI VISHWANATH CHANNAPPA SAJJANAR, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, SPECIAL INTELLIGENCE BRANCH, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

2. SHRI KARRI VENKATESWARA RAO, JOINT DIRECTOR, ANDHRA PRADESH POLICE ACADEMY, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

3. SHRI TAMBALLAPALLI RAVI KUMAR MURTHY, SUPERINTENDENT OF POLICE, RAJAHMUNDRY, ANDHRA PRADESH.

4. SHRI H. SATYANARAYANA RAO, COMMANDANT, 10TH BN APSP BEECHPALLY, MAHABUBNAGAR, ANDHRA PRADESH.

5. SHRI GUDURI VENKATA SATYANARAYANA MURTHY, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, CI CELL, INTELLIGENCE, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

6. SHRI VASUPALLI BHIMA RAO, HEAD LAW INSTRUCTOR (DSP), PTC VIZIANAGARAM, ANDHRA PRADESH.

7. SHRI PYARSANI MURALI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, INTELLIGENCE, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

8. SHRI POLAMURI RAJEEV KUMAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, INTELLIGENCE SECURITY WING, KHAIRATABAD, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

9. SHRI DHULIPALLA SRINIVASA RAO, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (AR), SPECIAL INTELLIGENT BRANCH, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

10. SHRI MODUGA NAGESWARA RAO, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CI CELL, INTELLIGENCE, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

11. SHRI MUTAKODURU CHANDRA SHEKAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CI CELL, INTELLIGENCE, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

12. SHRI DINTAKURTHI NAGA MAHESH, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, EAST SUB-DIVISION, VISAKHAPATNAM CITY, ANDHRA PRADESH.

13. SHRI KOLUKULURI RANGA RAJU, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, MADHURAWADA SUB-DIVISION, VISAKHAPATNAM, ANDHRA PRADESH.

14. SHRI CHENNA RAJA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, OCTOPUS SHANTI NILAYAM, GREENLANDS, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

15. SHRI VANGA SUBBA REDDY, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, VIGILANCE & ENFORCEMENT, ONGOLE, PRAKASAM DISTRICT, ANDHRA PRADESH.

16. SHRI THIRUVAYIPATI ANJANEYULU, INSPECTOR OF POLICE, DISTRICT SPECIAL BRANCH, ANANTHAPURAM, ANDHRA PRADESH.

17. SHRI MOHAMMED ABDUL AZIZ, SUB INSPECTOR (C), MCC, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

18. SHRI PATAN SIRAJUDDIN, ASSISTANT SUB INSPECTOR, DISTRICT CRIME RECORD BUREAU, YSR DISTRICT, KADAPA, ANDHRA PRADESH.

19. SHRI MUDDULURU PRABHAKARA RAJU, ASSISTANT SUB INSPECTOR, INTELLIGENCE, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

20. SHRI PATNALA MURALI KRISHNA, ASSISTANT SUB INSPECTOR, IV TOWN TRAFFIC PS, VISAKHAPATNAM CITY, ANDHRA PRADESH.

21. SHRI KETA ESWARA RAO, ARSI, 6TH BN, APSP, MANGALAGIRI, GUNTUR, ANDHRA PRADESH.

22. SHRI JAKKULA RAM CHANDRAM, ARSI, PTC KARIMNAGAR, ANDHRA PRADESH.

23. SHRI M.A. RAFEEKH, HEAD CONSTABLE (AR) WARANGAL, ANDHRA PRADESH.

24. SHRI ZAKKAM HENRY SAMUEL THYAGARAJ, HEAD CONSTABLE, INTELLIGENCE DEPARTMENT, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

25. SHRI MOHAMMED ABDUL JABBAR, HEAD CONSTABLE, CI CELL, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

26. SHRI MUNAGALA KESAVA RAO, HEAD CONSTABLE, PTO, HYDERABAD, ANDHRA PRADESH.

27. SHRI BINAY KANT MISHRA,COMMANDANT, 2ND AAP BN AALO, ARUNACHAL PRADESH.

28. SHRI RINCHIN CHHEWANG BODOI, INSPECTOR, SB PHQ, ITANAGAR, ARUNACHAL PRADESH.

29. SHRI ANANDA ROY, SUB INSPECTOR, PS ITANAGAR, ARUNACHAL PRADESH.

30. SHRI VIJAY KRISHNA RAMISETTI, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, TEZPUR, ASSAM (POSTHUMOUSLY).

31. SHRI SHYAMAL PRASAD SAIKIA, SUPERINTENDENT OF POLICE, VIGILANCE & ANTI CORRUPTION, RUPNAGAR GUWAHATI, ASSAM.

32. SHRI PRADIP RANJAN KAR, SUPERINTENDENT OF POLICE, NALBARI, ASSAM.

33. SHRI BIBEKANAND DAS, SUPERINTENDENT OF POLICE, SPECIAL BRANCH (ZONAL) KAHILIPARA, GUWAHATI, ASSAM.

34. MS. BANYA GOGOI, SUPERINTENDENT OF POLICE, SPECIAL BRANCH HQ, KAHILIPARA, GUWAHATI, ASSAM.

35. SMT. NANDINI DEKA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, VIGILANCE & ANTI CORRUPTION, GUWAHATI, ASSAM.

36. SHRI PHANIDHAR BASUMATARY, SUB- INSPECTOR, SPECIAL BRANCH, KAHILIPARA, GUWAHATI, ASSAM.

37. SHRI RAJIB HAZARIKA, SUB-INSPECTOR (AB), POLICE TRAINING COLLEGE, DERGAON, GOLAGHAT, ASSAM.

38. SHRI DIGANTA DUTTA, ASSISTANT SUB- INSPECTOR (OPERATOR), APRO, PR STATION KOHORA, GOLAGHAT, ASSAM.

39. SHRI MONU RAM SAIKIA, HEAD CONSTABLE (UB), DIMA HASAO DEF, ASSAM .

40. SHRI JAGMOHAN SINGH WATTI, COMMANDANT, DISTRICT JAGDALPUR, CHHATTISGARH.

41. SHRI KANHAIYA LAL DHRUW, SUPERINTENDENT OF POLICE, STF HEAD QUARTER, BAGHERA DISTRICT DURG, CHHATTISGARH.

42. SHRI TELESPHORE EKKA, SUPERINTENDENT OF POLICE, PTS RAJNANDGAON, CHHATTISGARH .

43. SHRI SUSHIL KUMAR THAPA, INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER RAIPUR, CHHATTISGARH.

44. SMT. KIRTI KASHYAP, INSPECTOR, POLICE CONTROL ROOM HEADQUARTER, RAIPUR, CHHATTISGARH.

45. SHRI SHEIKH ABDUL, SUB INSPECTOR, SIB POLICE HEADQUARTER, RAIPUR, CHHATTISGARH.

46. SHRI RAMESH KUMAR TIWARI, PLATOON COMMANDER, 1ST BN BHILAI, CHHATTISGARH.

47. SHRI JAKIR ALI, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE ACADEMY CHANDKHURI, RAIPUR, CHHATTISGARH.

48. SHRI JAIKRISHAN TIWARI, CONSTABLE, S.P. OFFICE (RLY), RAIPUR, CHHATTISGARH.

49. SHRI PRAVEEN BAKSHI, SUBEDAR (M), SB POLICE HEADQUARTER RAIPUR, CHHATTISGARH.

50. SHRI BHAIRON SINGH GURJAR, DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE SECURITY, VINAY MARG, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

51. SHRI SHANK DHAR MISRA, ADDITIONAL DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE, ECONOMIC OFFENCES WING, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

52. SHRI JAGJEET SINGH DESWAL, STAFF OFFICER TO COMMISSIONER OF POLICE, DELHI, NCT OF DELHI.

53. SHRI SHARAT KUMAR SINHA, DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE, TRAFFIC (WR) & ELECTION CELL, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

54. SHRI SANDEEP BYALA, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, NORTHERN RANGE, SPECIAL CELL, NEW DELHI , NCT OF DELHI.

55. SHRI DIWAN CHAND SHARMA, INSPECTOR (EXE), IST BN DAP, NEW DELHI , NCT OF DELHI .

56. SHRI SATYAVIR SINGH, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, SOUTHERN RANGE, SPECIAL CELL, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

57. SHRI MAHESH KUMAR THOLIA, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, ECONOMIC OFFENCES WING/CRIME BRANCH, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

58. SHRI NARENDER KUMAR BISHT, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, CENTRAL DISTRICT TRAFFIC, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

59. SHRI PARVEEN KUMAR, INSPECTOR, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

60. SHRI MATA DEEN, SUB INSPECTOR, 2ND BN DAP, NEW DELHI, NCT OF DELHI .

61. SMT. DURGA KAPRI, SUB INSPECTOR, POLICE CONTROL ROOM, NEW DELHI, NCT OF DELHI .

62. SHRI SAJJAN KUMAR, SUB INSPECTOR (MIN), 3RD BN. DAP, NEW DELHI , NCT OF DELHI .

63. SHRI SATYAVAN , SUB INSPECTOR (SUPERVISOR/OPERATIONS), COMMUNICATION UNIT, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

64. SHRI RAMBIR SINGH, CONSTABLE, ARMOURER, INDIRA GANDHI INTERNATIONAL AIRPORT UNIT, NEW DELHI, NCT OF DELHI.

65. SHRI BRAHM SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE, POLICE HEADQUARTERS, CID/SB, PANAJI, GOA.

66. SHRI KAVETI LAXMI NARAYAN RAO, JOINT COMMISSIONER OF POLICE, RAJKOT CITY , GUJARAT.

67. SHRI RAJENDRA JOTANGIA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT (CRIME), GANDHINAGAR, GUJARAT.

68. SHRI PRAFULLA KUMAR ROUSHAN, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE , INTELLIGENCE BUREAU, GANDHINAGAR, GUJARAT.

69. SHRI RAJIV RANJAN BHAGAT, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, GANDHINAGAR RANGE, GUJARAT.

70. SHRI BAHADURSINH SISODIYA, UNARMED POLICE SUB INSPECTOR, ANTI TERRORISM SQUAD, AHMEDABAD, GUJARAT.

71. SHRI JUVANSINH PRATAPSINH PARMAR, UNARMED POLICE SUB INSPECTOR, VAPI GIDC POLICE STATION, VALSAD, GUJARAT.

72. SHRI SAJID BILALBHAI MULTANI, INTELLIGENCE OFFICER, SURAT REGION, GUJARAT.

73. SHRI VISHALBHAI CHAUHAN, INTELLIGENCE OFFICER, GADHINAGAR REGION, GUJARAT.

74. SHRI LALJIBHAI CHAVDA, UNARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, LOCAL CRIME BRANCH, ANAND, GUJARAT.

75. SHRI RAMESHCHANDRA PARSOTTAMDAS PATEL, UNARMED POLICE HEAD CONSTABLE, SPECIAL OPERATION GROUP, BHARUCH, GUJARAT.

76. SHRI BABUBHAI CHAUHAN, ASSISTANT INTELLIGENCE OFFICER, GADHINAGAR, GUJARAT.

77. SHRI MAHESHBHAI JAGJIVANBHAI JANI, ARMED POLICE CONSTABLE, LOCAL CRIME BRANCH, RAJKOT RURAL DISTRICT, GUJARAT.

78. SHRI JAYDEEPBHAI KESHAVLAL RAVAL, ARMED POLICE CONSTABLE, COMPUTER CELL , LOCAL CRIME BRANCH, SURENDRANAGAR, GUJARAT.

79. SHRI JAYNTILAL DHANJIBHAI DAMOR, ARMED POLICE CONSTABLE, MORBI TALUKA POLICE , MORBI, GUJARAT.

80. SHRI MAHEBUB DADUBHAI MOGAL, DRIVER POLICE CONSTABLE, RAJKOT RURAL DISTRICT, GUJARAT .

81. SHRI PARMAR RAMESHBHAI DAHYABHAI, ARMED POLICE CONSTABLE, SRPF GR I, VADODARA, GUJARAT.

82. SHRI KULDEEP SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE, KAITHAL, HARYANA.

83. SHRI BALBIR SINGH, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, JHAJJAR, HARYANA.

84. SHRI DALBIR SINGH, ASSISTANT COMMISIONER OF POLICE , DLF GURGAON, HARYANA.

85. SHRI LAL SINGH, INSPECTOR, INCHARGE PRISONER ESCORT GUARD, REWARI, HARYANA.

86. SHRI DEVENDER SINGH, SUB INSPECTOR, GURGAON, HARYANA.

87. SHRI BAL RAJ SINGH, SUB INSPECTOR, CHANDIGARH, HARYANA.

88. SHRI RAM KARAN, SUB INSPECTOR, COMMANDO TRAINING CENTRE, PANCHKULA, HARYANA.

89. SHRI SURENDER SINGH, SUB INSPECTOR, FARIDABAD, HARYANA.

90. SHRI JAGBIR SINGH, ORP/ SUB INSPECTOR, CHANDIGARH, HARYANA.

91. SHRI BHAJAN DEV NEGI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SHIMLA, HIMACHAL PRADESH.

92. SMT. PUSHPA THAKUR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, R&T SHIMLA, HIMACHAL PRADESH.

93. SHRI CHUNG RAM, HEAD CONSTABLE, CID, SHIMLA, HIMACHAL PRADESH.

94. SHRI T. PUNCHOK, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, HG/CD/SDRF, JAMMU AND KASHMIR.

95. SMT. SAVITA PARIHAR, SUPERINTNDENT OF POLICE, ADJ/QM IRP 19TH BN KATHUA, JAMMU AND KASHMIR.

96. SHRI PARSHOTAM LAL SHARMA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE , PCR JAMMU, JAMMU AND KASHMIR.

97. SHRI ABDUL WAHID GIRI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (CRIME), JAMMU, JAMMU AND KASHMIR.

98. SHRI HAMEED HUSSAIN CHOUDHARY, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, HQ RAJOURI, JAMMU AND KASHMIR.

99. SHRI MUSHTAQ AHMAD WANI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DAR PULWAMA, JAMMU AND KASHMIR.

100. SHRI RAJINDER SINGH RAHI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DAR GANDERBAL, JAMMU AND KASHMIR.

101. SHRI MOHD AIJAZ BHAT, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, IRP 10TH JAMMU, JAMMU AND KASHMIR.

102. SHRI LIYAQAT AHMAD QADRI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, APHQ, JAMMU AND KASHMIR.

103. SHRI FAROOQ AHMAD BHAT, INSPECTOR (S), POLICE HEADQUARTER, JAMMU AND KASHMIR.

104. SHRI PAWAN KUMAR GUPTA, INSPECTOR(M), POLICE HEADQUARTER, JAMMU AND KASHMIR .

105. SHRI GHULAM NABI RATHER, SUB INSPECTOR, SRINAGAR, JAMMU AND KASHMIR .

106. SHRI LAL BHAT, SUB INSPECTOR, IRP 18TH, BANDIPURA, JAMMU AND KASHMIR.

107. SHRI FAROOQ AHMAD BHAT, ASSISTANT SUB INSPECTOR, AWANTIPORA, JAMMU AND KASHMIR.

108. SHRI BUA DITTA, ASSISTANT SUB INSPECTOR, SKPA, UDHAMPUR, JAMMU AND KASHMIR.

109. SHRI KARNAIL SINGH, ASSISTANT SUB INSPECTOR DPL, PULWAMA, JAMMU AND KASHMIR.

110. SHRI ZAFFARULLAH MIR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, SOG, RAFIABAD, BARAMULLA, JAMMU AND KASHMIR.

111. SHRI ABDUL SALAM BHAT, HEAD CONSTABLE, VIGILANCE ORGANIZATION, JAMMU AND KASHMIR.

112. SHRI MOHD RAFIQ WAGAY, HEAD CONSTABLE, IRP 14TH, JAMMU AND KASHMIR.

113. SHRI NIRANJAN PRASAD, SP (ESTT), SPECIAL BRANCH, RANCHI, JHARKHAND.

114. SHRI SHANKAR PRASAD JHA, INSPECTOR, CID, RANCHI, JHARKHAND.

115. SHRI SATISH KUMAR GURUNG, SUB INSPECTOR OF POLICE (STENO), CID RANCHI, JHARKHAND.

116. SHRI PHUL MOHAMMAD KHAN, HAVILDAR, CID, RANCHI, JHARKHAND.

117. SHRI PRAMOD KUMAR, CONSTABLE, CID, RANCHI, JHARKHAND.

118. SHRI JAGDISH CHANDRA PATH PINGUA, INSPECTOR (ARMOURER), STF, DHURWA, RANCHI, JHARKHAND.

119. SHRI RABINDRA PANDAY, SUB INSPECTOR (ARMOURER), STF, DHURWA RANCHI, JHARKHAND.

120. SHRI MADAN JEE, ASI, STF, DHURWA, RANCHI, JHARKHAND.

121. SHRI AJIT KUMAR BHARTI, HAVILDAR (ARMOURER), STF, DHURWA, RANCHI, JHARKHAND.

122. SHRI TUNTUN KUMAR, CONSTABLE, STF, DHURWA RANCHI, JHARKHAND.

123. SHRI ARUN KUMAR CHOUDHARY, SUB INSPECTOR (ARMS), JAP 04, BOKARO, JHARKHAND.

124. SHRI BAIDNATH MISHRA, ASI OF POLICE, DHANBAD, JHARKHAND.

125. SHRI S. RAVI, JOINT COMMISSIONER OF POLICE, LAW AND ORDER, WEST BANGALORE CITY, KARNATAKA.

126. SHRI SADANANDA S. NAIK, SUPERINTENDENT OF POLICE, STATE INTELLIGENCE, BANGALORE, KARNATAKA.

127. SHRI V. SRIDHAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, TUMKUR SUB DIVISION, TUMKUR DISTRICT, KARNATAKA.

128. SHRI T. S. MURAGANNAVAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, BELLARY CITY SUB DIVISION, BELLARY, KARNATAKA.

129. SHRI B. N. SHAMANNA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CID FOREST CELL, BANGALORE, KARNATAKA .

130. SHRI Y. NAGARAJU, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CID HEADQUARTERS, BANGALORE, KARNATAKA.

131. SHRI D. SHIVANANDAPPA, ASSISTANT COMMANDANT, 9TH BN KSRP, BANGALORE, KARNATAKA.

132. SHRI K. RAMACHANDRA, POLICE INSPECTOR, STATE INTELLIGENCE, BANGALORE, KARNATAKA.

133. SHRI A. M. MOHAN RAO, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, BASAVANAHALLI POLICE STATION, CHIKMAGALUR DIST, KARNATAKA.

134. SHRI SHIVASHARANAPPA, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, DSB UNIT GULBARGA, KARNATAKA .

135. SHRI M. S. SUBBANNA, ARSI, CITY ARMED RESERVE POLICE, MYSORE, KARNATAKA.

136. SHRI AZEEM AHAMED, HEAD CONSTABLE, RT NAGAR PS, BANGALORE CITY, KARNATAKA.

137. SHRI R. RAMAKRISHNA, ARMED POLICE HEAD CONSTABLE, BANGALORE, KARNATAKA.

138. SHRI DANAM, CIVIL HEAD CONSTABLE, RURAL PS, BHADRAVATHI, KARNATAKA.

139. SHRI DEVARAJE GOWDA K.P., ARMED HEAD CONSTABLE, DISTRICT ARMED RESERVE, CHIKMAGALUR DISTRICT, KARNATAKA.

140. SHRI D. M. CHOWDE GOWDA, HEAD CONSTABLE, 3RD BN KSRP, BANGALORE, KARNATAKA.

141. SHRI S. SUNDAR SHETTY, HEAD CONSTABLE, 7TH BN KSRP, MANGALORE, KARNATAKA.

142. SHRI HATHEBELGAL VENKATESH, DIG & COMMISSIONER OF POLICE, THIRUVANANTHAPURAM CITY, KERALA.

143. SHRI AMOSE MAMMEN, ASSISTANT COMMISIONER OF POLICE, DCRB, KOCHI CITY, KERALA.

144. SHRI P.K. VIJAYAPPAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DISTRICT SPECIAL BRANCH, ALAPPUZHA, KERALA.

145. SHRI FRANCIS PERERA, SUB INSPECTOR OF POLICE, CYBER CRIME ENQUIRY CELL, KOCHI CITY, KERALA.

146. SHRI RATHISH KRISHNAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, VIGILANCE & ANTI CORRUPTION BUREAU, MUTTOM THODUPUZHA, IDUKKI, KERALA.

147. SHRI A. SATHIKUMAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, VIGILANCE & ANTI CORRUPTION BUREAU, SOUTHERN RANGE, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA.

148. SHRI ROOP SINGH MEENA, INSPECTOR GENERAL OF POLICE (SPECIAL ARMED FORCE), GWALIOR, MADHYA PRADESH .

149. SHRI INDUPRAKASH ARJARIA, SUPERINTENDENT OF POLICE, HOSHANGABAD, MADHYA PRADESH.

150. SHRI RAJESH HINGANKAR, SUPERINTENDENT OF POLICE, KATNI, MADHYA PRADESH.

151. SHRI ANSHUMAN SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE (SOUTH), BHOPAL, MADHYA PRADESH.

152. SHRI MITHLESH KUMAR SHUKLA, A.I.G., JABALPUR, MADHYA PRADESH.

153. SHRI BHARAT SINGH YADAV, ASSISTANT COMMANDANT, 7TH BN SPECIAL ARMED FORCE, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

154. SHRI ROBERT ANTHONY, ASSISTANT SUB INSPECTOR, C.P.M.T. WORK SHOP, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

155. SHRI TEK SINGH BISHT, HEAD CONSTABLE, 2ND BN, SPECIAL ARMED FORCE, GWALIOR, MADHYA PRADESH.

156. SHRI IQBAL KHAN, HEAD CONSTABLE (SPECIAL ARMED ESTABLISHMENT), LOKAYUKTA OFFICE, GWALIOR, MADHYA PRADESH.

157. SHRI HIM BAHADUR, HEAD CONSTABLE, ECONOMIC OFFENCES WING, BHOPAL, MADHYA PRADESH.

158. SMT. MADHU SAXENA, CONSTABLE, BHIND, MADHYA PRADESH .

159. SHRI BRIJ KISHOR DUBEY, CONSTABLE, RUSTAMJI ARMED POLICE TRAINING COLLEGE, INDORE, MADHYA PRADESH.

160. SHRI MAHESH KUMAR KHARE, INSPECTOR(M), SAGAR, MADHYA PRADESH.

161. SHRI SHAMSHUDDIN, INSPECTOR (M)/STENO, RAJGARH, MADHYA PRADESH.

162. SHRI VINOD ASHTPUTRE, INSPECTOR(M), CHAMBAL ZONE, GWALIOR, MADHYA PRADESH.

163. SMT. MEERA THAKUR, SUBEDAR-M, ECONOMIC OFFENCES WING, INDORE, MADHYA PRADESH .

164. DR. PRADNYA N. SARAVADE, SPECIAL INSPECTOR GENERAL OF POLICE, VIGILANCE OFFICER, CIDCO, NAVI MUMBAI, MAHARASHTRA.

165. SHRI KRISHNA PRAKASH, ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE, SOUTH REGION, MUMBAI, MAHARASHTRA.

166. SHRI PRAKASH PRABHAKARRAO MUTYAL, ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE, NORTH REGION PUNE CITY, MAHARASHTRA.

167. SHRI KALURAM SITARAM DHANDEKAR, INSPECTOR, JODBHAVI POLICE STATION, SOLAPUR, MAHARASHTRA.

168. SHRI VILAS HANMANT JAGDALE, INSPECTOR, SID THANE, MAHARASHTRA.

169. SHRI PANDIT RAGHUNATH RATHOD, RESERVED POLICE INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER PARBHANI, MAHARASHTRA.

170. SHRI RAGHUNATH VITTHAL PHUGE, SENIOR POLICE INSPECTOR, CRIME BRANCH, PUNE, MAHARASHTRA.

171. SHRI RAMESH DNYANDEO WARADE, SUB INSPECTOR, NAVAPUR POLICE STATION, NANDURBAR, MAHARASHTRA.

172. SHRI SHAMRAO GANU TURAMBEKAR, SUB INSPECTOR, DIGHI COASTAL POLICE STATION, RAIGAD, MAHARASHTRA.

173. SHRI VINOD SHAMRAO AMBARKAR, WIRELESS POLICE SUB INSPECTOR, WIRELESS NASHIK CITY, MAHARASHTRA.

174. SHRI PANDHARI SHESHRAO MARKANTE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, LOCAL CRIME BRANCH, PARABHANI, MAHARASHTRA.

175. SHRI ARJUN NANA SUTAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, M.R.A. MARG POLICE STATION, MUMBAI, MAHARASHTRA.

176. SHRI BHANUDAS HARI KADAM, ASSISTANT SUB INSPECTOR, SPECIAL BRANCH (I), CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT, MUMBAI, MAHARASHTRA.

177. SHRI JAYCHAND BHIKA GAUTAM, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR IV NAGPUR, MAHARASHTRA.

178. SHRI MANCHAK SAGARRAO BACHATE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, TRAFFIC BRANCH, PARBHANI, MAHARASHTRA.

179. SHRI DNYANESHWAR RAMBHAU BHUMKAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, MALBAR HILL POLICE STATION, MUMBAI, MAHARASHTRA.

180. SHRI NINA VISHNU NARKHEDE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR XIII, NAGPUR, MAHARASHTRA.

181. SHRI PRAKASH DATTA SAWANT, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR II, PUNE, MAHARASHTRA.

182. SHRI ARUN KESHAV MORE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR IV NAGPUR, MAHARASHTRA.

183. SHRI ANAND PANDURANG CHORGE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, JUHU POLICE STAION, MUMBAI, MAHARASHTRA.

184. SHRI SHANKAR LAXMANRAO DEVKAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE CONTROL ROOM, HINGOLI, MAHARASHTRA.

185. SHRI KASHINATH GOVINDA JADHAV, ASSISTANT SUB INSPECTOR, FINGER PRINT BUREAU, NANDURBAR, MAHARASHTRA.

186. SHRI BALU KONDIBA MHASKE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, SHIL DIAGHAR POLICE STATION, THANE, MAHARASHTRA.

187. SHRI RAHUL GOVIND SONAWANE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR I PUNE, MAHARASHTRA.

188. SHRI PARSHURAM RAMA RANE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER, THANE CITY, MAHARASHTRA.

189. SHRI CHANDRAKANT KRISHNA SHINDE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER, SATARA, MAHARASHTRA.

190. SHRI DAVID PHILIP LOBO, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR II, PUNE, MAHARASHTRA.

191. SHRI DATTATRAY VITTHAL JADHAV, ASSISTANT SUB INSPECTOR, ANTI CORRUPTION BUREAU, MUMBAI, MAHARASHTRA.

192. SHRI SAMBHAJI PANDURANG KUMBHAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER, SANGLI, MAHARASHTRA.

193. SHRI MUSHTAQ ALI MOHAMMAD ALI, ASSISTANT SUB INSPECTOR, SPECIAL BRANCH, AKOLA, MAHARASHTRA.

194. SHRI SURESH UDHAV PATIL, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER, SOLAPUR, MAHARASHTRA.

195. SHRI BABRUWAN KESHAVRAO MANE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR I, PUNE, MAHARASHTRA.

196. SHRI ASHOK MORU BHOGAN, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR II, PUNE, MAHARASHTRA.

197. SHRI JAYSINGH SHANKAR GHADGE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR II, PUNE, MAHARASHTRA.

198. SHRI SOPAN KISAN GOLHAR, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR V, DAUND, MAHARASHTRA.

199. SHRI BALKRISHNA NARAYAN DESAI, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR VII, DAUND, MAHARASHTRA.

200. SHRI RAJENDRA MANOHAR AWTADE, ARMED ASSISTANT SUB INSPECTOR, SRPF GR IX, AMRAVATI, MAHARASHTRA.

201. SHRI HEMANTKUMAR BHAGWATSHAY PANDE, ASSISTANT SUB INSPECTOR, POLICE HEADQUARTER, NAGPUR, MAHARASHTRA.

202. SHRI KISHOR CHIMANRAO BORSE, INTELLIGENCE OFFICER, SID MALEGAON, MAHARASHTRA.

203. SHRI UDAY JOGI GAONKAR, ARMED HEAD CONSTABLE, SRPF GR I, PUNE, MAHARASHTRA.

204. SHRI RAJARAM GOVINDRAO SURVE, HEAD CONSTABLE, ATS PUNE, MAHARASHTRA.

205. SHRI KARUNG NANDO KOM, HAVILDAR, 2ND BN. MANIPUR RIFLES, IMPHAL, MANIPUR.

206. SHRI HIDANGMAYUM RAMESHWAR SHARMA, INSPECTOR, IMPHAL WEST DISTRICT, MANIPUR.

207. SHRI SAGOLSHEM BROJENDRO SINGH, CONSTABLE, CRIME BRANCH, CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT, IMPHAL, MANIPUR.

208. MOHD FEROZ KHAN, COMMANDANT, 6TH INDIA RESERVE BATTALION, PANGEI, IMPHAL EAST, MANIPUR .

209. SHRI KIANGSU ANTHONY, SUB INSPECTOR, TAMENLONG DISTRICT, MANIPUR.

210. SHRI ACHHE KUMAR PRADHAN, HAVILDAR, 2ND BN. MANIPUR RIFLES, IMPHAL, MANIPUR.

211. SHRI KULLENDRA R. SANGMA, SUB INSPECTOR, BAGHMARA POLICE RESERVE SOUTH GARO HILLS, MEGHALAYA.

212. SHRI BOKHRAW SONGTHIANG, UNARMED CONSTABLE, SPECIAL CELL, EAST KHASI HILLS, SHILLONG, MEGHALAYA.

213. SHRI B. LALNGHAKLIANA, INSPECTOR, ANTI CORRUPTION BUREAU, AIZAWL, MIZORAM.

214. SHRI LALRINAWMA, ASSISTANT SUB INSPECTOR (OPERATOR), TECHNICAL STORE, KHATLA, AIZAWL, MIZORAM.

215. SHRI T. CHUMRENTHUNG, SUPERINTENDENT OF POLICE, ZUNHEBOTO, NAGALAND.

216. SHRI TSENPEMO KIKON, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DIMAPUR, NAGALAND.

217. SHRI SASHIKOKBA , UBSI, DEF MOKOKCHUNG, NAGALAND.

218. SHRI SHEKUTO SEMA, HAVILDAR, DEF, KOHIMA, NAGALAND.

219. SHRI DEVDATTA SURESH SINGH, D.I.G. OF POLICE, OPERATIONS, BHUBANESWAR, ODISHA.

220. SHRI NARAYANA DORA, DY COMMANDANT, O.S.A.P. 1ST BATTALION, DHENKANAL, ODISHA.

221. SHRI TRINATH PATEL, DY. S. P., BHUBANESWAR VIGILANCE DIVISION, BHUBANESWAR, ODISHA.

222. SHRI UMA SANKAR PANDA, INSPECTOR OF POLICE, SPECIAL INTELLIGENCE WING, BHUBANESWAR, ODISHA.

223. SHRI SUBODHA CHANDRA RANA, FITTER INSPECTOR OF POLICE, POLICE MOTOR TRANSPORT, CUTTACK, ODISHA.

224. SHRI NIROD KUMAR DAS, SUB INSPECTOR OF POLICE, BARAGARH, ODISHA.

225. SHRI KISHORE KUMAR NAYAK, ASI OF POLICE, CID, CB, CUTTACK, ODISHA.

226. SHRI BIJAYA KUMAR PANIGRAHI, HAVILDAR, O.S.A.P. 7TH BATTALION BHUBANESWAR, ODISHA.

227. SHRI AKSHYA KUMAR MOHANTA, SEPOY, O.S.A.P. 4TH BATTALION ROURKELA, ODISHA.

228. SHRI NABA KISHORE DEHURY, CONSTABLE , POLICE TRAINING COLLEGE, ANGUL, ODISHA.

229. SHRI BHABAGRAHI TRIPATHY, CONSTABLE, VIGILANCE DIRECTORATE CUTTACK, ODISHA.

230. SHRI KHUBI RAM, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, SECURITY, CHANDIGARH, PUNJAB.

231. SHRI KUNWAR VIJAY PRATAP SINGH, DEPUTY INSPECTOR GENERAL-CUM-COMMISSIONER OF POLICE, JALANDAR, PUNJAB.

232. SHRI SURINDERPAL SINGH PARMAR, DEPUTY INSPECTOR GENERAL-CUM-JOINT DIRECTOR, MRS, PPA, PHILLAUR , PUNJAB.

233. SHRI HARCHARAN SINGH BHULLAR, SUPERINTENDENT OF POLICE-CUM-COMMANDANT, 4TH COMMANDO BN, SAS NAGAR, MOHALI, PUNJAB.

234. SHRI GURMEET SINGH CHAUHAN, SENIOR SUPERINTENDENT OF POLICE, FATEHGARH SAHIB, PUNJAB.

235. SHRI SWARNDEEP SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE, CITY-1, SAS NAGAR, MOHALI, PUNJAB.

236. SHRI BALWINDER SINGH, COMMANDANT, 82ND PAP, CHANDIGARH, PUNJAB.

237. SHRI SIMRAT PAL SINGH DHINDSA, AIG, CI, OPERATION, CHANDIGARH, PUNJAB.

238. SHRI JOBAN SINGH, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CID UNIT, SAS NAGAR, MOHALI, PUNJAB.

239. SHRI GURWINDER SINGH, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (C&R), ACP SOUTH, AMRITSAR, PUNJAB.

240. SHRI LAKHBIR SINGH, INSPECTOR (LR), SHO CITY, TARN TARAN, PUNJAB.

241. SHRI DARSHAN SINGH, INSPECTOR, PRTC, JAHAN KHELAN, PUNJAB.

242. SHRI SUCHA SINGH, SUB INSPECTOR, PRTC, JAHAN KHELAN, PUNJAB.

243. SHRI KULWANT SINGH , ASSISTANT SUB INSPECTOR, CITY TRAFFIC, LUDHIANA, PUNJAB.

244. SHRI BIPIN KUMAR PANDAY, ADDITIONAL COMMISSIONER OF POLICE (CRIME), POLICE COMMISSIONERATE JAIPUR, RAJASTHAN.

245. SHRI RAJENDRA SINGH, COMMANDANT, SECOND BATTALION RAC, KOTA, RAJASTHAN.

246. SHRI JAI NARAYAN, SUPERINTENDENT OF POLICE, PALI , RAJASTHAN.

247. SHRI MAHAVIR SINGH, ADDITIONAL DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE, POLICE LINE COMMISSIONERATE JAIPUR, RAJASTHAN.

248. SHRI PRAKASH SINGH, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, RAJASTHAN POLICE ACADEMY, JAIPUR, RAJASTHAN.

249. SHRI HARI NARAYAN, INSPECTOR OF POLICE, ANTI CORRUPTION BUREAU, JAIPUR , RAJASTHAN.

250. SHRI RAMKISHAN, PLATOON COMMANDER, 5TH BATTALION RAC, GHAT GATE, JAIPUR, RAJASTHAN.

251. SHRI NIHAL SINGH, SUB INSPECTOR OF POLICE, PS MANOHARPUR, JAIPUR RURAL, RAJASTHAN.

252. SHRI NANU SINGH, ASSISTANT SUB INSPECTOR, OFFICE OF THE SUPERINTENDENT OF POLICE, JHUNJHUNU, RAJASTHAN.

253. SHRI ASHOK KUMAR VAISHNAV, HEAD CONSTABLE, PS NIMBAHERA, CHITTORGARH, RAJASTHAN.

254. SHRI SOHAN LAL, HEAD CONSTABLE, PS CHOPASNI HOUSING BOARD, JODHPUR, RAJASTHAN.

255. SHRI SUKHDEV PRASAD, HEAD CONSTABLE, 8TH BATTALION RAC (IR), RAJASTHAN.

256. SHRI JAI SINGH, HEAD CONSTABLE, 5TH BATTALION RAC, GHATGATE JAIPUR, RAJASTHAN.

257. SHRI KRISHAN KUMAR SHARMA, CONSTABLE, CID (CB), JAIPUR, RAJASTHAN.

258. SHRI FATTU SINGH, CONSTABLE, 4TH BATTALION RAC CHAINPURA, JAIPUR, RAJASTHAN.

259. SHRI CHANDRA PRAKASH DHOLI, CONSTABLE, PS GRP AJMER, RAJASTHAN.

260. SMT. USHA DEVI CHETTRI, HEAD CONSTABLE, CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT, POLICE HEADQUARTERS, GANGTOK, SIKKIM.

261. SHRI C. EASWARAMOORTHY, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, CBI, ACB, CHENNAI, TAMIL NADU.

262. SHRI N. RAJASEKARAN, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, ARMED POLICE, CHENNAI, TAMIL NADU.

263. SHRI P. NAGARAJAN, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, POLICE RECRUITS SCHOOL, VILLUPURAM, TAMIL NADU.

264. MS. P. G. SUNANDA BHAGAVATHY, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, Q BRANCH CID, TIRUNELVELI, TAMIL NADU.

265. SHRI S. M. ELANGO, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, KARUR TOWN SUB DIVISION, TAMIL NADU.

266. SHRI M. MANIVANNAN, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, INTELLIGENCE SECTION, SALEM CITY, TAMIL NADU.

267. SHRI P. DEIVASIKAMANI, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, WASHERMENPET RANGE, CHENNAI, TAMIL NADU.

268. SHRI K. GOPAL, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SPECIAL BRANCH CID, HEADQUARTERS, CHENNAI, TAMIL NADU.

269. SHRI V CHANDRAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (CATE-I), OCIU HEADQUARTER, CHENNAI, TAMIL NADU.

270. MS P. ARUMUGHAM, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DISTT CRIME BRANCH , THANJAVUR, TAMIL NADU.

271. SHRI N. B. VIJAYAKUMAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE(CATE-I) , SECURITY BRANCH CID, CHENNAI, TAMIL NADU.

272. SHRI J. V. KARUPUSAMY, INSPECTOR OF POLICE (LOCAL), CORE CELL CID, CHENNAI, TAMIL NADU.

273. SHRI P. MANIKANDAKUMAR, INSPECTOR OF POLICE (TSP), TSP IV BATTALION, KOVAIPUDUR, TAMIL NADU.

274. SHRI J. AUGUSTIN FRANCIS, INSPECTOR OF POLICE (TSP), TSP - III BATTALION VEERAPURAM, TAMIL NADU.

275. SHRI S. DEVADOSS, INSPECTOR OF POLICE (TSP), TSP VIII BATTALION NEW DELHI, TAMIL NADU.

276. SHRI S. DAVID, SUB INSPECTOR OF POLICE, ARMED RESERVE, SIVAGANGAI, TAMIL NADU.

277. SHRI S. VENUGOPAL, SUB INSPECTOR OF POLICE (TSP), TSP X BATTALION ULUNDURPET, TAMIL NADU.

278. SHRI P. BASKARAN, SPECIAL SUB INSPECTOR OF POLICE (LOCAL), R K NAGAR PS, CHENNAI, TAMIL NADU .

279. SHRI G. RAMAMOORTHY, SPECIAL SUB INSPECTOR OF POLICE, VIGILANCE & ANTI-CORRUPTION, SPECIAL INVESTIGATION CELL, CHENNAI, TAMIL NADU.

280. SHRI BIDHAN DEBBARMA, COMMANDANT, 13TH BN TRIPURA STATE RIFLES, SUBASHNAGAR KANCHANPUR, NORTH TRIPURA, TRIPURA.

281. SHRI SWAPAN KUMAR DEBNATH, SUB INSPECTOR (UNARMED BRANCH), CRIME SECTION, BELONIA, TRIPURA.

282. SHRI AMULYA PAUL, ASSISTANT SUB INSPECTOR (UNARMED BRANCH), SOUTH RANGE, AGARTALA, TRIPURA.

283. SHRI SANTANU TRIPURA, CONSTABLE, SPECIAL BRANCH UNIT, KUNJABAN, AGARTALA, TRIPURA.

284. SHRI RAJENDRA DATTA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, WEST TRIPURA, AGARTALA, TRIPURA.

285. SHRI JOGESH CHANDRA DEBBARMA, SUBEDAR (GD), SUBHASHNAGAR KANCHANPUR, NORTH TRIPURA, TRIPURA.

286. SHRI K SATYANARAYANA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, MEERUT RANGE, UTTAR PRADESH.

287. SMT. PADMAJA CHAUHAN, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, PAC SECTOR, AGRA, UTTAR PRADESH.

288. DR. TAHSILDAR SINGH, SUPERINTENDENT OF POLICE, SITAPUR, UTTAR PRADESH.

289. SHRI AVADHESH KUMAR, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE CITY, JHANSI, UTTAR PRADESH.

290. SHRI DAYA NAND MISHRA, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE REGIONAL INTELLIGENCE, FAIZABAD, UTTAR PRADESH.

291. SHRI AKHLAQ AHAMED KHAN, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, KANPUR CITY, UTTAR PRADESH.

292. SHRI BHAI LAL, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, ZONAL OFFICER INTELLIGENCE, KANPUR CITY, UTTAR PRADESH.

293. SHRI KOMAL KUMAR BHALLA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, BULANDSHAHR, UTTAR PRADESH.

294. SHRI DEVENDRA SINGH, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DISTT ALIGARH, UTTAR PRADESH .

295. SHRI RAMA SHANKER PANDEY, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, HEADQUARTER DIRECTOR GENERAL OF POLICE, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

296. SHRI KAILASH NATH SINGH, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, DEORIA, UTTAR PRADESH.

297. SHRI CHANDRAPAL SINGH YADAV, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, BIJNOR, UTTAR PRADESH.

298. SHRI RAM PRAKASH BAJPAI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, KANPUR CITY, UTTAR PRADESH.

299. SHRI ANIL KUMAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, GAUTAM BUDH NAGAR, UTTAR PRADESH.

300. SHRI RAMESH CHANDRA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, INTELLIGENCE HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

301. SHRI GULAM ABBAS, INSPECTOR, CBCID LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

302. SHRI RAJARAM, INSPECTOR, BARABANKI, UTTAR PRADESH.

303. SMT. KAMALA MISHRA, INSPECTOR, INT HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

304. SHRI RAM SHABD YADAV, RADIO INSPECTOR, RADIO HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

305. SHRI PRAMOD KUMAR BAJPAI, SUB INSPECTOR (M), POLICE HEADQUARTER, ALLAHABAD, UTTAR PRADESH .

306. SHRI RAM NARAYAN SINGH, SUB INSPECTOR (M), DIRECTORATE GENERAL OF POLICE HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH .

307. SHRI HARIBANSH SINGH, SUB INSPECTOR (M), CBCID LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

308. SHRI JAYPAL SINGH NEGI, SUB INSPECTOR (M)/ STENO, SPECIAL ENQUIRY, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

309. SHRI RAM ROOP MISHRA, ASSISTANT SUB INSPECTOR (M), CHITRAKOOT UTTAR PRADESH.

310. SHRI DEVENDRA KUMAR SRIVASTAVA, SUB INSPECTOR (M), POLICE HEADQUARTER ALLAHABAD, UTTAR PRADESH.

311. SHRI SHRIKANT SHUKLA, SUB INSPECTOR (M)/ STENO, INT HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

312. SHRI GYAN PRAKASH SAXENA, SUB INSPECTOR (M) / STENO, GAUTAM BUDH NAGAR, UTTAR PRADESH.

313. SHRI RAM BHAJAN, SUB INSPECTOR (V/S), INT HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

314. SHRI THAKUR PRASAD YADAV, SUB INSPECTOR (V/S), SHRAVASTI, UTTAR PRADESH.

315. SHRI SAYAD MOHAMMAD JAVED, RADIO SUB INSPECTOR, RADIO HEADQUARTERS, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

316. SHRI KAUSHAL KISHORE SINGH, SUB INSPECTOR (V/S), TECHNICAL SERVICES, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

317. SHRI OMVEER SINGH, SUB INSPECTOR (V/S), HATHRAS, UTTAR PRADESH.

318. SHRI MOHAMMAD SAGAR SIDDIQE, PLATOON COMMANDER, 2ND BN PAC, SITAPUR UTTAR PRADESH.

319. SHRI GANGA PRASAD, SUB INSPECTOR (V/S), SHRAVASTI, UTTAR PRADESH.

320. SHRI VISHNU PRAKASH SRIVASTAVA, SUB INSPECTOR, GHAZIPUR, UTTAR PRADESH.

321. SHRI RANJEET SINGH, HEAD CONSTABLE (V/S), 30 BN PAC GONDA , UTTAR PRADESH.

322. SHRI SHESHPAL YADAV, SUB INSPECTOR (MT), RAIBARELY, UTTAR PRADESH.

323. SHRI RADHEY SHYAM, HEAD CONSTABLE, CENTRAL STORE KANPUR, UTTAR PRADESH.

324. SHRI JAGDISH NARAYAN, HEAD CONSTABLE, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

325. SHRI HARI NARAYAN PANDEY, HEAD CONSTABLE, 37 BN PAC KANPUR, UTTAR PRADESH.

326. SHRI NATHAN LAL, HEAD CONSTABLE, ALLAHABAD, UTTAR PRADESH.

327. SHRI RADHEY SHYAM, HEAD CONSTABLE, SECURITY BRANCH, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

328. SHRI SALIK RAM, HEAD CONSTABLE (P), 43 BN PAC ETAH, UTTAR PRADESH.

329. SHRI RAM AVTAR, HEAD CONSTABLE, KHIRI, UTTAR PRADESH.

330. SHRI KUNJ BIHARI PANDEY, HEAD CONSTABLE ITI, TRAINING HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

331. SHRI BHAGVAN DAS, HEAD CONSTABLE, SHAHJAHANPUR, UTTAR PRADESH.

332. SHRI SHESH NATH SINGH, HEAD CONSTABLE, MAU, UTTAR PRADESH.

333. SHRI SATYA NARAYAN YADAV, HEAD CONSTABLE, GONDA, UTTAR PRADESH.

334. SHRI BRIJWASI RAM SAHNI, HEAD CONSTABLE, SIDDHARTH NAGAR, UTTAR PRADESH.

335. SHRI DASHRATH PRASAD, HEAD CONSTABLE (MT), UP POLICE RECRUITMENT & PROMOTION BOARD, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

336. SHRI NETRAPAL SINGH, HEAD CONSTABLE, HATHRAS, UTTAR PRADESH.

337. SHRI ISTYAK MOHAMMAD, HEAD CONSTABLE, ETAWAH, UTTAR PRADESH.

338. SHRI ARUN KUMAR SINGH, HEAD CONSTABLE, ACO LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

339. SHRI SHIV SHANKAR PANDEY, HEAD CONSTABLE, 39BN PAC MIRZAPUR, UTTAR PRADESH.

340. SHRI SURENDRA SINGH, HEAD CONSTABLE, BULANDSHAHAR, UTTAR PRADESH.

341. SHRI RAJENDRA SINGH, HEAD CONSTABLE, ATS HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

342. SHRI JAGAT NARAYAN MISHRA, HEAD CONSTABLE, 11 BN PAC SITAPUR, UTTAR PRADESH.

343. SHRI HASEEN AHMAD, HEAD CONSTABLE, BANDA, UTTAR PRADESH.

344. SHRI ROOPRAM, HEAD CONSTABLE, 49 BN PAC GAUTAM BUDH NAGAR, UTTAR PRADESH.

345. SHRI PRAMOD KUMAR SACHAN, HEAD CONSTABLE, STF HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

346. SHRI AVANEES KUMAR, HEAD CONSTABLE, 35 BN PAC LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

347. SHRI RAMDEV, HEAD CONSTABLE, 25 BN PAC RAIBARELLY, UTTAR PRADESH.

348. SHRI PREM SWAROOP, HEAD OPERATOR, RADIO HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

349. SHRI SUSHIL PRATAP MISHRA, HEAD OPERATOR, RADIO HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

350. SHRI PARVEZ ZAIDI, HEAD OPERATOR, RADIO HEADQUARTER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

351. SHRI RAJENDRA SINGH GIL, HEAD CONSTABLE, 38 BN PAC ALIGARH, UTTAR PRADESH.

352. SHRI SANTOSH SINGH, CONSTABLE DRIVER, MEERUT, UTTAR PRADESH.

353. SHRI ASHOK KUMAR TIWARI, CONSTABLE DRIVER, SIT LUCKNOW, UTTAR PRADESH.

354. SHRI RAM BAKSHA, CONSTABLE, UNNAO, UTTAR PRADESH.

355. SHRI SULEH SINGH, CONSTABLE DRIVER, SAHARANPUR, UTTAR PRADESH.

356. SHRI RAM ADHARE, CONSTABLE, DEORIA, UTTAR PRADESH.

357. SHRI MUNNA SINGH, CONSTABLE CP, AMROHA, UTTAR PRADESH.

358. SHRI UMMED SINGH BISHT, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, ZONAL OFFICER PITHORAGARH , UTTARAKHAND.

359. SHRI JAGDISH CHANDRA YADAV, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, CHAMOLI, UTTARAKHAND.

360. SHRI SHEKHAR CHANDRA JOSHI, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (M), POLICE HEAD QUARTER, DEHRADUN, UTTARAKHAND.

361. SMT URMILA KAZI, INSPECTOR (M), INTELLIGENCE HEAD QUARTER DEHRADUN, UTTARAKHAND.

362. SHRI KULWAN SINGH RAWAT, INSPECTOR (INTELLIGENCE), INTELLIGENCE HEAD QUARTER, DEHRADUN , UTTARAKHAND.

363. SHRI RAJENDRA PRASAD, HEAD CONSTABLE, 46 BN PAC, RUDRAPUR, UTTARAKHAND.

364. SHRI RAVINDER JIT SINGH NALWA, DIRECTOR GENERAL OF POLICE & COMMANDANT GENERAL, HOME GUARDS, KOLKATA, WEST BENGAL.

365. SHRI NIRAJ KUMAR SINGH, INPECTOR GENERAL OF POLICE, CRIMINAL INVESTIGATION DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

366. DR RANGASAMY SIVAKUMAR, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, IPS CELL, HOWRAH, WEST BENGAL.

367. SHRI PRADIP KUMAR DAM, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, KOLKATA, WEST BENGAL.

368. SHRI ULLAS CHAKRABORTY, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, KOLKATA, WEST BENGAL.

369. SHRI ARUN KUMAR DEY, INSPECTOR OF POLICE, SOUTH DIVISION KOLKATA, WEST BENGAL.

370. SHRI DEBASIS DAS, INSPECTOR OF POLICE, PORT DIVISION, KOLKATA, WEST BENGAL.

371. SHRI SAMIR KUMAR SINGHA, INSPECTOR OF POLICE, TRAFFIC DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

372. SHRI TRIDIP DATTA, INSPECTOR OF POLICE, TRAFFIC DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

373. SHRI SATYA KINKAR TEWARI, SUBEDAR OF POLICE, 5TH BN KAP, KOLKATA, WEST BENGAL.

374. SHRI ASHIM KUMAR SAHA, ASSISTANT SUB INSPECTOR, TRAFFIC DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

375. SHRI UTTAM KUMAR DAS, ASSISTANT SUB INSPECTOR (AB), SWAMI VIVEKANANDA STATE POLICE ACADEMY, BARRACKPORE, WEST BENGAL.

376. SHRI TAPAN SARKAR, ASSISTANT SUB INSEPCTOR OF POLICE (AB), SAP 12TH BN, JALPAIGURI, WEST BENGAL.

377. SHRI PRADIP MALLA, CONSTABLE, DAP BIRBHUM DISTRICT, WEST BENGAL.

378. SHRI ASHISH SINHA ROY, CONSTABLE, INTELLIGENCE BRANCH, KOLKATA, WEST BENGAL.

379. SHRI PROKASH CHANDRA DE, CONSTABLE, KOLKATA POLICE, WEST BENGAL.

380. SHRI ANIL KUMAR, INSPECTOR GENERAL OF POLICE, COUNTER INSURGENCY FORCE, KOLKATA, WEST BENGAL.

381. SMT DAMAYANTI SEN, SPECIAL INSPECTOR GENERAL, CRIMINAL INVESTIGATION DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

382. SHRI AJAY KUMAR NAND, SPECIAL INSPECTOR GENERAL & DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, MIDNAPORE RANGE, PASCHIM MEDINIPUR, WEST BENGAL.

383. SHRI PALLAB KANTI GHOSH, JOINT COMMISSIONER OF POLICE (CRIME), KOLKATA, WEST BENGAL.

384. SHRI TAPAN KUMAR DAS, SUB INSPECTOR OF POLICE, UNARMED BRANCH, RESERVE OFFICE, NADIA, WEST BENGAL.

385. SHRI MIHIR KUMAR SARKAR, SUPERVISOR TECHNICAL-II, BONGAON TC STATION, NORTH 24 PARGANAS DISTRICT, WEST BENGAL.

386. SHRI POLAMARASETTY BALA, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, STATE VIGILANCE COMMISSION GOVT OF WEST BENGAL, KOLKATA, WEST BENGAL.

387. SHRI TIMIR KANTI ACHERJEE, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, CRIME INVESTIGATION DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

388. SHRI SUBIR KUMAR BHATTACHARYYA, ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE, TRAFFIC HEADQUARTERS, KOLKATA, WEST BENGAL.

389. SHRI KRISHNA NAND PANDEY, OFFICIATING ASSISTANT SUB INSPECTOR OF POLICE (UB), LINE OR SOG CELL, ALIPORE, WEST BENGAL.

390. SHRI MANI RAM THAPA, UNPAID LANCE NAIK, EFR 3RD BATTALION, PASCHIM MEDINIPUR, WEST BENGAL.

391. SHRI SONAM TSHERING BHUTIA, CONSTABLE, DAP DARJEELING, WEST BENGAL.

392. SHRI RABI DUTTA, CONSTABLE, LINE OR SOG CELL, ALIPORE, WEST BENGAL.

393. SHRI SANJOY KUMAR ROY, CONSTABLE, BIDHANNAGAR POLICE COMMISSIONERATE, BIDHANNAGAR, WEST BENGAL.

394. SHRI SUSANTA RAHA, POLICE DRIVER, ATTACHED TO ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE (HEADQUARTER) MURSHIDABAD, WEST BENGAL.

395. SHRI SUKHENDU SASMAL, POLICE DRIVER, DIRECTORATE OF SECURITY KOLKATA, WEST BENGAL.

396. SHRI PAGAN SAREN, DEPUTY COMMISSIONER OF POLICE, HOMEGUARD ORGANIZATION KOLKATA, WEST BENGAL.

397. SHRI VERGHESE KUNJACHAN, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE, TRAFFIC DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

398. SMT. DEBASREE CHATTERJEE, ASSISTANT COMMISSIONER OF POLICE (WOMEN POLICE), DETECTIVE DEPARTMENT, KOLKATA POLICE, KOLKATA, WEST BENGAL.

399. SHRI NAMROZ AHMED KHAN, INSPECTOR OF POLICE, SOUTH DIVISION KOLKATA , WEST BENGAL.

400. SHRI GOUTAM SARKAR, INSPECTOR OF POLICE, HEADQUARTER FORCE, KOLKATA, WEST BENGAL.

401. SHRI MRIGANKA MOHAN DAS, INSPECTOR OF POLICE, DETECTIVE DEPARTMENT, KOLKATA, WEST BENGAL.

402. SHRI SOUMYA BANERJEE, INSPECTOR OF POLICE, DETECTIVE DEPARTMENT KOLKATA, WEST BENGAL.

403. SHRI KRISHNENDU BOSE, INSPECTOR OF POLICE, TRAFFIC DEPARTMENT KOLKATA POLICE KOLKATA, WEST BENGAL.

404. SHRI ROSHAN LAL, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE (COMMUNICATION), CHANDIGARH.

405. SHRI BALWINDER SINGH, HEAD CONSTABLE, CHANDIGARH.

406. SHRI SUKHLABHAI KUTHABHAI ROHIT, ASI, STORE KEEPER PHQ, SILVASSA, DADRA AND NAGAR HAVELI.

407. SHRI MANISH KUMAR AGRAWAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, DAMAN-DIU AND DADRA AND NAGAR HAVELI, DAMAN AND DIU.

408. SHRI T. KALAIARASU, INSPECTOR, POLICING OF POLICE UNIT, PUDUCHERRY.

409. SHRI DUNGAR SINGH, SUBEDAR/GD, 14 ASSAM RIFLES, ASSAM RIFLES.

410. SHRI BHUVANESHWAR PRASAD, SUBEDAR MAJOR/GD, 29 ASSAM RIFLES NAGALAND, ASSAM RIFLES.

411. SHRI DHAN SINGH, SUBEDAR MAJOR/GD, 37 ASSAM RIFLES NAGALAND, ASSAM RIFLES.

412. SHRI SURA CHANDRA SINGHA, NAIB SUBEDAR/GD, 38 ASSAM RIFLES, ASSAM RIFLES.

413. SHRI CHHABI LAL PUN MAGAR, SUBEDAR MAJOR, NO 3 MAINTAINANCE GROUP ASSAM RIFLES , JORHAT, ASSAM RIFLES.

414. SHRI KORLA JAGGA RAO, HAVILDAR, LIASON OFFICER ASSAM RIFLES, NORTH BLOCK MHA NEW DELHI, ASSAM RIFLES.

415. SHRI DINESH CHANDRA, SUBEDAR/GD, CHIESWEMA, NAGALAND, ASSAM RIFLES.

416. SHRI BASUDEV PRASAD DIMRI, COMMANDANT, KASHI RAM BASTI NAGALAND, ASSAM RIFLES.

417. SHRI AMBIKA NATH PATHAK, SUBEDAR MAJOR/CLERK, KASHI RAM BASTI, NAGALAND, ASSAM RIFLES.

418. SHRI SARJAN PRASAD GUPTA, SUBEDAR MAJOR (GD), KASHI RAM BASTI, NAGALAND, ASSAM RIFLES.

419. SHRI RAMESH CHANDRA, NAIB SUBEDAR, KOHIMA, NAGALAND, ASSAM RIFLES.

420. SHRI SUBRAMANIYAN RAJENDRAN, SECOND IN COMMAND, RECRUITMENT BRANCH, LAITKOR, SHILLONG, ASSAM RIFLES.

421. SHRI RAJDEV SINGH YADAV, DEPUTY COMMANDANT, SHILLONG, ASSAM RIFLES.

422. SHRI HARSH MOHAN SILSWAL, SUBEDAR/CLERK, MS BRANCH, SHILLONG, ASSAM RIFLES.

423. SHRI RAMAWATAR GOTHWAL, TEAM COMMANDER, LAITUMKHRAH, SHILLONG, ASSAM RIFLES.

424. SHRI BINDU SETHI, INSPECTOR GENERAL, BORDER SECURITY FORCE AIR WING, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

425. SHRI PIYUSH PATEL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, GUJARAT, BORDER SECURITY FORCE.

426. SHRI KILAMBI VENKATA RAGHAVACHARYULU, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, CHENNAI, BORDER SECURITY FORCE.

427. SHRI KAILASH CHANDRA JAT, COMMANDANT, 150 BN BHONDSI, GURGAON, BORDER SECURITY FORCE.

428. SHRI NAWAL KISHOR SINGH, COMMANDANT, ABOHAR, BORDER SECURITY FORCE.

429. SHRI JAYA CHANDRA NAYAK, COMMANDANT, BADATOTA, ODISHA, BORDER SECURITY FORCE.

430. SHRI RAJ KUMAR, COMMANDANT, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

431. SHRI MOHINDER KUMAR SAHARAN, COMMANDANT, 100TH BN, SRINAGAR JAMMU & KASHMIR, BORDER SECURITY FORCE.

432. SHRI MADHUKAR, COMMANDANT (G), NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

433. SHRI INDRA DEO SINGH, COMMANDANT (RECTT), PERSONNEL DIRECTORATE, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

434. SHRI PRAMOD KUMAR ANAND, COMMANDANT, 34TH BN, BORDER SECURITY FORCE.

435. SHRI AMRIT LAL TIRKEY, COMMANDANT, 35TH BN, WEST BENGAL, BORDER SECURITY FORCE.

436. DR. VINOD KUMAR, COMMANDANT (MED), FTR HEADQUARTER, JAMMU, BORDER SECURITY FORCE.

437. DR. ASHOK KUMAR TRIVEDI, CHIEF MEDICAL OFFICER (SG), FHQ HOSPITAL-II, TIGRI CAMP, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

438. SHRI DINESH CHAND SINGH, DEPUTY COMMANDANT, 151ST BN SRINAGAR, BORDER SECURITY FORCE.

439. SHRI DHARAMBIR SINGH, DEPUTY COMMANDANT, 150TH BN BHONDSI GURGAON, BORDER SECURITY FORCE.

440. SHRI SURESH KUMAR SINGH, DEPUTY COMMANDANT, STC YELAHANKA, BANGALORE, BORDER SECURITY FORCE.

441. SHRI R. K. HIRAMANI SINGH, DEPUTY COMMANDANT, 63RD BN MIZORAM, BORDER SECURITY FORCE.

442. SHRI LAKHI RAM YADAV, DEPUTY COMMANDANT, 97TH BN RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

443. SHRI HARBANT SINGH SODHI, DEPUTY COMMANDANT, 92ND BN SRINAGAR, BORDER SECURITY FORCE .

444. SHRI HARNARAYAN SINGH, ASSISTANT COMMANDANT, 109 BN BIHAR, BORDER SECURITY FORCE.

445. SHRI KAPOOR SINGH, ASSISTANT COMMANDANT, 14TH BN BIHAR, BORDER SECURITY FORCE.

446. SHRI RAGHAVAN RAJAN PILLAI, ASSISTANT COMMANDANT (PS), KADAMTALA, BORDER SECURITY FORCE.

447. SHRI JOSE KUTTY V.T., ASSISTANT COMMANDANT (MINISTERIAL), PERSONNEL DIRECTORATE, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

448. SHRI KOPPARA RAGHAVAN ASHOK KUMAR, ASSISTANT COMMANDANT (MINISTERIAL), FRONTIER HEADQUARTER YALAHANKA, BANGALORE, BORDER SECURITY FORCE.

449. SHRI MUSTAK KHAN, INSPECTOR (GD), 8TH BN RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

450. SHRI HANS RAJ, INSPECTOR (GD), STC YELHANKA BANGALORE, BORDER SECURITY FORCE.

451. SHRI PREM SINGH, INSPECTOR (GD), 1022 ARTILLERY REGIMENT, FARIDKOT PUNJAB, BORDER SECURITY FORCE.

452. SHRI MAJOR RAM SAINI, INSPECTOR (GD), 37 BN BARMER, RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

453. SHRI KALANDER KHAN, INSPECTOR (GD), SHQ BARAMULLA, JAMMU & KASHMIR, BORDER SECURITY FORCE.

454. SHRI BUDHI SINGH, INSPECTOR (GD), 107 BN BARMER, RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

455. SHRI RAJENDER SINGH, INSPECTOR (GD), 142 BN DHOLCHERA, ASSAM, BORDER SECURITY FORCE.

456. SHRI MOOL CHAND YADAV, INSPECTOR (GD), 22 BN RANINAGAR, WEST BENGAL, BORDER SECURITY FORCE.

457. SHRI JAGDISH, INSPECTOR (GD), 8TH BN RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

458. SHRI KESHAR SINGH, INSPECTOR (GD), 22 BN RANINAGAR, WEST BENGAL, BORDER SECURITY FORCE.

459. SHRI SOHAN SINGH NEGI, INSPECTOR (MINISTERIAL), FRONTIER HEADQUARTER, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

460. SHRI MANAS CHATTERJEE, INSPECTOR (MINISTERIAL), HEADQUARTER DIRECTORATE GENERAL, KOLKATA, BORDER SECURITY FORCE.

461. SHRI RAJENDER PRAKASH CHHIKARA, INSPECTOR (CIPHER), FRONTIER HEADQUARTER, GANDHINAGAR, GUJARAT, BORDER SECURITY FORCE.

462. SMT. INDIRA PAVITHRAN, SUBEDAR MAJOR/SISTER-IN-CHARGE, COMPOSITE HOSPITAL KADAMTALA, BORDER SECURITY FORCE.

463. SHRI KASHI NATH SINGH, SUB INSPECTOR (GD), 158 BN FATIKCHERA, TRIPURA, BORDER SECURITY FORCE.

464. SHRI JAI BHAGWAN, SUB-INSPECTOR (GD), 116 BN JAISALMER, RAJASTHAN, BORDER SECURITY FORCE.

465. SHRI VIJAY PAL SINGH, SUB-INSPECTOR (MINISTERIAL), HEADQUARTER ARTILLERY, FARIDKOT, PUNJAB, BORDER SECURITY FORCE.

466. SHRI DARSHAN KUMAR MUNJAL, STENO GRADE-II, G TRAINING SCHOOL, NEW DELHI, BORDER SECURITY FORCE.

467. SHRI ANGADA CHANDRA BISWAL, ASSISTANT SUB-INSPECTOR (GD), KORAPUT, ODISHA, BORDER SECURITY FORCE.

468. SHRI ABID HUSSAIN, CONSTABLE (WASHERMAN), 70 BN NALAKATA, TRIPURA, BORDER SECURITY FORCE.

469. SHRI RAJINDER PRASAD, CONSTABLE (SWEEPER), 58 BN JALPAIGURI, WEST BENGAL, BORDER SECURITY FORCE.

470. SHRI RATN SANJAY, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, ACB GHAZIABAD, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

471. SHRI RAVI KANT, DEPUTY INSPECTOR GENERAL OF POLICE, EO- I, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

472. SHRI RAMNISH GEER, SENIOR SUPERINTENDENT OF POLICE, SCB MUMBAI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

473. SHRI ANUJ ARYA, ADDITIONAL SUPERINTENDENT OF POLICE, ACB, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

474. SMT. SEEMA PAHUJA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SC I, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

475. SHRI NAT RAM MEENA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, SC II NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

476. SHRI SURENDER KUMAR MALIK, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, ACU-V, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

477. SHRI RAMESH CHAND SHARMA, INSPECTOR OF POLICE, ACB NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

478. SHRI CHANDRA KIRAN SHARMA, INSPECTOR OF POLICE, CBI HEADQUARTER, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION .

479. SHRI MANOJ KUMAR DASH, INSPECTOR OF POLICE, ACB BHUBANESWAR, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

480. SHRI JALE SINGH, INSPECTOR OF POLICE, ACU-III, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

481. SHRI GOUTAM KUMAR SAGAR, INSPECTOR OF POLICE, POLICY DIVISION, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

482. SHRI ANIL VASANT MHATRE, SUB INSPECTOR, ACB MUMBAI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

483. SHRI VIJAY KUMAR THAPA, ASSISTANT SUB-INSPECTOR OF POLICE, EO-I, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

484. SHRI RAJ KISHORE RAI, HEAD CONSTABLE, ACB PATNA, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

485. SHRI MEHBOOB HASAN, HEAD CONSTABLE, OFFICE OF ADCBI NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

486. SHRI BASANT SINGH BISHT, HEAD CONSTABLE, DCBI'S SECRETARIAT, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

487. SHRI BIJENDER SINGH, CONSTABLE, ACB NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

488. SHRI SHYAMBIR SINGH, CONSTABLE, POLICY DIVISION, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

489. SHRI SHANKAR DAS GIRDHAR, CRIME ASSISTANT, CBI HEADQUARTER, NEW DELHI, CENTRAL BUREAU OF INVESTIGATION.

490. SHRI SHIKHAR SAHAI, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, CISF UNIT CCL KARGALI, BOKARO , JHARKHAND, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

491. SHRI RAVINDER KUMAR, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, ASG MUMBAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

492. SMT. NEETA SINGH, SENIOR COMMANDANT, CISF NORTH ZONE HEADQUARTERS, SAKET, NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE .

493. MS DINAVAHI SHYAMALA, SENIOR COMMANDANT, CISF HEADQUARTERS NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

494. SHRI BAM DEV SHARMA, COMMANDANT, CISF RTC BARWAHA, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

495. SHRI SUDERSHAN MALHOTRA, DEPUTY COMMANDANT, CISF UNIT GOA, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

496. SHRI N. S. MURALEEDHARAN, ASSISTANT COMMANDANT, CISF UNIT NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

497. SHRI M. PURUSHOTHAMAN, ASSISTANT COMMANDANT/JAO, CISF HQRS NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

498. SHRI SAJAN SINGH MARAVI, SUB INSPECTOR, CISF UNIT 3RD RESERVE BATTALION, BHILAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

499. SHRI UPEN DEKA, SUB INSPECTOR, CISF UNIT BARODA, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

500. SHRI P. RAJASEKARAN, SUB INSPECTOR (MINISTRIAL), CISF WEST ZONE AIRPORT HEADQUARTER, MUMBAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

501. SHRI BALVINDER SINGH, ASSISTANT SUB INSPECTOR, CISF UNIT JHANSI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

502. SHRI V. REGHU KUMAR, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT DELHI METRO RAIL CORPORATION, DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

503. SHRI KESHAV PRASAD YADAV, HEAD CONSTABLE (GD), ARAKKONAM, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

504. SHRI V. RAJAN, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT CALICUT, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

505. SHRI PONAMALAI SHANMUGA VELU, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT NEYVELI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

506. SHRI LILA DHAR SHARMA, HEAD CONSTABLE, CISF UNIT MUMBAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

507. SHRI YUNUS AHAMAD, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT MUMBAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

508. SHRI K. C. GOPAKUMARAN NAIR, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT HYDERABAD, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

509. SHRI PRANBANDHU MAHAKUD, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT DURGAPUR, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

510. SHRI KULDEEP SINGH, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT MUMBAI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

511. SHRI MAHANAND TIWARI, HEAD CONSTABLE (GD), CISF UNIT DHANBAD, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

512. SHRI RAM SINGH, CONSTABLE/SWEEPER, CISF HEADQUARTERS, NEW DELHI, CENTRAL INDUSTRIAL SECURITY FORCE.

513. SHRI AMAR SINGH NEGI, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, CHANDIGARH RANGE, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE .

514. SHRI RATI RANJAN DUTTA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, DIRECTORATE GENERAL CRPF, NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

515. SHRI ASHOK PRASAD, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, GROUP CENTRE DURGAPUR, WEST BENGAL, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

516. SHRI DINESH UNIYAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, CTC GWALIOR, MADHYA PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

517. SMT. NITU DEBABRATA BHATTACHARYA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, DIRECTORATE GENERAL (WELFARE), NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

518. SHRI RAJEEV RAI, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, CRPF RANGE HQ, RANCHI JHARKHAND, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

519. SHRI PRASHANT RAMCHANDRA JAMBHOLKAR, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, ISA CRPF MOUNT ABU RAJASTHAN, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

520. SHRI DINESH PRATAP UPADHYAY, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, DANTEWADA CHHATTISGARH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

521. SHRI KRISHNA KANT SINHA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, JAGDALPUR BASTAR CHHATTISGARH , CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

522. SHRI SHAILENDRA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, DIRECTORATE GENERAL NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

523. SHRI ANIL DHOUNDIYAL, DEPUTY INSPECTOR GENERAL, DHURWA RANCHI, JHARKHAND, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

524. SHRI TRILOKI NATH MISRA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL (MEDICAL), COMPOSITE HOSPITAL, CRPF AJMER, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

525. DR. SRIKANT KUMAR SRIVASTAVA, DEPUTY INSPECTOR GENERAL MEDICAL, COMPOSITE HOSPITAL, GC CRPF, ALLAHABAD, UTTAR PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

526. SHRI KUNWAR GOVIND SINGH RATHAUR, COMMANDANT, 93 BN LUCKNOW, UTTAR PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

527. SHRI RAJGOPAL SINGH, SECOND-IN-COMMAND, RANGE BHOPAL, MADHYA PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

528. SHRI A. JAYACHANDRAN, SECOND-IN-COMMAND, 229 BN GC CRPF, AVADI CHENNAI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

529. SHRI ACHYUTA NANDA BASTIA, SECOND-IN-COMMAND, 178 BN BUDGAM, JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

530. SHRI B. L. K. PILLAI, SECOND-IN-COMMAND, 77 BN POONAMALLEE, CHENNAI, TAMIL NADU, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

531. SHRI K. SELVAM, DEPUTY COMMANDANT, 77 BN POONAMALLEE CHENNAI TAMIL NADU, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

532. SHRI RAM DASS YADAV, DEPUTY COMMANDANT, 33 BN PREET NAGAR JAMMU, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

533. SHRI RAM SINGH KHAMPA, DEPUTY COMMANDANT, 108 BN RAF, MEERUT, UTTAR PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

534. SHRI DIWAKAR SINGH, ASSISTANT COMMANDANT, 1ST SIGNAL BN, JHARODA KALAN, NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

535. SHRI RAM SINGAR RAM, ASSISTANT COMMANDANT, GROUP CENTRE, IMPHAL, MANIPUR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

536. SHRI PARSU RAM KUNDA, ASSISTANT COMMANDANT, GC II AJMER RAJASTHAN, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

537. SHRI DHARAMPAL SINGH, INSPECTOR/GD, GROUP CENTRE NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

538. SHRI SEELAM JANKI RAMULU, INSPECTOR/GD, 39 BN NARAYANPUR, CHHATTISGARH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

539. SHRI MAHENDRA SINGH, INSPECTOR/GD, GROUP CENTRE GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

540. SHRI RAJENDER SINGH SHEKHAWAT, SUBEDAR MAJOR/GD, GROUP CENTRE SRINAGAR JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

541. SHRI PARAMHANS RAI, INSPECTOR/GD, 93 BN LUCKNOW, UTTAR PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

542. SHRI NETRAPAL SINGH, SUB INSPECTOR/GD, CRPF RANGE AJMER, RAJASTHAN, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

543. SHRI JAILAL SINGH, SUB INSPECTOR/GD, ISA MOUNT ABU RAJASTHAN, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

544. SHRI BASAVANTAPPA KADAPPA PATIL, SUB INSPECTOR, 130 BN AWANTIPORA , ANANTNAG JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE .

545. MD. GHALIB KHAN, SUB INSPECTOR/GD, 69 BN IMPHAL, MANIPUR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

546. SHRI GAJENDER SINGH RAWAT, INSPECTOR/GD, 126 BN BIDDA, REASI JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

547. SHRI ARJUN SUNDARAY, SUB INSPECTOR/GD, GROUP CENTRE, BHUBANESHWAR, ODISHA, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE .

548. MS. BHABANI CHAKRABORTY, SUB INSPECTOR/GD, 135(M) BN GANDHINAGAR, GUJRAT, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

549. SHRI P. VENUGOPALAN, SUB INSPECTOR/GD, CENTRAL ZONE KOLKATA, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

550. SHRI GOPAL RANJAN MISHRA, ASSISTANT SUB INSPECTOR/GD, GC GUWAHATI ASSAM, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

551. SHRI SELVARAJ K., ASSISTANT SUB INSPECTOR, 34 BN NAGAON ASSAM, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

552. SHRI PACHAN GOPAL KRISHANA PILLAI, ASSISTANT SUB INSPECTOR, 181 BN BUDGAM JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

553. SHRI PURAN SINGH, HEAD CONSTABLE/GD, GC KATHGODAM UTTRAKHAND, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

554. SHRI PARESH CHANDER DEY, HEAD CONSTABLE/GD, 184 BN JHARGRAM WEST BENGAL, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

555. SHRI LAKSHESWAR BARMAN, HEAD CONSTABLE/GD, 171 BN DIBRUGARH , ASSAM, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

556. MOHD. KAMAL MALLA, CONSTABLE/GD, GROUP CENTRE, SRINAGAR JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

557. SMT. SIBANI LAL, CONSTABLE/GD, 88(M) BN DWARKA SECTOR 8 NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

558. SHRI SWINDER SINGH, INSPECTOR/ ARMOURER, AWS-V, GROUP CENTER, KHATKHATI ASSAM, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

559. SHRI YOGENDER SINGH, INSPECTOR/ TECH, CTC (T & IT) DHURWA RANCHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

560. SHRI PREM SINGH, INSPECTOR/DM, DIRECTORATE GENERAL, CGO COMPLEX NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

561. SHRI RAM KUMAR SHARMA, HEAD CONSTABLE (CARPENTER), GROUP CENTRE CRPF, MUZAFFARPUR, BIHAR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

562. SHRI T. RAJESHWAR REDDY, HEAD CONSTABLE ARMOURER, CWS-II, PUNE MAHARASHTRA, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

563. SHRI BIPAT HASSAN, CONSTABLE WASHERMAN, 99 BN RAF HAKIMPET, SECUNDERABAD, ANDHRA PRADESH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

564. SHRI RAMESHWAR LAL, CONSTABLE (SK), 33 BN PREET NAGAR JAMMU & KASHMIR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

565. SHRI GAJENDRA PATRA, CONSTABLE COOK, 81 BN JASPUR, CHHATTISGARH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

566. MS. T. H. LEILA DEVI, SISTER-I/C, COMPOSITE HOSPITAL, CRPF IMPHAL MANIPUR, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

567. SHRI OMPRAKASH, JOINT ASSISTANT DIRECTOR, DIRECTORATE GENERAL, NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

568. SHRI RAKESH KUMAR SHARMA, ASSISTANT COMMANDANT (MIN.), DIRECTORATE GENERAL, NEW DELHI, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

569. SHRI MOHINDER SINGH, ASSISTANT COMMANDANT (PS), DIRECTORATE GENERAL, MEDICAL BRANCH, NEW DELHI , CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

570. SHRI ROHTAS KUMAR, ASSITANT SUB INSPECTOR, 223 BN DANTEWADA, CHHATTISGARH, CENTRAL RESERVE POLICE FORCE.

571. SMT. RAJANA UMESH KAUL, JOINT DEPUTY DIRECTOR (TECH), IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

572. SHRI KAMESHWAR, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS, NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

573. SHRI DAL CHAND SINGH OLAK, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

574. SHRI HITENDRA WASUDEO NIKHARE, ASSISTANT DIRECTOR, SIB AGARTALA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

575. SHRI MOHAMMAD TAHIR KHAN, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS, NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

576. SHRI GOPAL DUTT GAUR, ASSISTANT DIRECTOR, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

577. SHRI JYOTI RANJAN ACHARYA, ASSISTANT DIRECTOR, SIB BHUBANESWAR, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

578. MS. FARIDA JAMAL, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

579. SHRI SUJIT SINGH, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB PATNA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

580. SHRI RAKESH KUMAR SINHA, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, IB HQRS, NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

581. MS. B. G. MEKALA DEVI, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB BANGALORE, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

582. SHRI VINAY KUMAR NAG, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB JAMMU, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

583. SHRI ONIL NARAYAN KAMBLE, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB SHILLONG, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

584. SHRI PRABHAS PRIYADARSHI, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB CHANDIGARH, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

585. SHRI UJJWAL KUMAR SHUKLA, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, IB HQRS NEW DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

586. SHRI RAJAN CHENGUNI, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB TRIVANDRUM, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

587. SHRI MANI GANESAN, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB CHENNAI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

588. SHRI LAL MOHAN SAMANTRAY, DEPUTY CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER, SIB DELHI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

589. SHRI MADHU SUDHANA RAMINENI RAO, SECTION OFFICER, SIB HYDERABAD, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

590. SHRI VAYALAMKUZHI DAMODARAN, PRIVATE SECRETARY, SIB MUMBAI, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

591. SHRI SURINDER KUMAR SHARMA, ASSISTANT CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER-II/G, SIB SRINAGAR, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

592. SHRI SORENSANGBAM IBOMCHA SINGH, ASSISTANT CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER-II/G, SIB IMPHAL, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

593. SHRI BINOY KUMAR BORAH, ASSISTANT CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER-II/G, SIB TEZPUR, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

594. SHRI B. VISHWAKARMA, ASSISTANT CENTRAL INTELLIGENCE OFFICER-II/G, SIB RAIPUR, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

595. MS PHUL MAYA TAMANG, JUNIOR INTELLIGENCE OFFICER-I/G, SGMI, SIB, GANGTOK, MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

596. SHRI SUSHIL KUMAR GUPTA, DEPUTY INSEPTOR GENERAL OF POLICE (ENGINEER), EASTERN FRONTIER, LUCKNOW, UTTAR PRADESH, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

597. SHRI SANJAY KUMAR CHOWDHARY, DEPUTY INSEPTOR GENERAL OF POLICE, SHQ SHIMLA, HIMACHAL PRADESH, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

598. SHRI SUNIL CHANDRA MAMGAIN, DEPUTY INSEPTOR GENERAL OF POLICE, SHQ DELHI TIGRI CAMP NEW DELHI, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

599. DR. VIJAI KUMAR SINGH, DEPUTY INSEPTOR GENERAL OF POLICE (MEDICAL), REFERRAL HOSPITAL, CAPFs TIGRI CAMP NEW DELHI, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

600. SHRI KARAN SINGH RAWAT, DEPUTY COMMANDANT (OFFICE), NORTH WEST FRONTIER, ITBP CHANDIGARH, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

601. SMT. RAJYASHRI RAWAT, ASSISTANT COMMANDANT (ESC), ITBP ACADEMY MUSSOORIE UTTARAKHAND, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

602. SHRI BALDEV DASS, INSPECTOR (GD), BTC BHANU, PANCHKULA HARYANA, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

603. SHRI KARTAR SINGH, INSPECTOR (GD), 13 BN LINGDUM SIKKIM, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

604. SHRI HARGOVIND SINGH, INSPECTOR (MT) , DIRECTORATE GENERAL NEW DELHI, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

605. SHRI K.P RAJASEKHARAN NAIR, INSPECTOR (TELECOM), 27 BN, DISTT ALAPUZHA KERALA, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

606. SHRI VIJAY SINGH, CONSTABLE/ COOK, 1ST BN JOSHIMATH, CHAMOLI UTTARAKHAND, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

607. SHRI PARAS RAM, CONSTABLE (SK), 28TH BN, REWARI, HARYANA, INDO TIBETAN BORDER POLICE.

608. SHRI SUDHIR HOODA, GROUP COMMANDER, MANESAR, NATIONAL SECURITY GUARD.

609. SHRI KULDEEP SINGH, GROUP COMMANDER (CRO), NEW DELHI, NATIONAL SECURITY GUARD.

610. SHRI S. RAVICHANDRAN, TEAM COMMANDER (SO), HEADQUARTERS, NEW DELHI, NATIONAL SECURITY GUARD.

611. SHRI SURENDRA VIKRAM, DEPUTY COMMANDANT, 62 BN DEBENDRANAGAR, DISTT SONITPUR ASSAM, SASHASTRA SEEMA BAL.

612. SHRI HEMANT KUMAR JHA, COMMANDANT (GD), FHQ NEW DELHI, SASHASTRA SEEMA BAL.

613. SHRI JAI BAHADUR SINGH GUNJIYAL, ASSISTANT COMMANDANT (GD), 11 BN DIDIHAT DIST PITHORAGARH, UTTARAKHAND, SASHASTRA SEEMA BAL.

614. SHRI PUSHKAR SINGH, ASSISTANT COMMANDANT, CTC SALONIBARI, ASSAM, SASHASTRA SEEMA BAL.

615. SHRI HOMESHWAR ROY, ASSISTANT COMMANDANT, 31ST BN GOSSAIGAON DIST KOKRAJHAR, ASSAM, SASHASTRA SEEMA BAL.

616. SMT. LINA GUPTA, AREA ORGANIZER, KISHANGANJ, BIHAR, SASHASTRA SEEMA BAL.

617. SHRI JAGDISH PRASAD ARYA, SUB AREA ORGANISER, BANBASA AREA CHAMPAWAT, UTTARAKHAND, SASHASTRA SEEMA BAL.

618. SHRI BHUBAN CHIRING, INSPECTOR ARMOURER, 16TH BN KOKRAJHAR, ASSAM, SASHASTRA SEEMA BAL.

619. SHRI ASHIM KANTI DAS, FIELD OFFICER TELECOM, SHQ BONGAIGAON, ASSAM, SASHASTRA SEEMA BAL.

620. SHRI MAHENDRA SINGH GANGOLA, AFO (VETY), FHQ NEW DELHI, SASHASTRA SEEMA BAL.

621. SHRI ABHAY SINGH BHATI, SSO, HEADQUARTERS, NEW DELHI, SPECIAL PROTECTION GROUP.

622. SHRI KIRAN RAI, SSO, HEADQUARTERS, NEW DELHI, SPECIAL PROTECTION GROUP.

623. SHRI GOPAL SINGH, SO-I, HEADQUARTERS, NEW DELHI, SPECIAL PROTECTION GROUP .

624. SHRI C.C. KRISHNA KUMAR, SO-I(MT), HEADQUARTERS, NEW DELHI, SPECIAL PROTECTION GROUP.

625. SHRI SANJAY SHARMA, PRINCIPAL SCIENTIFIC OFFICER (WEAPONS), NEW DELHI, BUREAU OF POLICE RESEARCH AND DEVELOPMENT.

626. SHRI SUDHAKAR DESHMUKH, ASSISTANT, NEW DELHI, BUREAU OF POLICE RESEARCH AND DEVELOPMENT.

627. SHRI NARASIMHAN SUSHIL KANNAN, JOINT ASSISTANT DIRECTOR, NEW DELHI, NATIONAL CRIME RECORDS BUREAU.

628. SHRI SUHAS MITRA, DEPUTY SUPERINTENDENT (FINGER PRINT), NEW DELHI, NATIONAL CRIME RECORDS BUREAU.

629. SHRI PAWAN KUMAR MISHRA, INSPECTOR (FINGER PRINT), NEW DELHI, NATIONAL CRIME RECORDS BUREAU.

630. SHRI BABU LAL SARKAR, ASSISTANT SUB INSPECTOR (FINGER PRINT), NEW DELHI, NATIONAL CRIME RECORDS BUREAU.

631. SHRI PURUSHOTTAM SHARMA, SENIOR SCIENTIFIC ASSISTANT (CHEMISTRY), LOKNAYAK JAYAPRAKASH NARAYAN NATIONAL INSTITUTE OF CRIMINOLOGY AND FORENSIC SCIENCE.

632. SHRI SAME SINGH, STAFF CAR DRIVER, LOKNAYAK JAYAPRAKASH NARAYAN NATIONAL INSTITUTE OF CRIMINOLOGY AND FORENSIC SCIENCE.

633. SHRI SIMANCHAL DASH, CONSTABLE, NEW DELHI, NATIONAL HUMAN RIGHTS COMMISSION.

634. SHRI SUDESH KUMAR RANA, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, HEADQUARTERS, NEW DELHI, NATIONAL INVESTIGATION AGENCY.

635. SHRI ANIL KUMAR, DEPUTY SUPERINTENDENT OF POLICE, HEADQUARTERS, NEW DELHI, NATIONAL INVESTIGATION AGENCY.

636. SHRI RAJESH BHABOR, CONSTABLE, HEADQUARTERS, NEW DELHI, NATIONAL INVESTIGATION AGENCY.

637. SHRI BIRA KUMAR DAS, ASSISTANT COMMANDANT (EXE), 3RD BN. MUNDALI, ODISHA, NATIONAL DISASTER RESPONSE FORCE.

638. SHRI BIJAY KUMAR OJHA, INSPECTOR (MINISTRIAL), 3RD BN MUNDALI, ODISHA, NATIONAL DISASTER RESPONSE FORCE.

639. SHRI RAM SEWAK SINGH, ASSISTANT SUB INSPECTOR (GD), 9 BN PATNA, BIHAR, NATIONAL DISASTER RESPONSE FORCE.

640. SHRI GOPESH AGRAWAL, DEPUTY DIRECTOR, HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

641. SHRI P. P. PRAMOD, ASSISTANT COMMANDANT, HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

642. SHRI KRISHNAMURTHY SHANKAR, INSPECTOR (MINISTRIAL), HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

643. SHRI ASHOK KUMAR SINGH, HEAD CONSTABLE, HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

644. SHRI CHANDRAKANTA, HEAD CONSTABLE, HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

645. SHRI M. RAMI REDDY, HEAD CONSTABLE, HYDERABAD, SARDAR VALLABHBHAI PATEL NATIONAL POLICE ACADEMY.

646. SHRI P. M. MURALIDHAREN, PPS, NORTH BLOCK NEW DELHI , MINISTRY OF HOME AFFAIRS.

647. SHRI MUNAWAR KHURSHEED, DEPUTY INSPECTOR GENERAL (RPF), SECR ZONAL HEADQUARTER, BILASPUR, M/O RAILWAYS.

648. SMT. KANCHAN CHARAN, DEPUTY INSPECTOR GENERAL (RPF), ECOR HEADQUARTER, CHANDRASEKHARPUR, BHUBANESWAR, MINISTRY OF RAILWAYS.

649. SHRI G. M. ESWARA RAO, DEPUTY INSPECTOR GENERAL-CUM-PRINCIPAL, RPF TRAINING CENTRE, SC RAILWAY, MOULA ALI, MINISTRY OF RAILWAYS.

650. SHRI SANJIB KUMAR RAY, ASSISTANT SECURITY COMMISSIONER OF HEADQUARTER, EASTERN RAILWAY, LILUAH, WEST BENGAL, MINISTRY OF RAILWAYS.

651. SHRI RAMKIRAT YADAV, ASSISTANT SUB-INSPECTOR, NORTH EASTERN RAILWAY, CRIME CELL, VARANASI , MINISTRY OF RAILWAYS.

652. SHRI C. GIREESH, SUB INSPECTOR, SPECIAL INTELLIGENCE BRANCH, RPF, PALAKKAD, KERALA , MINISTRY OF RAILWAYS.

653. SHRI N. SHALEM RAJU, ASI, SCR, DIVISIONAL ARMOURY, VIJAYAWADA, MINISTRY OF RAILWAYS.

654. SHRI YUGAL KISHOR JAT, CONSTABLE, RPF OFFICE AGRA, MINISTRY OF RAILWAYS.

655. SHRI RAJESH LAL, INSPECTOR, PATNA, MINISTRY OF RAILWAYS.

656. SHRI GANGADHAR JHA, CONSTABLE, HAJIPUR, MINISTRY OF RAILWAYS.

657. SHRI JAYACHANDRAN P.S., SUB INSPECTOR, 5TH BN, RPSF, TRICHY, MINISTRY OF RAILWAYS.

658. SHRI VALLABHANENI J.D. KRISHNA, ASSISTANT SUB INSPECTOR, 5TH BN, RPSF, TRICHY, MINISTRY OF RAILWAYS.

659. SHRI NARUL SHAIK, WC, 4TH BN, RPSF, NEW JALPAIGURI, MINISTRY OF RAILWAYS.

2. These awards are made under rule 4(ii) of the rule governing the grant of Police Medal for Meritorious Service.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 155-Pres/2014—The President is pleased to award the Certificate of Honour to the following scholars of Sanskrit, Arabic, Persian and Pali/Prakrit :—

SANSKRIT

1. Shri Manohar Vidyalankar

2. Shri S. Sambanda Sivacharya

3. Jagadguru Nimbarkacharya Shriradhasarveshwarsharandevacharya Shri Shrijimaharaj

4. Dr. Rama Shankar Tripathi

5. Shri V. Krishnamurthy Ghanapatigal

6. Shri Areyar Srirama Sharma

7. Dr. R. Krishnamurthi Sastry

8. Shri Francois Grimal
9. Shri Vidwan Mahamahopadhyaya Sri Raja Giri Acharya (Sri Sujnanendracharya)
10. Prof. Radhavallabh Tripathi
11. Shri Chellam Srinivasa Somayaji
12. Prof. Vempaty Kutumba Sastry
13. Prof. Om Prakash Upadhyaya
14. Prof. (Smt.) Shashi Prabha Kumar

SANSKRIT (INTERNATIONAL)

1. Shri Pierre-Sylvain FILLIOZAT

ARABIC

1. Dr. Ahmed Ibrahim Rahmathullah
2. Dr. Nisar Ahmad Ansari Azmi

PERSIAN

1. Prof. (Smt.) Shameem Akhtar

PALI/PRAKRIT

1. Shri Mahopadhyay Vinay Sagar

In addition, the President is also pleased to award the Maharshi Badrayan Vyas Samman to the following scholars of Sanskrit, Arabic, Persian and Pali/Prakrit :—

SANSKRIT

1. Dr. K.S. Maheswaran
2. Dr. Pramod Kumar Sharma
3. Dr. Madhav Janardan Ratate
4. Dr. Vinay Kumar Pandey

ARABIC

1. Dr. Aurang Zeb Azmi

PERSIAN

1. Dr. Atiqur Rahman

PALI/PRAKRIT

1. Dr. Samani Sangeet Prajna

SURESH YADAV
OSD to the President

The 26th November 2014

No. 88 –Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Y. Appala Naidu,
Junior Commando

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11/11/2012, on credible information that about 20-25 members of KKW Division (Karimnagar, Khammam and Warangal Division) Maoists are moving with lethal weapons to commit unlawful offences, a raid was planned. This village is on the border of Andhra Pradesh and Chhattisgarh state and has remained an impregnable den for AP and Chhattisgarh Maoist dalams with overwhelming support of tribals. The police party navigated for 20 KMs to reach Duddeda village in the night, braving inhospitable terrain. As the police party was combing the area, it came across sounds of some people talking.

Just then, a sentry of the Maoists, sighted police party and opened heavy fire on them. Consequently due to the heavy fire no one in police party advanced. However, JC Y. Appala Naidu advanced in the direction of the heavy fire and retaliated the fire courageously. JC Y. Appalla Naidu sustained a grievous bullet injury to his right fore-arm. Though the injury was grievous, with a lot of pain the above JC transferred his weapon to his left arm and continued firing. Later, the remaining Maoists fled from the scene. Y. Appala Naidu, JC alongwith his party advanced and found the dead body of the sentry of the Maoists and recovered SLR-1, .303 Rifle-1, SLR Rounds-27, Kit Bags-11 from the scene.

Thus, Y. Appala Naidu, JC played a key role by risking his life by braving imminent fire and thereby neutralizing one dreaded Maoist.

In this encounter Shri Y. Appala Naidu, Junior Commando displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/11/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 89 –Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri D. Ramesh,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri D. Ramesh of Police, belongs to the 2009 batch and has been working with zeal in the anti-extremist field and participated in (5) EOF in which (13) extremist died and many arms and ammunition recovered.

SI Cherla P.S. of Khammam Dist. cultivated and developed intelligence network. He received information about the movement of CPI Maoists in Chennapuram Village and surrounding forest area, to commit sensational offences like killing of their selected targets. On receipt of credible information on 24/09/2011, regarding the movement of about 20 members of the Venkatapuram Area Committee Maoists in Cherla P.S. limits, a local police team led by Shri D. Ramesh, SI alongwith Shri A.Prabhu, JC and Shri N. Anil Kumar, JC of Grey Hounds left for action immediately.

On spotting the police party, the sentry opened rapid fire on Shri D. Ramesh and alerted others. The extremists who were in an advantageous position, opened indiscriminate fire from all directions. Shri D. Ramesh,SI, under fire from extremists, advanced close to the extremists, unmindful of grave risk to his life and bravely chased them by retaliating with fire. With his gallant action and high degree of leadership, he converted the disadvantageous position into advantageous position, and snatched winning situation from the extremists. The firing from both sides continued for 10 minutes. Later, the police party searched the scene and found the dead bodies of two male cadres who were identified as (1) Musaki Chukkal, r/o Rengam (v), Usur Block, Bijapur District, Area Milita Commander in Chief and (2) Madakam Somal, r/o Chennapuram of Cherla (m), Militila Platoon Section Commander and recovered one SLR rifle with loaded magazine consisting of 16 live rounds, one 8 mm rifle, pouch containing 16 live rounds of 8 mm rifle and three empty cartridges of INSAS weapon and one empty cartridge of AK 47 from the scene, in Cr. No. 71/2011 of Cherla PS. The dead Maoists were responsible for commission of many heinous crimes including murders etc. After this encounter, the morale of the Maoists group fell to its lowest ebb.

In this encounter Shri D. Ramesh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/09/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 90–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Akhilesh Kumar Singh, (PMG)
Superintendent of Police

2.	Lamhao Doungel, Addl. Superintendent of police	(1st Bar to PMG)
3.	Prakash Sonowal, Sub Divisional Police Officer	(1st Bar to PMG)
4.	Lalit Hazarika, Constable	(PMG)
5.	Manuj Handique, Constable	(PMG)
6.	Md. Abdul Hekim, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29th May, 2012, Shri Akhilesh Kumar Singh, IPS Superintendent of Police, Sivasagar received information that a large group of ULFA extremits headed by SS 2nd Lieutenant Rupantar Kakoti armed with sophisticated weapons were taking shelter in Lengibor area along the Assam Nagaland border. He immediately planned and launched an operation in the night, with assistance of Addl. SP Shri Lamhao Doungel and SDPO, Shri Prakash Sonowal and personnel from Assam Commandos & AP Rangers and a Platoon of 210 COBRA Bn led by AC Gurucharan Kalindia. The Police team was fired upon in the night at village Lengibor, but they continued their pursuit and after a long march in the unfamiliar and hostile terrain, the Police team reached the Lalmati Basti on the Nagaland side of border at about 0430 hrs on 30th May, 2012 where the hideout was located. This hamlet is located in high hills of Patkai Range in a very difficult terrain and is frequented by armed NSCN cadres, who have common cause with ULFA extremists in the area. Undeterred, the operational group under command of Shri A K Singh tactically divided itself into smaller teams to search various cluster of houses located sparsely in hilly terrain. As the small team under Shri Singh was passing by a hillock, the ULFA group which had taken strategic position on the height of the hillock suddenly started firing on the Police team from automatic weapons like UMG and AK 56. In retaliation, Shri Akhilesh Singh and ABC Abdul Hekim charged at the mould from the Southern side and climbed up the hillock tactically amidst heavy firing from the ULFA group. They reached close to the extremist group and hit them putting their life in great danger as the extremists started firing heavily on them. At the same time Shri Lamhao Doungle and ABC Manuj Hadique launched on the Hillock in buddy pair parallel to Shri Singh and they engaged the ULFA group from close range. As a result, two ULFA cadres received multiple bullet injuries and jumped down the slope and disappeared in tall vegetation. One of the injured extremists lobbed a grenade which did not explode. The small protection team of Shri Singh gave covering fire to the charging officers and two jawans from below the hillock in the process. Seeing the development, Shri Prakash Sonowal and Assistant Commandant G Kalindia with his COBRA team charged at the hillock from the Eastern side and engaged the extremists. Shri Prakash Sonowal, ABC Lalit Hazarika and two COBRA personnel displayed courage in this charge, while as their small team gave supportive fire. This gallant charge by Police, forced the ULFA group to give up and they jumped down the slope of the mould. Two of the extremists were visibly hit by bullets but they managed to disappear in the full grown vegetation & jungle all around. While fleeing, they hurled one more grenade on advancing Police team, to deter their advance, which did not explode. The ops team followed the blood trails left behind in two directions but they were soon lost due to ongoing heavy rains. The police recovered one AK-47 rifle with 40 rounds live ammunition, one factory made remote controlled Chinese made directional mine, two live Hand Grenades & a magazine of Smith & Vesson Pistol with two rounds of 9 mm ammunition along with other camp material and a blood soaked rucksack of one of the injured extremists.

In continuing search, one listed ULFA hardcore cadre Hiren Gogoi @ Robin Moran, was recovered subsequently from a nearby area, with multiple bullet injuries. He had thrown grenade in the campus of Nathurapur Police station on 29th March, 2012. It was subsequently confirmed that SS Cpl Aidyaman Baruah was also hit by bullet in his left thigh during this encounter but managed to escape taking advantage of forest cover. The commander of this group SS 2nd Lieutenant Rupantar Kakoti and other cadres escaped unhurt. The Sivasagar Police personnel were at the forefront of the assault led by Shri A K Singh. Their exhibition of raw courage and selfless devotion to duty without caring for their life, in a hostile terrain and in direct line of adversary firing, is an example of rare gallant action of highest order.

In this encounter S/Shri Akhilesh Kumar Singh, Superintendent of Police, Lamhao Doungel, Addl. Superintendent of Police, Prakash Sonowal, Sub Divisional Police Officer, Lalit Hazarika, Constable, Manuj Handique, Constable and Md. Abdul Hekim, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/05/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 91–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Juga Kanta Borah,
Inspector

2. Simanta Borah,
Sub Inspector

3. Dipak Borah,
Constable

4. Budheswar Chakradhara,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04.01.2013 on the basis of specific information regarding movement of ULFA extremist in the general areas of Tinsukia, Makum and Bordubi Police Stations, a joint operation was launched by Tinsukia Police along with 2nd Assam Regiment (Army) , 68 Bn, CRPF and COBRA at diferrent places by splitting into small groups and all the small groups carried out operations at different locations of the general areas of Tinsukia, Makum and Bordubil.

One operation team under the leadership of Inspr Juga Kanta Borah Officer-In-Charge, Tinsukia Police Station, SI Simanta Borah, Officer-in-charge, Mukum Police Station alongwith other staff, laid ambush at Hebeda Gaon under Bordubi Police Station. Suddenly at about 2140 hrs the police operational team noticed 4/5 unidentified persons coming on foot towards them. When the Police operation team challenged to stop, they suddenly opened indiscriminate firing on the operation team. The police operation team came under heavy fire. Taking advantage of the darkness, the heavily armed extremists fired on the police operation team with a view to kill the members of the team. In the process, Inspector Juga Kanta Borah and SI Simanta Bora led from the front and came directly under fire, which motivated the rest of the staff. Accordingly, operation team retaliated for self defense exposing themselves to the extreme danger of lives. During the brief exchange of fire, one extremist sustained bullet injuries and one extremist was overpowered by the police team. Rest others managed to escape taking the advantage of darkness and fog. After the firing stopped, the Police team immediately evacuated the injured ULFA extremist to civil hospital, Tinsukia for medical treatment. Upon search of the body of the injured ULFA cadre, one M-20 pistol along with 1 magazine and 3 rounds of live ammunitions, 4 nos. of Chinese grenades, 2 nos. of RCIED, 2 nos. of detonator and some incriminating documents were found from his possession, the injured ULFA extremist, who was shifted to Tinsukia civil hospital for medical treatment, was declared brought dead by the attending doctors.

Later on, the dead ULFA extremist was identified by his brother as hardcore ULFA cadre Debajit Duwarah @ Bangli Asom @ Dou, S/o Shri Praip Duwarah of Na-Motapung under Barekuri Police station Distt. Tinsukia. The apprehended extremist was identified as Niranta Moran S/o Shri Pradip Moran of No.2 Hebeda Gaon, PS Bordubi, Distt. Tinsukia.

In this encounter S/Shri Juga Kanta Borah, Inspector, Simanta Borah, Sub Inspector, Dipak Borah, Constable and Budheswar Chakradhara, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/01/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 92–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Kamal Chandra Sil,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.12.2012 based on intelligence inputs regarding the presence of Garo National Liberation Army (GNLA) militants in general area of village Suorkona under Lakhipur P.S, a joint operation was launched by a troop of 13th Sikh Regiment and Police Staff of Lakhipur P.S headed by S.I Kamal Chandra Sil,O/C Lakhipur P.S at around 1800 hrs. During search operation at about 1950 hrs. suspicious movement of 2/3 individual were noticed in dense vegetation in the vicinity of the out skirts of village Suorkona. Captain P K Joiswal of Army team and S I Kamal Chandra Sil, O/C Lakhipur P.S displayed exemplary leadership and tactical acumen blocked all the escape routes. When challenged to come out, the

operation team was fired upon indiscriminately by the militants from the vegetation. S.I Kamal Chandra Sil exercising effective command and displaying raw courage immediately opened fire from his personal weapon and thereby pinning down the militants. With utter disregard to personal safety despite coming under indiscriminate burst of fire from automatic rifle like M-16 automatic assault rifle S.I Kamal Chandra Sil reacted instantly and desperately fired towards the militants resulting in killing of one militant, displaying conspicuous gallantry beyond normal call of duty. His gallant act helped in avoiding collateral damage to the operation team as well as the civilians. The killed militant was identified as SS Lance Corporal Bilpak B. Marak, a trained hardcore GNLA militant close associate of SS Commander-in-Chief of GNLA and wanted in many extremist related cases. One 5.56mm automatic M-16 Assault Rifle with 12 (twelve) rounds of Live ammunitions and some GNLA related incriminating documents were recovered and seized from the possession of the deceased militant.

In this connection Lakhipur P S Case No. 679/12/U/S 121/121(A)/122/353/307 I.P.C R/W Sec. 25 (1-B) (a)/27 Arms Act and 10/13 UA (P) Act was registered.

In this encounter Shri Kamal Chandra Sil, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/12/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 93–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Vishnu Ram Lediya, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Vishnu Ram Lediya was working as a Constable PS Durgkondal, Kanker District. 200 Battalion BSF was deployed on Anti Naxal Operation in Kanker District of Chhattisgarh since 20th October 2009. The Unit had planned domination and sanitization of the area through Road Security Operations, Mobile Check Post and Area Domination Patrols. On 29th August 2010 at about 0400 hrs, after due preparation as per tactical requirements, a party comprising 02 Inspectors, 57 Other Ranks, Tactical Headquarter elements, 04 Police Personnel, including Vishnu Ram Lediya and 05 SPOs of Chhattisgarh Police left Tactical Headquarter, Durgukondal for sanitizing the area between Durgkondal and Village Bhuski (located on Bhanupratappur-Pakhanjur axis. The whole stretch is interspersed with Nullahs and dense forests. The thick vegetation and the road bends restrict the observation upto 25 to 30 Mtrs. The rugged terrain and inhospitable weather conditions of the area also cause hindrance in movement.

The party led by Inspector Arjun Singh was detailed to carryout Area Domination Patrol and Road Security Operation, while the party of Inspector Manish Kumar was tasked to lay Mobile Check Post. The party advanced tactically taking all precautionary measures. Vishnu Ram Lediya had excellent knowledge of the topography of the area and was the guide for the Police party. He was providing cover from the right side of the road to the BSF personnel who were clearing the IEDs with the help of DSMDs.

At about 0650 hrs, as the leading scouts reached a road bend between Mile Stones No. 33 and 34, located approx. 8.5 Kms from Durgkondal, the scouts came under heavy volume of fire from the North-West direction. The leading troops without losing a moment, jumped towards the left side of the road and took cover, but by this time, the Naxals started firing from South-West direction also. Initially, the troops of the patrolling party were pinned down by the heavy volume of fire of the well-positioned and well-entrenched Naxalites who had laid a deliberate ambush.

Observing the effectiveness of the aimed fire on the patrolling party from all directions, Vishnu Ram Lediya guided the party in response despite the fact that he himself was in a difficult situation. His knowledge of the topography and fearless spirit enabled the soldiers to retaliate effectively and compelled the well-entrenched Naxals to shift their positions. This also provided an opportunity to pinned down members of the patrolling party to reorganize and to break the ambush.

Vishnu Ram Lediya displayed the highest degree of professionalism and courage to guide the other personnel of Police Party out of the ambush, while he himself made the supreme sacrifice.

Recoveries Made: - One Iron pipe bomb, One detonator with wire, 3 petrol bombs, two detonator bombs, 1 SLR magazine, 13 SLR live cartridges, 18 SLR fired cartridges, ten .303 fired cartridges, 15 INSAS fired cartridges, four AK-47 fired cartridges and five 12 bore fired cartridges.

In this encounter (late) Shri Vishnu Ram Lediya, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/08/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 94–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Santosh Kumar Pandey,
   Assistant Platoon Commander

2. Ramesh Shori,
   Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Specific intelligence inputs were received about presence of naxals in Nelnar area. On 11.06.2013, search party comprising of 235 personnel including personnel from the Special Task Force (STF) proceeded towards Nelnar Ulispara. STF team laid ambush on the other side of river Ulispara, village Nelnar. On 12.06.2013, the District Police force team spotted an armed naxal while moving towards Ulispara. The Police team split into five teams and cordoned the area. On seeing the police party approaching towards them from all sides, the Naxals started firing. Santosh Kumar Pandey (APC of STF) and Head Constable Ramesh Kumar Shori alongwith their police formations followed the Naxals and braved the heavy. Naxals started escaping towards the hill, taking away injured naxals along with them. Despite difficult terrain, the police party climbed the hill and forced them to recede. The police party also succeeded in inflicting casualty on the naxals with the killing of female Naxalite Sarita of Nelnar Dalam. The Naxals were thus overpowered by the Police party and escaped into the jungle leaving behind one .303 rifle, one local pistol, two Bharmar guns, 16 rounds of .303 rifle, three Tiffin bombs, one round air gun , three Tiffin bomb, eight cracker bomb, four bundles electric wire, 38 detonator, five flash battery, one GPS, three Voltametre and other destructive material, black uniforms, naxalite literature, medical kit etc. The police party also noticed blood spots and dragging marks at various places in the encounter site which indicates that the naxalites managed to escape with few more injured cadres & dead bodies taking advantage of dense forest and difficult terrain.

S/Shri Santosh Kumar Pandey and Ramesh Kumar Shori of district Police led their parties from the front, braved heavy firing from naxals who were at an advantageous position and not only succeeded in chasing the naxals away but also in inflicting casualty on them.

In this encounter S/Shri Santosh Kumar Pandey, Assistant Platoon Commander and Ramesh Shori, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/06/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 95–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhattisgarh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Devaram Bhaskar,
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receiving input of movement of Maoist Military Company No.02 in Kurcholi area of Bijapur District, a joint operation was planned. After proper planning and briefing, troops of District Police and Central Reserve Police Force were divided into two parties. The first party left for Kurcholi on 23.2.2013 from Pamalwaya and the other party left from Cherpal.

Before reaching Kurcholi, Party no. 1 bifurcated into two groups, each group having men from CRPF and DEF both. District Police component of one group was led by SI Sameer and ASI Bhaskar and CRPF component by DIG CRPF S. Elango while District Police component of other group was led by SI Raju and CRPF component by AC Madhu. After thoroughly searching the area around Kurcholi, while troops of first group were having lunch, at around 1500 hrs on

24.02.2013, Maoists initially exploded crackers to threaten the security forces and then fired a burst from their LMG. The intensity of attack increased and fierce firing ensued as Maoists equipped with sophisticated weapons advanced towards the Security Forces. ASI Bhaskar was then tasked to go forward along with 10 men covering from the left side. Without caring for his personal safety, ASI Bhaskar led his men and went ahead, retaliating the naxal fire all along. Undeterred by heavy naxal fire from the other side he advanced confidently and retaliated. Some naxals who sustained injuries in the exchange of fire were seen being carried by their colleagues. It was getting dark. Due to the formidable retaliation by the security forces, the naxals receded. The security forces were also able to inflict casualty on the naxals. Dead body of two uniformed naxals, later identified as Punem Mitkoo @ Kismat of Pusnar and Ratna Sambi Reddy @ Salim, both members of 2nd Military Company were recovered.

Other recovery :—

1.	12 Bore Gun	01
2.	Hand Grenade	02
3.	SLR mag.	01
4.	Bullets (12 Bore Gun)	22
5.	Mechanisms of Pressure Bomb	19
6.	Detonator	03
7.	Bullets (.303 Gun)	06
8.	Empty Case (.303 Gun)	02
9.	Empty Case (SLR Gun)	08
10.	RDX	03 kg.
11.	Cordex wire	02 ft.
12.	Naxalite Literature	03

In this encounter Shri Devaram Bhaskar, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/02/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 96–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Delhi Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Yashpal Rathi, (Posthumously)
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Yashpal Rathi, HC(Exe.) was an officer with mark integrity, sharp intelligence combined with an unquestioned honesty and diligence having no grudge for the laborious and tiresome jobs that are assigned to him & which he rather discharged with utmost zeal and a superb sense of responsibility. He acquired very good knowledge of Police practical work and due to his sincere hard work he was posted in different Units/Districts of Delhi police and lastly he was posted in South Distt. He performed an exemplary gallant act based on extra ordinary efforts which finally led to the cracking of desperate Mewati gangs.

As a Constable and Head Constable he has performed outstandingly which is evident from the excellent knowledge of criminal specially Mewati gangs. Mewati gang mostly used to run away with cattle and often break shutters of shops in small market for committing burglaries. Presently there are 20 identified big and small criminal groups in Mewat regions. They are involved in petty theft to brutal murders, armed robberies and other heinous crime like gang rape etc. The Mewati criminals have became the genuine policing concern and they commit thefts of 2/4/6 wheelers and using TATA-407 and other vehicles for the thefts of cattles/committing burglaries robberies etc. presently they are using Mahindra Pick-ups.

Over the period of time HC Yashpal Rathi had acquired outstanding knowledge about the activities of Mewati criminals operating in Delhi and NCR regions despite fully aware about the lurking danger and imminent risk to the life. HC Yashpal Rathi developed source in different areas of Delhi and NCR areas specially outline areas including the borders of South and South West Distt. to nab the criminals.

On 23.08.2012, at about 10.15 PM, HC Yashpal, while being posted at PS Mehrauli, was detailed for verification of bail bond in case FIR No. 594/04 u/s 498A/406/34 IPC PS Mehrauli. He proceeded vide his departure DD No.82B on Govt. vehicle Bajaj Pulsar M/Cycle No DL1SN9586 as the report was required to be submitted on 24.08.2012 in the Court for fixed purpose. The address of surety in the bail bond fell, in the jurisdiction of Nazafgarh, South West District, New Delhi. Meanwhile in the mid night, he received information about desperate Mewati Gang operating in the area of Nazafgarh and HC Yashpal without wasting any time and not bothered by the quantum of risk involved, he immediately rushed towards the place of striking of Mewati Criminals. He advance bravely without caring for his personal safety and acted swiftly to apprehend the criminals who made attempts to escape. HC Yashpal Rathi intercepted their vehicle with his Govt. M/Cycle and challenged them to stop without any fear very well knowing that Mewati Criminals could be armed with deadly weapons. Seeing the courageous act of HC Yashpal, Mewati Criminals who were 10 in numbers, and desperate as they are, immediately opened fire directly aiming at HC Yashpal Rathi, and hit him on his head causing serious injuries. Despite being severe injury, HC Yashpal Rathi displayed exemplary courage and dare devil act by making an attempt to stop and apprehend them. He grappled with the criminals till he fell down and by taking advantage of the situation., the criminals escaped from the spot. Thereafter, HC Yashpal Rathi was shifted to Rao Tula Ram Hospital, Jaffarpur Kalan, where he was declared as brought dead. In this regard, a case vide FIR No. 192/12 dated 24.08.2012 u/s 302 IPC was registered at PS Baba Hari Das Nagar. During the course of investigation four accused persons were arrested.

This gallant act of courage of HC Yashpal Rathi was outstanding and beyond the requirements of normal call of duties. He showed highest sense of courage, devotion to his duties, consistency, professionalism, presence of mind and valour in apprehending desperate criminals. Moreover, he scarified his life while battling with criminals without caring for his life and prevented series of major crimes while going beyond the normal periphery of his official duties. His splendid performance added glory to the department which has been appreciated by general public and media at large.

In this action (Late) Shri Yashpal Rathi, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/08/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 97–Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Delhi Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ram Kishan, (Posthumously)
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 25.11.2012, HC Ram Kishan and Ct G K Siddaiah, were deployed for night picket duty from 8 PM to 8 AM at Jaunti Toll Tax Picket on Delhi-Haryana border in the area of Police Station Kanjhawala, Outer District, Delhi.

At about 2.10 AM on 26.11.2012, a white car came from the side of village Jaunti. Since the vehicle was moving suspiciously, it was stopped by HC Ram Kishan for checking. Four persons were inside the Car. Two persons sitting in the rear seat of the car were checked physically by HC Ram Kishan after getting them out of the vehicle. Thereafter, the HC asked the front seat occupant to get out of the car. When the front seat occupant didn't alight despite opening the car door, the HC used slight force to get him out of the car. At this moment, the driver, started speeding the car in reverse direction. Meanwhile, the front seat occupant had taken out a pistol and he pointed it to fire upon the Head Constable. The HC showed great courage, presence of mind and without caring for his life, swiftly snatched away the pistol from the hands of assailants.

To further stop their escape, HC Ram Kishan putting his life in great danger continued to hold the assailant. The speeding car did not stop and HC Ram Kishan, who held on to one of the assailants through the front left door of the vehicle, got dragged to some distance. The car borne assailants panicked and fired two shots upon the HC which hit him in vital organ. Due to gun shot injury caused by assailants HC Ram Kishan fell down from speeding car of assailants and criminals fled away from the spot.

SI Khajan Singh informed the Police Control Room about the incident and shifted the injured HC to the nearest hospital (Brahamashakti Hospital) where he was declared 'brought dead'. The pistol snatched from the accused persons was

checked and was found to contain 5 live cartridges of Caliber 9mm. A case vide FIR No 258/12 dated 26.11.2012 u/s 186/353/302/34 IPC 25/27 Arms Act has been registered at PS Kanjhawala.

Crime Branch of Delhi Police has solved this case. Neetu Dawoda, the most wanted desperate criminal of Delhi & Haryana was behind this murder. He had escaped from police custody during movement to court in Mar, 2012. There was a reward of Rs.1 Lac on him.

HC Ram Kishan showed exemplary courage and bravery of the highest order in order to nab desperate armed criminals and thus sacrificed his own life while trying to apprehend the renegades. The bravery shown by HC Ram Kishan has won appreciation not only from the highest ranks of Police and Media, but also from the general public at large. He has set a rarely seen before example of gallantry and dedication towards his duty.

In this action (Late) Shri Ram Kishan, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/11/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 98–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Delhi Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Umesh Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

A brief account of gallant action :

Officers of south District, Delhi Police performed an exemplary gallant act based on extraordinary effort that led to a successful operation in which seven members of the desperate gang of Satte-Bittu Gang were arrested after a shootout incident which took place in the area of Green Park on 19.01.2009. 4 automatic pistols along with huge quantity of cartridges, 9 cellular phones, 2 daggers, 1 robbed SX-4 car, 1 Maruti Zen, 1 Honda Accord, 1 Santro car and 1 motorcycle used in the crime have been recovered from their possession. Four criminals including the Gang-Leader Satya Prakash @ Satte, dreaded gangsters Nadeem @ Naseem and Shakeel and their associate Kuldeep @ Sonu were critically injured in the day light shoot out.

OPERATION

During most of the year 2008 and beginning of year 2009, a desperate gang of Satte-Bittu had been indulging in committing sensational incidents of bank robberies and targeting businessmen who carried large sums of money in the areas of Delhi, N.C.R., UP and Rajasthan. In all these sensational incidents, firearms were extensively used by the criminals and in most of the case victims suffered multiple gunshot injuries. Ultimately, several teams of Delhi Police pursued the leads available to arrest the members of this desperate gang. A reward of Rs.25,000/- was also processed at Police Headquarters and a case under MCOCA was also initiated against Satya Prakash Satte in Police Station Nand Nagri, New Delhi. Despite extensive efforts by several teams of Delhi Police, the gang remained at large and continuously committed series of sensational crimes in Delhi, NCR, UP and Rajasthan.

In order to neutralize this gang, a joint team of Police Station Lodhi Colony and AATS (Anti Auto Theft Squad), South District consisting of Inspector Rajender Singh, SHO/Lodhi colony, Inspr Jarnail Singh, I/c AATS, SIs Pawan Tomar, Parmod Joshi, Balihar Singh and others under the supervision of Shri Vikramjeet Singh, ACP/Defence Colony and leadership of Shri HGS Dhaliwal, DCP/South District was formed. The efforts put by the team bore quick results and a specific information regarding the movements of the criminals was received at Police Station Lodhi Colony that the gang members of Satte are planning to commit some bank robbery in the Green Parks area of South Delhi. On receipt of this information, SHO/Lodhi colony immediately informed DCP/South, Sh. HGS Dhaliwal who formed a combined team of staff of PS Lodhi Colony under supervision of Insp Rajender Singh and of Anti Auto Theft Squad, South District under supervision of Insp. Jarnail Singh.

The two teams under the directions and coordination of Sh. HGS Dhaliwal closely worked together in this critical situation and successfully identified the vehicles being used by the dreaded criminals and started the hot pursuit. When the police team reached at NDSE-I, the criminals had already moved further in the area of Green Park Extension in the above

said vehicles, leaving behind motorcycles at NDSE-I. The police team started chasing the identified vehicle of the criminals and after a hot pursuit intercepted the black Honda Accord car at gate number 2, Green Park Extension. When the police team tried to go near the vehicle of criminals, the occupants of the black Honda Accord car opened indiscriminate firing at the police party. The firing with the criminals lasted for about 12 to 15 minutes and around 54 rounds were exchanged from both sides. All assailants occupying the Honda Accord car received multiple gunshot injuries and three policemen viz. Constables Umesh, Suresh and Kaushalender also received gunshot injuries. The other vehicle i.e. white Santro which had more accomplices of these dreaded criminals managed to flee from the spot.

All the injured were shifted to AIIMS Trauma Centre. A case vide FIR No.24 dated 19.01.2009 u/s 307/186/332/353/34IPC and 25/27 Arms Act was registered at Police Station Hauz Khas and investigation taken up. All the four injured criminals were admitted in AIIMS Trauma Centre in critical condition. Two more accused persons viz. Nadir and Harpal @ Honey were arrested later. Arjun, an employee in AIIMS, was also arrested on 29.01.09 in a case of cheating and forgery registered at Police Station Defence Colony vide FIR 25/09 alongwith Sharafat Sheikh for facilitating the forged medical documents of the members of Satte-Bittu Gang and mother of Sharafat Sheikh, the notorious drug dealer already lodged in Tihar Jail in MCOCA. The fleeing Santro car was also recovered from Lajpat Nagar area. One motorcycle left by the criminals at NDSE-I was also recovered at the instance of both arrested accused Honey and Nadir. One SX-4 car robbed from Geetanjali was also recovered from Sarojini Nagar area at the instance of Harpal @ Honey whereas one Maruti Zen car used in several crimes by Satte and his gang members was also recovered from Commesum Restaurant parking area, HN Din. All the fleeing criminals were also arrested in follow up action.

During the interrogation the accused Satte and his other associates disclosed series of sensational crimes which they committed in Delhi, Rajasthan and NCR region during their heydays of the present phase of their criminals career.

Individual role of Umesh Kumar, Constable

The role of brave Const. Umesh, who happens to be a trained commando, had been extremely outstanding at the spot. He fired 8 rounds from his AK-47 and also used the AK-47 weapons of his other colleague and used these long range weapons at such an angle of decline from overhead position and with such a precision that the bullets did not hit any public person present at the street. The trained firing skill he applied not only saved the lives of many people crowding the area around but also restrained criminals from using their weapons freely.

While engaged in fierce encounter with the criminals Const. Umesh was also shot at upper abdomen but escaped unhurt as the bullet hit the bullet proof jacket he was wearing.

Recoveries made :—

i) 4 automatic pistols (3 Made in USA and 1 Made in Italy)

ii) 3 extra magazines with 8 live rounds

iii) 19 fired cartridges

iv) 1 robbed SX-4 car

v) 1 stolen Maruti Zen car

vi) 1 Honda Accord used in crime

vii) 1 Santro car used by the criminals to escape

viii) 1 motorcycle used in the commission of crime

ix) 10 cellular phones and 17 sim cards of different service providers

x) 2 daggers

xi) Some forged documents

xii) Two traveling bags for the purpose of carrying looted money

In this encounter Shri Umesh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/01/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 99–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Choudhary Iftkhar Ahmed,
   Dy. Superintendent of Police

2. Tabraiz Ahmed Khan,
   Sub Inspector

3. Fayaz Ahmed,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 13.12.2012, Sopore Police developed information about the presence of some terrorists in apple orchards adjacent to village Mundji of Police district Sopore and accordingly based on the information, a joint operation was planned and launched by Sopore Police, 179 Bn CRPF and Army 22 RR on the same day at around 1430 hours. Parties of police headed by Dy. SP Choudhary Iftkhar Ahmed cordoned off the area consisting of about 500 square meters of apple orchard land with dense undergrowth. The area was sealed off to plug in escape routes by the forces. In the first instance, the parties started to rescue the civilians working in the orchards within the cordoned area as lot of civilian movement was noticed in the area who were working in the apple orchards. Accordingly, a Police party led by Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP started calling out the civilians during which the terrorists wearing pherans (Over coat gown like garment) started firing upon the Police party in which Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP had a narrow escape. While the terrorists were engaged in a retaliatory fire by Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP, SI Tabraiz Ahmad Khan and Const. Fayaz Ahmad guided the civilians to the safer area. Army and CRPF parties, who were keeping vigil in the outer cordon observed surreptitious movement of one terrorist towards the nallah adjacent to the orchards. One Army party holding the cordon fired upon the terrorist and forced him to retreat back.There was a sudden lull in the firing from the terrorists who hid themselves somewhere within the area under cordon which was highly uneven and undulated with nallahs and ravines. There were heaps of fallen leaves and fangs in the orchards. While a strong outer siege was maintained by Army and CRPF, Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP, SI Tabraiz and Const. Fayaz Ahmad started searching the cordoned area. While searching on the northern side of the orchard, they observed some movement under cluster of fallen dry branches of apple trees. Crawling very close to the suspected place, without getting into the notice of terrorists, Police trio placed themselves firmly on ground.

In spite of being confronted with volley of bullets by terrorists while evacuating the civilians, the Police team of 03 members led by Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP decided to take another risk of neutralizing the terrorists. The Police team asked the terrorists to surrender who in turn fired upon the Police party, however, the Police team had sufficient cover to save themselves. With the effective support from Army, the Police team instantaneously returned the fire but of no avail as the terrorists were very well placed taking cover of the raised ground. The exchange of fire continued for some time. In order to neutralize the terrorists, the Police team decided to engage the terrorists from rear side. While SI Tabraiz Ahmad Khan and Ct. Fayaz Ahmad gave covering fire, Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP crawled towards the rear end of the terrorists who were exchanging the fire with other members of the Police team. An army team of 03 members also moved close to front side and engaged the terrorists and the other two members of the Police team also joined Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP on the rear side of the terrorists. While being challenged from the rear by the Police team, terrorists fired heavily with UBGL`s and lobbed grenades upon Police Party who had a miraculous escape. However, this did not deter the Police team from their call of the duty who continued to fire upon the terrorists and in the exchange of fire, one terrorist got killed who later on turned to be a Pakistani national. The other terrorist tried to escape but was chased by Police team and confronted by outer cordon party of the Army and was got killed in the outskirts of cordoned orchard area in exchange of fire with Army and Police team. The terrorists were later identified as Umar Ahsan Bhat @ Khitab S/o Mohd Ahsan R/O Yamrach Kulgam and Abu Musa R/O Pakistan.

There were a couple of occasions in the operation when Police team faced life threatening situations and not losing their composure and balance, confronted the firing of terrorists with exemplary courage and fortitude. The elimination of 02 hardcore terrorists of Lashkar-e- Toiba terrorist organization was indeed a great achievement for Police and the Security force and this could be possible only by the leadership qualities with excellent operational command coupled with exemplary bravery of Sh. Choudhary Iftkhar Ahmed Dy. SP and rare courage and soldiery skill of SI Tabraiz Ahmad Khan and Ct. Fayaz Ahmad.

Recovery :—

1. AK rifle : 02 Nos.

2. AK Mag : 04 Nos.

3.	Amn AK	:	18 Rds.
4.	Chinese pistol	:	01 No.
5.	Pistol Mag	:	01 No.
6.	Pistol Rds	:	04 No.s
7.	GPS Device	:	01 No.
8.	Pouch	:	02 Nos.
9.	Compass	:	01 No.
10.	Matrix sheet	:	01 No.
11.	Grenade	:	03 Nos.
12.	Detonator	:	07 Nos.
13.	UBGL	:	01 No.

In this encounter S/Shri Choudhary Iftkhar Ahmed, Dy. Superintendent of Police, Tabraiz Ahmed Khan, Sub Inspector and Fayaz Ahmed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/12/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 100-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Rayaz Iqbal Tantray, Dy. Superintendent of Police	(PMG)
2.	Mohd Manzoor Gojree, Inspector	(1st Bar to PMG)
3.	Kafil Ahmad Mir, Assistant Sub Inspector	(1st Bar to PMG) (Posthumously)
4.	Mohd Sadiq Qurishe, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20/10/2012, Sopore Police developed information about the presence of terrorist Muzamil Amin @ Hasham and his associate Pakistani terrorist Abdullah Shaheen at Shalpora locality of town Sopore, who had been planning a suicide attack on Police Station Sopore. Based on the information, a joint operation was planned by Police, Army 22 RR and 179 CRPF. Police parties under the command of Dy SP Rayaz Iqbal moved towards the target area and swiftly cordoned off the said village, comprising of about twenty houses. The area was sealed off to plug in escape routes. In the first instance, the parties started the evacuation of civilians from the cordoned houses to safer place to avoid any civilian loss, during which the terrorists started indiscriminate firing on operational parties and injured Constable Sumit Kumar Soni of 179 CRPF. Inspector Mohd. Manzoor taking risk of his life moved with meticulous drill for evacuating the injured constable who was bleeding profusely. While being provided with a cover fire by his colleagues, Inspector Mohd Manzoor crawled close to the injured colleague of CRPF and dragged him gently towards the safe area. Confronting the imminent danger to his life, Inspector Mohd Manzoor not caring for the consequence, displayed an extreme sentiment of camaraderie by saving his CRPF colleague. He put the injured in the vehicle and evacuated him to the hospital and after admitting him, rejoined the operational parties.

The Police party led by Dy. SP Rayaz Iqbal, Inspector Mohd Manzoor, ASI Kafeel Ahmad, Ct Mohd Sadiq and others moved very close to the target house and kept the terrorists engaged with speculative fire and at the same time others continued to evacuate the civilians to the safer place. The terrorists were contained in a way that they could not fire effectively which could have resulted in civilian loss of life. Due to darkness the operation was suspended for night and in the next morning with the first light, a room intervention party headed by Dy. SP Rayaz Iqbal including Inspector

Mohd Manzoor NGO, ASI Kafeel, Ct Mohd Sadiq was formed. With an effective covering fire from two parties of Army adjacent to target house, the party made a heroic effort to enter the target house despite being confronted with a heavy volume of gunfire. After making their way in the attic of the target building, the Police party heard screaming voices down in the bathroom located outside and adjacent to the target house wherein some civilians had got trapped. While the terrorists were engaged by Inspector Mohd Manzoor and Constable Sadiq, Rayaz Iqbal Dy. SP and ASI Kafil Ahmad managed to reach on the roof of the bathroom through a window of the attic. Spotting them on the roof of the bathroom, one terrorist suddenly fired a burst from his AK Rifle targeting Rayaz Iqbal Dy. SP and ASI Kafil Ahmad, injuring Kafil Ahmad in the hand who lost his finger while bullets hit the bullet proof head gear in the forehead of Sh. Rayaz Iqbal Dy. SP and both the officers had a miraculous escape. Exhibiting extreme sense of responsibility towards their duty of safeguarding human lives, the duo jumped from the single storey bathroom roof to the ground and took cover of a wall of the bathroom. They opened the small window aperture of bathroom from the rear side and evacuated two people including an 11 year old boy from bathroom window while Inspector Mohd Manzoor and Constable Sadiq continued to engage the terrorists and provided covering fire to the duo. Thereafter the duo spotted the terrorist on the window of the target house who along with other terrorist was engaged by the two parties of Police from ground and attic continuously and in the close combat exchange of fire, both the terrorists got killed who were identified as Muzamil Amin Dar @Urfi @Hasham @Khitab S/ Mohd Amin Dar R/O Badambagh Sopore and Abdullah R/O PAK.

Recoveries made :

1.	AK series Rifle	01 Nos.
2.	AK Magazine	06 Nos.
3.	Chinese Pistol	02 Nos.
4.	Pistol Magazine	02 Nos.
5.	Live bullets of AK 47	10 Nos.
6.	Pistol rounds	02 Nos.
7.	Chinese grenade	02 Nos.(destroy in situation)

In this encounter S/Shri Rayaz Iqbal Tantray, Dy. Superintendent of Police, Mohd Manzoor Gojree, Inspector, (Late) Kafil Ahmad Mir, Assistant Sub Inspector and Mohd Sadiq Qurishe, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/10/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 101–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sujjad Mir,
Inspector

2. Sugreev Kumar,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 23.04.2011, over a specific information about the presence of terrorists a joint operation of Police and 23 RR Army under the supervision of DIG DKR Range Batote was launched in the general area of Dhanabi Nallah, Akhran falling under the jurisdiction of Police Station Banihal. The operation was launched on the evening of 23.04.2011 under the command of DIG DKR Range assisted by SP Ramban. But keeping in view apprehensions that terrorists may escape from the area by taking advantage of darkness and also to prevent any collateral damage or loss to the operational party/general public, the operation was delayed till morning. To ensure proper cordoning of the area where the terrorists were suspected to be hiding and keeping in view the darkness and thick bushes, operational party was divided into two groups, one headed by Shri M K Sinha, DIG DKR Range Batote and another by SP Ramban. The cordon was laid in such a manner so as to cover all the suspected routes/areas from where the terrorists could escape. Despite the cold at high altitude of Danabi Nallah, all the men remained on high alert in the suspected area till the first of 24.04.2011.

In the early morning, both the operational parties zeroed-in on the hideout. The operational party headed by DIG DKR Range noticed a terrorist peeping out of the hideout who was trying to access the presence and movement of security forces. Call were made to the terrorists to surrender. However instead of acceding to the call, the holed up terrorists started indiscriminate firing on the operational party with an intention to kill them. The operational party also swung into action and a gun battle ensued. The terrorists were at an advantageous position, since they were located in a hideout which was behind big boulders and at a higher altitude than the operational party. Despite the advantage of height to the terrorists, the operational party without caring for their lives and after many maneuvers managed to reach nearer to the hideout after crawling. The terrorists were taken to surprise and were compelled to come out of the hideout and fire with the terrorists continued from a close range. While the gun battle was on, the holed up terrorists lobbed a grenade and tried to escape. However one of them was gunned down by DIG DKR Range and Inspr. Sujjad Mir whereas the other managed to escape towards the nearby dense forest on the side opposite to the operational party.

Since the party led by Shri Anil Mangotra, SP Ramban and HC Sugreev Kumar was nearby, it immediately reacted and chased the terrorists who took cover behind a tree and fired at SP Ramban alongwith HC Sugreev Kumar. Succeeded in neutralizing the terrorist. In all the gun battle continued for about 06 hours in which two dreaded terrorists of LeT outfit were finally eliminated. The identity of the slain terrorists was later on established as:

1. Mohd Ayaz Malik alias Mussa S/O Abdul Raheem Malik R/O Shagun Banihal (Category-A) and

2. Farooq Ahmed See alias Zulkarnain S/O Mohd Rushtam See R/O Ugad, Tehsil and District Doda (Category-C)

During the operation, DIG DKR Range Batote, Inspr Sujjad Mir and HC Sugreev Kumar remained on the forefront and fought bravely without caring for their lives which resulted in the neutralization of two hardcore terrorists of LeT outfit that included one self styled Divisional Commander of LeT who was operating in the area since last 10 years. The following arms and ammunition were recovered:

1.	AK -47	:	01
2.	AK-74	:	01
3.	AK –Mgs	:	06
4.	AK-Ammn	:	160 Rds.
5.	Thoraya set	:	01
6.	Mobile Phone	:	01
7.	Compass	:	01
8.	Binocular	:	01
9.	Pouch	:	02
10.	Grenade Chinese	:	01
11.	Blanket	:	01

In this encounter S/Shri Sujjad Mir, Inspector and Sugreev Kumar, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/04/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 102–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sanjiv Kumar Mishra,
Sub Inspector

2. Kauleshwar Yadav,
Havildar

3. Murari Mohan Pradhan,
Constable

4. Amit Kumar Hembrom,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29th March 2010 at about 12.30 PM the O/C Boram PS received information from the own sources that the notorious Naxal Leader Prabodh Singh @ Gangadhar Singh @ Giddu Sardar Son of Samar Singh, Village Potkadih, PS Boram, District- East Singhbhum, who is wanted in many heinous Naxal incident has taken shelter in village- Pokharia, Tola-Bagudih. After getting information SI Sanjiv Kumar Mishra O/C Boram PS immediately proceeded alongwith the armed force on 1-6 strength to Village Pokharia Tola Bagudih. After reaching to village the O/C alongwith the Armed Force started combing and search operation of the possible hideout with Armed Force. During the search operation when the O/C SI Sanjiv Kumar Mishra reached to the mud and tiled house of Kistopado Singh the Hav Kauleswar Yadav and CT Murari Mohan Pradhan under Command of the O/C tried to enter the house. Suddenly the naxalite who were present inside the house, opened fire with intention to kill the police force and in the process fired three rounds one after another, immediately. The police personnel took defensive position encircling the mud house and in command of O/C, CT Murari Mohan Pradhan opened one round fire from his INSAS Rifle. The police team under command of O/C took their position from the place of occurrence and shouted to naxalite present inside the mud house for surrendering. The Naxali continued firing on police personnel from inside. The O/C took help of local villagers and was determined to increase pressure on the naxali to surrender. After sometime the additional force of CRPF also reached to the place and under command of the O/C they took their position. In this process one personnel from the tiled roof tried to look in the house but suddenly Prabodh Singh fired on him from inside the house.

After sometime, Naxalite Prabodh Singh for escaping and confusing the police force set the house into fire from inside. During the search operation recovered the dead body of the notorious naxali area commander Dalma Squard namely Prabodh Singh. The police party also recovered one pistol from beside the body of Prabodh Singh marked as made in ITLY, three fired cartridges of 7.65 MM. The excellent operation was successfully performed under leadership of SI Sanjiv Kumar Mishra the O/C of Boram PS actively assisted by Hav Kauleshwar Yadav, CT Murari Mohan Pradhan, CT Amit Kumar Hembram and other members of Police party. This act of exemplary courage and outstanding bravery definitely serve as a motivation for the members of Police Force.

Demoralizing effect on the active Maoist armed group in Dalma Area as their Leader Terrorist Prabodh Singh was killed in operation who was wanted in 28 numbers of heinous naxali incident including murder of Chaukidar Tejpal Singh, Boram PS and was also responsible for attacking the PS with other incidents. The effect of this operation is so obvious that no Naxali incident has been occurred from the area under jurisdiction of Boram PS after this encounter.

In this regard a case was registered bearing Boram PS- case No.8/10 dated 29/03/2010 U/S 307, 353, 427, 436 IPC and 25(1-b)A/26/27 Arms Act and 17 CLA Act and after investigation the Final Form no.11/10 has been submitted on dated 30.09.2010 U/S 307, 353,427,436 IPC and 25(1-b)A/26/27 Arms Act and 17 CLA Act. National Human Rights Commission has also conducted an enquiry about the encounter and gave clean chit to the police.

In this encounter S/Shri Sanjiv Kumar Mishra, Sub Inspector, Kauleshwar Yadav, Havildar, Murari Mohan Pradhan, Constable and Amit Kumar Hembrom, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/03/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 103–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jharkhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Parmeshwar Prasad,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on an intelligence input regarding the presence of PLFI extremists in the Raniya PS area, an operation was planned by the Supdt. of Police Khunti and the CO, 133 Bn CRPF on 4/7/2008 and Sub Inspector cum the officer-in-charge of Raniya PS, Sub Inspector Parmeshwar Prasad was entrusted with the task to plan and execute the operation along with two platoons of G/133 BN, CRPF and component of State Police Force along with Insp. Sanjay Kumar Singh of G/133 Bn, CRPF.

The raiding party covered a distance of almost 20 kms in two hours. When the party reached Koyalagarha, they heard some sounds and saw some light flashes on a hillock just behind the village Koyalagarh. SI Parmeshwar Prasad sensed the presence of the extremists and immediately alerted the whole party. The police party then cordoned the hillock and started the operation against the extremists. However the Naxals saw police movement and immediately started heavy firing on the police party. The firing was so intense that the police party had to run for cover and even though the police party fired back but were unable to overcome the Naxals. In the meantime CRPF Inspector Sanjay Kumar Singh received a bullet injury on his left elbow.

The situation had become very adverse for the police party because the Naxals were on high ground and having good cover while the police party was on low ground and was exposed to enemy fire. Further the injury to the Inspector had demoralized the force. However SI Parmeshwar Prasad taking initiative, showing strong determination and leading the team from the front showed exemplary courage and devotion to duty and kept on firing. SI Parmeshwar realized that if the Naxals on the hillock were not displaced, they would not be able to save their injured police officer. So without caring for his own safety he rushed up the hillock in face of enemy fire and rather returned the fire all along. The Naxals just could not stand up to such courage and determination and simply fled leaving their arms, ammunition and dead comrades behind. At the same time SI Parmeshwar Prasad also planned evacuation of the injured team mate and kept on motivating him. After the firing stopped, the whole area of operation was cordoned and searched. After thorough search of the area one dead body identified as that of naxal (PLFI) namely Salaman Horo 25 yrs R/O Chalangi, PS Lapung was recovered. Two other naxals cadre namely Durga Singh 19 yrs. r/o Jaria, PS Lupung and Nilu Topno 15 yrs. r/o Pasam, PS Rania were arrested. 02 Nos. of 9 mm pistol (Made in Italy), 04 Nos. Magazine of 9mm Pistol, 02 Nos. 7.62mm Bolt Action Rifle, 01 Magazine of 7.62 mm Bolt Action Rifle, 52 Nos. live rounds of 7.62mm, 17 Nos Live Rounds of 9mm, 12 Nos Live Rounds of 315 bore, 01 case of 9mm, 02 empty cases of 7.62mm, One Holster of Pistol with Belt, 02 Nos. Bandolier, 03 Nos. Mobile sets (Nokia), Cash Rs.9900/-, 20 Nos. letter pad of PLFI, 25 Nos Pamphlet of PLFI, 04 Nos of Prastavwna books and one Booster which is used in land mine blast was also recovered.

In the whole operation, right from the very beginning, the determination of SI Parmeshwar Prasad was exemplary because he like a true brave leader lead his force from the front by personal example and it was his determination which saved the life of the injured officer. The alertness, swift action, the ability to think ahead and the gallant action shown by SI Parmeshwar Prasad was outstanding and remarkable. Not only a dreaded naxal was killed and the morale of the PLFI in the area was shaken, the immediate timely evacuation of an injured partner also saved the life of Insp Sanjay Kumar Singh. The patience, the ability to keep the force intact and fighting and the determination to fight when attacked was exemplary by SI Parmeshwar Prasad. This action not only shook the roots of PLFI in the area but also galvanized the morale of the forces and strengthened the faith of the people in the Police action.

In this encounter Shri Parmeshwar Prasad, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/07/2008.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 104–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sanjay Kumar Singh,
   Sub Inspector

2. Jai Prakash Narayan Choudhary,
   Sub Inspector

3. Babulal Tuddu,
   Havildar

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the 2nd of April 2010, the police party received information at 21.30 hrs that an armed squad of Naxals which had gathered in village Bantoriya, Tola Shrirampur was planning for some untoward incidents. The squad had 3 to 4 armed Naxals. Accordingly a raiding party was constituted under the joint leadership of SI Sanjay Kumar Singh O/C Patamda PS and SI Jaiprakash Narayan Choudhary O/C MGM PS, District East Singhbhum. The two officers along with DAP and CRPF immediately rushed on foot to village Bantoriya, Tola Shrirampur in the midst of the night and cordoned the village on all

sides. But the Naxals came to know about the arrival of the police party and started firing at them. The police then asked the Naxals to surrender, but in vain. Then the entire police party was ordered to maintain the cordon and take safe position at the same time. In the mean while some of the Naxals tried to escape in the southern direction by continuously firing at the police party. It was then that the police fired at the Naxals in self defence.

At dawn when the areas in and around the village were searched in the presence of two independent witnesses. A hard core Naxal was found injured on the southern side of the village. The Naxal was hit by police bullet. Near the Naxal there was a Pistol with four live rounds of 7.65 mm ammunition and eight empty cases of which three were of 7.65 mm and five were of 8 mm ammunition. The injured Naxal was recognised by the witnesses as the hardcore CPI maoist Naxal Sunil Gorai @ Amar Singh @ Amar Gorai @ Alok aged about 30 years, S/o Dallu Gorai village and PS Kamalpur District East Singhbhum. The villagers informed the police that the said maoist was an active member of the armed squard of CPI(maoist) and was the Commander of the area. He was responsible for a number of heinous Naxal incidents in the area and was the shooter of the squad. The Naxal, later died on way to hospital. The search party also recovered one Yamaha crux looted motor cycle, mobile, 7 SIM cards etc from the site of encounter. In this encounter SI Sanjay Kumar Singh and SI Jaiprakash Narayan Choudhary respectively fired one round and two rounds of ammunition from their AK-47 rifles while Hav Babulal Tudu fired two rounds from his Insas rifle. Which resulted in the death of the above named Area Commander.

In this connection Patamda PS case No. 16/2010 dated 03.04.2010 U/S 307/353/414/IPC, 25(1-b) 'A'/26/27 Arms Act & 17 C.L.A. Act has been registered.

In this encounter S/Shri Sanjay Kumar Singh, Sub Inspector, Jai Prakash Narayan Choudhary, Sub Inspector and Babulal Tuddu, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/04/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 105–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Abhay Singh,
Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10th August, 2011 at around 23:30 hrs near Itwara Chowki of Police Station Talaiya, a muslim boy Abid while returning home, after offering Namaz got drenched by the water splashed by the bike of Hukum Kanjar, a Hindu boy. After a brief exchange of abuses/expletives, both went away. The Muslims irked by the incident, gathered in 100-150 in numbers and attacked the Kanjar Mohalla where Hukum Kanjar lived. The houses were ransacked belongings damaged and set on fire and kanjar beaten up, women and children were too dragged out of houses.

On receiving the information regarding the incident through control room Bhopal, SP Bhopal Shri Abhay Singh realizing the enormity and seriousness of the incident, instructed the SHOs of neighboring Police Stations to reach the affected site to diffuse the situation and himself set off for the spot. SP Bhopal Abhay Singh on reaching the spot realized that there was complete chaos and havoc all around. SP Abhay Singh without wasting valuable time, assembled the entire force and briefed them how to handle the tense situation. Four police parties, under the command of ASP Zone-3, CSP Kotwali, CSP Hanumanganj and CSP Shajanhanbad respectively, were made and positioned at important intersections. Besides 8-10 fixed points deployment was also done immediately.

As it was holy month of Ramzan the Muslims regrouped quickly. Armed with stones, swords, knives, lathi and petrol-bombs, around 1000-1500 moved towards kanjar mohalla in a second attempt to inflict damage to life and property of Kanjar community. Kanjar Mohalla being surrounded on all sides, by Muslim population is in complete minority. The rioters taking advantage of anonymity due to poor visibility and huge number were in continuous stream like flow. SP Bhopal Abhay Singh briefed the available force quickly and deployed it with acumen to check the movement of rioters towards Kanjar Mohalla. Police warned the rioters to stop unlawful activities but they were adamant on carrying out immense damage to life and property. Heavy stone pelting started. SP Bhopal Abhay Singh mobilized his entire police team to strongly deal with the rioters by using tear gas and blocked the movement of rioters towards Kanjar mohalla. But they again regrouped and attacked the police party with stone, petrol-bombs and other weapons. SP Bhopal Abhay Singh without caring for his life courageously moved ahead leading his team to push the rioters back. While discharging his duty he was injured by heavy pelting of stones. One of the stones struck Abhay Singh on his right eye, injuring him grievously. Although injured, he kept

motivating his team to push back the rioters. His dauntless and inspiring leadership approach motivated the entire police team to give their best under trying conditions. After great effort, the volatile situation was brought under control, under the able leadership of SP Bhopal Abhay Singh.

Old Bhopal is communally hypersensitive. In the past also petty issues have sparked off communal incidents which culminated into communal riots. In the aforesaid backdrop and inspite of getting severely injured in his right eye, SP Bhopal Abhay Singh showed exemplary courage and dedication in controlling the volatile situation. Had the move been not dealt with deft and courage, it would have led to a communal holocaust.

Recovery :

Country made 06 rounds, revolver- 02 Nos., 04 round ammunition, 01 knife and 08 swords.

In this action Shri Abhay Singh, Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/08/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 106–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Raja Babu Singh,
Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

Apropos of the FIR No. 133/06 of Police Station Dehat, Bhind and the Magisterial Enquiry Report pertaining to the incident in question a dreaded dacoit Ramu Tomar connected with the notorious inter-state gang of dacoit Charna Sikarwar was eliminated in a fierce exchange of fire on 31.03.2006. There was a reward of Rs. 15000 for arrest of the proclaimed absconding dacoit Ramu Tomar.

On 31.03.06, late in the night of S.P. Bhind Shri Raja Babu Singh received a tactical input that dacoit Charna Sikarwar, Ramu Tomar and their associates were coming to kidnap the son of a Sarpanch of village Jawasa, PS Dehat Bhind. Shri Singh instantly got galvanized into action and prepared an action plan. Accordingly, the force had to rush towards the Jawasa village.Shri Singh reached the rendezvous point and professionally briefed the force about the operation, which was to be launched. He formed three police parties. Police party No. 1 (assault party) was led by Shri Singh, police party No 2 & 3 were led by SI Vijay Singh Tomar and APC Mewalal respectively. The party No. 1,2 &3 moved on foot from East, South-West and South directions respectively up to the exact destination as was indicated by the informer. Party No. 1 laid strategic ambush on the probable route on Dehra Jawasa, an ordinary forest approach route. At about 0130 hours party No. 1 led by SP Shri Singh heard trampling of footsteps coupled with muffled murmuring, “After kidnapping we should get back without delay as these days dawns are early”. Vigilant Shri Singh immediately alerted the police party and boldly challenged the dacoits to surrender, but they started indiscriminate fire on police with the intention to kill.

The dacoits were located on an elevated plane which provided them a commanding position, so the fire was causing an imminent threat to the lives of the police party. Shri Singh and the CSP Shri M.L. Dhondy had a close shave off the deadly bullets of the dacoits. The members of the police party were placed at relatively lower plane putting police to an enormous tactical disadvantage. In this perilous situation where the dacoits were firing at the police, relentlessly it was an utterly difficult task to arrest or to disarm the dacoits. But Shri Singh with an indomitable zeal boosted the morale of his force and motivated them to fire in self defence. Braving risk to his life, he fired with his AK- 47 rifle at the unrelenting dacoits. The shots fired by the dacoits were dangerous to the extent that one bullet missed CSP narrowly but Shri Singh spontaneously steered his move and ducked CSP down to safety. In this act of extraordinary bravery, Shri Singh had put his life in great danger and without getting browbeaten, continued to fire in self-defence at the dreaded dacoits. In this operation Shri Singh’s bullet hit one of the dacoits and he fell down on the ground with a shriek. However, the dacoits kept on pouring the deadly fire on the police. Police counteracted the assault and courageously returned the fire. It forced the dacoits to run away into the forest nearby.

Later, the spot of this fierce encounter was thoroughly searched. In this search, a dead body was seized which was identified as that of dacoit Ramu Tomar who was a proclaimed and absconding dacoit with a reward of Rs. 15,000/- for his

arrest. From the site of incident .315 bore Rifle along with 04 empty cartridges and 06 live cartridges in a bandolier were also seized.

In this encounter Shri Raja Babu Singh, Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/04/2006.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 107–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Munshi Chukku Punghati, (Posthumously)
   Police Constable

2. Shamandas Jayram Uike,
   Police Naik

3. Sarju Manatu Veladi,
   Police Naik

Statement of service for which the decoration has been awarded

PC Munshi Pungati , Police Naik Shamandas Uike and Police Naik Sarju Weladi- were members of C-60 team and elite anti-naxal wing of Gadchiroli Police during an encounter with naxalites on 19/05/2011. The trio had fought valiantly in number of naxal encounters. PC Pungati, with his cool temperament fought bravely & rescued his colleagues during fierce engagement with naxals in October 2010 at Mirkal Phata wherein an MPV vehicle was blasted. He also played a vital role during an incident of IED blast on police party on 21/12/2010.

On 19/05/2011, a road opening exercise was planned from Bhamragad to Aheri. The said route is hypersensitive with respect to naxal activities. Responsibility of undertaking road opening exercise from Tadgaon to Bejur was given to police parties led by Madhukar Naitam & Ramesh Dalai. On 19/05/2011, at 0600 hrs, the police parties set out from Tadgaon towards Bejur for road opening. Eight newly recruited Special Police Officer(SPO`s) were also accompanying the police parties. Police Naik Uike as Dy. Commander of Madhukar Naitam`s party, was deploying 6-7 policemen after properly searching a patch with an intent to secure it. As police party located a landmine site during this process, Police Naik Uike deputed PC Pungati, 2 SPO`s & 6 other police personnel to secure the area till safe disposal of IED is done by BDDS & he moved further with remaining police personnel. Unfortunately the said location of landmine was entrapped by 200-300 armed naxals clad in olive-green dresses hidden in roadside dense forests laying an ambush. As major group of police parties passed by the landmine site, naxalites sitting in ambush started indiscriminate firing at police parties. PC Pungati immediately retaliated the fire through his AK-47 rifle taking available cover. As naxals were targeting 2 SPO`s deployed therein, PC Pungati provided them with the cover fire & sensing heavy fire, instructed SPO`s to have proper cover. As SPO Sudhakar Mattami & Surender Kothare got bullet injuries, PC Pungati couldn`t prevent himself from leaving his safe cover & advanced towards the injured SPOs with cover fire so as to provide them the aid. Meanwhile Police Naik Uike & Police Naik Weladi rushed towards the spot tactically, motivating the fellow personnel to break the naxal ambush. The aggressive moves of PC Pungati through pounding of heavy gunfire with judicious use of UBGL resulted in fatal injuries to 2-3 naxals. In this fierce gun battle, a bullet hit PC Pungati in his leg. Police Naik Uike & Police Naik Weladi realizing that life of their colleagues was in danger took courageous decision to reach them & for that motivated the fellow personnel & gallantly started advancement towards the naxals who were trying to encircle them. Due to this gallant advancement with cover fire compelled the naxals to retreat under cover of dense forests. Meanwhile reinforcement was received from Bhamragad & Aheri as a result of timely communication of the situation by Police Naik Uike through wireless sets. Two SPO's & PC Pungati succumbed to their injuries on the field, in the midst of action. The searching of place of incidence resulted in recovery of 4 Bharmar rifles, blood shades & body dragging signs at number of places apart from recovery of 5kg of explosive landmine indicating remarkable loss of Naxal side. Police Naik Uike & Police Naik Weladi motivated & led the forces courageously & tactically throughout the gun battle which continued almost two to two & half hours thereby not only saving many precious human lives on police side but also inflicting fatal injuries to naxals in a terrain where enemy was in advantageous position of planned ambush.

PC Munshi Pungati, Police Naik Shamandas Uike, Police Naik Sarju Weladi fought valiantly and did not relent even under the thick of continuous fire from naxals. This gallant action by all of them contributed a lot in defeating the evil designs of the naxals, that day, and in the process Munshi Pungati gave the highest sacrifice of his life, in the line of duty and acquired martyrdom.

In this encounter S/Shri (Late) Munshi Chukku Punghati, Police Constable, Shamandas Jayram Uike, Police Naik and Sarju Manatu Veladi, Police Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/05/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 108–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Vyankatesh Hanmantu Mungiwar,
   Police Head Constable
2. Vasudeo Rajam Madavi,
   Police Naik
3. Pavan Malla Arka,
   Police Constable
4. Vijay Rajanna Sallam,
   Police Naik
5. Ravikumar Pocham Gandham,
   Police Naik
6. Suryakant Gangaram Atram
   Police Naik

Statement of service for which the decoration has been awarded

Police Head Constable Vyankatesh Hanmantu Mungiwar Police Naik Vasudev Rajan Madavi , PC Pawan Malla Arka, Police Naik Vijay Rajanna Sallam, Police Naik Ravikumar Pocham Gandham, Police Naik Suryakant Gangaram Atram are members of Special Operation Squad (locally popular as C-60 team) an elite anti-naxal wing of Gadchiroli Police. HC Vyankatesh Mungiwar is Commander & Police Naik Vasudev Madavi is Dy. Commander of the C-60 team whereas others are members of their team. They have been honoured with DGP`s Insignia in year 2013.

On 19/01/2013, at about 19:15 hrs, upon receipt of the reliable input disclosing efforts of naxals to gather villagers for conducting meeting in the area of village- Govindgaon, an anti-naxal operation was planned as per orders & guiding instructions issued by DGP & Addl. S.P. Aheri. Accordingly, teams of Vyanktesh Mungiwar (25 personnel), team of Rajesh Topo (22 personnel), & 9 personnel of Mattami`s team, thereby, in all 56 personnel of Special Operations Squad left from Pranhita at 21:30 Hrs by vehicle to launch the anti-naxal operation in the said area.

For not to expose the location of Police party & maintain necessary surprise required for such operations, it was planned that team of Mungiwar would dis-embark 2 km beyond Govindgaon 'T'point & there onward would proceed towards Southern side of village-Govindgaon by foot movements & by adopting tactical posture, whereas team of Rajesh Topo would drop 2 kms prior to Jimallgatta 'T' point & thereby would carry out searching towards Northern side of Village-Govindgaon & will lay Cut-Off in North-East direction along Govindgaon-Yenkabanda Road. Sh. Vyanktesh divided his team into 4 groups as A,B,C,D & entrusted responsibility of main fire group with A & B groups where as directed C & D groups to perform duties of cut-off & assault/ carry groups. Sh. Vyanktesh, Vasudev Madavi, Santosh Bonkulwar & Nirajan Pipare were given responsibility of Group leaders of A, B, C & D groups respectively. Sh. Vijay Sallam, Ravikumar Gandham, Suryakant Atram & Pawan Arka were also members of the main fire group. C & D groups adopted their positions as cut off on South side of the village beyond nullah, across the road approaching jungles. As both the fire groups started approaching the village, they located civilians returning from the naxal meeting through same axis. In that critical situation, both the groups made best use of nearby covers with prevalent darkness of night & in that situation also they kept approaching towards the village through tactical movements by adopting lying position as & when necessary, simultaneously having proper vigil over the locals passing by that axis.

It took patience to check three long hours to cover a distance of merely 3 to 4 km i.e. from landing point to about 50 mtrs from 'T' point of Govindgaon. On 20/01/2011, at about 01:30 hrs, when the main fire groups under leadership of Vyankatesh & Vasudev were approaching in 'V' formation & were adopting positions to about 5 to 8 mtrs from 'T' point, suddenly some 5 to 6 persons approached the 'T' point. It was realized in the street light that, the group approaching constituted naxals. But as the main fire group members were just adopting their position & that too 5 to 8 mtrs away from 'T' point, the naxals opened burst fire over the police parties sensing their positions. The police parties retaliated by firing at naxals. The naxals communicated by calling names of each other & were passing message for cordoning the police parties, which indicated voluminous presence of the naxals in the area. At that point of time, even being in high risk zone & susceptible for getting inflicted with bullet injuries, sufficient enough to endanger the human life, the brave hearts of main fire group namely Vyanktesh Mungiwar, Vasudev Madavi, Vijay Sallam, Ravikumar Gandham, Suryakant Atram & Pawan Arka swiftly moved into action & proceeded by firing at the naxals. Meanwhile C& D groups & Rajesh Topo's team started cordoning the place of incident. Sensing the increased fire & built up pressure from police parties, some naxalites fled towards jungles, taking advantage of thick dark. As fire from naxal side ceased completely, precautious searching of the place revealed 6 injured naxals in laying still position scattered here & there at the site. Fire arms viz. two SLR rifles, one.303 rifle, one 8 mm modified rifle recovered from 5 of these naxals. The six naxals killed in this encounter includes 1 ACS-cum-DCM, 1 Dalam Commander, 2 Dy. Commanders & 2 Dalam members. During the encounter Vyankatesh Mungiwar, Vasudev Madavi, Vijay Sallam, Ravikumar Gandham, Suryakant Atram & Pawan Arka fought valiantly to swing the momentum in favour of police parties.

This encounter blessed with the remarkable success due to instantaneous workout on the received intelligence input, meticulous planning for night time operation, strict adherence to tactical field movements & extraordinary precautions & precise fire orders to avoid any civilian casualty despite the place of incident being in the viscinity of the village.

In this encounter S/Shri Vyankatesh Hanmantu Mungiwar, Police Head Constable, Vasudeo Rajam Madavi, Police Naik, Pavan Malla Arka, Police Constable, Vijay Rajanna Sallam, Police Naik, Ravikumar Pocham Gandham, Police Naik and Suryakant Gangaram Atram, Police Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/01/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 109–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Digamber Ashokrao Patil, Police Sub Inspector	(PMG)
2.	Bannu Chammu Halami, Police Naik	(PMG)
3.	Nagesh Jageshwar Takam, Police Naik	(1st Bar to PMG)
4.	Yeshu Santu Tulavi, Police Naik	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19.05.2013 upon receipt of intelligence based input Prob. PSI Digambar Patil, Party Commander, Bannu Halami, Party Commander Nagesh Tekam & Party Commander Yeshu Tulavi with their teams departed from Gadchiroli towards the naxal's location. At about 1800 hours when searching the forest area about 1.5 km far from the village Hetalkasa they noticed about 40-50 armed naxalites laying an ambush in the jungle area. Naxals blasted 6 land mines one after another and suddenly fired upon these police teams with an intention of killing police party & to snatch their fire arms. In such a situation. PSI Patil, Party Commanders Nagesh Tekam, Bannu Halami and Yeshu Tulavi bravely guided the police parties to adopt available protective cover of the ground. Accordingly police parties also retaliated in self-defence, from right side of the river along with the hill. Meanwhile HC Nagesh Tekam and PC Vijay Talte received 3 splinter injuries during initial burnt of naxal fire. In spite of initial domination by naxals due to prior adoption of advantageous positions of terrain and keeping in mind that some police men have got injured, PSI Patil and all 3 party commanders through their relentless efforts and courageous co-ordination of the counter moves boosted the morale of the police parties. As a result of this enhanced domination by

police teams, naxalites fled away from the spot taking advantage of hills and the dense forest. After the cessation of fire from naxal side, PSI Patil and all Party Commanders stretched out the cordon along the place of incidence and proceeded towards the side of attack through proper search of the area. During the primary search of the place of incidence, they recovered dead body one male naxal with 12 bore rifle with black sling and an ammunition pouch containing 19 live rounds of 12 bore rifle, 5 rounds of 9 mm caliber, 2 wire bundles of black wore, one black colored pittu, 30 pencil cells and other naxal material.

In this encounter S/Shri Digamber Ashokrao Patil, Police Sub Inspector, Bannu Chammu Halami, Police Naik, Nagesh Jageshwar Takam, Police Naik, and Yeshu Santu Tulavi, Police Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bat to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/05/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 110–Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Govinda Bali Farkade, Police Naik	(PPMG, Posthumously)
2.	Shagir Munir Shaikh, Police Naik	(PPMG)
3.	Pankaj Dilip Godselwar, Police Naik	(PPMG)
4.	Sudhir Samadhan Wagh Police Sub Inspector	(PMG)
5.	Nitin Mukesh Badgujar, Police Sub Inspector	(PMG)
6.	Nagesh Jageshwar Takam, Police Naik	(PMG)
7.	Bhaiyyaji Warlu Kulsange, Head Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12.04.2013, at about 0900 hours with regard to the secret information received from the informer Prob. PSI Nitin Badgujar and Prob. PSI Sudhir Wagh instantaneously called their teams at headquarters to undertake anti-naxal operation in Sindesur Jungle area. When the personnel from their teams gathered at the Headquarter, they briefed them about the operation. Prob. PSIs Badgujar and Wagh and party Commanders Bhaiyaji Kulsange and Nagesh Tekam decided the route to be taken to reach the Sindesur Jungle area keeping in view the terrain and for maintaining the surprise. After having been prepared in all respects just within an hour, at about 1000 hours they departed by vehicles from the headquarters and were dropped at jungle area near the destination, at about 1100 hours. Then onwards, they started moving ahead through tactical searching in the Sindesur Jungle area by foot. After moving some distance, suddenly a heavy fire came in the direction of Policemen. The Police party immediately took cover and as per the orders of officers and party commanders patiently and courageously judged the situation. As they noticed some green dressed naxals at a place in jungle taking cover of some civilians, Prob. PSIs Badgujar and Wagh instructed their party members not to fire in the direction so as to avoid the civilian casualties. They also warned naxals to put down the weapons and surrender, but the naxals undeterred by the caution continued firing at the Police party besides loudly instructing each other not to let the villagers get out of that place as the police would not fire until the civilians were present there and by taking their cover kill the Police party. Seeing that the situation would endanger the lives of civilians as well as that of police parties, brave hearts of the Police party, viz, Govinda Farkade, Shagir Shaikah and Pankaj Goselwar, without caring for their own lives, moved ahead fearlessly and loudly addressed the villagers to get out of that place or to run away and take cover at a safer place. As they were shouting for the civilians, the naxals fired at them, Police Naik Govinda Baliram Farkade fell down as he was shot at chest. While suffering with such critical situation, PC Shagir Shaikh and PC Dilip Godselwar, without losing their mind set-up took proper hide and shouted for the civilians to take cover at a safer place and at the same time, fired at the naxals.

Their efforts did not go in vain and villagers started moving to the safer places. After confirming that all the civilians have moved away to a safer place, Prob. PSI Badgujar and Wagh Party Commander Kulsange and Tekam signaled their Commandos to fire at the naxals in order to combat the situation. Prob. PSI Badgujar instructed his party to cover left side and Prob. PSI Wagh asked his men to cover right side and Prob. PSI Badgujar and Kulsange with fire jawans valiantly ran on the naxals firing heavily and without caring for their own lives. As Prob. PSI Wagh and his men continued firing at the naxals who were trying to run on them, they changed their mind and started running into the jungle. Prob. PSI Wagh and his men chased them bravely and fired. Realizing the increasing pressure of Police party, the naxals ran away in the jungle taking advantage of the dense forest. The heavy exchange of fire lasted for about half an hour. As the fire from the naxals ceased, Prob. PSIs Badgujar and Wagh, and party commanders Kusange and Tekam instructed their men to search the area. Simultaneously, they secured the place where one jawan had fallen after being hit by the naxals. They found him unconscious. On searching the area, one male naxal and three women naxals were found unconscious after being shot by the police firing. The naxals possessed 01- SLR rifle, 01-SLR Magazine, One 12 bore rifle, eleven live rounds of 12 bore rifle and one bharmar rifle, four nos. of clamore mines, four nos. of detonators.

The unconscious jawan Farkade, 02 unknown civilians, 01 unknown male naxal and 03 unknown women naxals found at the place of incidence were immediately taken to PHC Dhanora for medical help. The Medical Officer, after examination declared them dead.

The encounter at the Sindesur was a successful operation that was carried out immediately after secret information by the Police Party by putting their lives in danger and incurring heavy risk just for the sake of the civilians. Generally, in order not to let down the morale of the other naxal members, the naxals pull away their dead ones after the encounter. But this time, Prob. PSI Badgujar and Wagh, party commander Kulsange, Tekam, Police Naik Farkade, Police Naik Shaikh and PC Godeselwar were successful in grabbing naxals along with their arms and ammunition. They fought valiantly and did not relent even under the thick of continuous fire from naxals. This gallant action by all of them contributed a lot in defeating the evil designs of the naxals that day and in the process Police Naik Govinda Farkade gave the highest sacrifice of his life in the line of duty and acquired martyrdom.

In this encounter S/Shri (Late) Govinda Bali Farkade, Police Naik, Shagir Munir Shaikh, Police Naik, Pankaj Dilip Godselwar, Police Naik, Sudhir Samadhan Wagh, Police Sub Inspector, Nitin Mukesh Badgujar, Police Sub Inspector, Nagesh Jageshwar Takam, Police Naik and Bhaiyyaji Warlu Kulsange, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/ Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/04/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 111–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sambhaji Narayan Gurav,
   Police Sub Inspector

2. Bhajanrao Manu Gawade,
   Police Naik

3. Kumarshaha Raju Usendi,
   Police Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22.05.2012, on receipt of intelligence based input about naxal locations PSI Sambhaji Gurav along with Party Commander Bhajan Gawade and his party of 24 men and 55 men of 206 COBRA battalion, left Gadchiroli headquarter towards Pawarvel forest area for anti-naxal search operation. During continuous search operation, next day at about 0830 Hrs. they reached pawarvel village. When these Police parties were moving from the jungle area near Pawarvel village, suddenly 40-50 armed naxalites laying a pre-planned ambush in the jungle area near village, fired heavily upon these police parties with an intention of killing these parties and snatch their firearms.

In this situation, PSI Gurav & Party Commander Bhajan Gawade took lead and bravely guided these police parties to retaliate the fire in self-defence, and also to control the situation. After initial burst of fire from naxals, PSI Gurav took

lead and with PC Kumarshaha Usendi he bravely advanced with firing heavily towards naxals. Due to this bravery shown by PSI Gurav, other members from the party also fired heavily upon naxals, as a result of which after realizing the increased pressure of fire, naxalites fled away from the spot taking the advantage of dense forest. After cessation of fire from naxals, PSI Gurav & his party searched the area where they found a male naxal's dead body, which later on was identified as Rahul Dhurva (a hardcore member of Naxal Dalam).

After some time, this police team got information that some of the naxls are hiding in Pawarvel village. Therefore, PSI Gurav and Party Commander Gawade, without even thinking the imminent dangers to their lives guided their teams to cordon the village and took lead in searching houses. They noticed suspicious movements in a house. So, PSI Gurav entered that house taking all necessary precautions. There he found 2 woman naxalites wearing olive green coloured naxal uniform trying to attack him. Then PSI Gurav handled that situation courageously and arrested those 2 women naxals with 2 weapons and large amount of ammunitions.

PSI Gurav and Commander Gawade led the operation by quickly acting on the received intelligence and courageously retaliated the fire, whereas PC Usendi supported his in-charge without any fear and showed never-die spirit during firing. Even after this success of killing one naxal, this trio showed cool temperament and with efficient co-ordination, they cordoned the suspected area and bravely arrested 2 hard-core women naxals, without fearing for their own lives.

In this encounter S/Shri Sambhaji Narayan Gurav, Police Sub Inspector, Bhajanrao Manu Gawade, Police Naik and Kumarshaha Raju Usendi, Police Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/05/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 112–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Ringrang T.G. Momin Addl. Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
2.	Robert A.M. Sangma, Sub Inspector	(PMG)
3.	Rajendra P. Kahit, Bn Constable	(1st Bar to PMG)
4.	Probinstar Kharbani, Bn Constable	(PMG)
5.	Jitden Sangma, Bn Constable	(PMG)
6.	Rapsalang Wahlang Bn Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the 12th April, 2013, credible source information was received about the probable camp location of Sohan D. Shira, the Commander-in-Chief of the Garo National Liberation Army (GNLA) along with 8-10 of his cadres in Koksi Nengsat village under Songsak Police Station, fully equipped with sophisticated arms and ammunition. Based on the inputs received, the CoBRA teams were also asked to join the operation and a plan of action was drawn up. As per the plan the operation teams comprising of SWAT team under the command of Shri. R. T. G. Momin, MPS, Addl. Superintendent of Police, East Garo Hills District, and the CoBRA team led by Shri. D. S. Pal, Dy. Commandant, launched the operation at 23:00 hrs navigating through the dense jungle and treacherous terrain to avoid detection and reach the suspected area. At around 04:30 hrs, the SWAT teams along with CoBRA strategically positioned themselves to block all possible escape routes which had been predetermined at the planning stage. Shri Ringrang T. G. Momin, MPS, Addl. S. P. along with Shri. Devender S. Pal, Dy. Commdt. took positions at the Cut-off. As soon as each of the cutoff team was in place, the Assault party led by SI Robert A. M. Sangma (SWAT), and SI/GD M. S. Rawat, CoBRA was given the direction to proceed with their search within the area which had been sealed off.

At around 06:00 hrs, as the Assault team was approaching a tenement within the village, the Assault team came under heavy gunfire from GNLA militants. SI Robert A M Sangma, SI/GD M. S. Rawat and the entire team had no other

alternative but to fight through the volley of bullets which rained upon them in order to suppress the militants. The officers along with BNC Rajendra P Kahit, BNC Probinstar Kharbani, BNC Jidten Sangma, BNC Rapsalang Wahlang and other CoBRA personnel from the Assault team bravely chased the militants for several distance and counter attacked them belligerently. The aggression with which the Assault team charged at the militants ultimately forced them to flee and it was apparent from the traces of blood on the ground that some of the militants may have sustained injuries in the exchange of fire.

The militants tried to escape in different directions by firing behind over their shoulders at the Assault team. Several of them were spotted heading towards the cutoff where Shri. Devender S. Pal, Dy. Commdt and Shri. Ringrang T. G. Momin, MPS, Addl. S.P. along with their team were positioned. In spite of the lack of proper cover, the officers and men fired at the militants who directed their fire towards them. During the mêlée, it was apparent that one of the insurgent was critically hit while the other was injured forcing the other militants to change direction.

In attempt to escape, the militants ran in the direction of Cutoff-6 where BNC Rapsalan Wahlang along with a component of CoBRA team was lying in wait. The militants who were brazenly opening fire aimlessly in a bid to escape from the area was fired upon by the teams from Cutoff-6 during which one of the militant was mortally hit and died on the spot while the rest managed to escape.

After some time when the firing ceased in all directions the entire area was thoroughly searched and two dead bodies of GNLA cadres with one AK-56 rifle, one 7.65 pistol, four Gelatin sticks, fifty detonators, three wireless sets and other incriminating articles were recovered from the encounter site. Subsequent reports from well placed sources also revealed that several more had been seriously injured out of which some had succumbed to their injuries after several days although their bodies could not be traced.

In this encounter S/Shri Ringrang T.G. Momin, Addl. Superintendent of Police, Robert A.M. Sangma, Sub Inspector, Rajendra P. Kahit, Bn Constable, Probinstar Kharbani, Bn Constable, Jitden Sangma, Bn, Constable and Rapsalang Whalang, Bn Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 113–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Akhileshvar Singh, Superintendent of Police	(PMG)
2.	Santosh Kumar Mall, Addl. Superintendent of Police	(PMG)
3.	Pabitra Mohan Nayak, Constable	(PMG)
4.	Siva Sankar Nayak, Constable	(1st Bar to PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 22.08.2013 an intelligence input was received by Shri Akhileshvar Singh, SP Malkangiri regarding presence of small team of maoist' armed cadre led by Golla Ramulu @ Madhav , DCM rank in the Chhiliba forest area under Machhkund PS of Koraput district . Accordingly operation was launched in the area on 23 Aug ,2013. Sh. Akhileshvar Singh, SP Malkangiri led the operational party which comprises of 15 Police personnel of Malkangiri police and the informer. When the party was moving in the operational area , suddenly they observed movement of 8 to 10 armed persons and some of them were also donning naxal uniform i.e. Olive Green. Suspecting them to be naxals, Police Party asked them to surrender but they opened heavy volume of fire. Police party also retaliated in self defence . The ultras were in advantageous position and were firing relentlessly. Sh. Akhileshvar Singh, SP Malkangiri after assesing the situation decided to assault the ultras from right flank . He asked the main group to keep naxals engaged by firing and himself alongwith other three willing personnel namely Shri Santosh Kumar Mall Addl. SP (Operations), Koraput ,CT Pabitra Mohan Nayak & CT S.S Nayak crawl tactically towards the right flank to a distance of 15-20 meters. While crawling there were every possible chance of them being detected and hit by Naxal's bullet , but that could not deterred them from accomplishing their assigned task. It seems

that naxals got inkling of Police assault group as they hurled one grenade towards them. Though the grenade missed the target and Police party also laid down but still CT Pabitra Mohan Nayak and CT Siva Sankar Nayak sustained superficial splinter injury but that could not jolt their spirit. Sh. Akhileshvar Singh , SP further moved 6-7 mtrs to the right alongwith CT Pabitra Mohan Nayak and thereafter both of them opened fire on ultras by coming in open. Though this move has endangered their lives but luck favoured them and it jolted the naxals as they faced fire from unexpected side. Before ultras could have fired towards them, Shri Santosh Kumar Mall Addl. SP and CT Siva Sankar Nayak also started firing on the naxals by coming in open without caring for their lives. Police main party was already firing towards naxals. Firing from three sides make ultras dumbfounded and they started retreating but also kept on firing towards Police parties . Probably naxals might have suffered casuality at this moment but taking cover of hostile terrain and thick vegetation they managed to escape from the scene . The exchange of fire lasted for 15-20 minutes. After waiting for some time the main party joined the assualt group and started moving tactically towards the village Chhiliba. As Police party was about to enter the village, again they faced intermittent fire from a distance, to which the police party retaliated well .Thereafter there was a long silence and after sometime Police party entered the village. During search, dead body of one maoist cadre armed with Pistol was found. Later on he was identified as dreaded naxal Golla Ramulu @ Madhav of the rank of DCM. He was the person behind killing of more them 50 Police pesonnel. He alongwith his team killed 38 Greyhounds commandos of Andhra Pradesh Police in Elampaka reservoir of Malkangiri district (cut-off area) in June-2008. Beside, he also killed four BSF personnel including Commandant and Second-in-Command of 107 BN BSF on 10.2.2012 and was also involved in abduction of Collector, Malkangiri in the year 2011, besides other numerous killing of contractors and civilians. Andhra Pradesh Govt had declared a reward of rupees four lakhs on his head. His killing has definitely given a crucial blow to naxals in the area.

Individual role played by the Police personel

1. SHRI AKHILESVAR SINGH, IPS, SP

Not only he displayed perfect command and control during the operation but also set personal example when situation warranted. During exchange of fire, in the preliminary stage Naxals were better placed and there occurred danger of Police position being overrun by ultras. At this moment any wrong action or inaction may prove fatal to Police party. However Shri Akhileshvar Singh, SP did not loose his nerves and after analyzing the situation decided to form assault group of Police personnel to attack ultras from the right flank. Leading from the front he himself led the assault group after giving necessary instructions to main party. While crawling towards right flank, there were every possible chance of him getting eliminated due to fierce firing by the ultras. When situation warranted he made charge on naxals along with CT Pabitra Mohan Nayak. In that process he has to come up in open which exposed him badly and made him an easy target of the ultras. However fortune favoured him and everything went well .In the gamut of this operation he was involved at every stage , be it acquiring and developing such valuable intelligence information or the execution part .He has played a big role to the success of the operation. He has endangered his life at various stage of operations.

2. SHRI SANTOSH KUMAR MALL, ADDL. SP (OPS)

He assisted the operational leader quite well and willfully became part of the assault group though he knew that his life would be at stake. While crawling towards the right flank, he could have been martyred being totally exposed but still he carried out the crucial task. In the operation he along with CT Siva Sankar Nayak fired at Naxals by coming in open resultantly making naxals unable to retaliate the fire of other part of Police assault group. This action ultimately left naxals with no choice but to retreat .It was indeed a gallant action because bullets fired by the naxals might have targeted him. He assisted team leader in perfect execution of plan.

3. SHRI PABITRA MOHAN NAYAK

Though he sustained superficial splinter injury in the operation but still came forward to be part of assault group. While crawling towards right flank he has endangered his life as he could have been hit by bullet. Further he alongwith Sh. Akhileshvar Singh , SP Malkangiri came in open and gave first blow to naxals by spraying bullets on them .This was indeed a gallant act as he has put his life on stake by coming in open in the midst of naxal firing . However the gamble was paid off and the operation terminated with Police success .

4. CT SIVA SANKAR NAYAK

He also sustained superficial splinter injury in the operation but willfully became part of the assault group. His life was obviously under threat while crawling with others towards right flank. Anything could have happened at that stage but he carried out his task undeterred. Further he along with Shri Santosh Kumar Mall Addl. SP (Operations) fired at Naxals by coming in open which left Naxals dumbfounded and ultimately it forced them to retreat. Obviously he has put his life on stake while doing this act.

Recovery :

01. 11 nos of live Ammunitions of AK-47

02. 14 nos of empty 9 MM Ammunition

03. 9 nos of empty .303 Ammunition

04. 1 nos of live .303 Ammunition

05. Five nos of empty SLR Ammunition (7.62)

In this encounter Akhileshvar Singh, Superintendent of Police , Santosh Kumar Mall, Addl. Superintendent of Police, Pabitra Mohan Nayak, Constable and Siva Sankar Nayak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 114-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Med al for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Dibya Lochan Raj,
Sub Inspector

2. Chitta Ranjan Jena,
Constable

3. Samodar Kulisika,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the intervening night of 10-11/09/2013, reliable input from own sources received that there was movement of 12–15 armed CPI (Maoist) cadres including lady Maoists led by Bunty in Kadraka, Bondili, Tepapadar village areas under K.Singhpur PS limits with plans to strike terror in the locality to establish their presence and to wage war against the Government by way of causing explosion to Government establishments and to paralyze the Government functionaries.

Based on the input, int-based anti-naxal operation was planned and launched in that area from very early morning hours on 11.09.2013 by engaging District Voluntary Force (DVF) Rayagada, to nab the Maoists and to foil their ill-designs.

While SI Dibya Lochan Raj, was leading the police operational team i.e. the team of DVF Rayagada and continuing the operation in the Kadraka-Bondili forest area in the afternoon hours on 11.09.2013, the team smelled presence of a group of Maoists and with help of day-vision-device the operational team noticed a camp of a group of Maoists. Soon the in-charge of the police operational party SI Dibya Lochan Raj divided the police party into two teams, one being the action team of 8 members and the rest members being the cut-off team. The police personnel were in the action team and were leading from the front and took positions at strategic locations. Then the action team of the operational party, warned the Maoists to surrender in loud voice and told to give up arms, but the Maoists group did not listen and opened indiscriminate fire upon the police operational team.

Seeing this, SI Dibya Lochan Raj, CT Chitta Rajan Jena and CT Samodar Kulisika of the action team took their position and in self defence, opened fire upon the Maoists group. The Exchange of fire lasted for about half an hour. These three members of the police operational party exhibited exemplary gallant action and strongly tackled the Maoists' attack being unmindful of the grave risks to their lives. The undaunted spirit, presence of mind, brevity and tactics of field craft shown by the these police personnel in leading the police operational party, proved to be excellent and led to a great achievement in tackling Maoists warfare.

Finding the attack of the police party not-withstanding, the Maoists tried to retreat and fled away from the place taking help of the close terrains and dense bushes. The police operational party chased the Maoists group upto a distance but the Maoists could able to flee from the spot. Then, the DVF operational party made further search operation in the entire area and found dead body of a lady Maoist who was in olive green uniform carrying a .303 rifle.

The police operational party then destroyed the Maoist dump and recovered 3 nos. of .303 rifles, fifty three .303 ball ammunitions, 3 nos. of .303 magazines, 1 INSAS magazine loaded with 17 ammunitions, 1 walke talkie, a huge number of

medicine kits like tablets/salines / injections /cotton etc., naxal olive-green uniforms, kit bags, utensils, a large number of cosmetic items from the area.

In this Exchange of fire, the police operational DVF team exhibited sheer dedication to duty, fearlessness irrespective of grave risk to their lives and a high order of sincere efforts , as a result of which one lady Maoist was neutralized and the dump of Maoists could be destroyed. This achievement by Rayagada district police added yet another glory to Odisha police and also strengthened the morale of the force in combating naxal menace in Rayagada district. On the other hand, the elimination of the lady Maoist and seizure of huge number of Maoist-related articles by Rayagada police gave a big blow to the CPI (Maoists) group thereby weakened their hold in the district.

During the operation, Shri Dibya Lochan Raj,SI led the police party from the front unmindful of risk of life and lives of other members of the operational party and successfully dominated the Maoists` attack and neutralized a lady Maoist in the exchange of fire. With a strong determination and for the protection of the peace and security of the nation, he led the operation despite the grave danger to life of himself and of other team members. He had shown extraordinary gallant combat action in development and execution of bold and innovative plan with small team and successfully neutralized the enemy in the heartland of naxals.

In this encounter S/Shri Dibya Lochan Raj, Sub Inspector, Chitta Ranjan Jena, Constable and Samodar Kulisika, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/09/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 115–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Jayanta Kumar Naik,
   Sub Inspector

2. Pabitra Kumar Patra,
   Havildar

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the evening of 29.08.2013, S.P. Bolangir collected precise information through his reliable source that the banned CPI Maoist cadres of Bolangir-Bargarh-Mahasamund Division are camping in Dandel hill area near Khujen village, about 10 Kms from Turekela P.S. of Bolangir Dist. The said area is situated at a distance of 110 Kms from the Bolangir District Head Quarters in the West direction. The area is mostly a dense mixed jungle mixed with streams and very high hills. Almost all the roads, cart tracks and foot tracks are suspected to be mined and dangerous for road journey as well as cross country march. In spite of hostile conditions prevailing in the area, the nominee along with other police personnel of SOG Assault Team No.41 of Bolangir district dropped for combing operations at Bad Dakla village near Dandel forest area of Turekela P.S limits and started combing on 29.08.2013 at around 23:00 hrs.

In the evening hours of 30.08.2013, under the overall leadership of the SI(Armed) Jayanta Kumar Naik, SOG AT No.41, was deputed as operational party's scout due to his vast experience in jungle warfare and good knowledge of night-march, the police party started combing operations at about 17:00 hours in the dense Dandel hill area near Khujen village, 10 KMs South of Turekela P.S. Pabitra Kumar Patra, Hav alongwith his team noticed that about 8-10 member's group of banned CPI (Maoists) of Bolangir-Bargarh-Mahasamund Division, both male and female clad with olive green uniforms and arms at some distance in front. It was noticed first by Shri Pabitra Kumar Patra, Hav and the same was informed to party commander SI (Armed) Jayanta Kumar Naik. Immediately Shri Jayanta Kumar Naik planned a tactical operation by dividing the party into two firing parties (one party in the south direction and Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra with two other police personnel in east direction) and remaining party members as cut off. Party commander revealed his identity as police and advised the Maoists to surrender themselves, but they paid a deaf ear to the advice and opened indiscriminate fire with their fire arms with a view to kill the police personnel who were at the forefront and leading the party. Shri Jayanta Kumar Naik again asked maoists to surrender but maoists cadres did not listen and instead fired towards the police personnel. Police party members realized that maoists are not in the mood of surrender and wanted to kill him and other police personnel. Then Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra and two other police personnel moved for East direction and two other police men covered another flank i.e. South direction, they fired in self defense and started crawling

towards Maoists by hiding themselves. Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra, without fear of heavy firing by armed maoists, crawled very close to them who were firing fiercely at police party. Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra went very close to maoists and fired at them to neutralize them. In the process, they put their life into grave danger in order to save lives of other team members. The exchange of fire lasted for about one hour in which Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra and other police personnel of Bolangir district fought bravely without caring for their lives. In course of this exchange of fire, Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra and other police personnel shot dead one important armed male maoist cadre, who was giving stiff resistance to the police party by firing with his own weapon. Sensing the danger from the assault of police team, the remaining extremists fled away from the scene, taking advantage of thick forest, boulders and hilly terrain. Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra with their assault group chased the extremists for a considerable distance but they managed to escape.

Hence both the officers showed rarest of the rare bravery act and were ready to make supreme sacrifice in order to nab the armed rebellion of outlawed CPI (Maoists). They displayed good example of esprite de corps and extreme gallant action.

By this brave act, Shri Jayanta Kumar Naik & Shri Pabitra Kumar Patra and the team inflicted heavy casualties on CPI (Maoist) which resulted in the death of one unidentified armed male maoist cadre.

Recovery :—

1. One .303 Rifle
2. One country made gun
3. One .303 live ammunition
4. 20 no. of 12 bore live cartridges
5. Empty cases
6. One plastic box having one IED (Non-electrical)
7. 6 Kit bags.
8. Large quantity of maoist literature.
9. Items of daily use.

In this encounter S/Shri Jayanta Kumar Naik, Sub Inspector and Pabitra Kumar Patra, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 116–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Satyajit Kandankel,
   Sub Inspector
2. Niranjan Sarangi,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 04.09.2013 an intelligence input was received by S.P, Bargarh about continuous movement and presence of a group of Maoists in the hills of Gandhamardhan under Paikmal Police Station limits with an intention to target Police Stations, Block Offices, Mobile Towers, CRPF Camps etc. Accordingly, an operation was planned to apprehend them and to thwart their evil designs. A joint operational team consisting of CRPF and DVF (District Voluntary Force) under the leadership of Assistant Commandant J.K.Upadhayay was launched on 04.09.2013 at 09.00 pm. The team started search in the jungles of Gandhamardhan hills following all SOPs. On 06.09.2013 at about 11.00 am the operational team noticed about 30

to 35 persons in olive green uniforms with weapons in the jungle area. When operational party started moving closer, they started firing on the operational party. The operational party took strategic position to escape from their fire, revealed their identity and asked them to surrender. Inspite of that, the naxals started firing heavily on police team, using automatic weapons and from advantageous position with an intention to run over the police party. The team leader, AC, J.K. Upadhayay without losing his nerves, took a strategic decision to split his team into two groups. A small assault team consisting of him, SI Satyajit Kandankel, CT Niranjan Sarangi and CT Chitrasen Gond and a main group under command of SI Bibekanand Mohanta. He then asked the main group to provide cover fire to the assault team led by him, so that they can go closer and break the terrain advantage of naxals. He alongwith SI S. Kandankel, CT Niranjan Sarangi and CT GD Chitrasen Gond, crawled to the left flank side for about 40 to 50 metres risking their lives to incessant firing from naxal side and occupied a tactical location and started firing to the naxal group. Then SI Satyajit fired 05 rounds UBGL to the naxal side which spread panic amongst the naxals. After that AC, J.K.Upadhayay, SI S. Kandankel, CT Niranjan Sarangi and CT GD Chitrasen Gond, started moving closer and closer to naxal group by crawling and firing non stop. This daredevil act of three of them has taken the naxal's by surprise as they started receiving fire from unexpected multiple locations. This broke the morale of naxals and they strated receiving injuries which forced them to retreat taking cover of thick jungle and hilly terrain. The exchange of fire lasted for around 20-25 minutes. After a lull of half hour, the team leader asked the main group to join them and started search in an extended line. During the search they recovered one dead body of a male maoist cadre in olive green uniform along with one 12 Bore SBBL Gun, 07 nos of 12 Bore live cartridges, 02 nos. of 12 Bore empty cartridges, 13 nos of Super dine explosive, 06 nos of power gel explosive, 23 nos of Special ordinary detonator, Detonators with wire, one bundle cordex, one piece wire, olive green cap with red star, large quantity of Maoist literature and kit bags.

Reliable intelligence input reveals that, later two more naxal cadres succumbed to the injuries they received in this exchange of fire. This operation has not only given a deadly blow to the naxal groups, but also failed their immediate plans to commit violent activities in the area.

1. Gallant act of Shri Satyajit Kandankel, SI of Police, DVF Bargarh

He assisted AC J.K. Upadhayay the team leader in this operation and willfully became part of the assault group knowing the risk to his life involved in it. While crawling to the left side to launch the attack on naxals from tactical location he was exposed to the incessant firing from naxal's but it did not deter him from assisting his team leader. He fired the UBGLs which acted as a shock treatment to the naxal's group and injuring many of them.

2. Gallant act of Shri Niranjan Sarangi, Constable, DVF Bargarh

During the entire operation he acted as the scout for the operation team. He spotted the naxals first and conveyed it to the team leader. He assisted AC J.K. Upadhayay the team leader in this operation and willfully became part of the assault group knowing the risk to his life involved in it. While crawling to the left side to launch the attack on naxal's from tactical location he was exposed to the incessant firing from naxals, but it did not deter him from assisting his team members. He fired nonstop and crawled closer to naxal's group and inflicted damage to them which finally forced them to retreat.

In this encounter S/Shri Satyajit Kandankel, Sub Inspector and Niranjan Sarangi, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/09/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 117 –Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Odisha Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Akhileshvar Singh,
   Superintendent of Police
2. Satya Sundar Behera,
   Havildar
3. Siva Sankar Nayak,
   Constable
4. Manoj Kumar Parida,
   Constable
5. Pabitra Mohan Nayak,
   Constable

6. Motisingh Nayak,
Constable

7. Tribijay Khara,
Constable

8. Sanat Kumar Patra,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Acting on an intelligence input regarding naxal were camping in Silakota forest area, an operation was launched on 13/9/2013 in Silakota forest area of Malkangiri district. Shri Akhileshvar Singh, SP Malkangiri led the operational party consisting of 44 Police personnel which also included 16 SOG Commandos and 27 DVF Commandos. The party after being dropped at 2230 hrs on 13.09.2013, continuously marched cross country. Next morning at about 0515 hrs in the jungle area the party noticed some persons at a distance .Careful observation by Binocular and NVD revealed that it is a probable naxal camp as there were armed persons and some of them were also spotted in naxal uniform. Two sentries also came in the sight who were guarding the camp area. Besides, three pitched polythene tents were also located. Shri Akhileshvar Singh, SP Malkangiri after assessing the situation stealthily marched the party forward taking cover of thick vegetation. The party reached nearly 75 meters short of the camp. Naxals were assessed to be 35-40 in numbers. As per order of S.P. Malkangiri the total strength of DVF and SOG were divided into four groups comprising 16 commandoes from SOG (Group-1), 9 (Group-2) 9 (Group-3)and 10 (9+1) (Group-4) commandoes respectively. The groups consisting 16,9 and 9 Commandoes were sent to three strategic points to act as cut off party and the group consisting 9 commandoes was led by S.P. Malkangiri which act as assault team. Thereafter the suspected naxals were asked in high pitch of tone to surrender but in vain. Again, they were told to surrender but this time naxals started indiscriminate firing aiming towards police party. Police party No. 3 was in cover but to negotiate the naxals one has to come above surface. SP, MGK rose to the occasion and he alongwith Hav Satya Sundar Behera, CT Siva Sankar Nayak,CT Manoj Kumar Parida,CT Moti Singh Nayak, CT Pabitra Mohan Nayak, CT Sanat Kumar Patra and CT Tribijay Khara formed assault group and crawled 15 meters to the right to take covered position, though in the process any one of them would have been martyred being exposed. But firing at ultras from covered position did not yield result, therefore SP MKG along with CT Siva Sankar Nayak,CT Pabitra Mohan Nayak & CT Sanat Kumar Patra came in open for few seconds and assault the naxals causing fatal injury to 2-3 naxals. But other ultras reinforce and naxal group and opened heavy volume of fire at police party besides hurling two grenades. Even though the grenades missed target but still seven of police personnel sustained superficial splinter injury. Being in advantageous position, there were every chances of naxals being successful and moreover they also outnumbered assault group. Any inaction at this moment may have proved fatal to police team. S.P. Malkangiri, therefore bifurcated the assault group. He alongwith CT Siva Sankar Nayak, CT Pabitra Mohan Nayak and CT Sanat Kumar Patra moved 10 mtrs to the right. Further Shri Akhileshvar Singh, SP, Malkangiri came in open to assault the naxals, but found two naxals in front who also fired at him. He immediately jumped to his right to take safer position behind a tree whereas the other three Commandos reverted back. For one minute or so fire continued between SP, Malkangiri and the two naxals. Then there was a pause. Using the opportunity he came in open half stood and before naxals could have fired at him, he gunned down both naxals in blink of seconds . At the same time the other three personnel of his assault sub group rejoin him and thereafter they started firing on the ultras though they were exposed in doing so. Naxals again suffered causality by this action. In the meantime the other assault sub group consisting of Hav. S.S Behera , CT Manoj Kumar Parida, CT Motisingh Nayak & CT Tribijay Khara also came in open and sprayed bullets on the ultras causing fatal bullet injuries to the ultras . Though naxals also retaliate but fortunately both assault sub group personnel remained safe. This very action perplexed the ultras and they tried to escape from the right flank but came across police party two. Though ultras fired heavily but were given befitting reply by police party no. two and resultantly the naxals were left dumbfounded. They had no option but to revert back. By now both assault sub group had combined and they fired heavily on the naxals. The ultras were perplexed and they started running here and there to find escape route. The assault group started chasing the escaping ultras under direction of SP,MKG though they also faced fire from the other side. There was every possibility of suffering causality. However not only brave men of police party gunned down naxals but also survive their life. In the process some naxals managed to escape taking cover of thick vegetation. The exchange of fire took place for 30 minutes. After waiting for some time, police party searched the area and found 13 dead bodies of the naxals along with their weapon which also includes one Lady Naxal. After the operation , all seven injured personnel were medically examined at District hospital ,MKG. Doctor found the injury superficial in relation of all and discharged them after giving first aid treatment . huge quantity of arms and ammunitions ere recivered during this encounter.

Individual role of Shri Akhilesvar Singh, SP

He played key role in this encounter of naxals. He developed the information and also led the police party on battle ground. Whenever situation wanted, he led from the front without caring for his life, setting personal example for others. The heavy success in this operation can be contributed to his great command and control. He made crucial instant decisions in the operation and volunteered himself for risky tasks, which also motivated others. At one stage in the operation, naxals may have overrun police assault group. At that moment, any wrong decision could have proved lethal to police party. However,

Shri Akhileshvar Singh, SP, Malkangiri rose to the occasion & ordered the assault party to start fire and single handedly gunned down two naxals, though in the process he would have been martyred. Even after that, he alongwith three constables charged the naxals by coming in open, though badly exposed putting his life on stake. Rather he has jeopardized his life multiple times during the operation. He alongwith his party even chased and gunned down the escaping naxals though he could have been hit by bullets fired by the ultras. His effort did not go in vain and police were able to reap rich dividend by killing 13 naxals which created a history in Odisha Police. This operation will be a milestone in coming years and the way Shri Akhileshvar Singh, SP, Malkangiri led operation to success under constant threat to his life is exemplary.

The evident conspicuous act of gallantry of Shri Akhileshvar Singh, SP Malkangiri is a major factor for heavy success in the operation.

Individual role of CTs Siva Sankar Nayak, Pabitra Mohan Nayak & Sanat Kumar Patra

Even though they were well aware of the risk factor, still they volunteered to be part of the assault group. They were the persons who alongwith SP MKG firstly sprayed bullets on the naxals by coming in open but this act also makes them vulnerable to firing of naxals. Though they sustained superficial splinter injury in the operation but that could not deter them. In the furtherance of operation, again they alongwith SP MKG fired on the ultras by coming in open. Naxals do suffer causality by this action even though it happened at risk of their lives. Further they alongwith others not only chased escaping naxals but also gunned down the ultras. While chasing the ultras there were every chances of them falling prey to firing from the other side but still they carried out the task successfully.

Individual role of Hav. S.S Behera

He assisted the operational leader quite well and willfully became part of the assault group though he knew that his life would be at stake for that. While crawling alongwith assault group in the midst of firing, he could have been martyred being exposed . In the furtherance of operation, though he sustained superficial splinter injury but still carried out the orders. When SP,MKG alongwith his assault sub group fired at the naxals , he too rose to the occasion and led the other assault sub group to fire at ultras from the other side though in the process he has endangered his life by coming in open . He was also a part of that party which chased the escaping ultras amidst firing. It was indeed a gallant action because bullets fired by the naxals might have targeted him but he followed the order unhesitatingly and police party was able to cause causalities to the Naxals.

Individual role of CTs Manoj Kumar Parida, Motisingh Nayak & Tribijay Khara

They were also part of the assault group. While crawling with assault they may have been martyred if detected by the ultras. Though they also sustained superficial splinter injury in the operation but even then they carried out the order. When SP, MKG along with his assault sub group fired at the naxals they too under command of Hav S.S Behera assault naxals from the other side . While doing so they have to come in open which exposed them badly making them a vulnerable target. They alongwith others also chased the retreating naxals and also gunned down them even though they did it at cost of their lives. But the gamble was paid off as the operation ended up in heavy success.

In this encounter S/Shri Akhileshvar Singh, Superintendent of Police, Satya Sundar Behera, Havildar, Siva Sankar Nayak, Constable, Manoj Kumar Parida, Constable, Pabitra Mohan Nayak, Constable, Motisingh Nayak, Constable, Tibijay Khara, Constable and Sanat Kumar Patra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/09/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 118–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Tamilnadu Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri S. Lakshmanan,
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri S. Lakshmanan and Shri P.Ravindran, Inspector of Police, Operations, Special Division, SB CID, Chennai, Tamil Nadu were assigned a very important task of tracking and securing dreaded muslim extremists Fakruddin @ Fakruddin Ali Ahamed, Bilal Malik, Panna Ismail (Jihadi idelogists) wanted in several cases including planting of pipe bomb on L.K.Advani's Rath Yatra route, murder of S.Vellaiappan, Hindu Munnani State Secretary, Auditor V. Ramesh, BJP State General Secretary and Bengaluru bomb blast. Timely intelligence coupled with agile and coordinated action taken by the said two Inspectors of Police, risking their life, lead to the arrest of Fakruddin Ali Ahamed at Chennai, Tamil Nadu on 04.10.2013. Fakruddin Ali Ahamed was conducting recce to eliminate a Hindu organization leader at Chennai during the

annual 'Tirupati Temple Thirukudai' procession. During his arrest, both the Inspectors were able to contain the stiff physical resistance posed by Fakruddin Ali Ahamed. The timely arrest of Fakruddin Ali Ahamed had prevented a break out of a major communal dishormony in the State. Due to unrelenting interrogation of Fakruddin Ali Ahamed, the team was able to gather information on the whereabouts of his associates Bilal Malik and Panna Ismail.

The team including Shri S.Lakshmanan, Inspector of Police went to the hideout of Bilal Malik and Panna Ismail at Puttur, Andhra Pradesh State in the wee hours on 05.10.2013 to nab them. They identified their hide out and surrounded their house at Muslim Street, Puttur. When the door was knocked by Inspector Shri S.Lakshmanan, posing as milkman, Bilal Malik opened the door. When Shri S.Lakshmanan tried to secure him, Bilal Malik and Panna Ismail dragged Shri S.Lakshmanan, inside their house, closed the door and started assaulting Shri S.Lakshmanan, with knife and sickle with a view to kill him. Lakshmanan resisted their assault. In the mean time, other police personnel made a valiant attempt to rescue Shri S.Lakshmanan, and secure the accused. Karthikeyan, Deputy Superintendent of Police, SID, CBCID opened one round fire from his service weapon on Panna Ismail in order to save Tr.S.Lakshmanan, wounded Pana Ismail and Bilal Malik took shelter in another room of the house along with Saina Banu, wife of Bilal Malik and their three children, Shri S.Lakshmanan, was taken to a nearby hospital and later, shifted to Chennai, where he underwent treatment for 34 days. He suffered multiple injuries on his head, face and ribs. The brave and exemplary courageous act of Shri S. Lakshmanan, Insp of Police is highly appreciable. Bilal Malik and Panna Ismail surrendered before the police on 05/10/2013 at 4.45PM

Recoveries made :

Explosives substance -7KG, Slurry explosives in 81 pockets-125 grams each, Pipe bombs with explosives - 4, Revolver 01, Pipe Bombs without explosives-2, Country made bomb -1, electrical detonators -106, 9 Volt batteries -7.

In this encounter Shri S. Lakshmanan, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/10/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 119–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttarakhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sunit Negi, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the night of 14.08.2013 around 2200 hrs, one lady named Somya Gautam gave information to Chetak Motor-Cycle mobile-14 that some nuisance is suspected at the residence of Dr. Heena Khare at Santosh Nursing Home. On this information Constable Sunit Negi and Constable Vishal Kannaujia rushed to the spot. The miscreants who were 6 in number got alerted and escaped from the back door of the Nursing Home with the cash and jewellary.

Meanwhile Dr. Heena Khare opened the front door and informed of the Dacoity to the policeman and escaping of the miscreants. Constable Sunit Negi immediately ran towards the escaping miscreants followed by constable Vishal Kannaujia. On chasing the miscreants constable Sunit Negi got hold of one of the six miscreants in the nearby field. On seeing this, rest of the miscreants fired at police party. Constable Sunit Negi despite all the danger, showing outstanding valour snatched the pistol from one of the miscreants. Meanwhile as the clash was going on, other miscreants fired at Constable Sunit Negi injuring him. In retaliation Constable Sunit fired from his service pistol and other Constable also snatched Katta from other miscreants. But other miscreants to save his men from Constable Sunit Negi, fired closely at him on his chest. As soon as other policeman reached on the spot, miscreants escaped under the cover of darkness. Constable Sunit was rushed to the Hospital but declared brought dead.

Constable Sunit Negi conspicuously risked his life and exhibited exemplary devotion to his duty in the entire encounter. The brave action of Constable Sunit Negi won applause from the media and public at large. He has set an example of gallantry and dedication towards his duty.

Recoveries made :

1. One .32 bore CMP with four live cartridge and 01 empty case
2. Country made katta- 01
3. Cash Rs. 19, 500/-

4. Coins of worth Rs. 3000 approx

5. Jewellery

In this encounter (Late) Shri Sunit Negi, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 120–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttarakhand Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Vivek Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24.08.2013, an information was received regarding quarrel at H.No. A-657 GD colony Mayur Vihar, Delhi on which police reached on spot and found that one lady Mrs. Mohi has been murdered there. The house was ransacked. On enquiry with the maid it was revealed that two persons murdered Mrs. Mohi and kidnapped her son Ishu (3 year) and demanded 50 lakhs for the safe release of the child.

Police with the aid of surveillance zeroed the culprits in Haridwar. The Delhi Police Team with SOG Haridwar started a large search operation. On 26.08.2013 at evening a team comprising of SI Arun Sindhu (Delhi Police) and Constable CP Vivek Kumar (SOG Haridwar) located three person with the child at river side. The Kidnapper seeing the police team attacked on the police party with knives injuring SI Sindhu. At this moment, Constable Vivek Kumar to save the life of 3 years child and showing the outstanding valour tried to hold the culprits but one of the kidnappers severely attacked Constable Vivek with knife on his stomach intending to kill. Despite getting seriously injured Constable Vivek Kumar ran towards the second accused and jumped into the river Ganga putting his life in danger and later on Ishu was rescued safely from the kidnappers. The third accused ran away from the spot. The brave act of constable Vivek saved the innocent child.

Constable Vivek Kumar conspicuously risked his life and exhibited exemplary devotion to his duty in the entire operation. The brave action of constable Vivek Kumar won applause from the highest ranks of police of different State & media and also from the public at large. He has set an example of gallantry and dedication towards his duty.

Recoveries made :—

1- 10 Mobile Phones

2- Jewellery

3- Sharp-edge weapons

4- Injection Syringe, chloroform.

In this action Shri Vivek Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 121-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Ashok Kumar Singh,
Inspector

2. Sunil Kumar Tyagi,
Inspector

3. Mahendra Pratap Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Due to continuous sensational murder at district Aligarh for the last many days, under the leadership of Dy.SP STF one STF team had already been working at Aligarh. In the meantime a renowned Dr. Mannan Wasanwala was abducted from the civil line area. Due to his abduction sensation spread in the Aligarh. According to order of higher officials this case was handed over to STF and Aligarh Police. A team was formed under the leadership of Dy. SP and Inspector Shri Sunil Kumar Tyagi alongwith STF staff and 2nd team was formed under the leadership Shri Ashok Kumar Singh, Inspector SOG, Aligarh alongwith local police.

On 1-7-2006 an information received from the informer that kidnapped Dr. Mannan has been kept by the miscreants in the house of Shamsad, situated in mohalla Brahmpuri of Quasba Atroli and they are trying to get a ransom of one crore rupees. Beleiving that this information is to be true, Insp. Sunil Kumar Tyagi and Inspr. Ashok Kumar Singh alongwith all the members and informer proceeded to quasba Atroli. Informer came in from the Chok of Shamshad at about 9-30 PM and pointed out that this is the house in which Dr. Mannan is kept concealed and after saying this informer went from there. Both police party raided the house of Shamshad at once. Two person who were sitting on the roof of house opened fire on the police parties and jumped from the roof and ran away on a motorcycle, firing on the police party. At the same time Inspr. Tyagi told Inspr. Rajesh Dwivedi and other police force to recover Dr. Mannan. The rider of motorcycle continuously firing on the police party, but all the police personnel were continuously chasing the miscreants. Both the miscreants layed their motorcycle near the lane of Mandir wali lane which was going towards the Ramghat Road and both the miscreants hide themselves in Pits situated near the lane and opened fire on the police personnel. All the police personnel when noticed that all may be killed, they left the vehicles and hide in the pits situated near the lane & vehicle. Inspr. Tyagi and Inspr. Ashok Kr. Singh shouted and gave them identity and warned them to surrender themselves before the police force, but both the miscreants opened fire again with the intention to kill. The police party when felt that police forces may be killed from the firing of miscreants, Inspr. Tyagi and Inspr. Ashok alongwith Const. Mahendra Pratap Singh & force retaliated firing in self defence. In this fierce and face to face encounter one miscreant shouted that I got a bullet injury and told the second miscreant to ran away from the spot. SI Vinod Kumar and Cammando Shiv Kumar chased them. It was about 10 PM when the police personnel did not hear the noise of firing, they reached near the place from where the miscreants were firing. They noticed that one miscreant was lying dead and a pistol was also lying near the right hand of the miscreant.

Recovery made :—

1-One pistol with magazine and 01 live cartridge of .32 bore.

In this encounter S/Shri Ashok Kumar Singh, Inspector, Sunil Kumar Tyagi, Inspector and Mahendra Pratap Singh, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/07/2006.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 122–Pres/2014—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttar Pradesh Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Dr. G.K. Goswamy,
Senior Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 23/10/2002 Dr. G.K. Goswamy, Senior Superintendant of Police Etawah received an information that criminals have gunned down one accused under trial and injured several persons including policemen in court campus. Dr. G.K. Goswamy instructed his subordinates to mobilize Nakas and start vehicle search and rushed himself to nab these dreaded criminals. Near Kali Vahan Temple, police party lead by Dr. Goswamy tried to stop the suspected vehicle but criminals started firing on police party and tried to escape into the thick Bihad (ravine of chambal). As public had gathered at the site, firing by the police may have resulted into casualty of innocent people. In such adverse situation, Dr. Goswamy challenged them and exhibiting exemplary leadership, courage and without caring for his life succeeded in nabbing five criminals with pistol/revolver in their possession. Interrogation revealed that it was a contract killing and they were active members of internationally wanted and notorious Chhota Rajan Gang. Among them Katab Rajan was wanted by Mumbai police since 1989 and was declared absconding since 1996. Thus police team led by Dr. G.K. Goswamy displayed exemplary courage and leadership of highest order in this remarkably successful operation.

Recovery :

1- One pistol with magazine, 02 live cartridges of .455 bore.

2- One pistol with magazine, 08 live cartridges of 32 bore.

3- One revolver, 06 live cartridges of .38 bore.

4- One pistol factory made of .32 bore.

5- 05 empty shells.

In this encounter Dr. G.K. Goswamy, Senior Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/10/2002.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 123–Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of West Bengal Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Alok Rajoria,
Addl. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24.11.2011 Shri Alok Rajoria, IPS, Addl SP(Operation) along with Shri Praveen Kr. Tripathi IPS SP Midnapore, Jhargram having received the movement of a top Polit Bureau Member of CPI(Maoiost) and his guerrilla team in an around Khushbani Jungle area under Jambani PS by Skilful use of sources and combining various pieces of information, recced their hideout. During recce, they taking great risk to their lives, traversed heavily mined jungle area which was completely dominated by armed maoist groups.

After recceing the area, he under the leadership of Shri Vineet Kumar Goyel, IPS, DIG Midnapore Range, took a leading role in planning an operation. After planning, the joint forces were briefed by Vineet Kumar Goyel.

Following the dropping of parties at their respective location, at around 16:30 hrs, when the assault team led by Alok Rajoria was nearing the targeted hideout, 12-15 armed cadres started indiscriminate firing and hurled grenades. At this Alok Rajoria IPS and members of his assault team- CT Tapas Ghosh of DAP Jhargram AC Nagendra Singh, AC Binoj P Joseph, CT/GD S. Sreenu, CT/GD S. Mathubela, CT/GD Birendra Kumar Singh CT/GD Deepak Kumar all of 207 COBRA Bn- putting their lives at high risk showing extra ordinary courage and gallant and adopting fire & move tactics advanced and fired amidst bullets & grenade splinters sprayed by armed cadres. Alok Rajoria showing extraordinary gallant and leadership, besides firing, kept on coordinating the movement of his team in its advance with a view to avoid any casualty to police side despite the fact that the Maoists were resorting to heavy firing. The firing continued for about half an hour. During the exchange of fire and explosion of grenades, Nagendra Singh got splinter injury in his right hand.

Unable to deter the advancing troops, the Maoists fled from area taking advantage of thick vegetation and ensuring darkness. During search of the area following firing for half an hour, one dead body with AK-47 in his hand (later on identified as a Kishan jee, a top Polit Bureau member of CPI (Maoist)) was found lying on the ground. During further search, one AKM rifle, a bag containing cash, Maoist literature, hard discs and other material were also found nearby.

In the entire operation, despite heavy firing from the hard core Maoists, and a very high probability of peril to life, Alok Rajoria along with his small assault team exhibited exemplary courage, devotion, skill towards carrying out their assigned duties, effective command/control over the force under his command, and control over nerve in life-threatening circumstances when death was always a whisker away due to the very short distance between the armed cadres and the police teams. He led his small team to almost perfection, and thus set high standards of bravery. At every stage of the operation from collection of intelligence to recceeing the hide out to planning to its successful execution, he led from the front, and put call of his duty before his life, by showing exemplary leadership, valor and commitment to his assigned job, patience, skill, team building, and above all boldness in life threatening circumstances.

Recoveries made :

01.	AK-47 rifle bearing Arsenal No KT-435182	- 01
02.	AK-47 rifle having fixed butt No SAP/8-31, Arsenal No. BE-445317 fitted with sling, loaded with one round 7.62 mm live ammunition in chamber and one round 7.62 mm live ammunition in magazine	- 01

03.	Small black coloured multi pockets chain fitted rexin bag (containing hard disc, Pen drive and Maoist literatures).	- 01
04.	Motorola wireless hand set	- 01
05.	Hard Disc store jet 500 GB in damaged condition	- 01
06.	Hard Disc Seagate 320 GB in damaged condition	- 01
07.	CD in broken condition	- 01
08.	Pencil torch light (black colour)	- 01
09.	Samsung Mobile Phone (black colour)	- 01
10.	Nokia mobile phone (black colour)	- 01
11.	USB cord in a plastic pocket	- 01
12.	Data card	- 04
13.	Mobile chips	- 14
14.	Reliance mobile sim card	- 01
15.	BSNL mobile sim card	- 01
16.	4 GB data traveler pen drive	- 01
17.	Card reader Zembonic	- 01
18.	Plastic pocked containing phulthrough, oil bottle, cotton pieces.	- 01
19.	Cash Rs. 84535 of various denomination	
20.	Empty cartridges of 7.62 mm	- 02
21.	Hearing aid machine of Novax with cord	- 01
22.	Samsung mobile battery bearing No AB-553446BU with stain of blood and other daily use utensils/material	- 01

In this encounter Shri Alok Rajoria, Addl. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24/11/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 124–Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Gourav Godbole, Inspector	(PPMG)
2.	Sunil Kumar T.P. Head Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 26th August, 2013, a party consisting of 03 subordinate officers and 15 other ranks left from THQ Balimela for Battalion Headquarter, Gandhinagar (Gujarat) in three vehicles (5 ton-02 and TATA 709-01) carrying arms, ammunition, explosives and other miscellaneous stores.

On 27th August, 2013, after overnight halt at Sector Tactical Headquarter, Korapur, Party under command of Inspector Gourav Godbole further moved towards Vishakhapatnam by NH-26. At about 0915 hrs, while vehicles were passing over a culvert approximately 6 kms ahead of Pottangi, last vehicle (5 ton) came under a severe blast. The Maoists had detonated a powerful Improvised Explosive Device followed by heavy volume of fire. The intensity of blast was so high that

vehicle was blown up 40 feet in the air, simultaneously, 60-70 Maoists, who had laid a deliberate ambush with adequate planning, opened heavy volume of fire on the BSF team from the hillocks.

Inspector Gourav Godbole, who was sitting on the co-driver seat in the middle vehicle, was hit by a bullet which pierced through left lower back of his body. Despite being grievously injured, displaying strong determination and gut, Inspector Gourav Godbole took charge of situation and retaliated the Naxals fire and simultaneously directed to shift the vehicles to safer place. Accordingly, first and second vehicles were shifted 200 mtr ahead from the site. However, the position of second vehicle was such that the bullets being showered by the Maoists were hitting the vehicle from left and rear side. The troops jumped out from vehicle and tried to evacuate Inspector Gourav Godbole to nearby hospital, but he refused to leave the troops under such crucial circumstances. He even refused to take first aid as Naxals were re-grouping at the hill top to attack BSF party and this point of time he has to lead the troops to repulse the attack of Naxals without wasting time. With disregard to his injury and in the face of fierce attack by the Naxals, Inspector Gourav Godgole deputed a team to occupy dominating position in adjacent hillock to give cover fire to the party of second vehicle to extricate injured personnel of last vehicle.

Amidst heavy fire and unmindful of his own life, Head Constable Sunil Kumar T P, who was in the rescue team, without caring for his personal life rushed towards the wreckage of vehicle lying on one side of the road. He saw that BSF personnel sitting in the vehicle were lying all around. The Naxals were firing indiscriminately towards the vehicle. HC Sunil Kumar T P, engaged the Naxals by firing and reached near the wreckage of vehicle and observed that two Jawans were seriously injured and trapped under the debris of vehicle. He helped them to come out from the debris and shifted them to safer place inspite of heavy volume of fire from naxals.

In the meantime, a group of Naxals firing heavily attempted to advance towards the damaged vehicle with the aim to loot weapons & ammunition and kill the injured Jawans. Inspector Gourav Godbole kept motivating his section to continue the fight and mount more pressure on Naxals with fire. Their exemplary courage and remarkable fire discipline yielded result and the Naxals ultimately fled for their lives.

BSF Party in above operation has displayed exemplary professionalism, grit and bravery by beating back a well-conceived deliberate ambush by numerically superior hardcore Naxalites cadres. Inspector Gourav Godbole and HC Sunil Kumar T P have displayed dauntless courage, camaraderie and selfless zeal in said encounter thus saving lives of injured personnel as well as preventing Arms & Ammunition from getting looted.

Recovery :

Cordex (red colour- approx 23 feet, detonator-01 and gelatin stick 01).

In this encounter S/Shri Gourav Godbole, Inspector and Sunil Kumar T.P., Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 125-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Mohd Sazid Khan,
   Dy. Commandant

2. Netra Prasad.
   Constable

3. Hazi Malang,
   Constbale

Statement of service for which the decoration has been awarded

127 Battalion BSF is deployed in Pakhanjure (Chhattisgarh), which is a hyper sensitive Naxals` infested area of the country. The area of responsibility of the Battalion is hilly with thick jungles. The general area is interspersed with Nullas and water-bodies, which makes the undulated terrain treacherous and difficult. It is an old bastion of Naxals. Being tribal dominated, the Naxals have the support of the locals.

On 19th Jan 2013, on specific information, a party consisting of 20 personnel of 127 Battalion BSF and 20 personnel of Chhattisgarh police left COB Bande at about 0900 hrs for conducting operation in general area of village Tekameta and Bhurbhusi. The operation was led by Sh. Mohd Sazid Khan, DC, Coy Commander, 127 Battalion BSF. On reaching near village Bhurbhusi, at about 1200 hrs, Sh. Mohd Sazid Khan, DC assessing the layout of village and surrounding area divided the party into two groups to cordon the area. Both parties were moving in mutual support with each other. After moving for some distance, the scouts Constable Netra Prasad and CT Haji Malang of BSF party observed some suspicious movement. They intelligently informed Coy Commander, who immediately alerted both the parties and ordered the troops to take position. When Shri Sazid Khan was trying to advance, all of sudden heavy volume of fire came from Naxals positioned under thick vegetation on the nearby Tekri. The alert men of the operation party swiftly positioned themselves and retaliated with effective firing. In the meantime two Naxals were observed running from the nearby Nullah towards Tekri, one of them was firing from 12 bore rifle. The officer after taking stock of the situation, constituted a Sub-group under command of Sub-Inspector Arjesh Kumar Chobey and directed to move tactically towards nearby small Tekri under the covering fire so as to engage Naxals from there. Shri Sazid Khan undeterred by the heavy volume of fire started crawling towards the Naxal`s position along with scouts and HC Rajpoot of Chhattisgarh Police to confirm the presence of Naxals. He opened fire on Naxals from close quarter and successfully neutralized one of the Naxals later on identified as Sumitra, Deputy Commander of Pratap Pur LGS. Meanwhile Sub-Inspector Arjesh Kumar Chobey divulged exact position of the Naxals who were uninterruptedly firing on BSF party. The Coy Commander directed Constable Kishan Kumar to fire one HE bomb on the Naxals` position to break their will and evict them from their positions. The party of Chhattisgarh police was also exchanging fire with Naxals from a distance of 400–500 meters from right side of BSF party.

The Coy Commander ordered Constable Hazi Malang and Constable Netra Prasad to advance towards small rocky feature near the Tekri to assess the situation. In utter disregard to their lives and personal safety Constable Hazi Malang and Constable Netra Prasad surged ahead displaying highest level of skills under cover of LMG fire by exhibiting raw courage and bravery. On seeing the Naxals taking position behind the medium sized rock, they opened fire on the Naxals from close quarter and neutralized one of the Naxals who was later on identified as Sunoti.

The Naxals stopped firing and after getting no reaction from Naxals, Coy Commander sent a small party towards Tekri. The party on reaching at Tekri observed that Naxals had managed to escape towards thick jungle from East side taking advantage of Maize fields and dense growth. On searching of area, party recovered dead bodies of two female Naxals along with arms, ammunition and other materials.

Recoveries Made :—

1.	.303 Rifles	1 No.
2.	12 Bore Rifles	1 No.
3.	Live ammunition .303 Rifle Rounds	16 Nos.
4.	Live ammunition 12 Bore Rifle Rounds	6 Nos.
5.	Live ammunition .315-12 Bore gun Rounds	18 Nos.
6.	EFC AK-47 series	3 Nos
7.	EFC 7.62 mm SLR	1 No.
8.	Naxals uniforms	2 Sets
9.	Magazine pouch	2 Nos.
10.	10. Pull through	2 Nos.

In this encounter S/Shri Mohd Sazid Khan, Dy. Commandant, Netra Prasad, Constable and Hazi Malang, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/01/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 126–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sunil Dubey,
Assistant Commandant

2. M. Ram Krishna,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31st Dec, 2013 at about 2025 hrs, on specific information about movement of armed Maoists in western side of hamlet Sapagandha, a party consisting of 2 officers, 2 Subordinate Officers and 12 Other Ranks (including 1 SPO of Odisha Police) left for a special operation on 8 motor cycles. At about 2120 hrs, special operation party reached at Village-Sapagandha and carried out cordon and search operation but nothing suspicious could be found in the village. Having found no trace of Maoists in Village Sapagandha, the party decided to return back to Company Operative Base (COB) Ramagiri.

The operation party was divided in two groups. First group of 3 motorcycles was led by Shri Sunil Dubey, AC/Coy Comdr and Second group of 5 motorcycles followed the first group keeping a distance of about 150 meters. In first group, Constable PP Biswal was driving 1st motor cycle and Sub Inspector Vinod Kumar was sitting as pillion. 2nd motor cycle was driven by Shri Sunil Dubey, Assistant Commandant and Constable M Ramakrishna was sitting as pillion and 3rd motorcycle was driven by Constable Mileshwar Kumar and SPO Biswanath Muduli was sitting as pillion.

At about 2210 hrs, the leading group reached near village Biriguda. When first motorcycle crossed 2-3 houses and second motorcycle was just entering the village, all of sudden a Naxal appeared before second motorcycle and opened indiscriminate fire on Shri Sunil Dubey, Assistant Commandant and Constable M Ramakrishna. They swiftly jumped from running motorcycle, positioned themselves and effectively retaliated the Naxal's fire. Constable M Ramakrishna was hit by a bullet on the right heel and Shri Sunil Dubey, AC got injury in his left ankle joint and left shoulder. At this point of time, number of Naxals (approximately 50) who positioned in five surrounding places opened heavy volume of fire on them from different weapons. Assessing the ground situation, they quickly changed their position by crawling/rolling and positioned themselves behind a log in the nearby field and retaliated with effective fire. They kept on changing their positions employing fire and move tactics till they reached a ditch approximately 100 mtr away from the site, where personnel of first and third motorcycle had also joined them and opened effective fire on Naxals. Amidst heavy fire and unmindful of his own life, Shri Sunil Dubey, AC led his troops from the front. He held his nerves and ensured that the troops are not only able to retaliate the attack but also inflict injuries on these Naxals. In the meantime, Constable Mileshwar Kumar member of second group fired two rounds of UBGL followed by 2 HE bombs by Lance Naik R X Lakara in support of trapped party. This created havoc amongst the well-entrenched Naxals and made them run for their lives.

During search of the area, pool of blood was noticed near the incident site and 1 INSAS rifle was also recovered, which implied that a member of Naxals group was fatally injured. Reliable inputs reveal that two militia cadres were injured during above operation who had later succumbed to their injuries.

Shri Sunil Dubey, AC and Constable M Ramakrishna have displayed dauntless courage in said encounter without caring for their injuries, which compelled Naxals to withdraw besides no loss of life to own party.

In this encounter S/Shri Sunil Dubey, Assistant Commandant and M. Ram Krishna, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/12/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 127–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Industrial Security Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Ashok Kumar Rai,
Inspector

2. Jang Bahadur Yadav,
Sub Inspector

3. Uttam Basumatary,
Constable

4. Kulodhar Das,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the night of 04/05.03.2012 at about 2330 hrs, a group of approx 100 armed Naxalites/CPI (Moist) attacked CISF Ashoka Outpost of Central Coalfields Limited, Piparwar. The Maoists surrounded the outpost from three sides and threatened

CISF personnel of dire consequences if they don't surrender. They warned the CISF personnel not to fire and handover their weapons. CISF personnel headed by Camp Commander also issued retaliatory warning to the Naxals not to come closer to the camp/outpost.

All of a sudden, Naxalites started heavy firing virtually from all directions on CISF Camp. All CISF personnel on duty and off duty at the outpost took their respective positions and opened retaliatory fire on Naxalites. The heavy exchange of fire between the Naxals and CISF personnel continued for more than four hours upto 0430 hrs. Due to strong retaliation by the CISF personnel throughout the night, Naxals could not penetrate into the CISF Camp. The Naxal attempt was completely foiled by spirited resistance by the CISF personnel and the Naxals could not succeed in their ill-designs of looting the sophisticated weapons and causing massive casualty to the Force personnel.

The information about this attack at Ashoka Outpost was passed on to Inspector/Exe A K Rai (in-charge of nearby Bachra Camp of CISF). Without any loss of time, he moved towards the Ashoka Camp with reinforcement of 15 personnel and QRT. Taking grave risk to their lives, this party managed to reach to close proximity of Ashoka Outpost and took firing positions. They evacuated the CCL employees from Pit Office area and engaged the Naxals in firing, resulting which the Naxals could not enter the residential and office area of CCL. The opening of fire by this reinforcement party confused the Naxals who were ultimately forced to retreat.

A total 521 rounds of various calibers were fired by CISF contingent during the entire operation. During the subsequent joint combing operation of CISF and local police, dead bodies of two Naxals, along with two weapons, ammunitions and hand grenades were recovered. CISF party not only saved themselves and their weapons but was also successful in saving the lives of many civilians, CCL employees and property of the undertaking. This brave and gallant act by CISF earned laurels from one and all.

In the incident, following CISF personnel were involved actively :—

(a) A K Rai, Inspector :—On 04.03.2012 he was in-charge QRT at Bachra Post. On being informed about the Naxal attack, he reacted promptly and coordinated with Ashoka Post Commander. He briefed the Camp Commander Security and himself tactically led the QRT towards Piparwar parking area (very close to Ashoka Camp). Further, he along with his reinforcement party moved towards Pit Office and took position very close to the Ashoka Camp. He led the team in evacuating the CCL employees from Pit Office. Naxalites resorted to fire which was retaliated by him and the reinforcement party led by him.

Inspector A K Rai was in constant touch with the outpost Commander. He gave cover fire to Constable Praveen P V. who had sustained bullet injury on his leg. He evacuated the Constable and sent him to CCL Hospital, Bachra, Simultaneously, he made all efforts to keep the morale of outpost personnel up. Due to effective and strategic retaliation by CISF, no casualty reported from CISF side, and operation was a grand success.

(b) J B Yadav, Sub Inspector :—On 04.03.2012 while detailed as Post Commander at the said outpost, reacted promptly and properly briefed all the personnel under him. He challenged the Naxalites and immediately took tactically positions along with his men and retaliated in befitting manner. SI J B Yadav took command of the situation and ensured proper coordination between two sub Posts. The naxalites resorted to fire from three sides and the CISF Posts came under heavy fire. SI J B Yadav gave specific directions to his men to retaliate the naxalite attack by way of controlled fire.

Other important tactical decision taken by SI J B Yadav was to fire at a source of light which was outside CISF camp and was illuminating the CISF camp. SI Yadav remained in full control of the situation which lasted for more than four and half hours and exhibited extra-ordinary skills as a tactical commander. He kept on changing the personnel at LMG post which was at the rooftop and facing maximum risk. Due to this decision, the LMG post inflicted maximum damage to the Naxalites. He made all efforts to keep the morale of his personnel up. Due to effective and strategic retaliation by CISF under his command, the Naxalites could not succeed in their design and they suffered to casualties.

(c) CT Uttam Basumatary and Ct Kulodhar Das :—On 04.03.2012 they were detailed at the rooftop morcha. On noticing the advance of Naxalites towards the outpost, they raised alarm and alerted all the personnel deployed at the other posts. They challenged the Naxalites and immediately took tactical position and opened retaliatory fire. They properly coordinated with Post Commander and other personnel. The naxalites also resorted to heavy firing from three sides. They retaliated in such a befitting manner, causing maximum damage to the Naxals which was evident from marks of body pulling and blood stains at the surrounding area. The two Constables were very successful in inflicting maximum damage to the Naxals during the attack.

In this encounter S/Shri Ashok Kumar Rai, Inspector, Jang Bahadur Yadav, Sub Inspector, Uttam Basumatary, Constable and Kulodhar Das, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/03/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 128–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sunny Slathia, (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

A special operation was planned under command of Commandant-168 Bn along with a team of 208 COBRA in which cordon and search of village Koragutta under PS Pamed in Bijapur District of Chhatisgarh was to be carried out. The operation was to be launched on 19/04/2013 at 1700 hours from the Base Camp at Basaguda. The troops from different locations were required to converge at the base camp. Accordingly, Commandant 168 Bn CRPF along with his escort moved in three vehicles from his Battalion Headquarter at Bijapur on 19/4/2013. As per tactics adopted the troops moved in civil pattern vehicles and maintained a gap of around 10 minutes amongst them. CT/GD Sunny Slathia was also a member of Commandant`s escort and was sitting in the second vehicle. Being a sharp observer and a good firer, he was tasked to observe the road in front and the jungle to his left and accordingly he sat on the co-driver seat. At about 1230 hours, as the second vehicle was about 2 KMs short of CRPF camp at Murdanda, CT/GD Sunny Slathia observed the presence of two suspicious persons on the road. He immediately ordered the driver to halt the vehicle. As the vehicle stopped and CT/GD Sunny Slathia de-boarded it, the two persons ran towards the jungle but the weapon of one of the persons could not evade the sharp eyes of CT/GD Sunny Slathia. He immediately informed this to other troops and ran after the fleeing naxals for apprehending them. The other troops too followed him. As he reached near the spot from where the naxals had entered the jungle, a group of naxals hiding behind the trees and bushes opened heavy fire on him. Prepared for such a sudden and surprise attack the troops reacted and retaliated with fire towards the direction where Naxals had taken the position. Finding that they outnumbered the troops and were in an advantageous position, the naxals instead of fleeing in the jungles tried to encircle the troops and loot their weapons after killing them.

In the process of engagement CT/GD Sunny Slathia noticed the movement of some naxals towards his right side. It took him no time to understand that the naxals were trying to encircle them and launch a multi-directional attack. To counter-attack and break the plan of attack the naxals were preparing, he crawled to his right under intense fire of naxals and after coming face to face fired at them. This bold and courageous attack resulted in injury to a naxal and their advance was stopped but in this endeavour he himself received grievous bullet injuries in his abdomen and foot. Undeterred by the excruciating pain and oozing blood, he crawled for cover behind a tree and engaged the naxals. Though grievously injured he stopped the advance of naxals, injured one of them and defeated the nefarious plan of naxals. Beaten to dust by the valour and bravery of CT/GD Sunny Slathia, and fear of an impending arrival of reinforcement, the naxals found it safe to flee from the area with their injured cadre. Hearing news of the encounter, two vehicles also reached the spot and CT/GD Sunny Slathia was immediately rushed to the Base Camp Basaguda and further to Government Medical College Jagdalpur by helicopter but despite best treatment given he succumbed to his injuries and became martyr on 20/04/2013. On searching the area it was found that the spot where CT/GD Sunny Slathia had noticed the suspicious movement was freshly dugged and it is suspected that the naxals were planting an IED there.

In the operation Ct/GD Sunny Slathia not only fought gallantly despite the grievous injuries but also saved the lives of many troops and looting of their weapons. His timely noticing the planting of suspected IED has also saved the lives of troops which otherwise would have been in great danger had the naxals successfully planted that IED. The brave trooper laid down his own life in order to save the lives of others. He in his selfless action has shown true chivalry, bravery and spirit of soldier in fighting with naxals and ultimately made the supreme sacrifice at the altar of service of the Nation.

In this encounter (Late) Shri Sunny Slathia, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/04/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 129–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Giresh Halki,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of information regarding presence of a Military Platoon of PLGA in the Village Metapal under Police Station Gangloor, Distt. Bijapur, Chhatishgarh, a cordon and search operation was planned by DIG (OPS) Bijapur. Troops of Special Action Teams and CoBRA of CRPF assembled at the company base of F/85 Bn. at Cherpal and after analyzing the terrain, latest intelligence inputs, chalking out a last minute strategy and proper briefing of the troops involved launched the operation. Troops were divided into three groups to cover the area from three directions leaving no chance for naxals to escape from the area. Taking care of the strong intelligence network of the naxals in the area, teams surreptitiously moved out of the location for the target in the dead of night i.e. at 2300 hrs on 17/2/2013. After walking for about 15 kms during night in a treacherous terrain and successfully duping the alert early warning system of the naxals, teams reached in the vicinity of their target. As per the plan, troops were divided into three groups to launch a three-pronged attack on the naxals. One of the groups was ordered to move stealthily to the hills facing the village and act as cut-off, while other two groups would search the village from two ends. As the cut-off was placed and search parties moved towards the village for starting the search, the naxalites present in the village opened heavy fire on the advancing troops from their automatic weapons. The troops immediately took positions and fired back at the naxals with utmost restraint as there was the possibility of civilian presence in the village. To disarm the naxals who were firing incessantly, the troops using the tactics of battle and field craft advanced towards them. Seeing the advancing troops the naxalites began blasting IEDs planted on the approach routes of the village. The firing and blasts did not deter the advance of the troops and seeing the stiff resistance of the troops, the naxals began fleeing one after another towards the hills. On the other side, on hearing the sound of firing and IED blasts from the village the cut-off group began advancing so as to cover the naxals from back. CT/GD Giresh Halki of 199 Bn was the scout of the group and was leading other troops towards the village. As the group moved further down the hill, they suddenly came across a group of heavily armed naxals hiding in the forest. The naxal group on noticing the troops immediately opened indiscriminate fire. The bullets of the naxals forced the troops to halt their advance. The naxals then tried to escape using the heavy firing cover. But, CT/GD Giresh Halki was in no mood to let naxal escape. He by showing complete disregard to his personnel safety fired at the fleeing insurgents and ran after them braving the heavy fire. His other teammates emulating the raw courage of CT/GD Giresh Halki followed him. He without caring for the fact that his teammates were at a distance from him and could not provide him direct fire support kept chasing the naxals. In the retaliatory firing, he injured a few naxals and slowed the speed of escaping naxals. But, the luck seemed to favour the naxals that day as a group of naxals which had fled from the village also accidently reached at the same route. This group on seeing their partners in danger immediately opened fire at CT/GD Giresh Halki and tried to encircle him. The other naxals on getting the support also began firing at this beleaguered constable. CT/GD Giresh Halki soon found himself encircled by the naxals and his teammates still at a distance, but this valiant trooper did not falter. He crawled his way to a pit amid the flying bullets with some hitting the ground, took his position and began firing grenades from his UBGL at the encircling naxals. The rain of grenades from the UBGL of CT/GD Giresh Halki and the firing of his approaching teammates sagged the morale of the naxals and they began to flee from the spot. By the firing of CT/GD Giresh Halki one of the naxal was severly injured and other naxals were trying to carry him on their back. Seeing this, CT/GD Giresh Halki again came out of his secured position and fired at them, forcing them to run leaving behind this injured cadre. CT/GD Giresh Halki ran towards the fallen naxal and snatched a Bharmar Rifle from his possession. Though first aid was given immediately to the injured naxal, but he breathed his last. One Bharmar Gun and Arrow bomb were recovered from the killed naxalite. Troops further searched the area thoroughly and one Pipe bomb weighing 10 kg was also recovered.

CT/GD Giresh Halki played a vital role in the entire operation and fought valiantly in the face of looming death. During the fierce gun battle, without caring for his life, he dared to mount an assault and was instrumental in neutralizing a naxal. True to the training of an armed trooper he fought with outnumbered naxals with far greater ferocity and anger.

In this encounter Shri Giresh Halki, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17/02/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 130–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Rohit Kumar,
Assistant Commandant

2. Harjinder Singh,
Sub Inspector

3. Vikash Kumar Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An operation was launched from 04-06 February, 2011 in the forest around village Marangburu, under PS Arki, District Khunti, Jharkhand by the troops of CoBRA and State Police on the input that a large group of Naxals led by Kundan Pahan, a state committee member, has established a camp in the area. Three Strike teams were formed to search and attack the camp. Two Strike teams each comprising of CoBRA troops and Jharkhand Jaguars of Jharkhand State Police were assigned the task of search and destroy and one Strike team comprising of CRPF and State Police was given the task of cutting-off the escape routes of Naxals. On 4th Feb the Strike teams were inducted in the operational area in the night and were ordered to move to Marangburu Hill, Sandiri forest and Tampartola base respectively. The Strikes traversing stealthily through thick forest and breaching the outer security ring of Naxals, reached nearer to their targets by 0600 hrs in the morning. Strike 1 and 2 began combing their respective areas in search of a Naxal camp. Strike 1 on reaching the foothills of Marangburu hill bifurcated itself and advanced towards the top from two sides. Team No 12 of 203 CoBRA under the command of Insp Rishi Kesh Meena was moving from right and team No 10 under the command of Shri Rohit Kumar, A/C from left. As the teams were nearing the hilltop, team No 12 came under heavy fire of the Naxals. Team personnel retaliated and engaged the naxals. On hearing the gunshots team no. 10 advanced to cordon the Naxals from left flank. As it advanced further through the thick forest, its members stumbled upon a well established Naxal camp. Shri Rohit Kumar, AC and CT/GD Vikash Kumar who were leading the team found themselves exposed to the direct fire of the Naxals who were behind the secured Morchas and aiming at them. This life threatening situation could have numbed their senses but holding their nerves they ducked down and fired back at the Naxals. The two were lucky that the hail of bullets fired by Naxals just whizzed pass them but three of their teammates got injured. The team-members somehow crawled and reached behind the boulders and trees amid bullets some of which were flying over their body and some landing on the ground. Shri Rohit Kumar,AC alongwith CT/GD Vikash Kumar who were at the lead braving the incessant fire now tried to break the defense of Naxals with the help of their teammates and fired heavily at the entrenched Naxals. A fierce close quarter battle was on wherein the troops were negating the dominated and well secured positions of Naxals by their bravery, grit and determination. As the gun-fight was on, Shri Rohit Kumar, A/C noticed some Naxals advancing from the left flank to encircle the troops and launched a sudden and surprise attack. He immediately ordered CT/GD Chanchal Kumar and others to continue firing towards the camp whereas he and CT/GD Vikash Kumar slithered out of their cover without caring for their personal life and fired heavily at the advancing Naxals. Two of the Naxals got severely injured in this attack and all of them fell back to their respective safer positions. Out of frustration Naxals resorted to heavy fire in which the weapon of CT/GD Chanchal Kumar got hit by a bullet and it stopped firing. Taking the advantage of the situation one Naxal advanced towards CT/GD Chanchal Kumar in order to shoot and loot his weapon but the sharp eyes of Ct/GD Vikash Kumar detected this and fired a single snap shot and killed him on the spot. It demoralized the Naxals and they resorted to lobbing of grenades and country-made bombs. Sensing the battle getting tough Shri Rohit Kumar, AC ordered SI/GD Harjinder Singh to advance till the front line of attack with UBGL and fire heavily with it. SI/GD Harjinder singh crawled his way forward using the limited cover that was available under heavy fire of Naxals and reached as closer to Naxal position as possible. He on reaching nearer to Naxal morchas fired UBGL and lobbed grenades in succession at them. This act of SI/GD Harjinder Singh shattered the morale of Naxals. Their advance line of attack kept firing to delay the advance of CoBRA while others fled from the spot carrying dead bodies and injured personnel with them. When their advance line also couldn't stop the advancing troops they also melted away in the thick forest one by one. After a tough fight with the Naxals the troops were able to break the defense of the camp and overrun it. The CoBRA personnel fought with great skill, exemplary courage and firm determination in countering an ambush placed in the dominated height. Though troops did not recover any dead body but it is confirmed through their document that two Naxals were killed in this encounter. Further analysis revealed that on getting the information of movement of troops the Naxals had vacated the camp and had placed multiple ambushes to inflict heavy casualty on the force personnel. This operation was one of the excellent close-quarter battles of jungle warfare in which the enemy had the advantage of commanding height and solid cover. Yet the team fought with great professional skill, bravery and exemplary courage and gave befitting reply to Naxals.

Recovery :—

1. Bharmar Rifle-01 No.

2. Non-Electric detonator-10 Nos.

3. Cap of HE Bomb-08
4. HE Firing Pin-02 Nos.
5. Empty Cases of different Amns-75 Nos.
6. Battery-05 Nos.
7. Polythene Sheets.
8. Edible items and naxal literatures

In this encounter S/Shri Rohit Kumar, Assistant Commandant, Harjinder Singh, Sub Inspector and Vikash Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/02/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 131–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Vishwa Ranjan,
   Assistant Commandant
2. Ram Bilash,
   Head Constable/Dvr.
3. Sadanand Yadav,
   Head Constable/Dvr.
4. Elangbam Yaima Singh,
   Head Constable
5. Bishnu Padha Jamatia,
   Head Constable
6. Shashindra Kumar Sharma (Posthumously)
   Constable
7. Sailendra Nath Bera,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Chakrabandha forest was considered a safe haven for Naxals due to its strategic location i.e. distance from district headquarter, escape routes to Jharkhand and UP, inaccessible terrain, hilly and dense jungle and poor communication facility clubbed with broken roads. The area was purposefully selected for establishing a base area by Naxals. It was further developed into a bastion covered with heavy planting of anti-personnel and anti-vehicle mines, marking of probable ambush places to trap SFs and placement of sentries on approach routes. The area was occupied by one military company and a platoon under command of Arvindji, a Central Committee Member of CPI (Maoist) duly supported by local guerilla squads. The populaceresiding in the area were forced to support them and participate in activities of sabotage and destruction. In this backdrop and knowing all the impediments in their way troops of 47, 159, 205, 215 CRPF, STF and Civil Police planned to launch an operation and strike at their Base. After due planning, preparation and considering all such factors in mind troops entered the Chakrabandha forest on 10/06/2012. They began combing and clearing the forest area and securing the mined routes. At about 0600 hrs when the strike-1 of 159 Bn. was securing the route in the midst of jungle and hills (about two kms short of village-Baltharwa) the front party came under heavy fire from an ambush laid by the Naxals on a stretch of 1-1 ½ kms. They blasted more than 85 IEDs planted in series on the road and rained heavy fire on the troops from their sophisticated weapons. In just a few seconds the calm jungle turned into a battlefield full of deafening sounds of IED blasts and deaths flying all around in the shape of bullets. Facing volley of bullets and IED explosions the brave troops immediately took tactical position and retaliated effectively, challenging the Naxals. A bullet proof bunker carrying HC/GD E Yaima Singh, HC/GD B P Jamatia, CT/GD Shashindra Kumar Sharma and others got trapped in the ambush due to series of land mine blast. The above three did not panic but tried to turn their tactically disadvantageous position in their favour. First they placed the bunker between naxals and injured troops which acted as a barrier and then took advantage of the height gained by the bunker and effectively fired on the Naxals. This defeated the Naxal aim of inflicting heavy casualty on Security Forces.

The effective fire from the bunker infuriated the Naxals and the bunker became their prime target. Out of frustration they began firing heavily on the Bunker from their automatic weapons. The volume of fire was such that the bullets started entering the firing slots of B.P bunker. But this could not deter the courageous troops inside the bunker who kept firing on Naxal positions. One Naxal bullet hit CT/GD Shashindra Kumar Sharma. Despite severe injury this brave heart continued firing and inflicting heavy damage on Naxals. He achieved martyrdom while fighting with Naxals in the battlefield.

Shri Vishwa Ranjan AC who was the commander of this strike team was out of the ambush zone. On seeing his troops and bunker trapped in the ambush and facing incessant fire of the Naxals, he alongwith CT/Dvr Rambilash, CT/GD S N Bera and 03 others embarked on another Bunker and stormed it into the ambush zone in support of his troops. This act of the commander may have been against the ground rule in general course but his act of bravery, courage, professionalism and dedication towards his troops and duty took Naxals by surprise. The fire support from the commander and his small team using UBGL infused new life into the trapped troops and together they forced the Naxals to retreat.

Following the courage of his commander HC/Dvr Sadanand Yadav who was driving a MPV also stormed his vehicle in the midst of the heavy firing and started covering the injured and trapped personnel from the direct fire of Naxals. Not caring for his life one by one he picked 2 injured and other trapped personnel from the Ambush zone and brought them to a safer place. He further moved towards Imamganj for providing treatment to the injured personnel. This vehicle again came under a strong IED blast between the hilly road of Sewra and Karmasthan, approx. 7-8 kms from the ambush area, blowing up of MPV vehicle for about 10 feet in air. But HC/Dvr Sadanand Yadav kept his control on vehicle and ensured safe landing of vehicle on the side of the road. In all HC/Dvr Sadanand Yadav saved 12 precious lives of jawans during the operation.

Later on, during massive search at the incident site two dead bodies of naxals alongwith large quantity of empty cartridges, cordex wire and electric wire used in IED blast by naxals were recovered. They were later identified as Phool Chand Bhunyian and Sukun @ Kailu Bhunyian. One naxal named Samjeet Bhuiyan was also apprehended by the troops.

In the execution of this brave act, the above personnel have displayed conspicuous gallantry, exceptional bravery and unparallel courage under great personal risk against a large number of Naxals in adverse conditions. Their gallant action was largely responsible for an outstanding operational success.

In this encounter S/Shri Vishwa Ranjan, Assistant Commandant, Ram Bilash, Head Constable/Dvr., Sadanand Yadav, Head Constable/Dvr., Elangbam Yaima Singh, Head Constable, Bishnu Padha Jamatia, Head Constable, (Late) Shashindra Kumar Sharma, Constable and Sailendra Nath Bera, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/06/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 132–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Devender Singh Pal,
   Dy. Commandant
2. Mahipal Singh Rawat,
   Sub Inspector
3. Anil Kumar Yadav,
   Sub Inspector
4. Chandan Kumar,
   Constable
5. Biju Kumar Ramchiary,
   Constable
6. Sunil Paswan,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of a reliable information on 12/04/2013 about the location of Sohan-D-Shira (Commander-in-Chief) of GNLA along with ten cadres possessing sophisticated weapons in a hutment deep inside the forest of Nengsat, CoBRA troops along with SWAT team of Meghalaya police launched an operation under command of Devender Singh Pal Dy. Commandant of 210 CoBRA. After briefing at 2300 hrs, the teams left for the operation and reached at the fringe of the

jungle by 0015 hrs. Uphill navigation in a treacherous terrain with enemy located at hilltop during night was a herculean and risky task but nevertheless the teams managed to reach surreptitiously near the hutment by 0430 hrs. Cut-offs of CoBRA teams positioned themselves strategically around the target area and the assault team got ready for final search and assault. Considering the past encounters in which insurgents somehow managed to sneak through the Cordon, Ops Commander Shri Devender Singh Pal, Dy. Comdt. had planned a strong cut-off and decided to command it personally. 8 cut-offs were placed to prevent the escape and after placing them camouflaged and strategically, Shri Devender Singh Pal, DC placed himself with cut-off-No.02 and ordered the Assault Party under command SI/GD M S Rawat to proceed and search the hutment. Assault team approached the probable hideout tactically and ready to face any sudden onslaught of the insurgents. The search was conducted but the insurgents could not be traced. At around 0600 hrs on 13/4/2013, some heavily armed insurgents were noticed coming down from the adjacent hill towards the hutment. They made their way between cut-off 3 and 4, but the cut-offs tactically maintained silence, waited patiently and allowed the insurgents to enter the cordon. The moment insurgents entered the killing zone of cut-off-3 commanded by HC/GD D.L.Meena they were challenged and directed to lay-down their weapons but the insurgents resorted with indiscriminate fire and fled in all directions. Cut-off party-3 also retaliated but with controlled fire as the assault party was also in the same direction. Around six of them ran towards assault party and on seeing the assault party, they fired indiscriminately on them from a close range. A sudden encounter with death in form of charging insurgents and their blazing guns could numb the bravest of soldiers but SI/GD M.S.Rawat, CT/GD Chandan Kumar and CT/GD Biju Ramchary unmindful of their own safety and not caring for the bullets that were missing them by a whisker counter-charged the insurgents exchanging bullet for bullet. This daredevil act intimated the insurgents and they began to move back under support of heavy fire from their guns. The intense fire could not deter the advance of the three brave men and they fired and moved tactically towards the insurgents. The intense battle continued for about 5 minutes after which insurgents made a hasty retreat towards the jungle. Two of the insurgents got hit during the fight but they managed to escape into the jungle.

Some insurgents in a bid to save their lives ran straight towards cut-off-No.2 from where Shri Devender Singh Pal, DC was coordinating the encounter. As the insurgents found themselves cornered they turned into wounded tigers and fired indiscriminately at the troops. The fire was so heavy that it did not let the troops to move and fire back at the insurgents. Shri Devender Singh Pal, DC sensing the danger to his men's lives came out of cover and charged at the insurgents without caring for his life. His aimed and accurate fire resulted in elimination of one insurgent and injuring the other who is stated to have died later-on. This made the insurgents run away towards another direction. In a bid to escape some of the insurgents ran straight into the cut-off party No.6 led by SI/GD Anil Kumar Yadav. Finding themselves challenged by the troops again and their last bid to escape, the insurgents left no stone unturned in breaking the cordon. The heavy fire by regular weapons was supported by area weapons which rocked the whole valley. SI/GD Anil Kumar Yadav and his team braving the onslaught, fired back at the insurgents but the volume of fire meted out by the insurgents was not allowing them to do the aimed fire. Sensing this SI/GD Anil Kumar Yadav ordered his buddy CT/GD Sunil Paswan to follow him and together they surreptitiously slipped out of the fire of insurgents. They crawled for about 50 yards under the fire and blasting of area weapons till they reached to a place from where counter assault could be launched. Further taking advantage of the foliage they managed to reach nearer to the insurgents and hit 3 of them. One of the insurgent died on the spot and the others ran for saving their lives and managed to escape in the thick jungle.

After the firing subsided, the area was thoroughly searched and two dead bodies of GNLA cadre with one AK 56 rifle, one 7.65mm Pistol, four Gelatin sticks, fifty detonators, three wireless sets and many other incriminating items were recovered. Death of four other GNLA cadres was also reported but their dead bodies could not be recovered.

This operation was conducted with greatest military acumen and courage resulting in neutralizing heavily armed and hard core insurgent and would go in the annals of history of insurgency.

In this encounter S/Shri Devender Singh Pal, Dy. Commandant, Mahipal Singh Rawat, Sub Inspector, Anil Kumar Yadav, Sub Inspector, Chandan Kumar, Constable, Biju Kumar Ramchiary, Constable and Sunil Paswan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/04/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 133–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Mahendra Kumar,
Second-In-Command

2. Sinku Sharan Singh,
Assistant Commandant

3. Mohan Singh Bisht,
Sub Inspector

4. Daleep Singh,
Constable

5. Amit Kumar,
Constable

6. Ajeet Kumar Singh,
Constable

7. Navnish Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on specific intelligence about presence of senior Naxal cadres from adjoining States in the heavily mined, forested and hilly area of Chakrabandh in Distt. Gaya &Aurangabad (Bihar) , an operation was planned by Shri Umesh Kumar, IPS, DIG, CRPF, Patna in co-ordination with Commandants of 205 CoBRA, 159, 47 and 153 Bns. As per the Ops plan 205060912215 dated 06/09/2012, 08 teams of 205 CoBRA, 04 teams of 203 CoBRA, 04 Coys of 159 Bn, CRPF, 02 Coys of 47 Bn and 01 each Coy of 153 Bn and 215 Bn, 04 teams of STF along with local police were tasked to conduct search, seek and engage operations in Chakrabandha forest area covering Gaya and Aurangabad District (Bihar) for 04 days wef 07/09/2012 from 0200 hrs. After proper briefing, the overall command of the teams was placed under Shri Mahendra Kumar, 2-I/C of 205 CoBRA.

On the second day of the operation, i.e. on 08/09/2012, starting at about 0600 hrs, when 02 teams of D/205 CoBRA (team No.10 led by Shri Sinku Sharan Singh, AC & Team No. 12 led by 2-I/C Mahendra Kumar Singh under supervision Shri Mahendra Kumar, 2-I/C were approaching the target area at about 1120 hrs. they heard a powerful IED explosion at a distance about 350 mtrs towards Dumri Nala, which was immediately followed by a volley of fire from the Naxals on the troops of these parties. Occupying a high ground, safely entrenched behind high boulders which served as natural and almost impregnable defence, and having mined the area in front of them, the naxals were all set to effectively inflict heavy casualties on the security forces. However, the highly trained and battle hardened troops of the lie CoBRA would not allow the Naxals to have their way.

Leaving the main parties to provide covering fire, Sh. Mahendra Kumar, 2-I/C along with a small group, consisting of Shri Sinku Sharan Singh, Asstt. Comdt. SI/GD Mohan Singh Bisht, CT/GD Amit Kumar, CT/GD Navnish Kumar and CT/GD Ajeet Kumar Singh, advanced tactically by firing on the naxals ignoring the heavily mined field an occupied a higher ground of tremendous tactical importance by repulsing the naxals from that position. Even as the intermittent firing continued for close to 5 hours, this small band of intrepid fighters crawled to close proximity of the naxals on a surface which had no cover from fire, rose to some height and silenced at least two of the naxals who were raining bullets on party/ team by fire first by HE bomb, UBGL shell and Rifle grenade to show proper direction of fire. Thereafter, above team started using UBGL Shells, 51 mm Mortar, HE Bombs and rifle grenade effectively. The sudden heavy frontal attack by troops of Shri Mahendra Kumar, 2-I/C and this small team took naxals by surprise and brought them on back foot. During the entire operation, the Officer and his team members as mentioned above exhibited exemplary courage, bravery and gallant action involving grave personal risk.

Meanwhile, team No.2 under DC Lal and Team No.3 under AC Neeraj Kumar, which had been earlier given orders to effect a flanking movement from the western side of this exchange of fire, moved on the desired path- a bit slowly due to rocky terrain and mined area. Around 1646 hrs, team no.3 (which had been inching forward tactically from the western flank since 1130 hrs) moved further for about 170 meters south east of Dumri Nala when its scouts, CT/GD Bhrigu Nandan Choudhary and CT/GD Daleep Singh came under fire by Naxals and retaliated in self defence, killing one Naxal scout. Now heavy gunfire again started, and these two scouts alongwith CTs/GD Jodh Singh, Aman Kumar, Manoj Kumar, Ranjesh Rai and the Team leader AC Neeraj Kumar pressed forward tactically to engage the Naxals. At this juncture, the naxals triggered an IED blast which caused injuries to CT/GD Bhrigu Nandan Choudhary, CT/GD Daleep Singh, CT/GD Jodh Singh and AC Neeraj Kumar.

Being in the front, CT/GD Bhrigu Nandan Choudhary sustained the most severe wound on both his legs which became completely mutilated. However, this did not deter him from crawling, under excruciating pain, to take a position near a pit, continue shooting at the naxals and in an act of supreme courage, even change the magazine of weapon of CT/GD Daleep Singh which had slipped out of his hand as a result of the IED blast and enable the latter to continue firing at the Naxals. CT/GD Daleep Singh , also after recovering from this initial shock, with an injured hand, started to fire at the Naxals and kept them at bay, without letting them come close to cause injuries to the main party and snatch the weapons. Had it not been for the extraordinary courage of the scouts of team No.3, heavy casualties could have taken place. In continuing to battle the naxals after sustaining IED blasts, CT/GD Daleep Singh displayed death defying valour and courage.

In this operation, to cherish, celebrate and honour them the operation was got success only due to meticulous planning, precise execution, right strategy coupled with exemplary leadership and bravery, extraordinary courage and exceptional gallant exhibited by Sh. Mahendra Kumar, 2-I/C, Sh. Sinku Sharan Singh AC, SI/GD Mohan Singh Bisht, CT/GD Amit Kumar, CT/GD Daleep Singh, CT/GD Navnish Kumar and CT/GD Ajeet Kumar Singh in the face of immense personal risk.

As per intelligence inputs received through various channels and newspapers' reports at least half a dozen hardcore naxalites had been neutralized during these encounters including Arbind Bhuiyan, a Zonal Commander of CPI(Maoist) and dozens others were injured in this gun battle. One suspected naxal who was apprehended by team no.-02 of A/205 CoBRA and handed over to Civil Police was released after preliminary interrogation.

Recoveries Made :—

01. Electric detonator-96 nos.
02. Empty high explosive hand grenade with base plug and spring 15 nos and 03 nos without base plung hand grenade
03. Detonating cord 150 mtr
04. Land mines bomb-65 nos
05. High explosive powder 02 kg
06. Direct current charger-01 no.
07. Tiffin bomb 01 no.
08. Pipe bomb with detonator 01 no.
09. Pipe bomb without detonator-07 nos.
10. Electric wire black 40 mtrs.
11. Ammunition 30-6-6 empty cases- 37 nos.
12. Ammunition 30-0-6 live round 01 no.
13. 7.62 mm charger clip-03 nos
14. 7.62 mm empty case-79 nos
15. 7.62 mm x 39 mm empty case 59 nos.
16. 5.56 mm empty case 19 nos.
17. 7.2 live round 10 nos.
18. 7.2 empty case-07 nos
19. Naxal litreture-02 nos.
20. Medical prescription slip of vasant ji-01 no.
21. Bag-01 no.
22. Polythene sheets 20mtrs
23. Non electric detonator-03 nos.

In this encounter S/Shri Mahendra Kumar, Second-In-Command, Sinku Sharan Singh, Assistant Commandant, Mohan Singh Bisht, Sub Inspector, Daleep Singh, Constable, Amit Kumar, Constable, Ajeet Kumar Singh, Constable and Navnish Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/09/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 134–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Gurucharan Kalindia,
Assistant Commandant

2. Dharmendra Roy,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29/05/2012 at 20:30 hrs Shri Gurucharan Kalindia, AC received input from SP Shivasagar about the presence of ULFA/AT Hard Core Cadres Rupantar Kakoti, Aadhruman Barooah, Fanindra Moran/ Robin Chetia in village Lengibor under PS- Mathurapur. After discussion with Unit Commandant Shri Shailendra, a cordon, search operation was planned on rising present scenario with Team No.10 under command Shri Gurucharan Kalindia, AC on assault mode alongwith Team No. 17 under command Insp/GD Gyasuddin for active operational reinforcement.

On 30/05/2012 teams were divided in small groups and deviated to suspected areas to lay cut offs apart from cordoning it in buddies. Simultaneously, one section under command Shri Gurucharan Kalindia, AC with one section of Assam Police Commandos engaged to search various clusters of houses located sparsely in hilly terrain. As the team under command Shri Gurucharan Kalindia, AC was passing under a high mound, the ULFA group which had taken strategic position on the height suddenly started firing on troops from automatic weapons and which was immediately retaliated by joint teams of CoBRA and Assam Police. Shri Gurucharan Kalindia, (AC) and CT/GD Dharmendra Roy with complete disregard to their personal safety, lead the counter attacks, finally ULFA group gave up and they jumped down the slope of the mound. Shri Gurucharan Kalindia and CT/GD Dharmendra Roy entered in hot pursuit and hit two extremists and in between militants threw two Grenades on CoBRA party but the party led by Shri Gurucharan Kalindia, AC countered to disable them. The cadres badly injured and entered in Nagaland being bordering area and managed to disappear in the full grown vegetation and jungle all around. After that troops tactically searched the area, and recovered 01 No. AK-56 with 01 Magazine and 42 live rounds, 02 hand Grenades, 01 Pistol Magazine, IED -01 No., 10 Nos. Cartridges.

On 01/06/2012, police party succeeded to apprehend one ULFA Cadre namely Hiren Gagoi @ Robin Chetia in badly injured condition from village-Lengibor (Assam Nagaland border) and admitted in hospital and revealed cadre ULFA Hard core Pradeep Gogoi, Rupantar Kakoti, Aadhruman Barooah, Fanindra Moran were with them during encounter and two of them were hit by bullet of CoBRA party.

In this encounter S/Shri Gurucharan Kalindia, Assistant Commandant and Dharmendra Roy, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/05/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 135 –Pres/2014—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Saunak Kumar Das, (Posthumously)
Assistant Commandant

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31.05.2013, at about 1330 hrs, Shri Saunak Kumar Das, AC received an input from a reliable source that a group of naxalites were camping in his area of responsibility along Chhattisgarh-Odisha border and planning some audacious attack on the troops. Shri Saunak Kumar Das, AC immediately gathered his troops, planned an 'A' level operation and led the troops to the place where the naxalites were reportedly hiding in the deep and thick jungles of Chiraipani area. The officer and his troops scoured the forest but could not find any suspicious activities. Next day while, the troops were returning to camp, Shri Saunak Kumar Das, AC again got information from a local source that a group of Naxalites were hiding in the jungles of Khallari ahead of Khallari Nala. Since the area is very hostile and treacherous, Shri Saunak Kumar Das, AC contacted the station house officer Boraiover on telephone. Accompanied by civil police representatives Shri Saunak Kumar Das, AC along with Special Platoons of B/D rushed to the area.

Before approaching the area, Shri Saunak Kumar Das, AC contacted the local source at village Khallari to verify the information and on the basis of confirmatory inputs received, deployed the platoon of B/211 alongside Khallari Nala as cutoff and further moved towards the target area guided by the local police. As the party was moving through the dense forest adjacent to Khallari Village they saw some suspicious movements as well as foot prints, suspected to be that of Naxals. Penetrating deep into the forest, leading the troops and following the foot prints, traced out the naxalites. When the party was near the spot where the Naxals were hiding, a group of heavily armed naxalites hiding behind a small hillock started a volley of fire from different sides. Immediately, Shri Saunak Kumar Das, AC and his troops retaliated with effective firing. Thereafter, a heavy exchange of fire ensued between the troops of D/211 and the armed naxalites.

In the melee, Shri Saunak Kumar Das, AC was hit by bullet. Despite being riddled with bullets, he retaliated and led his troops effectively. Due to his sustained and motivated efforts, troops retaliated bravely and with full vigor. As a result of effective firing from troops, the naxalites who were heavily armed and on dominating ground were forced to abandon their positions and flee under cover of thick forest, and while retreating left behind bags and many other essential items. Although wounded and bleeding profusely, Shri Saunak Kumar Das, AC, who was leading from the front showed exemplary courage by firing at naxalites as well as exhorted his troops to retaliate. In doing so he prevented a bigger loss of the security forces. Fatally injured Shri Saunak Kumar Das, AC was immediately evacuated to Nagri Public Health Centre where he was declared 'brought dead'. The cause of death was 'Haemorrhage and shock as a result of firearm injury to the body'. It was later reported by some locals next day that there were blood stains all over the place where the naxalites were hiding; and some local newspapers also reported that few naxalites were either killed or were badly injured during the exchange of fire.

Shri Saunak Kumar Das, AC was a daring officer who led the troops from the front. Despite being critically injured and without caring for his life, he led his men against the naxalites, who were heavily armed and in large numbers. The courageous and gallant act of the officer saved the lives of his men and foiled the attempt of the naxalites to inflict casualty on SF's. The officer laid his life, in the line of duty, for the Nation.

In this encounter (Late) Shri Saunak Kumar Das displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/06/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 136–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Jaishankar Kumar Upadhyay , (Posthumously)
Assistant Commandant

2. Chitrasen Gond,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the basis of intelligence input about presence of Maoist group (20-25) and planning to indulge in some violent activities in the area of Gandhamardhan Hill (Bolangir-Bargarh border) under PS Paikmal, Distt. Bolangir, an operation was planned involving troops of 216 Bn CRPF, 12 Bn CRPF, State SOG and District Voluntary Force (DVF). The troops were divided into 4 parties and were tasked to comprehensively comb the jungle which would take two complete days. The parties were launched from different directions so as to cover the escape routes and launch a multi-pronged attack. One such party consisting of twelve CRPF personnel alongwith 14 DVF personnel of Bargarh led by Shri Jaishankar Kumar Upadhayay, Assistant Commandant of 12 Bn was launched on 04/09/2013 from Maryadapalli side. The area is an extremely difficult geographical area where the terrain consists of steep hills and dense jungle and is infamous for a strong Maoist presence. After combing the jungles and various peaks of Gandhmardan hill for two days i.e. on 04/09/2013 and 05/09/2013, the troops moved downwards on 06/09/2013 at around 0400 hrs after making night halt at the hill top. As the troops were tactically moving forward and clearing the area, they were ambushed and fired upon heavily and indiscriminately by the naxals near Nagiharan nalah. The naxals had taken position on both sides of the nalah and were in an advantageous position. The troops soon found themselves caught in a dangerous situation where their lives were under great threat from the bullets of blazing guns of naxals and blasting of grenades lobbed at them. Overcoming the initial shock and surprise, Shri Jaishankar Kumar Upadhayay, Assistant Commandant showed extreme courage and retaliated the heavy enemy firing effectively and also exhorted his troops to fire back at full volume. The troops despite being trapped and tired to death retaliated bravely and crawled behind safer covers.

A fierce gun-fight at close quarter ensued but the odds were heavily against the security forces as the naxals were well entrenched in their secured morchas made in dominating ground and the troops were almost in open securing themselves behind the minimum cover available. The Commander Shri Jaishankar Upadhyay AC gauged the situation and on finding that the lives of his troops is under great threat from increased volume of fire and the bullets that were hitting the covers and ground all around, planned to counter-attack the enemy. He ordered the troops to fire heavily at the naxals positions using UBGL grenades and also advance tactically towards them while he along with Constable/GD Chitrasen Gond slipped from their positions amidst heavy exchange of fire to launch a flanking attack. The pair, while putting their lives at grave risk

reached the left flank of naxals by crawling for about 50 meters and launched a fierce counter attack using maximum fire power. The bold and brave response from the troops coupled with flanking attack surprised the enemy and stopped them from making concentrated fire. Taking the advantage of the changing tide, Shri Jaishankar Upadhayay AC and his buddy Constable/GD Chitrasen Gond advanced and fired in tandem giving support to each other and hit three of the naxals. The injuries were a crude shock to the naxals which dented their morale and they began to flee from the area taking advantage of dense forest and hilly terrain. The commander and his buddy chased the fleeing naxals and were able to recover a dead body of naxal wearing black uniform with 12 Bore gun at a distance. Other incriminating items like explosives, camping material and naxal literature were also recovered from the area of operation.

During the encounter, Shri Jaishankar Upadhayay AC and his buddy Constable/GD Chitrasen Gond exhibited exemplary courage and bravery with a high standard of professionalism and dedication towards duty even at great risk without caring for their own personal safety. They not only foiled the ambush/attack and consequent loss to own force personnel but also neutralized the CPI(M) Cadre. The leadership, command and control were exemplary and the team was successful due to the display of sheer grit, strong determination and lots of patience.

In this encounter S/Shri Jaishankar Kumar Upadhyay, Assistant Commandant and Chitrasen Gond, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/09/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 137–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ashutosh Tiwary,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 30/01/2012, on a specific intelligence input generated by 159 Bn,CRPF unit, the Quick Action Team , CRPF led by Sh. Chhote Lal, Second-In-Command, two platoons of C/159 Bn under command, Insp/GD P.Suresh with Insp/GD Sudarshan Kumar Singh, Civil Police component of Gaya Police, under command Sh. Shambhoo Prasad ASP(Ops) Gaya, civil police components of Karpi police station Dist: Arwal (Bihar) under overall command of Sh. R.B.Singh, Commandant-159 Bn, CRPF went for raid and search duty at Vill: Lodhipur under PS: Karpi, Dist: Arwal (Bihar).

At about 1800 hrs, the raid and search party, on approaching vill. Lodhipur, started searching paddy straw heap in the Lodhipur village field. Sh. R.B.Singh, Commandant called HC/GD Ashutosh Tiwari and directed him to search a heap of paddy straw. While removing/searching of paddy straw, HC/GD Ashutosh Tiwari noticed a bundle of red cloth and called out Sh. R.B.Singh, Commandant. On searching the bundle, it was found that some Arms/Amns were wrapped inside it. Further, Sh. R.B.Singh, Commandant directed to search other heap of paddy straw. When the search party approached to search the next paddy straw heap, a person/naxali guarding the weapons dump and holding a carbine was noticed. Ex-Army Insp/GD Pramod Kumar also saw naxali with carbine who was hiding himself in the heap of paddy straw and cocking his carbine.

At this stage, the police party was rendered fatally vulnerable to the field and range of fire from the naxal's carbine. Without caring for his life and safety, HC/GD Ashutosh Tiwari rushed for about 15 yards and jumped headlong on the naxal, disbalanced and dispossessed him without giving him a chance to open fire and thereby saved injuries/fatalities being inflicted on the police party. Later on, Sh. Chhote Lal, 2-I/C , ASP(Ops) Gaya Sh. Shambhoo Prasad and CT/GD Jagdish Rai Godara rushed in and captured him and took away his carbine. It was the act of raw courage that saved the others from being injured/killed by the naxal.

In the execution of this brave act, the above HC/GD has displayed conspicuous gallantry, exceptional bravery, unparalleled courage under great personal risk in adverse conditions. His gallant action was largely responsible for an outstanding operational success and saving fatality as well.

Recovery :—

1) 9 mm Carbine-01 No.

2) .303 Bolt Action police rifle-02 Nos.

3) .315 bore Belgium semi automatic rifle -01 No.

4) .315 bore Bolt Action rifle-03 Nos.

5) Live Amns- of .315 bore -90 Nos,

6) .303 Amns-129 Nos,

7) 9mm Amns-20 Nos,

8) .303 Empty Cases-02 Nos,

9) Belgium semi automatic rifle magazine-04 Nos,

10) .303 Magazine- 06 Nos.

11) Carbine Magazine-01 No.

12) Charger clips-05 Nos

13) Mobile set -01

14) Bandolier- 07 Nos

In this encounter Shri Ashutosh Tiwary, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30/01/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 138–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. R.K. Bahali,
Assistant Commandant

2. Md. Rashid Khan,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of an intelligence input from Addl. Dy. Director, SIB, dated 02 Aug. 2011 that KPLT insurgents had demanded an extortion amount of Rs. One lakh from Sh. J D Sharma, owner of a Dimapur based Tea garden, and had threatened of grave consequences if the demand was not met. Sh. R K Bahali, Asst. Comdt., of F/155 Bn was tasked to draw a plan to apprehend the KPLT insurgents. Accordingly, Sh. R K Bahali, AC chalked out an extended and well thought out covert operation plan, and a joint operation was launched comprising of a small team of eight personnel of CRPF and four personnel of the State police including SHO of Bokajan Police station under Distt. Karbi Anglong, in Assam. Sh. J D Sharma (owner of the Tea garden) was contacted and taken into confidence. The mobile number being used by the insurgents to contact Sh. J D Sharma, was obtained and CT/GD Md. Rashid Khan of F/155 was detailed to enact the role of the owner of the Tea garden and establish contact with the insurgents for striking a deal. Despite being fully aware of the grave threat that he was being exposed to, CT/GD Md. Rashid Khan willingly accepted the responsibility and proceeded to accomplish the task he was assigned. He contacted the suspected KPLT insurgents over the phone, and decided upon the rendezvous where the extortion money was to change hands, in accordance with the operational plan in place. The insurgents had clearly instructed him not to bring along any of his accomplices to the designated spot where the extortion money was to be handed over. Reposing complete confidence in the ability of CT/GD Md. Rashid Khan to execute his task, Sh. R K Bahali, AC (Coy. Comdr. of F/155) and SHO Bokajan jointly decided that while CT/GD Md. Rashid Khan would proceed alone to hand over the money to the insurgents at the pre-designated time and place, the other member of this small team would be surrounding him to provide him cover in three civil vehicles consisting of a Truck, a Tata Magic and an Auto-rickshaw and to nab the insurgents at the earliest opportunity. On 10/8/2011 at about 1540 hrs, CT/GD Md. Rashid Khan (acting as the Owner of the Tea Garden) arrived at the pre-decided spot for handing over of money to the insurgent group which was in the midst of the road leading to Lakhijan under P/S Bokajan and passing through a thick jungle. Sh. R K Bahali, AC, SHO Bokajan, CT/GD Parveen Shinde and CT/GD Rajib Das who were following in a truck, stopped their vehicle a few meters before the spot feigning breakdown of the vehicle. The group in Tata Magic vehicle crossed the spot and halted a few meters ahead and engaged in negotiations giving an impression of transaction of fare. The other members comprising of the assault group were seated in an Auto and maintained a safe distance. As CT/GD Md. Rashid Khan moved alone on the road with the

consignment, one of the insurgents who was heavily armed emerged out of the thick jungle and guided Ct Md. Rashid Khan towards the woods. The insurgent took him a few paces inside the jungle where the remaining group of heavily armed insurgents were waiting for them. On finding oneself alone, surrounded by the heavily armed insurgents, any lesser mortal would have faltered, but Ct Md. Rashid Khan displayed rare nerves of steel and kept the insurgents engaged in conversation, thereby delaying the delivery of the consignment as per the original plan. Meanwhile, the assault team having closed-in moved steadily to the spot where the transaction was taking place, unmindful of the fact that a scout of the insurgents was observing any kind of unwarranted movements. On seeing the assault group advancing he opened heavy fire from his automatic weapon on the assault team. Meanwhile, the insurgents realizing that they had been led into a trap by Ct/GD Rashid Khan, in the guise of the tea garden owner fired at him, but, he narrowly escaped by jumping into an adjoining pit. The assault team on being fired upon effectively retaliated the fire. CT/GD Md. Rashid Khan who was caught between the whizzing bullets of assault team as well as insurgents crawled out of the cross-fire zone and took position behind a tree. The insurgents by then had taken cover behind the trees in the forest and were firing incessantly at the troops. CT/GD Md. Rashid Khan also drew out his pistol which was hidden under his clothes and provided supporting fire. The sudden and intense response from the insurgents prompted Sh. R K Bahali, AC to jump out of the truck and he advanced towards the encounter site and challenged the insurgents. Displaying indomitable courage and valor of a true Commander he continued to advance, unmindful of his own safety and fired heavily with his AK-47 rifle. The Commander's brave demeanor immediately rubbed off on the troops who were filled with renewed vigor. Fully charged to brave the battle under the guidance and directions of their courageous captain, the troops advanced from two flanks to encircle the insurgents. Taken aback by the fierce response of the troops and unprepared for the turn of events, the insurgents began to flee from the spot while firing simultaneously at the troops to keep them at bay. Sensing the intention of the withdrawing insurgents and observing their movements, CT/GD Md. Rashid Khan came out of his cover and throwing all cautions to winds, displaying utter disregard to his personal safety, he chased the fleeing insurgents. He continued to fire at the insurgents who were firing incessantly at the troops and injured one of them. The injured insurgent ran towards the thick jungle but the Commander Shri R K Bahali, AC and CT/GD Md. Rashid Khan did not give up the chase until he fell down and breathed his last.

In the execution of this brave act, Sh. R K Bahali Asst. Comdt. and CT/GD Mohd. Rashid Khan displayed conspicuous gallantry, exceptional bravery and unparalleled courage subjecting themselves to great personal risk under adverse conditions. Their operational acumen and bold action was largely responsible for an outstanding operational success.

Recoveries made :

One Pistol of Burma made 0.22 KF with one Magazine containing 03 live rounds. On searching the dead body a purse containing Rs. 560/- and one mobile set with 03 SIM cards also recovered.

In this encounter S/Shri R.K. Bahali, Assistant Commandant and Md. Rashid Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/08/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 139–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Komal Singh,
   Dy. Inspector General

2. Mohd. Ashraf,
   Constable

3. V. Radhakrishnan,
   Constable

4. Biju G.S.,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On specific intelligence about concentration of naxals received from own source, DIG (Operations) CRPF at Bijapur in consultation with S.P Bijapur planned a Search and Destroy Operation in the general areas of Kurcheli, Irsumetta, Palnar and Bodlapusnar villages of Bijapur District in Chhattishgarh. It was planned to approach the target area from four different

directions and launch an assault. The parties moved and halted in the nearby jungles for launching the attack as :— on 27/08/2013 at 2130 hrs Party no. (I) moved from Gangloor to Irsumetta, Party No. (II) moved from Cherpal to Palnar on 27/08/2013 at 1230 hrs, Party No. (III) moved to target Bodlapusnar on 28/08/2013 at 0300 hrs and Party No. (IV) moved from Bijapur by road up to Punjer village and then on foot towards Kurcheli village. Simultaneous search on above four villages was launched at 0930 hrs. Party No. (IV) under the command of Shri Komal Singh, DIG(OPS) Bijapur bifurcated itself into three small groups and after cordoning the village started the search. The search continued up to 1430 hrs but nothing was recovered. The troops then decided to retreat adopting an alternative route. Barely had they moved 300 mtrs from the village and were crossing a nala, that naxals hiding in thick vegetation opened heavy fire on troops which was retaliated and repulsed in a befitting manner. The naxals without giving a fight retreated inside the deep jungles. The presence of naxals in the vicinity was thus confirmed but their direction and distance was still unclear. Another point that confirmed was that naxals would try to attack the Security Forces at an appropriate place and time. Relying on his knowledge and vast experience of Anti-Naxal operations, Shri Komal Singh DIGP (Ops) Bijapur planned to entice the naxals to attack one of the sections while keeping other sections ready to counter attack. At about 1730 hrs, as the rear section came in a relatively open space, Naxals in black uniforms and armed with sophisticated weapons started indiscriminate fire on them from three sides. Shri Komal Singh DIGP (Ops) Bijapur who was leading the troops and waiting for this opportunity personally led the assault and moved towards the naxal positions. Naxals were trying to break the defence and encircle the Section. Sensing the danger to his section and ensuring that his plan should not fail, Shri Komal Singh, DIGP along with CT/GD V. Radha Krishnan, CT/GD Biju G.S, CT/GD Mohd Ashraf moved towards the naxals firing heavily from their weapons coupled with lobbing and firing of grenades. Without caring for the heavy volume of fire and personnel safety DIGP Sh. Komal Singh and the party moved ahead adopting fire and move tactics. In the fierce gun-fight that took place at a close distance some of the naxals were injured. Surprised by the counter attack and the injuries sustained, naxals made a hasty retreat but DIGP Sh. Komal Singh did not want to lose the opportunity and planned to chase the fleeing naxals. The troops led by DIGP chased the Naxals for about 2 Kms when again the naxals taking advantage of terrain fired at them. A fierce encounter again took place where the naxals had the advantage of dominating height and thick woods. Despite being at low ground and disadvantageous position, the troops did not halt and continued the advance and neutralized a naxal. Some other naxals were also injured but they managed to flee taking advantage of hilly terrain, thick under growth and the approaching darkness. The encounter lasted for about 1½ hrs. A thorough search of the area was carried out and dead body of a Naxal, one 12 Bore Gun, one 9 mm Pistol, one country made Pistol (.315 Bore), one HE-36 Grenade, amns and vast amount of literature were recovered. Blood stains found at site suggested death or injury to another 04 to 05 Naxal cadres. Thereafter the party halted near the encounter site during the night and started withdrawing on 29/08/2013 at 0700 hrs. On the return route Naxals fired on the party at 3 places which was befittingly retaliated. An IED was also recovered by the troops planted on a track going towards the camp.

The meticulous planning, leadership conspicuous courage, dedication exhibited by Sh. Komal Singh DIGP(Ops)Bijapur and the conspicuous courage and devotion to duty exhibited by CT/GD V.Radha Krishnan, CT/GD Biju G.S and Ct/GD Mohd Ashraf resulted in an operational success in the naxal hotbed.

In this encounter S/Shri Komal Singh, Dy. Inspector General, Mohd. Ashraf, Constable, V. Radhakrishnan, Constable and Biju G.S., Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 140–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Ramesh Kumar,
   Inspector

2. Manoj Yadav,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on a specific information provided by IGP, Bastar Range, that Naxals had called a meeting in the village Karkoti and may hold a jan adalat, a search and destroy operation was planned by 80 Bn and 212 Bn CRPF along with State Police. Two platoons of A/80 Bn under command of Insp/GD Ramesh Kumar and two platoons of D/212 under command of Sh.Vikash Kiran AC along with State Police were launched from their bases i.e. from Bastanar and Kodernar respectively.

The target village was located deep inside the thick forests of Kankanpara under P/S Barsoor in Dantewada distt. of Chhattisgarh. The troops had planned to target the village from two directions at dawn. They left their bases in the intervening night of 18-19/7/2012 i.e. in the dead of night and navigated towards their target. Troops braved the dense forest, undulating terrain, rough weather and hostile population to reach nearer to their target. After meeting at a pre-decided rendezvous an intensive search of the village and surrounding jungle was carried out but nothing could be found.

After conducting search, both parties started withdrawing towards their bases. Return from the interiors of jungles of Chhattishgarh is always fraught with danger as the Naxals came to know about the movement of troops and they shadow the troops taking advantage of thick jungle to strike at an appropriate place and time. The naxals taking advantage of terrain, their strong communication network and strong base of local guerilla squads to launch sudden and surprise attack on Security Forces. When troops of A/80 were crossing a jungle between village Arla and Karkoti, Ct/GD Manoj Yadav the scout of the troops noticed some shoe marks on a wet land. He immediately weighed the situation and informed his Commander Insp/GD Ramesh Kumar about it. Presence of shoe marks meant that naxals were present nearby as villagers normally do not wear shoes. Insp/GD Ramesh Kumar, TI Rupak Sharma of State Police and Ct/GD Manoj Yadav started following the footprints with great alertness. The shoe marks led to an open space surrounded by hills. This aroused suspicion in the mind of the Commander. Likelihood of a naxal ambush in the vicinity increased as all indications were pointing towards it. Taking precautions, the Commander divided his team into two and ordered one to move surreptitiously from the left flank. He had planned that he would expose the ambush and then the second team would attack it. To locate the ambush it was imperative to take the deadly risk of exposing the troops to the naxals. Hearing the plan of his Commander and realizing that he was liable to get shot by naxals as soon as he was exposed, CT/GD Manoj Yadav volunteered to lead the group. The group moved bravely in the open space and as per plan naxals waiting in an ambush started indiscriminate fire on them. Ct/GD Manoj Yadav with no loss of time and not caring for the flying bullets retaliated at the ambush and moved towards it in a bold and courageous manner. Insp/GD Ramesh Kumar too followed him and fired at the naxals. The naxals had strategically placed the ambush and were occupying dominating position behind secured covers. Insp/GD Ramesh Kumar and Ct/GD Manoj Yadav displaying utter disregard to their personal safety started moving uphill so as to reach nearer to the naxals and launch final assault. In the pursuit to reach nearer to the naxals and amidst intense firing one of the bullet from naxals hit the leg of Ct/GD Manoj Yadav. Blood began to ooze from the wound and the Constable withered in pain. On seeing the condition of his Constable, Insp/GD Ramesh Kumar came out his cover, braving the bullets, and pulled the constable behind a cover. It seemed that the naxals were waiting for this moment as another group of naxals hiding in the adjacent hill also started firing at the troops. The two were now caught in the fire from two directions and an imminent threat to life loomed over them. Finding that the second group of naxal was in the same direction where he had sent his second group, Insp/GD Ramesh Kumar ordered them to charge at them and engage them. Simultaneously finding that the volume of fire had increased and remaining at the same spot was dangerous, the two moved out firing incessantly for another cover. In the process one more bullet from naxals hit CT/GD Manoj Yadav on his back. At this point, a call either to fight to win or retreat needed to be taken and Insp/GD Ramesh Kumar preferred to die with honour than live with disgrace. As the naxals on adjacent hill were engaged by another group, Insp/GD Ramesh Kumar ordered his troops to fire heavily and advance at the naxals not caring for their lives. All the team members including Ct/GD Manoj Yadav advanced towards the naxals like a surge of sea which shattered the morale of naxals forcing them to flee. The troops chased the naxals but they fled taking advantage of terrain and from their pre-decided escape routes.

During the operation and counter-ambush drill, Insp/GD Ramesh Kumar showed great leadership qualities, kept encouraging his troops and fought ferociously to defeat the naxals thereby forcing them to flee. Similarly, Ct/GD Manoj Yadav despite being grievously hurt overcame the excruciating pain and rained havoc at the well-entrenched naxals. Their keen observation and dare-devilry attitude not only saved the lives of whole group falling prey to the ambush but also forced the naxals to withdraw with defeat.

In this encounter S/Shri Ramesh Kumar, Inspector and Manoj Yadav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/07/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 141–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Rakesh Rao,
Commandant

2. Jitender Kumar Singh,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12th December, 2012 Shri Rakesh Rao had gone to D/170 at Madded for Coy visit when input from IB received about presence of Naxal military dalam at village Kachlaram around 18 kms from the company camp of 170 Bn at Madded. Village Kachlaram is considered to be naxal liberated zone involving very thick forest tough mountaineous terrain and force had never ever ventured in the area and also does not fall in the unit AOR. But, it was decided by Shri Rakesh Rao CO to conduct special operation on the input of IB. Immediately, ops plan was worked out and 86 personnel from C/170, D/170, SAT and CO protection alongwith four civil police representatives were mobilized for operation by 12/12/2012 evening. All the 86 personnel (CRPF- 82, Civil police-4) were divided into three parties under over all command of Shri Rakesh Rao, Commandant 170 as per details given below :

i) Party No. 1 (32 men) direct command of Shri Rakesh Rao, CO

ii) Party No. 2 (29 men) under command of Shri Suraj Mal, AC

iii) Party No. 3 (35 men) under command of Shri Rahul Mathur, AC

The whole party was briefed on sand model, Grid references for moving to the target was given to all the three parties, which left for the destination at 2030 Hrs from Madded CRPF camp. It was pitch dark night and all the three parties moved in single line with the help of GPS, NVD etc. The terrain was so tough, difficult and sensitive that the party could move only around 8 kms in the whole night. In the morning, the intelligence input was again verified from IB Bijapur and came to know that Naxal military Dalam had further moved around 2 kms ahead of village Kachlaram and halting near nalah in the jungle near kacha track leading to village Korenjet. The parties immediately started moving cross country, through dense forest and mountains towards the targeted place, avoiding tracks, likely ambush points. Around 3 Kms short to the target, the targeted place was analyzed and appreciated on map sheet and all the commanders were personally briefed on top sheet by CO 170. All the three parties were assigned different GR with their specific role with inter parties distance varying from 1.5 kms, CO 170 again briefed his party of 32 men on the spot about the final assault plan if situation arises. As per the final briefing CO protection (13 men) including HC/GD Jitender Singh alongwith Shri Rakesh Rao, Commandant 170 was to be on the forefront in extended line and SAT of 18 personnel was to be behind, for support, around 150 mtrs maintaining visual contact so that surprise could be maintained till reaching the target. As soon as CO protection reached near the targeted nalah, naxals clad in black uniform opened indiscriminate firing on advancing CO protection. The CRPF party immediately retaliated the firing and thereafter firing started coming from three directions from automatic, semi automatic and country made weapons. It was appearing that naxals, around 35 in number, trying to encircle the CO protection considering it a small party. Sensing grave risk to CO protection, immediately UBGL carrying personnel ordered for UBGL firing in the direction from where the firing was coming. When the whole CO protection was concentrating on the LMG fire coming from front and right side, a small group of 2-3 naxals hiding on the front left side firing intermittently was waiting to hit the party from front left side as soon as the advancing CO protection would cross the nalah. After noticing the presence of 2-3 armed naxals, taking lead, Shri Rakesh Rao alongwith HC/GD Jitender Kumar Singh boldly advanced crawling towards the hiding naxals on the front-left side in mutual support through the volley of fire coming from other directions and attacked the hiding firing naxals. In retaliation, the hiding naxals fired indiscriminately on Shri Rakesh Rao, Commandant 170 Bn, and HC/GD Jitender Kumar Singh but failed to inflict casualty. However, Shri Rakesh Rao, Commandant 170 with covering fire of HC/GD Jitender Kumar Singh from very close quarter succeeded in eliminating one naxal, without caring for their life and exposed themselves to grave risk, to save the life of other advancing personnel of CO protection. After heavy exchange of fire, naxals had to flee away in haste without getting an opportunity to take away the dead body of killed naxal and weapon/other items. A very high degree of fire control was exercised during the encounter by the party and fired in a very professional and specific manner.

Conspicuous gallant action, taking high risk of their life, exemplary leadership, presence of mind, mental and physical agility displayed by Shri Rakesh Rao Commandant 170 Bn and HC/GD Jitender Kumar Singh resulted in killing of naxal that too in an area like Kachlaram forest considered to be one of the so called liberated zone of naxals. In the entire operation death remain at hair line distance from Shri Rakesh Rao Commandant 170 Bn,CRPF and HC/GD Jitender Kumar Singh who survived from many bullets. To conduct the operation, troops had to travel 36 kms cross country negotiating tough terrain on foot from Madded in pitch dark night and had eliminated one naxal who was later identified as Kawasi Budhram, Dy. Commander of Pharsegarh armed Dalam in the Panchanama report itself by the magistrate besides case history given by concerned police station. The party had recovered the dead body, weapon, explosive and other articles from the place of encounter. As confirmed by IB vide alert No. Sqd 26 dated 28/12/12, two more naxals namely Kawasi Sannu and Kosapadium were seriously injured in the encounter prompting the naxals to call two doctors namely Venketesh and Ramarao for treatment of the injured. In the operation conducted from 12/12/2012 to 13/12/2012 Shri Rakesh Rao, Commandant 170 Bn and HC/GD Jitender Kumar Singh have shown exemplary courage and conspicuous bravery by risking their life. The conspicuous gallant action, dedication, commitment and leadership qualities shown by Shri Rakesh Rao Commandant 170 Bn and HC/GD Jitender Kumar Singh at the time of crisis was of exceptionally high degree which led to killing of Dy Commander of Pharsegarh armed naxal Dalam.

Recoveries made :

01) Bharmar weapon-01 No.

02) Material (rds etc) used for filling and firing from Bharmar.

03) Detonators-23 nos

04) Safty fuse-01

05) Naxal knife

06) Tourch-01 No.

07) Naxal Pitthu-01No.

08) Some leaves of naxal literature

09) Dry battery 6V-1 used for giving charge

10) .315 Bore Amns-03 Nos

11) Cordex

In this encounter S/Shri Rakesh Rao, Commandant and Jitender Kumar Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13/12/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 142–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Ravi Kumar Doodi,
Assistant Commandant

2. H. Kipgen,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receipt of reliable information on 20/6/2012 from SP Karbi Anglong about the presence of armed KPLT cadres in Lakhte/Teron Gaon, Dolamara under PS-Borpathar, Dist-Karbi Anglong (Assam), a joint search operation consisting of staff of 3 JK Rifle (Army), 210 COBRA and State Police (Assam) was planned. After making reccee of the area at night, it was decided to start the operation at dawn for proper execution of the operation as the area was covered with thick jungle and undulating terrain.

The OPS party was divided into 03 teams and Shri Ravi Kumar Doodi, AC was leading the Team of COBRA staff. When the search operation was going on, the militants observed the movement of the OPS party and started indiscriminate firing and the team of Army staff (i.e. Team No.2) was under heavy firing of the militants. During the operation, Sh. Ravi Kumar Doodi and CT/GD H. Kipgen were maintaining 'Buddy System'. Realizing the importance of the situation, they immediately decided to help team No.2 and moved a long distance by crawling between volley of bullets and accepting a grave risk to their lives both of them reached nearer to the militant's position. Suddenly they noticed that a KPLT militant firing indiscriminately is advancing towards them ferociously. To retaliate the firing of said militant and the firing of other militants tactically, they placed themselves in a ditch at once and started aimed firing towards the position of the militants. During the exchange of fire, Shri Ravi Kumar Doodi, AC and his buddy CT/GD H. Kipgen maintained a high standard of discipline, bravery, prudence and displayed a dynamic quality of operational performance to shot down the KPLT militants and also set forth an example about successful operation against the militants. Total 03 hard core KPLT cadres were killed in this operation and a cache of Arms/Amn/Explosive and important documents were recovered.

Recoveries made :

- Three AK-56 Rifle.
- 06 Magazine of AK-56 Rifle.
- Pistol Magazine – 01No.

- 9 MM Ammunition – 32 Nos.
- 5.56 MM, INSAS Ammunition - 91 Nos.
- 7.62 x 39 MM Ammunition – 120 Nos.
- Empty Case of 7.62x39 MM – 49 Nos.
- Shilling – 03 Nos.
- Magazine Pouch – 03 Nos.
- Laptop – 01 No.
- Laptop Bag – 01 No.
- Keyboard – 01No.
- Mobile Set – 04 Nos.
- Mobile Charger – 04 Nos.

In this encounter S/Shri Ravi Kumar Doodi, Assistant Commandant and H. Kipgen, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/06/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 143–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Nchumbemo Yanthan,
   Inspector
2. Dinamani Baishya,
   Sub Inspector
3. Pankaj Rahang,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

After receiving a secret information on 09.08.2013 from 210 CoBRA unit intelligence cell about the presence of 5/6 KPLT cadres in General area of Hemlangsho village under PS Borpathar Distt-Karbi Anglong Assam, a search and destroy Operation was jointly planned by S P Karbi Anglong, Shri Joseph Keishing, Comdt,-210 COBRA and Shri Neeraj Kumar Jha, AC, 210 CoBRA. After detailed planning and briefing, operation was launched on 09.08.2013 at 2230 hrs by the joint troops of 210 CoBRA and Civil Police. The troops, after arduous navigation in tough terrain, reached near the target village at 0130 hrs on 10.08.2013. After analyzing the terrain and general topography of the area, two cut-offs were placed by the operational commander on the probable escape routes. After placing the cut-offs, two Assault parties were formed where 1st Assault party was placed under the command of Inspector Nchumbemo Yanthan and 2nd Assault Party under the command of Shri Neeraj Kumar Jha, AC. The assault parties tactically took position and waited patiently for the first light to launch an assault. As the dawn struck, troops tactically and steadily moved closer to the suspected area and found two clusters of huts, 1st Assault party, U/C Insp Nchumbemo Yanthan targeted the left cluster of huts and 2nd Assault party U/C Shri Neeraj Kumar Jha, AC targeted the cluster at right. As the 1st Assault party approached the left cluster, insurgents hiding inside opened indiscriminate fire at them. Insp/GD Nchumbemo Yanthan & CT/GD Pankaj Rahang who were scouting the team did not fire back instantly but crawled ahead in the midst of firing to segregate the hide-out from other huts and after minutely assessing the situation and location of insurgents retaliated in a controlled manner so as to avoid collateral damage. The other troops were tactically following them and giving covering fire. To launch a counter offence Insp/GD N Yanthan and CT/GD Pankaj Rahang then decided to move closer to insurgents as the possibility of presence of civilians inside the hut could not be ruled out. Taking risk of their lives they moved forward but the insurgents opened heavy fire at them and they had to take cover behind a tree. The insurgents did not stop there and intensified the fire coupled with lobbing of grenades. Finding that

staying behind the tree will not yield any result and will be dangerous for them, they jointly fired at the insurgents to pin them down and moved closer to hut. On getting cornered by the advancing troops, the insurgents found it safe to flee by opening heavy and indiscriminate fire coupled with lobbing of grenades. The intense fire again delayed the advance of troops and taking it's advantage insurgents fled from the rear of the hut but not before sustaining some injuries.

The insurgents though were able to escape from the cluster of huts but they were to face the fury of another brave trooper waiting on the way. Two of the insurgents fled towards cut off party No. 01 where SI/GD Dinamani Baishya alongh with his party was position and waiting for the chance. On being challenged by the troops to stop, the insurgents opened heavy fire on them also. Undeterred by the fusillade of bullets aimed at them, SI/GD Dinamani Baishya took risk of his life, fired back at the insurgents and injured both of them. His conspicuous courage and bold face-off with death foiled the insurgents attempt to escape. Though injured the insurgents took cover behind a tree and kept firing at the troops. Seeing this SI/GD Dinamani Baishya ordered his troops to keep firing at them while he crawled to his right for launching a flanking attack. On reaching to the flank of insurgents he alone launched the attack and killed one of the insurgents. Seeing the fate of his buddy the second insurgent ran towards the dense jungle while firing at the troops and fled from the area. After the firing subsided, the area and its vicinity were thoroughly searched by troops and a dead body of KPLT cadre who was later identified as Tom Teron alias Khoi Teron with a loaded AK-56 rifle was recovered. Death of other KPLT cadre was also reported by intelligence sources/interception but the dead body could not be recovered.

During the operation Insp/GD Nchumbemo Yanthan, SI/GD Dinamani Baishya and CT/GD Pankaj Rahang displayed conspicuous courage and professionalism in the line of duty. Despite heavy firing by the extremists they retaliated gallantly. Their extraordinary discipline while firing at the insurgents avoided collateral damage. Their raw courage, bold face-off with death and steely resolve resulted in elimination of one senior KPLT cadre along with huge recoveries and without any loss to Security Forces in a fierce close quarter battle.

Recoveries made :—

1.	AK-56 fifle	-	01
2.	Magazine	-	01
3.	Live Ammunition of AK-56	-	74
4.	Empty case of AK-56	-	10
5.	Mobile sets	-	02
6.	Torch	-	01
7.	Pouch	-	01

In this encounter S/Shri Nchumbemo Yanthan, Inspector, Dinamani Baishya, Sub Inspector and Pankaj Rahang, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/08/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 144–Pres/2014—The President is pleased to award the 2nd Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	S. Elango, Dy. Inspector General	(2nd Bar to PMG)
2.	G. Madhu, Assistant Commandant	(PMG)
3.	Malek Shahid Ahemad, Head Constable/RO	(PMG)
4.	Daval Sab, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

An information about presence of 2nd Coy of PLGA comprising of approx. 50-60 armed cadres in the forest between village Kurcholi and Munga under PS Gangaloor in Distt. Bijapur was received. On this information a cordon and search of

the village Kurcholi and surroundings was planned by Sh. S. Elango, DIG (Ops) Bijapur. On 23/02/2013, after proper briefing, two specially formed parties under over all command of Shri S. Elango DIG (Ops) left for the target village. Party No. I left on 23/02/2013 at 2100hrs from Pamalwaya and Party No. II left from Cherpal on 23/02/13 at 1930 hrs. When the party No. II was approaching the target village, Naxals tried to ambush the troops and fired at them. The troops retaliated bravely but the Naxals managed to flee taking advantage of the terrain. Meanwhile party No. I reached near their target and bifurcated itself into two, of which one laid cut off on the hills behind the village and the second under command of Sh. S. Elango, DIG conducted search of the village. Two hideouts of Naxals were busted and huge number of items including explosives, detonators, literatures, 22 containers with anti personnel mechanism for IED's, uniforms, ration and grocery items worth lakhs were recovered. After thoroughly searching the village and the surroundings, the troops halted for lunch. While the troops were having their lunch, Naxals initially exploded crackers to judge the reaction of the troops so that they can plan their next offence accordingly. Sh. S. Elango alerted the troops and instructed them not to fire but move slowly behind covers. A battle of operational acumen and wits was on as both were trying to read each other's mind. After sometime Naxals fired a burst from the LMG and the troops could observe two to three black uniformed Naxals at a distance. Troops waited patiently for an opportunity to strike. After a while around 15 Naxals in black uniform and armed with sophisticated weapons started indiscriminate fire on the troops. DIG S.Elango ordered his troops to give a meek response to the firing of Naxals by controlled and limited fire. This act of the troops emboldened the Naxals and they began advancing towards the troops using indiscriminate fire. DIG S. Elango called Shri G. Madhu, Asstt. Comdt. of 168 Bn over wireless set and ordered him to move to hill side surreptitiously and give them support fire when ordered. Shri G. Madhu, Asst. Comdt. took along CT/GD Daval Sab and SI Raju Koreti of Civil Police with him and placed himself covering the right flank. As the Naxals came in the killing zone of the troops DIG S.Elango alongwith HC/RO Malik Shahid Ahmed and SI Abdul Sameer of civil police came out of their cover and fired indiscriminately on the Naxals. Simultaneously he ordered his other troops and Shri. G Madhu, Asst. Comdt. to open heavy fire on the Naxals. The sudden counter attack by the troops took Naxals by surprise and in order to save their lives they began to fire ferociously and started withdrawing. Despite heavy fire of Naxals from sophisticated weapons, Shri. Elango, DIG, HC/RO Malik Shahid Ahmed and SI Abdul Sameer without caring for their personal safety, continuously changed their positions and advanced towards Naxals. The Naxals withdrew about 100 mtrs and took position in a Nallah and began to regroup. Some Naxals were injured in the exchange of fire but were dragged by their colleagues and taken to the Nallah. It was getting dark and Naxals had positioned themselves behind the safe cover and were still firing on the troops. DIG S Elango did not want to lose the initiative he had gained and thus decided to launch a final assault on the Nallah. He along with SI Abdul Sameer and HC/RO Malik Shahid Ahmed began firing UBGL at the Nallah and advanced towards it. Simultaneously he ordered the team under command of Shri G. Madhu, Asstt. Comdt. to advance and fire UBGL. The support team without caring for the firing of Naxals and the terrain advanced towards the Nallah, firing and lobbing grenades. On seeing the assault team of Shri G. Madhu, Naxals opened heavy fire on them also. Undeterred by the firing Shri G. Madhu, Asst. Comdt., SI Raju and CT/GD Daval Sab fired from their weapons and both the groups made final assault on Naxals. The Naxals not daring to face the assault began to flee from their well entrenched positions. Some injured Naxals managed to escape but one dead body of Naxal was lying on the ground with his weapon. It had become dark but the firing from Naxals did not stop. They kept firing from a distance and made attempts to retrieve the dead bodies of the killed Naxals. Sensing this, Shri G. Madhu, Asstt. Comdt., SI Raju and CT/GD Daval Sab positioned themselves very close to the fallen Naxal amid firing of Naxals. The Naxals made a number of bids throughout the night using heavy fire to retrieve the dead body but were not allowed by the party positioned near it. Their presence of mind, courage and gallant action helped the troops to retrieve the two dead bodies of naxals the next day. They were identified as Salim @ Sambi Reddy (Technician of 2nd Coy of Naxals) and Kismat @ Mittner of Pushnar (Dr. of the 2nd coy of Naxals). Salim was a District Committee Member and also Central Technical Committee member of Dandakarnya Area commanding platoon of 2nd Coy.of PLGA. A reward of Rs. Six Lakhs was announced of him. Kismat was a section commander and was a rewardee of Rs. One lakh.

In the execution of this brave act the above personnel have displayed conspicuous gallantry, exceptional bravery and unparalleled courage under great personal risk against a large numbers of Naxals in adverse conditions. Their gallant action was largely responsible for an outstanding operational success. It is also pertinent to mention here that in any operation against the Company of Naxals, recovery of dead body with weapon is a rare phenomenon but because of the valiant fight of these officers and men it was made possible.

Recoveries made :—

Following arms/amns and other items were also recovered by the troops from incident site :—

01 no. 12 Bore Gun, 01 no. SLR mag, 22 nos. of containers with anti personnel Mechanisms, Grenade-02 nos., 12 Bore Rds - 22 nos., Detonator-04 nos., 06 volt Battery, .303 Rds- 06, .303 empty case 02, SLR empty case-09, RDX-03 kg, Cordex wire 02 ft, Empty pouch 02 nos, Medicines.

In this encounter S/Shri S. Elango, Dy. Inspector General , G. Madhu, Assistant Commandant , Malek Shahid Ahemad, Head Constable/RO and Daval Sab, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 2nd Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/02/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 145–Pres/2014—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	G. Madhu, Assistant Commandant	(1st Bar to PMG)
2.	Ranjeet Singh, Constable	(PMG)
3.	Sajith O.V, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On developing the intelligence about location of Naxal commander Gopi along with 20-25 armed cadres near villages Gorna, Mankali and Pankoor in district Bijapur of Chhattisgarh, an operation was launched by Shri G. Madhu Asst. Comdt. As the exact location of naxal group was not known, it was decided to move in a small group, stay in the area, keep it under surveillance and launch the assault at an appropriate time. The target area was dominated by naxals as it was located at the edge of dense jungles of Bijapur and operating there in small numbers was a risky proposition. However, Shri G Madhu AC, decided to take the risk knowing the fact that it would be difficult to maintain the surprise of a large troop movement. He formed an Assault Party consisting of Special Action Team of CRPF placed at DIGP office Bijapur and State Police Personnel and left for the operation in the wee hours of 14th July 2013.

First day troops tactically reached near village Pankoor before day break and placed themselves at a vantage point. The area was kept under surveillance from morning to night and when nothing suspicious was noticed the troops moved towards villages Gorna and Mankali the next morning. On 15/7/2013, troops kept the surveillance on the area from morning to night. In the night they observed some suspicious movement of lights and persons in an adjacent hillock which suggested the presence of naxals. It was then decided to comb the jungle in the morning. On 16/7/2013 morning, the troops moved towards the hillock surreptitiously but as they moved further they observed that they had to move in a defile to reach there. Expecting an ambush in the area, Shri G. Madhu divided the troops into two groups of which he himself led one and the command of second party was given to ASI Ambika Prasad Druv of State Police. He had planned that he would move straight into the defile and expose the ambush, if there was one, while the second team would move from the left and counter attack the ambush after being exposed. Moving in a defile was fraught with danger and involved risk to life but to locate the ambush it was a necessity. After sending the second group to cover the left flank, Shri G Madhu AC along with constables namely Sajith O.V and Ranjit moved ahead in the defile. Barely had the group moved few paces, naxals waiting in the ambush opened indiscriminate fire on them. The commander and his troops were waiting for this rare opportunity and without caring for the flying bullets retaliated at the ambush and moved towards it in a bold and courageous manner. The naxals had strategically placed the ambush and were occupying dominating positions behind secured covers. Shri G Madhu AC along with constables namely Sajith O.V and Ranjit displaying utter disregard to their personal safety and raw courage started moving uphill so as to reach nearer to naxals and launch the final assault. The naxals had minutely planned the ambush and were waiting for this movement of the troops, as another group of naxals hiding in the adjacent hill also started firing at the advancing troops. The three were now caught in the fire from two directions and an imminent threat of life loomed over them. Finding that the second group of naxals was in the same direction where he had sent his team, Shri. G. Madhu, AC ordered them to charge at them and engage them. Simultaneously finding the increased volume of fire and grenades being lobbed at them, he ordered the two constables present with him to fire from UBGLs. The constables without caring for the bullets thudding the ground all around, boldly stood out of their covers and fired from standing position as firing from lying position was difficult. The firing of UBGL shook the confidence of naxals resulting in decreased amount of fire. Similarly the engagement with second group of naxals resulted in stopping of fire from that direction. Taking advantage, Shri G. Madhu, AC ordered his troops to open heavy fire while he along with CT Sajith O.V and CT Ranjit advanced tactically. The supporting fire and tactics of fire and move helped them to reach closer to naxals. On reaching closer they noticed a naxal clad in oozy green uniform firing at them incessantly. Without losing precious time he was gunned down by the accurate and aimed fire of the three brave troopers. Seeing the fate of one of their cadres the naxals began to flee from the area in the supportive fire of each other. The three chased them for a distance and injured a few more but they managed to escape taking the advantage of hilly terrain, dense jungle and their pre-decided escape routes. On searching the area, dead

body of a uniformed naxal namely Madavi Hidma S/O Hando Vill-Gorna along with .303 rifle, 12 No .303 rounds, one HE grenade, 04 detonators, one black pittu, naxal literature, pouch 02 nos, 01 radio and arrow-05 nos etc. were recovered.

For the operational success, troops stayed in the jungles surreptitiously for 3 days and nights and managed to make a contact with the naxals. It was because of the courage displayed by Shri G Madhu, AC, CT/GD Ranjit Singh and CT/GD Sajith O.V during the counter ambush that the plan of naxals of inflicting heavy casualty on the Security Forces failed. Their raw courage, unparallel bravery and tactical acumen not only resulted in killing of a naxal and injuries to some others but also set an example of successful small team operation.

In this encounter S/Shri G. Madhu, Assistant Commandant, Ranjeet Singh, Constable and Sagith O.V., Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/07/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 146–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Dilip Kumar Mishra,
   Head Constable
2. Teekam
   Constable
3. Anil Kumar
   Assistant Commandant
4. Jitendra Singh,
   Constable
5. Manjeet Singh,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

After a protracted intelligence collection of the movement of naxals in the area sympathetic to them i.e. Sarju, Kuku, Ranidah, Katiya, Chatam etc under Police Station Garu in the dense jungles of latehar district of Jharkhand, an information on the movement of a naxal group under command of their leaders mainly Mrintunjay and Indrajeet was received on 29/4/2013. Striking the group in their den was a challenging task considering the distance that the troops had to travel, early warning system of naxals, heavy mining of the approach routes and the tactical placement of sentries. Thus the task was assigned to elite CoBRA troops of 203 and 209 Battalions of CRPF for conducting a surgical operation in the area. They were given the responsibility to hunt for the target in the dense jungle and strike at the appropriate time.

Accordingly, "OPS-EAGLE" was planned wherein 6 teams of each CoBRA and 2 teams of Jharkhand Jaguar were to be fanned in the jungle in pursuit of the target. To avoid the early warning system and maze of IEDs planted in the area it was imperative that the troops enter the target area under the cover of dark. Troops moved out from their bases in civil trucks and after getting dropped, stealthily moved inside the jungle in darkness. The teams fanned out in the area and moved in parallel maintaining mutual support. Team No.10 of 209 CoBRA was one such small team moving under the command of Shri Anil Kumar, AC and was leading the hunt. As the area was fraught with ambushes, four commandoes namely CT/GD Teekam, CT/GD Jitender, HC/GD D.K. Mishra and CT/GD Manjeet Singh were assigned the task of scouts thereby covering a larger area from the front. The team was meticulously scanning the jungle and was looking for the presence of naxals or their tell-tale signs. As the team moved further, it's scouts noticed some footprints on wet ground and alerted the other team members. The presence of foot marks meant that the presence of naxals or civilians was somewhere nearby. The team became more cautious and moved ahead at a snail's pace, keenly scanning the area stealthily. The team while negotiating an upslope in the midst of hilly jungle noticed a temporary hut atop the hill. The hut was kept under surveillance for some time but as no movement/activity was noticed the team moved further ahead. One more temporary hut was noticed at an adjacent hill but before the troops could act further they were fired upon heavily by the naxals hiding there. It was felt that naxals had laid a trap to bring the troops into their killing zone, but the alert troops avoided it by sound tactic and presence of mind. The team immediately took position and retaliated. The Commander Sh Anil Kumar, Asstt Comdt in the midst of roaring guns

and bullets flying all around planned the strategy to counter the ambush from it's flanks. Taking cover of a boulder, which was receiving the incessant fire of naxals, he assessed the presence and positioning of naxals and accordingly divided his team into two halves. The naxals had occupied two hilltops in the front which were separated by a stream of running water. But before any further action could be taken it was imperative to disorient the naxals from doing aimed fire. He ordered his troop to fire heavily and incessantly at the naxals on his count and in this endeavor he himself came out of the cover for firing accurately. CT/GD Manjeet Singh and CT/GD Jitendra were leading the group which was to attack from left flank. They quietly slipped from the firing zone and surreptitiously moved in the direction. After coming face-up with the naxals they opened heavy fire and lobbed grenades at them. In a coordinated move another group also moved away from the firing zone and moved towards the right flank. HC/GD D.K. Mishra and CT/GD Teekam under their commander moved at the closest distance and fired heavily at the well entrenched naxals. The naxals in a bid to inflict heavy causality resorted to incessant fire coupled with lobbing of grenades. But the group under the commander did not flinch and moved out of their secured covers to fire grenades from their UBGLs. The firing and raw courage of the group broke the morale of the naxals and they began to retreat. Seeing the retreat, the three i.e. AC Sh. Anil Kumar, HC/GD D K Mishra and CT/GD Teekam chased them without caring for their lives inspite of the fire from the adjacent hilltop on them. The fleeing naxals ran downhill and seeing being chased again took positions behind the boulders in the stream. The naxals from the adjacent hilltop also tried to reach for supporting them but were effectively waylaid by CT/GD Manjeet Singh and CT/GD Jitendra. The trio did not let the naxals escape and advanced at them using fire and move tactics showing utter disregard to their own safety. On seeing the advancing troops the naxals made a last bid to escape by firing incessantly and lobbing grenades, so as to create fear psychosis and take advantage of it. But, the brave commandoes did not duck but fired back more ferociously. In the gun-fight that took place in a close quarter, two naxals were killed. Meanwhile some naxals were able to flee from the spot and ran towards the hilltop from where other naxals were firing. Seeing the fleeing naxals CT/GD Manjeet Singh and CT/GD Jitendra without caring for the fire from the hilltop and throwing all security precautions in air, came out of the cover and fired at them. The naxals tried to kill these troopers but seeing the ferocious charge found it safe to flee from the area. In this gunfight also CT/GD Manjeet Singh and CT/GD Jitendra were able to kill one naxal and injure others.

The bravery, gallant and tactical acumen displayed by the troops during the operation resulted in elimination of 03 naxal cadres and recovery of 01 INSAS rifle, two v.303 Rifle, live rounds, detonators, mobiles, Amn pouch, bags, country made bombs, naxal literatures and other items. The courage exhibited by the troops in changing the tide of the operation wherein despite being at the receiving end initially they overcame and countered the ambush and killed three of their cadres. (Intercept of naxal communication revealed that 05 cadres were killed and two others sustained grievous injuries).

In this encounter S/Shri Dilip Kumar Mishra, Head Constable, Teekam Constable, Anil Kumar, Assistant Commandant, Jitendra Singh, Constable and Manjeet Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/04/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 147–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Rajender Kumar,
   Assistant Commandant
2. Anil Kumar
   Constable
3. Bipin Singh,
   Constable
4. G. Hari Prasad,
   Constable
5. Pooran Mal Jat,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05/02/2012 at 1545 hrs an information was received from reliable source that 08-10 armed Maoist cadre have assembled at Madhupur jungle area near village Madhupur under Police Station Belpahari, Distt-West Medinipur (W.B.). On

getting this input Shri Virender Kumar, Deputy Commandant 169 Bn CRPF (DC/Ops) who was holding charge of Commandant (AOL) alongwith Shri Rajender Kumar, AC, OC B/169 Bn chalked out a plan of raid and combing/searching operation at village Madhupur jungle area and informed the higher ups.

The input was verified by Shri Rajender Kumar, AC who further informed Shri Virender Kumar, DC (Ops).Shri Virender Kumar, DC directed OC F/169 Shri Deepak Shukla, AC (Adhoc) and OC A/169 Insp/GD Ganesh Kumar to lay ROP along the route from Negoria to Bhulabeda village to curb and eschew any ambush and to be kept ready for re-inforcement in case of requirement. Simultaneously he instructed Shri Rajender Kumar, AC to move with his troops tactically for Madhupur village to act as an assault team. Meanwhile, he got the Unit QAT and special platoon of G/169 ready and marched for Madhupur village. On reaching the Madhupur village Shri Rajendra Kumar AC placed its reserve party along with local Police under command ASI Narayan Pramanik WBP in a tactical dominant place very close to area of operation.

Shri Virendra Kumar, DC and his team on reaching the village area immediately cordoned off the village and its jungle area. The assault team led by Shri Rajendra Kumar, AC started comprehensive search of the area. During the assault team search, some 8-10 persons including some ladies equipped with firearms who appeared to hold a meeting near a forest at the edge of village Madhupur, were noticed. On seeing troops approaching, those group of persons started indiscriminate firing upon forces, while shouting maoist slogan. The assault team, though pinned down by their firing, shouted out to them to stop firing and surrender but instead they kept on firing on the troops.

Having, no other option and to save lives and Govt. properties and in exercise of private defence, Sh. Rajender Kumar, AC, along with CT/GD Anil Kumar, CT/GD Bipin Singh, CT/GD G.Hariprasad, CT/Bugular Pooran Mal Jat, showing exceptional courage and valour, proceeded tactically in an extended formation and started pin pointed firing on the Maoist squad. The exchange of fire lasted for around 20 minutes. When firing stopped the troops waited for a reasonable time to watch their movement / activity. Thereafter, taking all necessary precautionary measures, troops started searching of the area along with civil Police under command ASI Narayan Pramanik WBP and found one maoist lying dead in the field with gunshot injury. The body of the deceased was found holding one improvised pistol with empty magazine, engraved automatic Pistol made in USA in his right hand with his index finger at trigger of pistol. The dead body was later on identified by state police as Arjun Mahato @ Judhisthir a hardcore maoist leader. Besides this, following Arms/Amn were recovered during search of area :— (1) one magazine loaded with 05 rds. live cartridges engraved 7.65(2) one fired cartridge engraved KF 7.65 one OFV 08-AF empty case (3) One live cartridge engraved KF 7.65 (4) 07 Rounds fired cartridge with mark OFV 09-A7 (5) One fired cartridge having mark OFV 08 AF.

In the entire operation, despite heavy firing from the hard core Naxals, and a very high probability of peril to their own life, the above officer and personnel exhibited exemplary courage and devotion towards assigned duties and effective command /control. The final assault was done in an area covering dried paddy field and thin forest vegetation affording very little protective coverage. The control over nerve exhibited by them under the life threatening circumstances is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, devotion, dedication and commitment to duty in the face of heavy firing by the Maoist. Due to very short proximity between the Naxals and heavy volume of fire, death remain always a whisker away.

In this encounter S/Shri Rajender Kumar, Assistant Commandant, Anil Kumar, Constable, Bipin Singh, Constable, G. Hari Prasad, Constable and Pooran Mal Jat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/02/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 148–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Raju Kumar,
   Assistant Commandant

2. Vinod Singh
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 18.07.2013, highly reliable information was received from SP East Garo Hills, Meghalaya, about the location of senior cadres of banned extremist group GMNLA. As per the input received, senior member of GNLA namely Markush M

Sangma (2nd in Command of "Jimmy", area Commander of William Nagar) along with other junior cadres was present in the Bansamgre forest area with sophisticated weapons apparently to carry out attack on SFs. Accordingly, troops of 210 CoBRA along with SWAT team of Meghalaya Police launched an operation in the jungle are of Bansamgre under command of Shri Raju Kumar, Asst Comdt, after elaborate discussions with Shri Joseph Keishing, Comdt. 210 CoBRA Bn and SP East Garo Hills, Meghalaya. After night long navigation in difficult jungle terrain, troops reached the suspected site. The Cut-off parties got positioned at different places according to operational strategy of checking the escape of insurgents and the assault teams moved towards the hideout located at the peak of a hill. The assault group moved ahead surreptitiously and cautiously so as to not lose the surprise they had maintained by them. But, as they moved further ahead, a sentry of the insurgents hiding behind the bushes noticed them and opened heavy fire on them. Soon other insurgents also opened heavy fire and the bullets from their guns engulfed the area turning the calm and serene jungle into a battle zone. Shri Raju Kumar, AC finding his troops under the barrage of fire and their lives at great risk, immediately ordered them to fire back at the insurgents with full intensity. A fierce gun-battle at a close distance took place but the insurgents soon found that they could not match the fury of the troops. In a bid to escape they lobbed multiple grenades at the troops and taking the cover of their explosions began to retreat deeper in the jungle. After some time firing from the insurgents side subsided. The fight from the insurgents may have finished but Shri Raju Kumar, AC by then had decided to not let the naxals escape. He informed all the cut off parties about the situation and ordered them to remain extra alert and vigilant.

Shri Raju Kumar, AC in pursuit of his target moved deeper in the jungle with his team and found some make shift morchas as well as a tower morcha inside. Despite the risk of life from sudden and surprise attack by the trapped insurgents, he continued to search the thick vegetation. The place with dense and high rise bushes hindering the visibility to only few meters was suitable for a sudden pop-up attack. Realizing the threat he and his team was facing, Shri Raju Kumar, AC took a calculated risk and ordered the cut off No.5 to fire a UBGL grenade towards a suspected area. Due to the firing of UBGL grenades, two of the GNLA cadres suddenly popped up from behind a bush and opened indiscriminate fire at the troops. CT/GD Vinod Singh who was acting as the scout came under full barrage of fire but was lucky to escape unhurt. Overcoming the sudden shock CT Vinod, inspite of the fire, kept his cool and showing exemplary courage ducked to ground and fired back at the insurgents. Seeing the life of his teammate under great threat, Shri Raju Kumar Asst. Comdt. without caring for his own life crawled ahead and fired at the GNLA cadres and together they were able to neutralize one of the insurgents while another managed to flee. During subsequent search troops recovered one dead body of GNLA cadre namely Markus M Sangma with AK 56 Rifle- 01 No. AK 56 Mag-03 No, AK Live amns-148 Nos. Colt Pistol-01 No., Pisatol Amns-17 Nos., Walkie-Talkie set-02 Nos., & Chinese Grenade-01 etc.

In this encounter S/Shri Raju Kumar, Assistant Commandant and Vinod Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19/07/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 149–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Kaushal Sadhan Giri,
   Assistant Commandant

2. Lal Singh,
   Constable

3. Manish Kumar Tiwari,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02/04/2010, Officer Incharge of Patamda Police Station received a reliable information about presence of 3-4 members of maoist dasta in village Bantoriya, Tola-Srirampur, a very remote and hostile village under PS Patamda, District East Singhbhum (Jharkhand). Information further revealed that these Maoists were exhorting the youth to join their organization. The information was shared with Shri. K S Giri, Company Commander of 7 Bn. CRPF and accordingly an operation was planned. Two strong platoons together with Civil Police component moved on foot towards the target area at around 2200 hrs on 02/04/2010. Before moving for the operation, the troops were properly briefed about the information, task at hand and impending threats. They were divided into small groups for cordoning and searching the target village. Despite pitch darkness, tough terrain, bushes, nallas and rain, the troops moved very swiftly and reached near village

Bantoriya at 0230 hrs on 03/04/2010. The village was surrounded by dense forest and hillocks. After observing the village and nearby forests through Night Vision Device, Shri K S Giri, AC ordered the cordon group to cordon the village. As the cordon group started cordoning the village, Shri K S Giri AC, CT/GD Lal Singh, CT/Bug Manish Kumar Tiwari and few other selected brave jawans of assault/search team moved closer to the village for observing any suspicious movement. Sniffing the unwanted presence of human beings in the vicinity of village, the dogs in the village started barking. Sensing that the maoist would get alerted and try to flee from the village, Shri K S Giri, AC left his half of the party at that place and he himself alongwith CT/GD Lal Singh, CT/Bug Manish Kumar Tiwari and few other personnel hurried towards the other end of the village to cut the escape route. They noticed three human silhouettes running towards the farthest end of the village. Suspecting them to be Maoists, Shri K S Giri, AC ordered other troops to stay behind and give cover/support fire, if needed, while he along with Constable Lal Singh and Constable Manish Kumar Tiwari began to chase them. The maoists, on seeing that they were being chased, turned back and opened heavy fire at the troops. Shri K S Giri, AC and his scouts had a narrow escape, but undeterred by this close shave, they fired back and kept the chase on. Maoists, on seeing the determination and bravery of the troops, ran towards the jungle while firing at the troops. Shri K S Giri, AC and his two intrepid troopers, putting their lives at grave risk and not caring for the threat that these maoist were posing to their lives, kept the chase on. When Shri K S Giri, AC and his scouts closed in on the maoists, the maoists again turned back and fired a few rounds. The troops again ducked and the bullets missed them by a whisker. Seeing that the distance between the fringe of the jungle and the maoists had considerably closed down, the three fired at them and due to the aimed and accurate fire one of the fleeing maoist immediately fell down. The other two Maoists succeeded in entering the dense jungle and after taking position behind a tree fired at the troops. The troops also retaliated and tried to counter them from two directions. Shri K S Giri, AC, alone moved towards the left while the two constables moved to their right. Seeing the attack of troops from both the flanks, the Maoists withdrew into the interior of the jungle.

At dawn, the area was thoroughly searched and from the area an injured maoist alongwith a loaded pistol was apprehended. On enquiry, villagers told that injured person is Sunil Gorai @ Amar Gorai, a wanted maoist, resident of Kamalpur of East Singhbhum District of Jharkhand. During evacuation the injured maoist succumbed to his injuries.

In the whole operation, the Company Commander Shri K S Giri, AC and his two brave troopers namely Ct/GD Lal Singh and Ct/Bug Manish Kumar Tiwari played a very important role. They led the operation from front despite grave threat/danger to their lives. Their initiative, prompt action and extraordinary courage during the operation resulted in a major success wherein a dreaded maoist was eliminated.

Recovery :

1.	Automatic pistol (made in USA No. 7170)	:	01 No.
2.	Magazine	:	01 No.
3.	Live rounds	:	04 nos.
4.	Fired empty cases(K.F. 7.65)	:	03 Nos.
5.	Fired empty caes (K.F. 8mm)	:	05 Nos.
6.	Mobile phone (Micro Max)	:	01 with SIM cards 7 Nos.
7.	Yamaha Crux motor cycle Regd. No. JH-05-6502	:	01 No.
8.	Cash Rs. 700		

In this encounter S/Shri Kaushal Sadhan Giri, Assistant Commandant, Lal Singh, Constable and Manish Kumar Tiwari, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/04/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 150–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Dinesh Singh Rawat,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 29/3/2010 at about 1230 hrs, an information about presence of a dreaded maoist namely Prabodh Singh @ Giddu Sardar of Dalma Platoon in village Pokharia under Police Station Boram, District East Singhbhum of Jharkhand was received by SHO PS Boram. The intelligence was shared by SHO with the company commander of E Coy/7 Bn CRPF and

accordingly an operation to Cordon and Search the suspected village was planned by Shri Nitesh Kumar, Asst. Comdt, (Company Commander of Echo/7 Bn. CRPF) and Sub-Inspector Shri Sanjeev Kumar Mishra (SHO, PS Boram). A team comprising of two platoons of CRPF and 9 personnel of State Police was formed for the operation. As the information suggested that the maoist would escape from the area if immediate action was not taken, the assault team so formed rushed to the village in vehicles and laid a hasty cordon around it. During the planning, it was decided to search the village from two directions thereby leaving no scope for the maoist, to escape. State Police personnel formed a search team and started searching the village from east direction and CRPF troops after forming another search team started the search from west direction. At about 1315 hrs, when the State Police search party was entering a hut, it was greeted by a fusillade of bullets from inside. Immediately they took positions and called for the support from CRPF. Shri Nitesh Kumar AC, who was commanding the CRPF search party, on hearing the sound of firing ordered his team to follow him towards the sound of fire. On reaching the place of incident he ordered his troops to lay a cordon around the hut while he placed himself at a tactical position covering the door. He tactically analyzed all the possible escape routes and ensured that they were plugged. One more chance was given to the maoist to surrender but this warning too met with the same fate and was reciprocated with firing of shots. Entering in the hut from the front door was a risky proportion and entailed risk to life. As the Commanders were digging on as to how to break this deadlock, CT/GD Dinesh Singh Rawat came with an idea of two-direction attack and opening up of a second battle front. The idea was to attack the enemy from a direction from where he was not expecting an attack and was unprepared. Even if he could not be neutralized from that direction, at least it would distract him and give troops a chance to close-in towards the door. He further suggested that an attack from the roof after removing the tiles may be launched. Taking an armed maoist head-on was a life-threatening task but Ct/GD Dinesh Singh Rawat did not care for it and volunteered to lead the attack from roof. Risking his life for a cause, CT/GD Dinesh Singh Rawat surreptitiously climbed at the roof and started removing the tiles. As soon as the aforesaid constable removed the tiles from roof, the maoist holed inside opened heavy fire upon him with the intention to kill him. CT/GD Dinesh Singh Rawat had a narrow escape, but undeterred, he fired back at the maoist and probably injured him. This valiant act of CT/GD Dinesh Singh Rawat not only opened a second front of battle but also helped other troopers to close-in from door side. Immediately the other troops closed-in and took positions outside the door. Finding himself cornered and being caught or neutralized by the advancing troops, the maoist made a last bid of escape by putting the hut on fire. The troopers fell back but did not give any chance to the maoist to escape. Efforts were made to douse the fire but the burning of wooden poles and planks lead to it collapse. The debris was searched and during the search, a partially burned dead body of naxal along with his arm was recovered.

During the operation, CT/GD Dinesh Singh Rawat not only displayed his valour and bravery but also came with an idea that changed the course of the operation. His tactical acumen and dare-devilry displayed during the operation was enviable and exemplary. His sheer initiative had not only lent credible confidence in other troops but also led to neutralization of a maoist.

Recovery :

1.	Automatic pistol (made in Italy)	:	01 No.
2.	Magazine	:	01 No.
3.	Fired empty case	:	03 Nos.

In this encounter Shri Dinesh Singh Rawat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29/03/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 151-Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force :—

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Mool Chand Verma,
   Inspector

2. Sumit Kumar
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20th Oct, 2012 at about 1430 hrs, a specific information regarding presence of terrorists at Shalpura area of PS Sopore in Baramulla District of J&K was received by the security forces. Based on the information, a CASO was planned and launched by the troops of E Coy of 179 Bn CRPF, under command of Insp M C Verma, SOG and JKP. The 22 RR was also informed subsequently to join and further strengthen the operation. After laying the cordon of the village, a combined

party of CRPF and SOG was formed to search the houses. Insp M C Verma was leading a search party and was tactically searching the houses one by one. At about 1525 hrs, as Insp M C Verma and his buddy namely Ct Sumit Kumar had barely entered the covered verandah of one of the house, the terrorists hiding inside a room located at the end of the gallery lobbed two hand grenades at them followed by indiscriminate firing. The troops immediately retaliated the fire and took positions. However because of the blast of the grenades, Ct Sumit Kumar suffered splinter injuries on his left hand and left temple. In the fierce gun-fight at close distance, most of the troops fell back and took positions in the outer side of the building. However, the scouts namely Insp M C Verma and CT Sumit Kumar, who were in the front, stayed inside the verandah and kept on retaliating. The terrorists were constantly firing at the entrance of the house from inside the room so as to inflict casualties on the security forces, stop their entry in the house and escape from the rear. Insp MC Verma however did not get deterred by the situation. He in fact planned a daring counter attack and decided to conduct a daring room intervention to eliminate the terrorists with the help of his buddy Ct Sumit Kumar. The house had rooms on the either side of the gallery and the terrorists were hiding in the last room, the door of which was facing the entry of the house i.e. towards the verandah and entry door. The two without caring for their lives planned to move closer to the terrorist location, adopting the tactics of fire and move to launch the counter offensive. The terrorists were well secured inside the room and were firing constantly at the gallery/entry gate from behind the concrete wall. To launch the counter attack, the two brave troopers moved ahead under the covering and supportive fire of each other and succeeded in coming two rooms closer to the terrorists. Without paying much heed to the injuries sustained, Ct Sumit Kumar was supporting his Commander in the task involving risk of life and displaying exemplary valour and gallant. But soon the loss of blood from the wounds began to affect his consciousness and an imperative need of his evacuation was felt. Sensing that it would not be wise to fight the terrorists alone and his buddy required immediate medical assistance, Insp M C Verma planned to withdraw from the house for the moment and resume the assault with fresh troops. The chance of any help from the troops positioned outside was minimal as the terrorists had covered the entry to the house with their fire. At this juncture, Insp M C Verma exhibited great courage and bravery by putting his own life at grave risk and planned to evacuate Ct Sumit Kumar without caring for the heavy fire of the terrorists. He put the injured constable on his shoulder, fired incessantly at the terrorists not giving them any chance to retaliate, and brought the injured constable out of the house. His brave act subsequently helped in saving the life of this injured buddy. In the meantime, the house in which the terrorists were hiding was cordoned off and parties were placed at all escape routes.

On hearing of the encounter, senior officers of CRPF and JKP also rushed to the spot. Due to failing light, the operation was suspended and the encounter site was cordoned off. Throughout the night, the terrorist hiding inside the house kept on firing at regular intervals in a bid to escape.

On 21 Oct, 2012, final assault was launched which led to neutralization of two terrorists, who were identified as Muzammil Amin Dar @ Urfi Dar, r/o Badamibagh, Sopore (LeT Div Cdr) and Abdullah Shaheen r/o Pakistan.

Recoveries made:

1.	AK series Rifle	01 Nos.
2.	AK Magazine	06 Nos.
3.	Chinese Pistol	02 Nos.
4.	Pistol Magazine	02 Nos.
5.	Live bullets of AK 47	10 Nos.
6.	Pistol rounds	02 Nos.
7.	Chinese grenade	02 Nos.(destroy in situation)

In this encounter S/Shri Mool Chand Verma, Inspector and Sumit Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/10/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 152–Pres/2014—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo Tibetan Border Police :—

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ramesh Chandra,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12th December 2012, an area domination Patrol was launched by 44th Bn ITBP which was tasked to conduct de-mining and combing operations. CT/GD Ramesh Chandra was the member of No. 1 section of the patrol, which was

advancing on left flank. When CT/GD Ramesh Chandra who was the outer left vanguard reached near to a Nullah, he heared gunshot sound from the dead ground. He immediately dashed down and started observing the area from where fire has come. He realized that the naxals had laid an ambush for ITBP troops. In accordance with the traditions of the Force without any fear, CT/GD Ramesh Chandra opened retaliatory burst fire of 15 rounds from his AK-47 rifle towards the Naxalites. This has totally spoiled the ambush plan of the naxals and gave ample time for the troops to take position and counter the naxalites. After seeing the strong reaction from the ITBP, the naxalites abandoned the ambush and fled away by taking advantages of thick vegetation and undulating ground available all along the nullah.

However, in the gun battle, one bullet fired by naxals hit the right eye of the CT/GD Ramesh Chandra. In spite of bullet injury on the right eye, he did not lose his confidence but courageously countered the naxals. After the operation, best possible medical facilities extended to him, still he lost eye sight of one of the eyes.

In this encounter Shri Ramesh Chandra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/12/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2015
PRINTED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T. FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2015
www.dop.nic.in

DOPGIPF—[PART I—SEC 1]—90 Copies.